

This is a digital copy of a book that was preserved for generations on library shelves before it was carefully scanned by Google as part of a project to make the world's books discoverable online.

It has survived long enough for the copyright to expire and the book to enter the public domain. A public domain book is one that was never subject to copyright or whose legal copyright term has expired. Whether a book is in the public domain may vary country to country. Public domain books are our gateways to the past, representing a wealth of history, culture and knowledge that's often difficult to discover.

Marks, notations and other marginalia present in the original volume will appear in this file - a reminder of this book's long journey from the publisher to a library and finally to you.

Usage guidelines

Google is proud to partner with libraries to digitize public domain materials and make them widely accessible. Public domain books belong to the public and we are merely their custodians. Nevertheless, this work is expensive, so in order to keep providing this resource, we have taken steps to prevent abuse by commercial parties, including placing technical restrictions on automated querying.

We also ask that you:

- + Make non-commercial use of the files We designed Google Book Search for use by individuals, and we request that you use these files for personal, non-commercial purposes.
- + Refrain from automated querying Do not send automated queries of any sort to Google's system: If you are conducting research on machine translation, optical character recognition or other areas where access to a large amount of text is helpful, please contact us. We encourage the use of public domain materials for these purposes and may be able to help.
- + Maintain attribution The Google "watermark" you see on each file is essential for informing people about this project and helping them find additional materials through Google Book Search. Please do not remove it.
- + Keep it legal Whatever your use, remember that you are responsible for ensuring that what you are doing is legal. Do not assume that just because we believe a book is in the public domain for users in the United States, that the work is also in the public domain for users in other countries. Whether a book is still in copyright varies from country to country, and we can't offer guidance on whether any specific use of any specific book is allowed. Please do not assume that a book's appearance in Google Book Search means it can be used in any manner anywhere in the world. Copyright infringement liability can be quite severe.

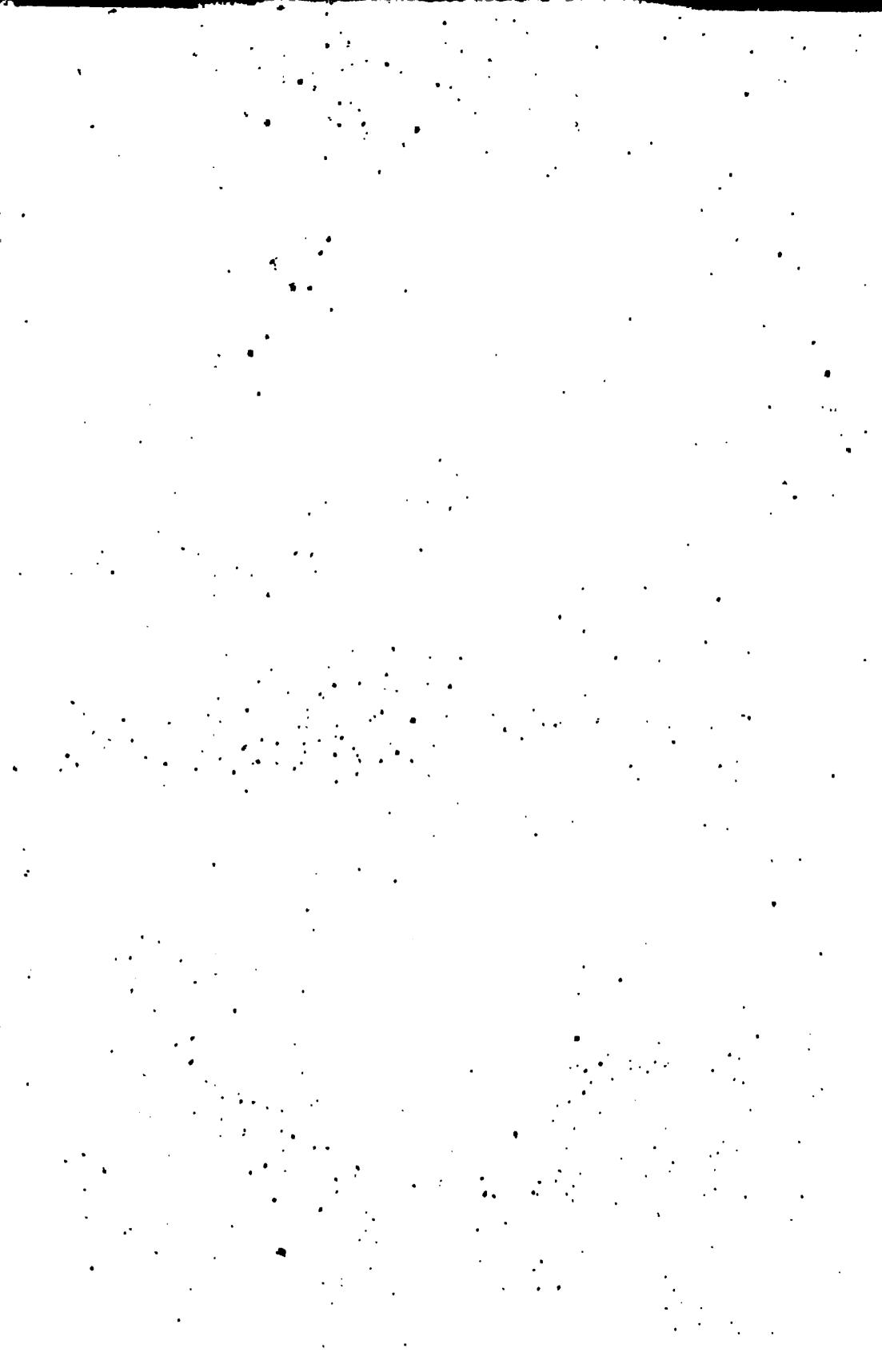
About Google Book Search

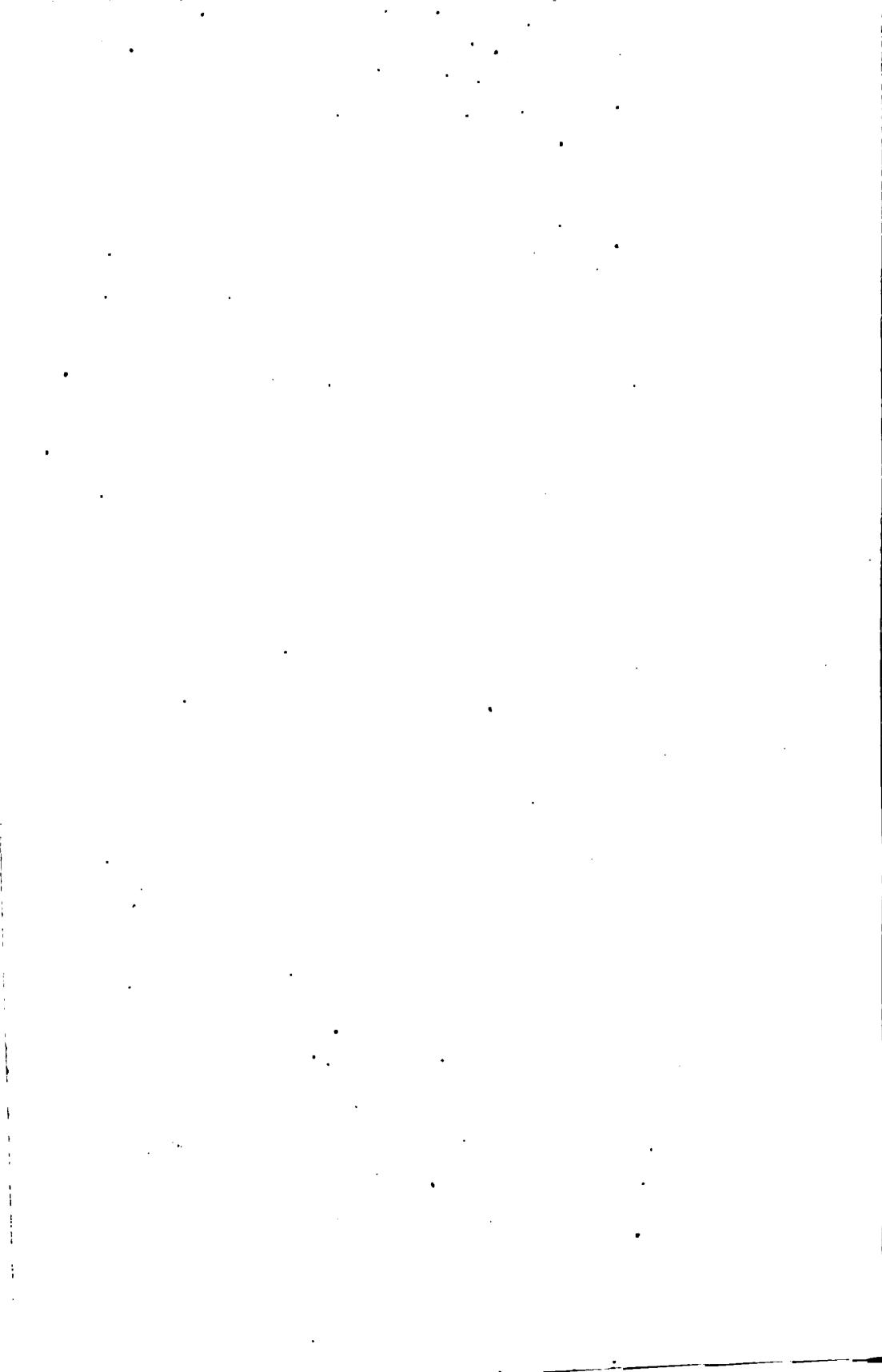
Google's mission is to organize the world's information and to make it universally accessible and useful. Google Book Search helps readers discover the world's books while helping authors and publishers reach new audiences. You can search through the full text of this book on the web at http://books.google.com/











| | | | • | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | • | | | | | | | |
| | | | • | | | · | | | |
| | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | _ |
| | | | | | | | | | • |
| | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | |
| | | | | • | | | | | |
| | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | , | |
| | | | | | | | | | |
| | | • | | | • | | | | |
| | | | | | | | | | |
| | | | • | | | | | | |
| | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | |
| • | | | | | | • | | | |
| | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | |
| | | | | • | | | | | |
| | | | | | | • | | | |
| | | | | | | | • | | |
| | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | |
| | • | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | |
| | | • | | | | | ` | | |
| | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | |

| | | • | • | | | |
|----------|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | • | |
| | • | | | | | |
| , | | | | | | |
| | | • | | | | |
| | | | | | | |
| | | | | | | |
| | • | | | | | |
| | | | | • | | |
| | | | | | | 1 |

GREGORII ij DIALOGI CODICIS AMBROSIANI FAC-SIMILE

spsexparresemperpnocedaretring. NIMCONSTETQUIADARACHTUS Camel

CODICIS CRYPTRFERRATE DA MUMIC VATICAMUS GRE. FAC-SIMILE

LXXX/

fol. ultimo

ф етеленшенвівлос — хутныні эпріліш,

HRAAH BÉTOYC'S TH

Tonapaikahtonnnaektov npenjoepketai kaiëntë npenjoepketai kaiëntë vedalalakenet tinoc npenjoepketet tinoc

HISTORIA

S. P. N. BENEDICTI

A SS. PONTIFICIBUS ROMANIS

GREGORIO I. DESCRIPTA ET ZACHARIA GRAECE REDDITA

NUNC PRIMUM E CODICIBUS SAECULI VIII.

AMBROSIANO ET CRYPTENSI-VATICANO

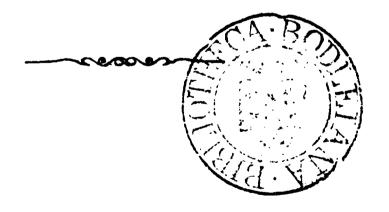
EDITA ET NOTIS ILLUSTRATA

CURA

IOSEPHI COZZA-LUZI

ABBATIS MONACHORUM BASILIENSIUM CRYPTAE FERRATAE

ET BIBLIOTHECAE VATICANAE SCRIPTORIS



TUSCULANI

TYPIS ABBATIAE CRYPTAE FERRATAE

ANNO MDCCCLXXX.

110. n. 8.

| | | | | • |
|---|----|---|---|--------|
| | | | | • |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | , |
| | • | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | • |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | • |
| • | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | - |
| | | | | |
| | • | | | |
| , | | | | - - |
| | | | | |
| | | • | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | • | | | |
| | • | | | • |
| | | | • | |
| | | | | |
| | | | | |
| · | • | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | ı |
| | | | | |
| | | | | • |
| | •, | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| • | , | | | • |
| , | | · | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | • |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |

PONTIFICALE MONVMENTVM DE HISTORIA

MAGNI BENEDICTI

OPVS ANTISTITVM MAXIMORVM

GREGORII I. ET ZACHARIAE SAECVLO XV. BENE AVSPICATO

AB ORTV TANTI VIRI

EDITVM E CODICIBVS LATINO ET GRAECO

AMBROSIANO ET CRYPTENSI-VATICANO

ANTE MILLE ANNOS DESCRIPTIS

LEONI XIII. P. O. M.

SANCTOS DOCTOSQ. DECESSORES AEMVLANTI

OBTVLIT

IOSEPH HVMILIS ABBAS

S. MARIAE DE CRYPTA FERRATA

BIBLIOTHECAE PONTIFICIAE SCRIPTOR

FAVTORI ET PATRI

| | • | | , | | , |
|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | • | , | | | |
| | | | | | |
| | • | | | | |
| | | | | | |
| | | | • | | |
| | | | - | | |
| | | • | • | | |
| | | | | | |
| | | | • | | |
| | | | | | |
| | | | J | 1 | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | A | |
| | | • | · | • | _ |
| | | | | | • |
| | | • | | | |
| | | | | | |
| | | · | | | |
| | | | | | |
| | | | | | , |
| | | | | | , |
| • | • | · | | | |
| | | • | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | • | | · | |
| | • | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | , | | |
| | | | | | |
| | | | ı | | |
| | | | | | |
| | | | | | |

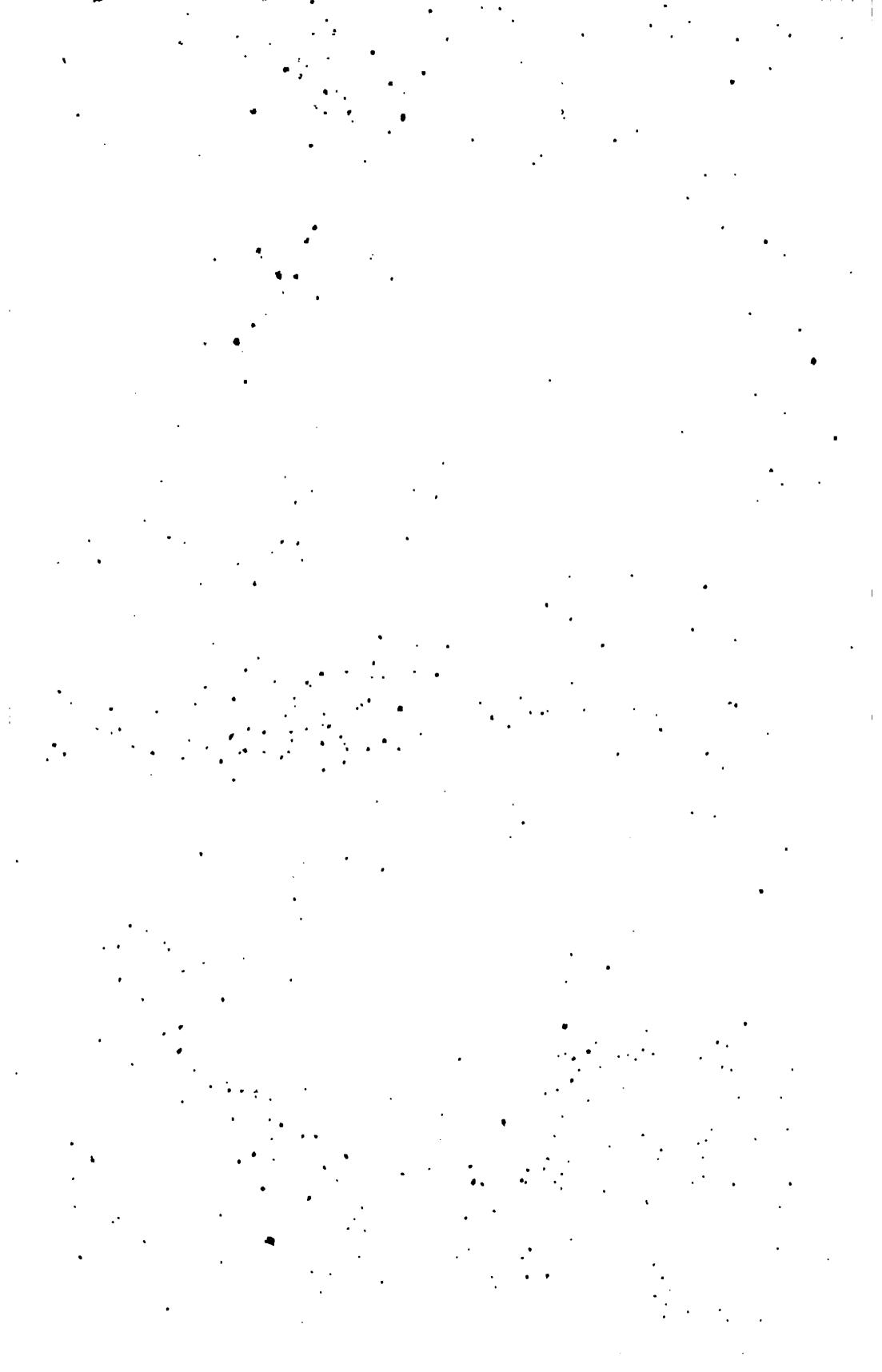
PROLEGOMENA

Gloria tum ex virtutibus, tum ex institutis monasticis Benedicti nomini parta semper tanta fuit, ut eam vel pauci quidem celebrium ascetarum aequarent, superaret vero nemo. Ad eam autem longe lateque in orbe illustrandam non sine providenpropagandam atque tiae divinae consilio factum est (1), ut quam maxime valeret opus duorum e sanctissimis viris, qui summam Romani pontificatus obtinuerunt: Gregorii scilicet illius re et nomine Magni, atque haud absimilis laude Zachariæ; quique inter asperrimas curas, magnosque pro ecclesia et civili societate exantlatos labores et istud præstiterunt, ut Benedicti res gestas alter in Dialogis exprimeret, alter hoc pacto prolixe expressam in graecum sermonem converteret.

Plenæ sunt Occidentis atque Orientis christianæ regiones, plenæ omnium populorum ecclesiæ, pleni coenobiorum thesauri, plena sacrarum historiarum ve-

(1) Odo Cluniacensis Serm. in S. Benedictum: «Hoc ad ipsius «honorificentiam referamus, quod non alius quilibet ex magi«stris Ecclesiæ vitam tanti patris digessit, quam insignis ille «disertissimus papa Gregorius. Divinitus dispositum est, ut «quum isdem excellentissimus legislator in cæteris modis sit «a Deo decoratus, etiam hinc maiori auctoritate... roboretur, «quod eamdem vitam summus Apostolicæ sedis Pontifex ordi«navit etc. »-Cantu' Storia Univers. t. VIII. p. 425. «Questi ed «altri assai fatti ci furon tramandati da insigni storici che (non «ultima fortuna) sortì Benedetto, cioè Gregorio Magno allora, «dipoi il Mabillon; e le arti belle nel risorgimento, poi nel «massimo loro splendore li riprodussero e perpetuarono per «tutto il mondo, ma in nessun luogo più commoventi che a « Monte Cassino, cuna e asilo il più venerato dell' ordine suo...»





| | | | • | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | • | • | | • | | |
| | | | | • | • | |
| | | | | • | | |
| | | | | | | |
| | | | | • | | |
| | _ | | | • | | |
| | - | | | | | |
| | | | | | | |
| | | | | | | |
| | • | | | | • | |
| | | | | | | |
| | • | | | | | |
| | | | | | | |
| | | | | | | |
| • | | | | | | |
| | | | | | | |
| | | | | | | |
| • | | | | | | |
| | | | | | | |
| | | | | | | |
| | | | | | | |
| | | | | | | |
| | | | | | | |
| | | | | | | |
| | | | | | | |
| | | | | | | |
| | | • | | | | |
| | | | | | | |
| | • | | | | | |
| | | | | • | | |
| | | | | | | |
| | | | | | | |
| | | | | | | |
| | | | | | | • |
| | | | | | | • |
| | | | | • | | • |
| | | | | • | | • |
| | • | | | • | | • |
| | | | | • | | • |
| | • | | | • | | • |
| | • | | | • | | • |
| | • | | | • | | • |
| | • | | | • | | • |
| | • | | | | | • |
| | • | | | | | |
| | • | | | | | |
| | • | | | | | |
| | | | | | | |
| | | | | | | |
| | | | | | | |
| | | | | | | |
| | | | | | | |
| | | | | | | |
| | | | | | | |
| | | | | | | |
| | | | | | | |
| | | | | | | |

| - | | | | • | |
|---|---|---|---|----|--|
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | • | • | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | • | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | • | • | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| · | • | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | • | | | |
| | | | | | |
| | | | • | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | • | | | |
| | | | • | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | • | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| • | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | · | |
| | | | | | |
| | | | • | | |
| | | | | •. | |
| | • | | | • | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |

| , . | |
|-----|---|
| ì | |
| , | |
| | |
| | |
| | |
| | • |
| | |
| | |

•

Ioseph Syracusanus, antonomastice hymnographus appellatus, iam ante S. Nilum ἀκολουθίαν canticorum in S. Benedictum contexuerat, qua et nunc græci die XIV. Martii utuntur. (1) Et ipse e Dialogis S. Gregorii omnia contexuit, ut et melius liquet e quibusdam παραλλήλοις locis ad calcem textus adiectis.

Addere quoque iuvat testimonium auctoris vitæ S. Gregorii græce descriptæ, quem quidam Symeonem Metaphrasten logothetam fuisse opinantur, cuius græcum textum ex codice Veneto-Naniano 179 primo prodiit cura Ioannis Baptistae Galliccioli Veneti anno 1769.

Ipso sub initio habet: Ο μακάριος Γρηγόριος ὁ καὶ τοὺς βίους τῶν ἐν Ιταλία άγίων συγγραψάμενος ἐν διαλόγου σχήματι καὶ πατριάρχης ἐν Ρώμη γενόμενος... Beatus Gregorius, qui vitas Sanctorum Italiæ scripsit in forma Dialogi, et Romæ patriarcha fuit... Iis et accedunt auctores Synaxariorum, quae parva compendia sunt e gestis Sanctorum in sacris officiis legenda, et varia habentur.

Quibus testimoniis, veluti novis, si alia a Maurinis congesta adiungantur, mirum in modum opus gregorianum laudibus cumulatum videtur.

Qua de causa autem Gregorius Dialogos scripserit, patet ex verbis eius epistolae ad Maximianum episc. Syracusarum: « Fratres mei, qui mecum familiariter vivunt, omni

- « modo me compellunt aliqua de miraculis Patrum, quæ
- « in Italia facta audivimus sub brevitate scribere. Ad
- « quam rem solatio charitatis vestræ vehementer indi-
- « geo, ut ea quae cognovisse vos contigit, mihi brevi « indicetis » (2).

Impulsor ac socius operis fuit Petrus Archidiaconus, quocum conversatus est, ut ab ipso libri I. exordio patet, de quo et Gregorius dicit: « Mihi a primævo iuventu- « tis flore amicitiis familiariter obstrictus atque ad sacri « verbi indagationem socius. » Is olim compellabat his verbis Gregorium « Non valde in Italia aliquorum vitam

⁽¹⁾ Menaga Cod. Crypt. Δ. α. XVII, - Nilles op. cit.

⁽²⁾ Ep. ad Maximianum episcop. 1. 2. ep. 50.

- « virtutibus fulsisse cognovi. » Cui Gregorius: « Si sola,
- « Petre, referam quae de perfectis probatisque viris unus
- « ego homuncio vel bonis ac fidelibus viris attestan-
- « tibus agnovi vel per memetipsum didici, dies, (alii
- « tempus ut græce χρόνος est apud Zacharias) ut opinor,
- « antequam sermo, cessabit... » Hoc pacto liber Dialogorum cœptus et absolutus est etiam aliorum ope.

Hæc primordia circa annum 592 evenisse patet; cum libro III. cap. 19 ait: « Ante hoc fere quinquennium, « quando apud hanc Romanam urbem alveum suum Ti-« beris egressus est...» Inundatio mense Novembri anni 589 accidit, eamque secuta est per annum et ultra lues, qua obiit Pelagius papa, cui successit Gregorius mense Septembri an. 590. De ea loquitur l. IV. c. 26: « In « ea quoque mortalitate, quæ ante triennium hanc ur-« bem vehementissima clade vastavit...» Zacharias vertit πρὸ τριετίας illud ante triennium; unde patet Gregorium scripsisse novissimum librum Dialogorum annis post tribus a pestilentia, ideoque circa annum 592.

Postquam descripti sunt, narrat in historia Longobardorum Paulus Diaconus (1), missos fuisse ad Theodolindam reginam illius gentis, quæ his usa est, ut ad fidem catholicam regem et subditos ex ariana hæresi converteret. Ex quo factum est, ut hi libri per orbem, et præcipue per Italiam superiorem diffunderentur. Ex apographo Theodolindæ facile crediderim exscriptum esse codicem Bobiensem, nunc Ambrosianum, circiter quinquaginta annis post Gregorium, cuius textum nunc primum in Vita Benedicti vulgamus, quique omnium exemplarium quæ extant, princeps est et nobilissimus.

(1) Hist. Longb. lib. IV. c. I. «Iisdem diebus sapientissimus ac beatissimus papa Gregorius Romanæ Urbis episcopus post alia multa, quæ ad utilitatem sanctæ Ecclesiæ scripserat, etiam libros quatuor de Vitis Sanctorum composuit: quem codicem Dialogum, quia éum colloquens cum suo Diacono ediderat, appellavit. Hos autem libros præfatus papa Theodolindæ reginæ misit, utpote quam sciebat Christi fidei deditam, et in bonis actibus esse præcipuam. »

Cum vero latina lingua libri illi descripti essent, iis qui tantum græca utebantur, erant impervii; cui rei consuluit Zacharias sæculo uno cum dimidio post Gregorium pontifex. Hæc habet Anastasius bibliothecarius (1), et magnus ille librorum græcorum peritus censor Photius in Myriobiblio ad cod. 252 (2), nec non in Mystagogia de Spiritu Sancto non multis abhine annis primo edita a cl. v. nunc S. R. E. Card. J. Hergenröther (3).

Sed ante, Photii ætatem et alios habemus rei testes, quorum duo nunc primum proferuntur. Alter est Carmen græcum ineditum, in his Prolegomenis inferius evulgandum, descriptum in fronte græci codicis, quo nos utimur. Sæculo VIII, ætate nempe ipsius Zachariæ, alter quidem ex ipso venit codice sæculi octavi. Post prædictum carmen ab eadem descriptum manu legimus Procemium in Dialogos græce redditos. Illud ediderant Maurini patres ex codice Regio - Parisiensi 2934 et ex Colbertino 2500, quorum ætas Cryptensi-Vaticano nostro inferior est; sed nemo hucusque suspicabatur auctorem illius anonymum ante Photium scripsisse; ideoque quidam in eam opinionem adducti sunt, quæ ibi leguntur, ab ipso Photio fuisse derivata. Sed rem prorsus ex adverso se habere probat codex noster, qui sæculo ante Photium uno descriptus ostendit, Photium censorem manu sua diurna nocturnaque versasse exemplare græcum hoc Proæmio instructum, unde is facile sua depromere potuit; non autem auctor Proœmii a Photio, quo is longe vetustior erat, aliquid haurire ullo pacto potuisset.

Alios præterea huius versionis testes et in Præfatione PP. Maurinorum reperies, et apud rei patristicæ scriptores; de eaque etiam inter magnalia Zachariæ nuper diserte locutus est vir Emus Dominicus Bartolini (4). I-

⁽¹⁾ Anastasius bibl. in Zachariam.

⁽²⁾ Apud Migne in patrolog. Græca tom. CIV. 96.

⁽³⁾ Apud Migne Patrol. Græc. t. CII. pp. 372, 374, 394 et 397. Confer inferius adnot. ad Caput. XXXVIII.

⁽⁴⁾ Di S. Zaccaria papa etc. Commentarii storico critici raccolti da Domenico Bartolini Prete card. della S. Rom. Chiesa e Prefetto della S. Congreg. dei Riti.. Ratisbona 1879. pag. 563.

bidem et apud alios de indole deque anno agitatam quæstionem reperies, quæ, cum breves esse adlaboramus, nobis prætereunda est.

Antequam vero de codicibus, ex quibus textum eruimus, aliqua dicamus, sermonem de opere Gregoriano contrahentes vel iuvat referre, quo studio mirabili hi Dialogi a variis gentibus excepti sint. Præter textum latinum Gregorii in diversos populos vulgatum, versio Græca, de qua inferius agemus, et Arabica recensetur anno 779 auctore Antonio monacho, nec non Saxonica sæculi XI, et quoque antiqua Italica et Francica rythmica, et alia prorsa oratione; librum, eam continentem anno 1409 emit Joannes dux De Berry (1).

Cum hæc de Dialogis gregorianis ad editionem nostram quod attinet, satis præfari videntur; nunc ad nobiles codices sermo convertendus est, qui editionis nostræ et causa fuerunt, et fons, nec non eiusdem pretium demonstrant.

(1) Ceillier Hist. des aut. eccl. t XVII. pag. 206. Rien ne marque mieux l'applaudissement avec lequel ces Dialogues furent reçus. que les différentes versions que l'on en fit. Nous ne répéterons point ce que nous avons dit de celle du Pape Zacharie avant l'an. 752. Sa version qui étoit Grecque, fut traduite en Arabe avant l'an 800; on la conserve écrite sur du parchemin parmi les Manuscrits d'Orient dans la Bibliothéque du Roi. L'Auteur de cette traduction étoit un Religieux nommé Antoine, qui de meuroit dans le Monastère de saint Siméon. Au neuvième siècle Alfrède le Grand, Roi d'Angleterre, fit traduire les mêmes Dialogues, avec le Pastoral de S. Grégoire, en son langage Saxon, par Verfroy, Evêque de Worchester. Cette version se trouve à Cambridge dans le Collège de saint Benoît. On lit dans l'His_ toire de Charles VI. que Jean de France, Duc de Berry, avoit acheté le 9 de Juillet 1409, les Dialogues de saint Grégoire mis en François, pour le prix de quinze écus d'or, prisés soixante sols Parisis. » et tom. XVIII. p. 61 - FABRICIUS ALB. Biblioth. Graec. lib. V. c. 38.

Inter præcipuos codices qui celeberrimam Bibliothecam Ambrosianam Mediolani exornant, merito recensetur codex Dialogorum S. Gregorii, cuius et quædam pagella autotypico specimine exhibetur inter nobiliora vetustissimae scriptionis exemplaria in collectione Anglica, quæ Specimina Palæographica tum græca tum latina in fidelissimis tabulis repræsentat (1).

Laetamur et inter alia exhiberi pagellam libri II. (XI. et X.) codicis, ex quo et opus nostrum confecimus; ad cuius tidem præter aliud a nobis datum specimen, omnes eruditi librum nostrum conferre possunt, et qualis sit nobilissimus codex oculis suis valent usurpare.

Descriptionem anglicam in eo magnis laudibus celebrando opere dedit v. cl. Antonius Ceriani, Bibliothecæ Præfectus, qui tanta usus est nobiscum comitate imo et arctissima amicitia, ut sibi onus conferendi codicis ultro susceperit. Quinimo et litteris suis datis die X. Februarii hanc nobis descriptionem codicis paulo ampliora ab ea, exhibuit, quam anglicis doctisque viris dederat.

Codex iste Ambrosianus notatur littera B. 159 sup. constat foliis 242; et eius membranæ amplitudo protenditur per metri 0, 306×0 , 22 partes. Lineæ scriptionis in unaquaque pagella 23 vel 22 aut 21 recensentur, haud enim semper constans est eorum numerus. Eius ætas non modo ex scribendi ratione ad sæculum VIII. deducitur; (2) sed præcipue ex hac fideli inscriptione ad calcem apposita:

EXPLICIUNT DIALOGORUM GREGORII PAPAE URBIS ROMAE
LIBRI NOMERO IIII DEO FAVENTE
ANASTASIO ABBATE IOVENTE
GEORGIONE PECCATORE SCRIVENTE.

Ut etiam quibusdam eruditis viris videtur, fortasse prima pærs usque ad deo favente exemplata est ab archetypo codice descripto vivente Gregorio, cui sancti ti-

(1) Fac-similes of manuscripts and Inscriptions edited by E. A. Bond and D. M. Thompson P. I-VIII London 1873-1878. Tab. 121. (2) GLORIA Andrea Paleografia e Diplomatica. Padova 1870 pag. 54, 67 etc.. e tavole.

tulus non signatur. Et si coniecturis quædam tribui possunt, non longe ab eo codice derivatur, quem ipse Gregorius Theodolindæ reginæ Longobardorum misit, teste Warnefrido, seu Paulo diacono, in historia sua (1). In quodam Bobiensi diplomate (2) Rachis regis Longobardorum, dato anno \$447\$, consignatur nomen Anastasii Abbatis Bobiensis, quo iovente seu iuvante codex a monacho Georgione exaratus est. Codex iste asservabatur in Bobiensi Abbatia, unde in Bibliothecam Ambrosianam invectus est anno 1606.

Quaterniones notantur litteris ad calcem postremæ pagellæ, ut videre est in pagella photographice reddita in opere anglico. Ad dirigendas scriptionis lineas prius ferreo obtuso vel osseo aut ligneo instrumento tractus lineæ in membrana impressus ducebatur, in una tantum membranæ facie.

Scriptura semper uncialis est absque commixtione litteræ, uti vocant, currentis vel minutae; et verba verbis coniuncta. Primum verbum vel linea Dialogorum quandoque non atramento, sed colore scribitur. Litteræ autem capitales coloribus, figuris et maeandricis ductibus ornantur.

Interpungendi ratio ea est, ut plerumque medium punctum adhibeatur, et in fine articuli tria puncta. Posteriores manus nonnunquam antiquam rationem interpungendi immutarunt. Ea, quæ ex aliis libris, nempe ex sacris Litteris desumpta sunt, in margine signaculo plerumque notantur.

Litteræ aliquantulum festinationis redarguunt, si superioris ætatis libros consideramus; sed libris sæculi VIII. bene congruunt. Quæ vero sint singularum figuræ melius et manifestius ex specimine oculis usurpari, quam dictis describi possunt. Nonnunquam in nexu colligantur, ut US et NS.

Emendationes ab antiquis diorthotetis vel lectoribus curatæ, fiunt per expunctionem, nempe punctis superne

747 ?

⁽¹⁾ Lib. IV cap. I. ut superius, vide pag. XIII.

⁽²⁾ Rossetti « Bobbio illustrato » tom. III. p. 59.

aut inferne additis, vel per additionem litterarum, vel per rasuram, vel etiam per novas litteras antiquis inscriptas, ut et in specimine videre est. Ad ornatum vero colores, pisces, aves, capita, monstra, serpentes et mæandrici ductus a manu minus perita Georgionis amanuensis inducuntur.

Ex his patet nos inter codices præ manibus habuisse codicem præstantissimum, et inter eos Dialogorum codicem principem; quem mirum est numquam in editionibus fuisse adhibitum, etsi opus istud Gregorianum præcipue a Benedictinis viris, veluti nobilissimæ originis suæ tessera, sæpe typis consignatum fuisset (1); quinimo inter primos libros impressi sunt Dialogi Venetiis an. 1475, Parisiis 1499, Romæ 1505, et vitæ S. Benedicti extat editio Veneta anni 1500 (2). Maurini magistri, patristicæ rei amplificatores celeberrimi, inter tot codices Dialogorum Regium Parisiensem veluti principem proponunt, quem sæculo circiter IX. scriptum esse dicunt (3).

In textu autem tam nobilis Ambrosiani codicis edendo omni diligentia curavimus, ut fideliter exprimeretur, usi ut diximus, ope cl. v. Ceriani, diligentissimi ac sciti palæographi; qui hoc pacto suam et Bibliothecae Ambrosianae quasi votivam festivitatis symbolam B. Benedicto obferre voluit. Præter evidentes mendas, codicis scribendi rationem et transpositiones verborum rite plerumque servavimus. Si quando lectionem posterioris manus fuit magis probanda et amplectenda, aliam in adnotationibus retulimus; in quibus et alia observanda et varias lectiones ex aliis depromptas codicibus collocavimus, ita ut textus tam nobilis comitatu quodam non indigno honoraretur, et editio nostra saltem, si non perfecta ingenio, tamen industria quadam elaborata, editoris studium vel desiderium demonstraret.

⁽¹⁾ Præfatio Maurinorum ad Dialogos S. Gregorii, § XXIII.

⁽²⁾ Jo. Franciscus Brixianus monachus Congregationis s. Justinæ Patavinæ edidit an. 1500 Venetiis Librum II. Dialogorum cum quatuor Regulis religiosorum approbatis ab Ecclesia.

⁽³⁾ MABILLON Act. SS. O. S. B.-Annales Benedictin. tom. I.

Non modo editiones praecipuas, quae criticam peritiam et operis amorem ostendunt, sed etiam codices ad varias lectiones adhibuimus. Inter hos, quos commemoravimus in nostro apparatu critico, certe notatu digni sunt, Parisiensis Regius, qui saeculi IX. videtur, alter qui fuit Cœnobii S. Germani a Pratis, num. 162: quique ante saeculum XI. scriptus videtur Maurinis editoribus, una cum duobus aliis eiusdem bibliothecae Sangermanensis, tres Carnotenses bibliothecae S. Petri saecul. IX. XI, XIII, duo S. Theodorici ad Rhemos, unus Compendiensis, unus Longipontis, unus Clarae Vallis, duo S. Petri Gemeticensis, unus Pratellensis, tres Rothomagenses, duo S. Audoeni, alter Bigotianus, duo Beccenses et unus Lyranus.

Praeter hos praesto fuerunt variae lectiones Codicum Florentinorum, et Sublacensium, quos sedulo contulit Quirini in sua comparata editione Vitae S. Benedicti (1).

Accedunt et codices Veneti, quos contulit Gallicioli. Horum alterum saeculi XII, vel XIII, suppeditavit Bibliotheca S. Marci, dictum Bessarionis, munificentissimi illius Bibliothecae fundatoris, qui et praeclarum fuit Ordinis nostri Basiliani decus: alterum saec. XIV. Bibliotheca Naniana: et tertium sæculi circ. XIV. Bibliotheca S. Mariae Gratiosae (2).

In colligendis vartis lectionibus tantum praecipuas indicavimus, plerumque etiam codicis Ambrosiani scribendi rationem vel retinuimus vel adnotavimus. Non parum enim ad studium palaeographiae atque ad linguae tum latinae tum italicae philologiam conferre potest modus scribendi iam a medio octavo saeculo usitatus.

Quaedam erudita parallela tum historica, tum patristica, ad quae testimonia scriptorum omne genus congessimus, fere ad singula capita adiecimus tum ornamenti causa, tum etiam ad pretium historicum et criticum operis Gregoriani ab omnibus laudatum, magis magisque augendum, vel saltem pleniori lumine illustrandum.

- (1) Vita S. Benedicti latino graeca etc. Venetiis 1723.
- (2) Editio veneta Opp. S. Gregorii 1769. t. VI p. 34. Notitias horum codicum nobis tradidit accuratissimas Eq. Veludo Bibliothecæ Marcianae praefectus, cui gratias debitas agimus.

Ex vetustissimis codicibus græcis ante X. sæculum descriptis, vel rari sunt qui præseferant certam ætatis descriptam notam; inter hos veluti exemplar singulare, cuius nos primi invenimus et evulgamus epigraphen chronicam, est codex olim Monasterii Cryptæferratæ A. A. nunc autem Bibliothecæ Vaticanæ græcus 1666.

Foliis constat 185, quorum membranæ amplitudo per metri 0, 31 × 0, 22 partes plus minus extenditur; duplici columna exaratus, quarum unaquæque circiter 32 lineas numerat; sunt autem columnæ quædam, ubi scriptio aliquo in loco est coarctata; ideoque in his maior est numerus linearum; nonnullae vero pagellarum partes vacuae vitio membranae sunt.

Semper scriptionis character uncialis apparet, cuius forma sæculi octavi est (1), sicut specimen ante omnium conspectum demonstrat. Etsi totus atramento describatur, tamen nomina $\Gamma PH\Gamma OPIO\Sigma$ et $\Pi ETPO\Sigma$ et titulus libri IV, necnon chronica epigraphes minio describuntur. Quandoque spatium ad hæc excipienda nomina vacuum relictum est, sed in margine scriptor atramento notaverat initiales litteras Γ vel Π .

Litteræ capitales nonnumquam ad ornatum præseferunt pisces, maeandricos ductus, monstra, serpentes; præcipua est littera-M-initio libri IV; et lampades nonnullis in locis pinguntur ad ornamentum. Monográmma Christi P in subscriptione adest, quod frequens est etiam in aliis vetustis Cryptæferratæ codicibus, et nos istud in palimpse-

(1) Conf. specimen initio libri - Montfaucon Palaeograph. Grae-cæ liber III. - Piacentini Gregorius monachus Cryptæferratæ in sua Epitome palaeographiae graecae Romæ anno 1734 cap. XIII. Gardthausen in recenti egregio suo opere Griechische Palæographie Leipzig 1879, specimina proferens characterum ex variis saeculis talia habet, ut scriptio codicis Cryptensis potius videatur accedere ad formas sæculi VII, quam IX. Ex hoc codice habemus exemplar sæculi VIII. certum, quod formam quamdam litterarum in eius tabulis desideratam exhibet.

stis deteximus (1). In hoc autem codice magnam formam habet in epigraphe finali, cuius pars superior interiit.

Historicas quasdam notitias ad librum vere insignem pertinentes adtexere frustraneum non erit. Ut fert opinio sane admittenda, liber iste una cum S. Nilo et sociis peregrinatus est; et ille vere bibliophilus, cum ob invasionem Saracenicam a Calabria ad medias partes Italia commigrare coactus esset, eum secum advexit. Hoc usus est libro, cum apud Cassinum in monasterio Vallis Lucis commoraretur, et de fructu labiorum suorum totam Axoλουθίαν, id est cantiones liturgicas Vespertinas et Matutinas, concinnavit, quasque cum suis ad sepulcrum S. Benedicti modulatus est inter sacra solemnia, quæ ibi magno cum gaudio Cassinensium græco ritu celebravit. Cantica S. Nili adeo presse, ut diximus, historiam gregorianam sequuntur, ut primus editor J. Sciómmari (2) una cum hymnorum versione ad calcem signaverit ex ordine capita unde e Dialogis sua Nilus deprompserit. A Valle

(1) SS. Bibliorum vetust. fragmenta ex codicibus Cryptæferratæ Prolegomena § VIII. Pars I, II. 1867, Pars III. anno 1877. (2) His verbis Jacobus Sciómmari opus suum dicat Casinatibus. «Operæ pretium non inane duxi hoc loco Canonem in S. Benedictum usque adhuc ineditum, Notatione VIII. promissum, tanquam meæ opellæ margaritam adnectere. Hæc unica extat ex multis S. P. N. Abbatis Nili Junioris Cryptæ-Ferratæ Fundatoris sacris elucubrationibus, quam in Monte Casino, cum ibi publica pompa, universoque Ascetarum comitatu receptus fuit, suorum Discipulorum sacro cecinit concentu solers Hymnographus. Insigne utique tanti Scriptoris monumentum par erat, ut publicæ eruditioni tanquam argumentum illius ingeniosae mentis tandem prodiret. S. Benedictus in postremo suæ Regulæ Capite Magnum Basilium, Patrem Nostrum vobis pronunciat, Casinenses Religiosissimi. Eius exemplo reddam et ego hisce postremis paginis vestro Patriarchæ grati animi, ac religiosi nominis hoc qualecunque obsequium, dum Venerabili Vestræ Congregationi græco-latino Canone illum exornatum restituo. Methodus Canonis tota est in vestigiis tenendis Magni Gregorii, qui lib. 2. Dialogorum eius Vitam conscripsit; ac proinde Compendium, utpote respondens origini, notulis apposite signatum Vobis exhibeo, addictoque animo D. D. D. »

Lucis ad vicum Serperim Caietæ, Serperi ad urbem Romam, ex Urbe ad Tusculum in monasterium S. Agathae (1), ubi Nilus diem ultimum obiit, codex advectus est, et fuit inter primos, qui novum Cryptæferratæ Monasterium Nilo moriente condi iam cæptum, exornarunt. Iste in usus monachorum servatus est, cuius rei testes sunt quædam verba, quæ varias manifestant Cryptensium monachorum posterioris ætatis manus.

Pulcher catalogus codicum nostrorum a Luca Felici Tiburtino monacho et deinde abbate confectus an. 1575 (2) codicem istum consignat litteris Δ . Δ . Notus fuerat editoribus Romanis operum S. Gregorii an. 1591; nam in argumento, Episcopus Venusinus scribit in libro Dialogorum sex capita fuisse omissa, sed hoc usus bona critica fecisse, atque ad auctoritatem nostri codicis provocat, qui ea non habet (3). Sed haud multo post ad bibliothecam Vaticanam exornandam atque amplificandam ab antiqua sede cum aliis multis Cryptensibus codicibus præstantissimis Romam delatus est. Eius nobilitas statim deprehensa fuit a viro intelligenti et perito, qui ex charactere Leo Allazio fuisse videtur. Codicem exscripsit in libro chartaceo, qui nunc est Cod. Vat 608. (4). Ex eo tempore nullam usque ad nos codicis mentionem reperimus, si excipias illam in volumine III. Inventarii, in quo ad

- (1) CARDONI Mon. Basil. «De Tusculano M. T. Ciceronis » p. 5. Grabi Steph. ab. Crypt. Basil. apud. Kirker. Latium.
- (2) In catalogo est: ΔΔ. Διάλογος τοῦ άγ. Γρηγορίου πάσα Ρώμης.
- (3) Editio Romana an. 1591 Operum S. Gregorii Magni cura episcopi Venusini Rodulphi Tossiniani (Ughelli Ital. Sacr. Epp. Venusii et Senogalliæ) p. 104: «... absunt in hac Vaticana edi-
- « tione, non dolo nec fraude, sed quia etiam accuratissime inve-
- « stigata, ea nulla extant in duobus exemplaribus vetustis, quo-
- « rum unum est Vaticanum, alterum nobilissimæ Bibliothecæ
- « Cryptæferratæ... »
- (4) Ipse exscriptor in apographo hæc habet: Η βίβλος αὕτη μετεγράφη ἐκ παλαιστάτου ωρωτοτύπου γεγραμμένου ώς ἔλεγεν εἰς τὸ τέλος τῆς βίβλου, ἐν ἔτει ςτή ἀπριλλίου ΚΑ΄. « Liber iste exscriptus est ab antiquissimo prototypo exarato, ut dicit in fine libri, anno 6308, mensis Aprilis die XXI. » videlicet anno Christi 800.

num. 1666 relatus est, et aliam Theodori Toscani monachi Cryptensis, magistri mei (1), in suis excerptis e codicibus Vaticanis apud nos adservatis, ubi et de hoc etiam codice sermo est.

Adeo præstantem codicem nacti, statim eruditis et palæographiæ curiosis viris notitiam tradere cogitavimus; sed adveniente solemnitate centenaria a nativitate S. Benedicti, hanc arripuimus occasionem, ut doctis viris consilium nostrum aperiremus de evulgando secundo libro, qui de rebus gestis tanti Patris agit. Consilium probavere, animum incitarunt, et veluti stimulos currenti addiderunt; inter quos præcipue illud Cassini decus, abbas Ludovicus Tosti, multo nos studio urgere cœpit ad hanc editionem festinandam, ut (eius verbis utor) quasi gemmula pretiosissima inter editos hac in festivitate libros splendesceret. Merito hic quoque iuvat referre ad hæc nos maxime incitasse alterum Casinatem insignem, Maurum Cæsarem Quandel (2); cuius tam cari capitis desiderio immaturum obitum omnes, nos vero amici maxime, deploramus.

In novissima facie membranæ nunc male mulctata supersunt reliquiæ linearum, quibus gregoriana historia absolvitur, quas ipse Leo Allazio in apographo suo haud integras expressit, et lacunam reliquit. Sequebatur finalis inscriptio, cuius vel aliquot litterae apparent; ubi certe erat locus scriptionis et amanuensis nomen, ut ea quæ restant, ostendunt. Adhuc enim est, more codicum

- (1) Cf. in ephemeride Romana dicta Giornale Arcadico t. LVI. « Honori et memoriæ Theodori Toscani, monachi Basiliani ad S. Mariæ de Crypta Ferrata ellogium. »
- (2) Paucis ante eius mortem diebus in epistola sua nobis missa, certe nimium honorificis usus est verbis; quæ tamen veluti carum amici mnemosynon supremum, et animi valde comis et in Benedictum patrem pientissimi testimonium, liceat bona cum venia proferre: « Certo il lavoro è bellissimo, e trattato da lei « riuscirebbe perfetto. Se noi volessimo guardare al nostro gu-
- « sto ed al nostro interesse, perchè la gloria del Padre (S. Be-
- « nedetto) ridonda ad onore dei figli, la consiglieremmo a
- « progredire con alacrità »

illius ætatis et quorumdam Cryptensium, ut innuimus, magnum Christi monogramma P (1) et ad eius latera inscriptionis extrema verba litteris vel syllabis verticali ratione dispositis dextrorsum BIBAION Δ' et sinistrorsum Γ PA Ψ ANTO Σ ; unde satis aperte elucet epigraphen ex compositione sua et ex particula Δ E referri ad superiorem. Legitur enim:

+ ΕΤΕΛΕΙΩΘΉ ΔΕ Η ΒΙΒΛΟΣ ΑΥΤΉ ΜΗΝΙ ΑΠΡΗΛΙΩ ΗΚΑΔΗ Α ΕΤΟΥΣ (ΤΗ.

Idest ἐτελειώθη δὲ ἡ βίβλος αὖτη μηνὶ ἀπρηλίω (lege ἀπριλίω) ἡκάδη (lege εἰκάδι) πρώτη ἔτους έξακισχιλιοστοῦ τριακοσιοστοῦ ὀγδόου: Absolutus est autem liber iste mense Aprili die vigesima prima anni sexiesmillesimi trecentesimi octavi. Ut ab orbe condito annos enumerant Græci, hic annus 6308 anno Christi 800 respondet.

Præter novum tam pretiosi codicis textum, præter hanc magni habendam a palæographis notam temporis, etiam nova aliqua sunt sæculi octavi nondum edita cimelia in nostro codice, quæ rem litterariam amplificant atque exornant; duo nempe epigrammata in laudem S. Gregorii et S. Zachariæ, quorum opus in his historicis dialogis verbis extollitur ea ratione, qua tempus illud ferebat, et ab eodem scriptore codicis unciali charactere et literis capitalibus versuum rubris exarata.

Alterum habet acrostichidem TPHTOPIOY ME(ΓΑΛ)OY, alterum vero ZAXAPIOY IIATPIAPXOY. Haec quasi novam suppellectilem et ornamentum nunc primum edimus, addita versione metrica, quam vitæ monasticæ et studiorum collega Antonius Rocchi, ut et ad hoc pietatis monumentum symbolam ferret suam, voluit nobis grato munere donare. Ipse quoque litteras et verba, quæ cum membrana perierant, studuit feliciter supplere; supplementa uncis inclusa sunt.

(1) De Rossi et Pitra, et vide Prolegomena nostra ad Ss. Bibliorum Vetust. Fragment. 1877. § VIII, vide et superius p. XXI.

ΕΠΙΓΡΑΜΜΑ ΕΙΣ ΤΟΝ ΜΑΚΑΡΙΟΝ ΓΡΗΓΟΡΙΟΝ ΠΑΠΑΝ ΤΗΣ ΠΡΕΣΒΥΤΕΡΑΣ ΡΩΜΗΣ

Γανυται ωᾶς δ ἐντυγχάνων τῆ βίβλω, Ρημάτων γάρ οὺ ωροβάλλεται κομψίαν, Ηθη δε μᾶλλον ἀρετῶν ἐκδιδάσκει, Γαλήνην ψυχής και ήσύχιον βίον, Ορους τε γλώττης και χαλινόν δράσει. Ρίζα γαρ των αγαθών υπάρχει ταῦτα-Ισως δε και δογμάτων ούκ ἀπελείφθη. Ολη δὲ σοφῶς ωεωοίκιλται τῆ θέσει. Υφανε δ' αὐτην Γρηγορίου ή γλῶττα, Μέλη γαρ σοφων, κέντρα της εύβουλίας, Εμεινέν σκήτωτοντα τοῖς εὐσυνέτοις. [Γλισχρον] ἀκους ήν παντή (sic) μαστίγωσιν (sic), [Αὐδαί] γὰρ ώς βὸς (sic) κέντρα, φησί τις σεφῶν, [Λύγοις] μαςίγωσιν την ήμων [ἀργίαν]. Ού [τως οι λόγοι ωανσόφου Γρηγορίου Υποκευτοΐσιν εκχέουτες την χ]άριν.

EPIGRAMMA IN BEATUM GREGORIUM PAPAM VETERIS ROMAE

Lætatur, hunc librum si quisquam legerit, Non quod venustus exstet elegantia, Quin imo virtutis magis mores Pacemque spiritus et solitudinis, Linguæque limites, camumque luminum: Quæ cuncta radix sunt bonorum fertilis. Neque inde desunt sacra veri dogmata; Sed plura codex multiformis disserit. Quem lingua dives Gregorî contexuit. Proh! verba iusti, spiculum prudentiæ, Prudentis hærent ima fixa pectore; Pigrumque flagris, qui audit illa, verberant; Nam, ut quisquam ait, iusti loquela aculeus Pungit, foditque nos, bovum instar, desides, Et verba docti rursus ista Gregori, Dum pectus incitant, effluent gratiam.

Deinde sequitur alterum epigramma in Zachariam absque titulo; ni forte credas cum superiori membrana titulum abscissum fuisse.

Ζωής θησαυρός ἀπόχειται ἐνθάδε Αγίων σατέρων ἐνάρετοι βίοι, .Χεῖρας βέγοντες τοῖς κάτω κειμένοις. Αγών δε τοῦτο υπάρχει Γρηγερίου, Ρεϊθρα βλύσαντος ἐνθέων διδαγμάτων. Ιλαρώς προσιών τῷ λόγω τοῖς πᾶσιν. Ούτος δε πρώτος τῷ ὀνόματι τούτω, Υπάρχει τῆς Ρωμαίων πόλεως πάπας. Πόθω δε θείω και εναρέτω ζήλω Αγόμενος δ πάνσοφος Ζαχαρίας, Τοῦ κορυφαίου Πέτρου κοσμών τὸν θρόνον, Ρῶσιν ψυχαῖς καὶ [νόοις] σαρεχειν θέλων, Ιωσήφ άλλος άρτίως άνεδείχθη, Αρτον ζωτίς σιτοδοτήσας κόσμω, Ρωμαίων τῆ γλώττη τὸ[ν] ωρότερον ὄντα, Χριζοῦ τοῦ θεοῦ τοῦτον κεκινηκότος, Ολην την βίβλου τη έλλανίδι γλώττη Υφηγήσα[το] πᾶσιν έρμηνεύωσιν (sic).

Thesaurus hîc vitæ subest absconditus, Virtute Vitæ cœlitum Patrum inclytæ, Quæ ceu manu præbent opem mortalibus. Id vero magni Gregorî extitit labor, Qui sacra diffluit fluenta dogmatum; Lætusque more cum uteretur omnibus, Et primus hoc vocatus esset nomine, Summus iubetur Urbis almæ Pontifex. Atque inde cura sedula atque Numinis Succensus igne vir scitus Zacharias, supremæ principis Petri decus, Studensque vires ceu refundi mentibus, Recens Josephus extitisse cernitur, Vitæ ministrans panem ubique tritico, Aptum sed unis tum Latinis oribus, Christique tantum eum movente Numine, Volumen integrum sonos in Helladis, Ut rite cuncti interpretentur, transtulit.

In altera facie primi folii incipit Prologus in Dialogos, qui in editionibus quoque apparet; de eodem et superius verba fecimus.

Quidam iudicabant prologum istum aliquot post Zachariam sæculis fuisse concinnatum, recentioribusque codicibus tribuerunt; nunc vero cum illum habeamus eadem manu descriptum in codice sæculi octavi, nempe sæculi, quo ipse Zacharias vixit, longe maius fit pretium eius, plurisque habendae sunt laudes, quibus is ornatur a coævis suis. Quinimo ex hoc ipso credendus est hausisse et ipse Photius, cum in celebri suo Myriobiblion de hoc opere Zachariae Papae loquitur; nam annum septuagesimum, quum Photius præfectus imperatorius agens in Syria ea scriberet, iam in Italia prologus descriptus erat. Verba Photii cum iis prologi comparata satis aperte manifestant scriptorem illum byzantinum ex hoc prologo nonnulla hausisse (1). Observationes huiusmodi nonnihil ad rem litterariam illustrandam iuvare arbitrati eas non omittendas censuimus.

Haud certe fortuito, sed speciali quodam providentiæ beneficio evenit, ut dum mense Octobri anni superioris Bibliothecam Mediolanensem inviseremus, alium pretiosissimum codicem latinum Dialogorum eiusdem VIII. sæculi ante oculos nostros cl. Bibliothecæ præses poneret; hinc eo facilius animum induximus ad evulgandum hoc geminum cimelion de Benedicti vita, quorum alterum alterum illustrat et veluti absolvit.

In edendo graeci codicis textu fideliter codicem exprimere conati sumus; præcipuas varietates ex aliis codicibus nec non eas, quas codex habet emendationes et variationes vel animadversiones notatu dignas ad calcem pagellarum signavimus. Unde quantum per nos fieri posset, et temporis angustia, qua premebamur, concede-

(1) Verba proœmii et duo epigrammata superius edita, ut legentibus apparebit, videntur scripta sub pontificatu eiusdem Zachariæ. De aliis autem eius versionibus non hic, sed in *Mystagogia* Photius testatur. Vide supra pag. XV.

ret, omni studio contendimus, ut opus solemnitati dicatum minus incomptum indignumque editoris causa prodiret.

Varias lectiones nobis dedere Regius codex Parisiensis, Colbertinus, et Florentinus, quem etiam Angelus Quirini diligenter excussit, qui cum aliis Italicis et Gallicis ad editiones varias versionis Zachariae textum praebuerunt, criticasque varietates suppeditarunt.

Inter editiones eminent Romana anni 1591, Gallica PP. Maurinorum anni 1705, Veneta Angeli Quirini anni 1723, Veneta alia I. Baptistae Galliccioli anni 1769, nec non alia Gallica in Patrologia a Petro Migne collecta anno 1866.

Ad exornandum et confirmandum graecum textum nonnulla ex graecis fontibus adiecimus, ut in textu latino, biblica, theologica historica, patristica, hymnographica, quae tum ad studia et pietatem evehenda, tum ad laudes Benedicti illustrandas conferre videbantur.

Hoc pacto tum operis gregoriani et versionis Zachariæ, tum editionis nostrae graecae et latinae ratio lectoribus piisque Benedicti cultoribus aperta est. Quanti faciendum sit monumentum istud geminum in laudem S. P. N. Benedicti ex iis, quae hucusque disseruimus, omnibus certe manifestum est. Hinc nos et animum sumpsimus alacriorem ad hanc festivam ac veluti votivam editionem exornandam, quantum et ingenii vis et industria concesserat.

Nobis pergratum fuit ad opus suscipiendum, ornandum ac festinandum, non modo virorum doctrina, pietate et fama praestantium stimulos hortationesque suscipere, sed illud maxime animum addidit, viresque auxit, quod summus rerum catholicarum antistes, Leo XIII. Pont. Max. qui tanta doctrinae et zeli laude celebratur, et tanto favore studiorum incrementa prosequitur, non modo ad humile opus nostrum benigne respexerit, pro benignitate sua probaverit, et apostolica benedictione roboraverit, sed ut cumulum tot beneficiis adiungeret, concessit illud nomini suo augustissimo nuncupari. Certe hoc opere pontificali, nomine iam duorum decessorum eius tanta fama in ecclesia celebrium, nunc alius meritissimi Pontificis insigni, catholicis viris venerabilius nihil, nihilque acceptius in S. Benedicti festivitatibus contingere potest. Nos autem nihil honorificentius, gratiusve desiderare poteramus. Ad hoc autem beneficium impetrandum maxime valuit tum benignitas Pontificis, eiusque zelus erga Vaticanam Bibliothecam, ex cuius thesauris ex parte habemus monumentum, et amor paternus in monasterium hoc Cryptoferratense; tum etiam cura E. V. Laurentii Nina primi Pontificis administri, et congregationis Basilianae apud S. Sedem Protectoris (1).

Mihi vero iam a pueris in coenobio benedictino S. Pauli de Urbe instituto, magistro Mariano ab. Falcinelli

(1) Roma 22 Gennaio 1880-Rão Padre-Mi è grato significare alla P. V. Rão che il S. Padre aderendo di buon grado alla di Lei preghiera, si è degnato accettare la dedica dell'opera che va Ella a publicare intorno a S. Benedetto. Dopo ciò ritornandole il foglio da Lei esibito con sensi di distinta stima passo a confermarmi della P. V. Rão affão nel Signore L. CARD. NINA.

postea S. R. E. Cardinali, certe magis magisque laetandum est, cum inter gaudio gestientes Benedicti filios, mihi graeci ritus et Basilianae regulae asseclae sors et honor obtigit hoc veluti monumentum et pignus amoris ad sepulcrum magni Patris in Cassino monte obferre; atque ibidem una cum sociis meis exempla renovare Nili patris, graecis quoque ritibus et canticis Nilianis (1) festum

(1) Celebrata solemniter missa hymnis absolutis, oblatus est Abati Cassinensi codex membranaceus canticorum S. Nili exaratus a Ma-ximo Passamonti mon. Cryptæferratæ, in quo epigraphe legitur:

Μέγας ο Νεϊλος· μεν πάλαι προς ος έων Θήκην, Πάτερ σῶν οντως ΕΥΛΟΓΗΜΕΝΕ, Κασσῖνον οὖρος ἐκ τῆς Βαλλελουκίου Μονίζς σεωτεύσων είσέβη κεχαρμένος. Ος μεν τυπώσας τρός σε την ύμνωδίαν Καλην γλυκεΐαν άνδρος εύσεβες άτου, Καὶ θαυμάτων σου ωραϊσμένην βίου, Πρό του σορού σου συμμελών μετ' άγγελων Σύν τοῖς ἀδελφοίς ἦσε αύτοῦ ρυθμίσας Τὸν αὐτὸν ὅμνον, ἐκγραφέντα Μαξίμου Μονας οῦ ἱερῆος χειρὶ καὶ πόνω. Δέξαι, τανύντε ένθα σοι μελισμένον Από φθάνοντος τοῦδε Νείλου ποιμνίου Εκ Κρυωτοφέρδης σην γεραίροντος πόθω Μνήμην, Μακαρτε, ώδαῖς και λειτουργίαις. Τοίνυν τὸν υμνον και λιτὰς δέχου, πάτερ, Είς τοῖς τόχοισι σύν νοητοῖς σου νόων Είς καρδιών τε δεϊξιν άμματισμένων.

Αφιερώθη τῷ ὀσίῳ ϖατρὶ ἡμῶν Βενεδίκτῳ ἀπὸ τοῦ Ηγουμένου Ιωσὴφ καὶ τῶν μοναχῶν τῆς Κρυπτοφέββης, τελεσθείσης τῆς σεπτῆς λειτουργίας ϖαρὰ τοῖς ἀγίοις αὐτοῦ Λειψάνοις τῇ ε΄ τοῦ Αϖριλίου μηνὸς ἔτους ζτπη΄.

«Magnus quidem Nilus ad urnam exuviarum tuarum, o Pater vere Benedicte, ad Cassinum montem e monasterio Vallis Lucis veneraturus lætus olim adscendit. Qui cum rhythmice contexuisset in tui honorem dulcem melodiam, opus viri pientissimi, eamdemque miraculis vitæ tuæ exornasset, ante sepulcrum tuum, Angelis concinentibus, una cum fratribus suis modulatus est. »

«Hunc ipsum hymnum, exscriptum manu et labore Maximi hieromonachi, accipe, heic rursus tibi concentum a monachis ipsius Nili, qui e Cryptæferratæ cænobio huc advenerunt, tuam-

solemne Benedicti agere universi pene orbis eo in loco, quo nullus alius sanctior et nobilior et aptior habetur. Hac felici occasione visi sunt monachi orientales cum occidentalibus congaudere, et festa veluti domestica utriusque familiae concelebrare.

Laudatores quidem dignitate maiores, aut sanctitate praestantiores, doctrinave magis conspicuos certe nec desiderare neque invenire potuissemus: quae sors vel donum cœleste, ut principio innuebamus, iure meritoque Benedicto obtigit. Duo enim Romani Pontifices summi, virtutum et litterarum gloria excellentes, veluti collatis viribus eum extollunt. Ii ab orientalibus vel genere vel institutis ecclesiae catholicae et Romanae cathedrae dati, Occidenti consulunt et Orienti beneficia et merita abunde rependunt.

De instituto monastico S. Gregorii Magni diu disceptatum est inter eruditos (1); Zacharias quoque e monachis in diaconum Cardinalem assumptus, etsi in Lateranensi cœnobio aliquandiu vixerit, tamen e graeca veniebat origine, et patria S. Severina in Calabris. Quidquid vero sit de istiusmodi quaestionibus, quasi vanis genealogiis, monente Paulo, vitandis, ut ipse Magnus Benedictus patrem suum appellat Basilium Magnum (2), sic et Basilii asseclae, nosque praesertim ducibus SS. Monasterii fundatoribus Nilo et Barptolomaeo (3) Benedictum appel-

que, o Beatissime, cum odis et sacris memoriam celebrarunt. Suscipe igitur, o Pater, hymnum et preces, ceu iunctorum cum spiritualibus filiis tuis mentium cordiumque monumentum.»

«Dicatus fuit (liber) S. P. N. Benedicto a Iosepho hegumeno et monachis Cryptæferratæ, divinis exactis mysteriis, ad sanctum ipsius corpus die V. mensis Aprilis anno a creatione mundi septiesmillesimo trecentesimo octogesimo octavo, a nativitate vero Christi millesimo octingentesimo octogesimo.»

- (1) Præter Baronium cum Gallonio, Bellotti, Gaetani consulendi sunt auctor vitæ S. Gregorii ex eius scriptis, Bollandiani, Maurini, Menniti etc.
- (2) Regul. cap. LXXIII.. et Regula S. Patris Nostri Basilii quid aliud sunt, nisi bene viventium monachorum instrumenta virtutum? Cf. et adnotationes.
- (3) In vita S. Nili a B. Barptolomæo descripta pag. 125, etc.

lamus patrem et habemus. Quinimo ex ipsis verbis S. Nili ad sepulcrum illius in Monte Cassino decantatis manifestum est sibi suisque Regulam Benedictinam idem esse ac Benedicto suisque Regulam Basilianam. In veneratione itaque magni Patris, sanctis nos ducentibus quasi una monastica societate unimur. Benedictus quoque a græcis Archimandrita Romæ appellatus (1) pastor noster est, qui, ut proclamat Bernardus, pascit vita, pascit doctrina, pascit intercessione (2). Hoc unum magnopere studeamus, ut sicut Patres nostri fuerunt, et nos eorum exemplo simus, imitatores Christi atque aemulatores Sanctorum.

Oriens et Occidens gestientes concertare videntur in laudibus S. Patris N. extollendis, ita ut hac in festivitate christianus orbis, qua patet ab ortu ad occasum, Benedicti plausibus resultet. Et Benedictus tantis et usque matoribus in saecula cumulatus obsequiis praesidium suum et institutionum suarum charitatem ad utrasque orbis christiani gentes intentius convertat.

Hinc praeterea non solum Benedicto maximum decus est; verum etiam duobus Pontificibus et Romano Pontificatui, decus quoque est institutis tum occidentalium ascetarum, quorum pater laudatur, tum orientalium, ex quibus laudatores maximos nacti sumus. Quod haud sine cœlesti consilio factum esse videtur, ut illud Spiritus sancti effatum et omen impleretur: - Laudet te alienus, et non os tuum (Prov. XXVII.). Ac proinde tanta laus ab iis accepta, qui in veneratione erga S. Patrem cum discipulis eius vel concertant vel certe ex animo sociantur, maior usque est et plenissima.

(2) Serm. in S. Benedictum § 6.

⁽¹⁾ Basilius Imp. Porphyrogenita in Menologio Græcorum t. III. ex celebri codice Cryptensis B. γ. III. evulgato Urbini 1727 cum versione Demetrii Titi Abb. Cryptensis iussu Clementis XI. habet: Μηνὶ τῷ αὐτῷ (Μαρτίῳ) ΚΑ΄. μνήμη τοῦ ὁσίου πατρὸς ἡμῶν Βενεδίκτου ἀρχιμανδρίτου Ρώμης. - Mense eodem (Martio) die XXI. Memoria S. P. N. Benedicti Archimandritæ Romæ. - Piacentine De sep. Bened. IX. p. 13. Vide etiam adnot. cap. XXXVI.

ΒΙΟΣ

ΤΟΥ ΟΣΙΟΥ ΠΑΤΡΟΣ

BENEAIKTOY

VITA

SANCTI PATRIS

BENEDICTI

ΤΡΙΓΟΡΙΟΥ ΤΟΥ ΑΓΙΩΤΑΤΟΥ ΚΑΙ ΑΠΟΣΤΟΛΙΚΟΥ ΠΑΠΑ ΤΗΣ ΠΡΕΣΒΥΤΕΡΑΣ ΡΩΜΙΙΣ ΠΡΟΣ ΠΕΤΡΟΝ ΑΡΧΙΔΙΑΚΟΝΟΝ ΚΑΤΑ ΠΕΥΣΙΝ ΚΑΙ ΑΠΟΚΡΙΣΙΝ ΠΕΡΙ ΤΗΣ ΠΟΛΙΤΕΙΑΣ ΤΟΥ ΑΓΙΟΥ ΠΑΤΡΟΣ ΗΜΩΝ ΒΕΝΕΔΙΚΤΟΥ 1.

ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ².

Ανήρ τις ύπηρχεν,³ τη πολιτεία μεν εύλαβέστατος, χά-ριτι δε θεοῦ κεκοσμημένος, τοὖνομα Βενέδικτος ος ἐκ παι-δόθεν τη της καρδίας καθαρότητι ἐλαμπρύνετο, καὶ τη τοῦ σώματος άγνεία κεκαλλώπιστο, ἐν οὐδενὶ θελήματι σαρκικῷ⁴ τὸ παράπαν την ψυχην καθυποτάξας ἀλλ' ἔτι ἔφηβος⁵ ὧν καὶ σφριγῶν τῷ⁶ σώματι ὅπερ ἡδυπαθῶς δρᾶσαι ἡδύνατο; ἑκουσίως ἐβδελύξατο, καὶ λοιπὸν ὡς ξηρὸν τοῦτον τὸν κό-σμον μετὰ τοῦ ἀνθους αὐτοῦ ἐλογίζετο. Οστις δίκην έωσφόρου ἀστέρος ἐκ τῆς Νουρσίας χώρας τῆ τῶν Ρωμαίων χώρα ἀνέτειλεν· τῆ δὲ τῶν ἐλευθερικῶν γραμμάτων διδαχῆ

1) Insignis codex sæculi VIII. qui fuit olim Bibliothecæ Cryptæ ferratæ Δ. Δ. nunc Vaticanus græcus num. 1666. unciali charactere descriptus fol. 42 titulum secundi libri Dialogorum S. Gregorii M. quos S. Zacharia papa in græcum convertit, sic habet. In Cod. Colbertin. Γρηγερίου τοῦ ἀγιωτάτου καὶ ἀποστολικοῦ πάπα τῆς πρεσβυτέρας Ρώμης διάλογοι ἰστορικοὶ πρὸς Πέτρον διάκονον κατὰ πεῦσιν καὶ ἀπόκρισιν περὶ τῆς πολιτείας τοῦ ἀγίου ωατρὸς ἡμῶν Βενεδίκτου. In Cod. Parisiensi tantum: βιβλίον δεύτερον περὶ Βενεδίκτου, et in margine superiori ab eodem scriptore: ἀναγινώσκεται ἡ ἰστορία τοῦ πατρὸς Βενενδίκτου εἰς τὴν ιδ΄ τοῦ Μαρτίου μηνὸς τότε ὁ ἄγιος ἐκοιμήθη. — 2) Deest aliquando nomen — 3) ὑπῆρχεν alii ὑωῆρχε, sic et frequens est codici usus in fine verborum elementi ν, quod paragogicon vel ephelcysticon vocant — 4) In Flor. deest σαρκικῷ — 5) male codex ἔφιβος. Iotacismus ex usu pronunciandi ι pro η — 6) Cd. Colb. σφριγγωτάτω.

DE VITA ET MIRACULIS VENERABILIS
BENEDICTI CONDITORIS VEL ABBATIS
MONASTERII QUOD APPELLATUR ARCIS
PROVINCIAE CAMPANIAE¹

GREGORIUS²

Fuit vir vitæ venerabilis gratia, Benedictus nomine³, ab ipso pueritiæ suæ tempore cor gerens senile. Ætatem quippe moribus transiens nulli animum voluptati dedit; sed dum in hac terra adhuc esset, quod⁴ temporaliter libere uti potuisset, dispexit⁵ jam quasi aridum mundum cum flore. Qui liberiori genere⁶ ex provincia Nursia⁶ exortus, Romæ liberalibus litterarum studiis traditus

1) Codex Ambrosianus B. 159. super. olim Bobiensis, sæculi VIII. more vetustissimorum codicum, fol. 48, in titulo habet: Explic: cap: libri primi - Incipit l. secun. nempe dialogorum S. Gregorii M. In hoc codice titulus erasus et rescriptus est a manu seriori — 2) Nonnumquam in Dialogo desiderantur nomina colloquentium. Manus serior, sed vetus hinc addit notas numerales in margine: sed prima manus a cap. I. notas, quae respondent capitulis, apposuit; quasque in hac editione retulimus, ut vides inferius ad Cap. I. - 3) Codices quidam habent et nomine, sed in Ambr. deest et -4) Alii quo pro quod -5) Cod. Ambr. sic disp.. pro desp.. Codicis scribendi rationem plerumque servavimus; cum enim adeo vetustus sit, ad philologiam non immerito conferre potest — 6) Cod. Bessarionis Venetus habet cum suo flore. Qui liberiorum genere. Quidam nomina parentum S. Benedicti fuisse Eupropium et Abundantiam ex Petro diacono casin. l. 2, De Vir. ill. Cass. perhibent. Sed de his non immerito dubitat cl. Della noce in notis ad vitam S. Bened. — 7) In fine rasuram habet: fortasse aliquando Nursice scriptum est.

παραδοβεις ύπηρχεν. Αλλ' έν τούτοις πολλούς ἀπιέναι δια τὰ φβαρτὰ πάβη κατανοήσας, ἐκεῖνον ον ἔθετο πόδα ἐν τῆ τῶν μαθημάτων διαβριβὴ, εὐσεβεῖ λογισμῷ τοῦτον ἀνθήλ-κυσεν ἴνα μὴ εἰς ἀνήκαστον κρημνονὶ ὅλως καταπέσειεν.² Βδελυξάμενος τοίνυν τῶν γραμμάτων τὴν διδαχὴν, καταλείψας τε τὸν οἶκον καὶ τὰ πατρῷα αὐτοῦ πράγματα, μόνῷ Θεῷ ἀρέσαι ἐπιβυμήσας, τοῦ ἀγίου καὶ μονήρους βίου τὸ σχήμα ἐπεπόθησεν. Απέστη τοίνυν τῆς τῶν γραμμάτων παιδεύσεως, γινώσκων ώς μὴ γινώσκων, καὶ σοφὸς ὡς ἀσοφος.

Τούτου τοῦ σεβασμίου πατρὸς τὰ κατὰ Ξεὸν κατορθώματα ἐγὰ μὲν σαρκικοῖς ὀφθαλμοῖς οὐ τεΞέαμαι, ἀλλ' ἄπερ ἀκήκοα παρὰ τεσσάρων αὐτοῦ τὸν ἀριΞμὸν μαΞητῶν διηγουμένων, ταῦτα ἐρῶ. Κωνσταντίνου λέγω δὴ εὐλαβεστάτου πάνυ ἀνδρὸς, ὅστις αὐτοῦ τὴν ποιμαντικὴν ἡγεμονίαν διεδέξατο. Βαλεντίνου, τοῦ πολλοῖς ἔτεσιν τὴν ἐν Λατεράνη³ εὐαγεστάτην μονὴν διϊΞύναντος. Συμπλικίου, τοῦ τὴν αὐτοῦ συνοδίαν μετέπειτα κατὰ διαδοχὴν τρίτου ποιμάναντος. Ονωράτου, τοῦ νυνὶ τοῦ κελλίου αὐτοῦ ἐν ῷ πρότερον διῆγεν, προεστῶτος.

1) Alii codices μή τι εἰς ανήκεστον κρημνὸν. Cd. Paris. εἰς ἀωέραντον. Cd. Florent. εἰς τὸν τῆς ωλάνης κρημνὸν — 2) Cd. Colb. κατασεσεῖν — 3) Cd. Colbert. τὴν Λατερανῶν — 4) Cod. Paris. et alii τρίτον — 5) Cd. Flor. τὸ πρότερεν.

Ad hæc proæmii verba adiicimus παράλληλα. S. Nilus. Od.¶X. ait: Ωσπερ ἀστηρ έωσφόρος ἐν τῆ δύσει ἀστράψας. Tamquam stella orientalis in occidente coruscans.. Od. I. Βίον ήγνισμένον ἐκ βρέφους ποθήσας σαυτὸν ἀνάθημα Χριστῷ προσήγαγες.... Βενέδικτε καύχημα Λατίνων. Vitam castam ab infantia desiderans teipsum oblationem Christo adduxisti, Benedicte, gloria Latinorum. Inni p. 14. Χαίροις Ρωμαίων φωστηρ. Salve Romanorum lumen. S. Ιοseph hymnograph. stich. 1. Κόσμον ἀρνησάμενος ἐκ βρέφους χαίρων ἦκολούθησας τῷ σταυρωθέντι Χριστῷ. Mundo relicto puer gaudens secutus es Christum crucifixum. Od. I. 2. τὸν σὸν ἐκ βρέφους ἀράμενος ςαυρὸν.. a puero suscipiens crucem tuam.

fuerat¹. Sed cum in eis multos² ire per³ abrupta vitiorum cerneret, eum quem quasi in ingressum⁴ mundi posuerat, retraxit pedem; ne si quid de scientia ejus attingeret, ipse quoque postmodum in inmane præcipitium⁵ totus iret. Dispectis itaque litterarum studiis, relicta domu rebusque patris, soli Deo placere desiderans, sanctæ conversationis habitum quæsivit. Recessit igitur scienter nescius, et sapienter indoctus.

Hujus ego omnia gesta non didici⁶, sed pauca quæ narro, quattuor discipulis⁷ illius referentibus agnovi: Constantino⁸ scilicet⁹ reverentissimo valde viro, qui ei in monasterii¹⁰ regimine successit; Valentiano quoque, qui annis multis Lateranensis monasterio praefuit; Simplicio, qui congregationem illius post eum tertius rexit; Honorato etiam, qui nunc adhuc cellae ejus, in qua prius conversatus fuerat, praeest.

1) Alii traditus a parentibus fuer.. Cf. opus viri principis Massimo de S. Benedicto. Praeterea consulendus esset Mirtz Chro. nic. Sublac. ineditum cum accessionibus Mauri a valentano, et Tabulas annal. Sublac. aliosque scriptores Benedectinos, MABIL-LON, QUIRINI, MEGE, BINI, TOSTI, etc. — 2) Prius moltos postea multos — 3) Super rasura a 2. m. sunt elementa ire per abrupta. 4) Alii codices ingressu — 5) Prius praetip.. emendatum praecip.. 6) Vetustior manus dedici — 7) Prius discipolis postea discipulis; sic et alias scriptum est verbum in codice - 8) Cod. Bessarionis Constantio —9) Prius scel., postea scil.. — 10) Verba sequentia monasterii regimine successit; Valentiano quoque qui annis multis Lateranensis a prima manu omissa sunt; sed a coaeva suppleta. A-prima manu monasterio, postea in supplemento monasterii. In nomine Valentiano alterum a retractatum est ab alia manu, nec certum est utrum legeretur aliquando Valentino, ut quidam codices. Utraque lectio in aliis codd. extat. Sunt qui et Valentiniano legunt. Pro Lateranensis alii habent Lateranensi.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ A'.

Περί τοῦ κλασθέντος μαγιδίου, και διὰ προσευχής τοῦ άγίου σώου γεγονότος.

Οὖτος τοίνυν ὁ πολὺς¹ ἐν ἀρεταῖς διαλάμψας πατήρ Βενέδικτος, ὡς ήδη καταλείψας τὴν τοῦ βίου ματαιότητα, ἐπιθυμίαν Βεάρεστον εἰσδέχεται τῆ ψυχὴ οἰκησαι τὴν ἔρημον ἡ δὲ τούτου τροφὸς ἥτις αὐτὸν ϖάνυ² Βερμῶς ἡγάπα, μόνη τῷ ἱερῷ τούτῷ ἡκολού Βησεν νεανία. Οπόταν δὲ τὸν τόπον κατέλαθον, τὸν ἐωιχωρίως όνομαζόμενον Εφείδε,³ πολλοὶ εὐλαθέστατοι ἄνδρες, τῆ πρὸς αὐτὸν πνευματικῆ ἀγάωη ἑλκόμενοι ἐκεῖσε παραγενόμενοι, ἐν τῷ τοῦ άγίου Πέτρου ναῷ σὐν αὐτῷ διέτριβον.

- Α΄. Η προλεχθεῖσα τοῦ ἀοιδίμου τούτου πατρὸς Βενεδίκτου τροφὸς ἐπὶ τὸ καθαρίσαι σῖτον ἐκ τῶν πόρρωθεν
 οἰκουσῶν γυναικῶν, ἐν χρήσει μαγίδιν ἡτήσατο ὅπερ λαβοῦσα, ἐπάνω τῆς τραπέζης ἀπλῶς καὶ ὡς ἔτυχεν ἔθετο.
 Υπὸ τοῦ μισοκάλου οὖν δαίμονος ριφὲν ἐκλάσθη, καὶ εἰς
 μέρη δύο εὐρέθη διαχωρισθέν. Υποστρέψασα οὖν ἡ τοῦ άγίου τροφὸς, καὶ εὐροῦσα τὸ αὐτὸ μαγίδιν εἰς δύο διαιρεθὲν
 μέρη σφοδροτάτως ἡρξατο κλαίειν, ὅτι τὸ ἐν χρήσει ληφθὲν
 παρ' αὐτῆς σκεῦος κεκλασμένον ἑόρα. Βενέδικτος δὲ ὁ σπουδαιότατος καὶ Θεοῦ θεράπων, ἡνίκα τὴν ἑαυτοῦ τροφὸν
 κλαίουσαν ἐθεάσατο, τῷ πόνῳ καὶ τοῖς δάκρυσιν αὐτῆς
 συμπαθήσας, λαβών μεθ' ἑαυτοῦ τὰ ἀμφότερα τοῦ κεκλασμένου μαγιδίου μέρη, ἑαυτὸν μετὰ δακρύων ἐν τῷ πρὸς
 Θεὸν δεήσει ὑπέστρωσεν. Οστις ἀπὸ τῆς εὐχῆς ἀναστὰς,
- 1) Codd. Paris. et Colbertinus male $\pi c\lambda \lambda c\tilde{\iota}_{\zeta}$ pro $\pi c\lambda \tilde{\iota}_{\zeta} 2$) In quibusdam Codicibus deest $\pi \acute{\alpha} \nu \nu 3$) Nomen oppidi quidam scribent $\text{Ev}\varphi \tilde{\iota}_{\zeta} \tilde{\iota}_{\zeta}$, alii $\text{E}\varphi n \delta \tilde{\iota}_{\zeta}$, in nostro codice $\text{E}\Phi \text{EI}\Delta E 4$) Hinc in codice notæ numerales incipiunt, quæ respondent indici capitulorum seu sectionum libro Dialogorum præfixo; ex quo indice suis locis apponimus ex codice -5) Codex male $\acute{\alpha} c \iota \delta \acute{n} \mu c \nu$, sic et alias adsunt in Cd. varietates ex simili pronunciandi ratione, ut $\chi \rho \acute{\iota} \sigma \epsilon \iota$ et $\mu \alpha \gamma \acute{\iota} \delta n \nu$, quæ omnia recensere supervacaneum est -6) Cod. male $\iota \acute{n} c \sigma \tau \rho \acute{\epsilon} \psi \alpha \varsigma$ $c \iota \acute{\nu} \nu 7$) Cod. $\iota \acute{\epsilon} \delta \rho \alpha$ pro attico atque usitatiori modo $\iota \acute{\epsilon} \omega \rho \alpha$ hic habet et alibi.

CAPUT I.

De capisterio fracto et solidato1.

I. Hic itaque cum jam relictis literarum studiis petere deserta decrevisset, nutrix quae hunc arctius amabat, sola secuta est. Cum ad locum venissent, qui Efide² dicitur, multisque honestioribus viris caritate se illic detenentibus, in beati Petri³ ecclesia demorarentur, praedicta nutrix illius ad purgandum4 triticum a vicinis mulieribus praestari sibi capisterium petiit, quod super mensam incaute derelictum, casu accedente⁵ fractum est, sicque ut in duabus partibus inveniretur divisum. Quod mox ut rediens nutrix illius invenit, vehementissime flere coepit, quia vas, quod praestitum acceperat, fractum videbat. Benedictus autem religiosus et pius puer cum nutricem suam flere conspiceret, ejus dolori conpassus, ablatis secum utrisque fracti capisterii partibus, sese cum lacrimis in orationem dedit: qui ab oratione surgens ita juxta se vas sanum repperit, ut in eo fracturae inveniri6 vestigia nulla potuissent. Mox autem nutricem suam blande⁷ consolatus ei sanum capisterium

¹⁾ Quidam consolidato. Alii De capisterii fracti reparatione. Verba cuiusque capituli ex Cd. Ambr. hic habes, etsi varia ab illis, quae in aliis sunt. Notas numerales 2. manus, de quibus supra diximus (pag. 3), in adnotationibus referimus; et hic notam II. a 2. m. in textu, prius vero I. in margine a 1, m. additas, quae respondet indici capitulorum — 2) Fide 1. manus, sed 2. manus fecit Efide. Alii codd. Enfidus, Fide, Enfide, Effide— 3) Alii addunt Apostoli — 4) Prius porcandum, postea purgandum — 5) acced.. postea accid.. — 6) Prius invenire — 7) blande Prius plande.

πλησίον ξαυτοῦ τὸ σκεῦος κείμενον, ἀκέραιον εὖρεν, ὥστε μηδὲ ἴχνος ἐν αὐτῷ τοῦ κλάσματος εὐρεβηναι· εὐβέως δὲ τὴν τροφὸν αὐτοῦ παρακλητικοῖς τε καὶ παραινετικοῖς λόγοις ἐπαλείψας, τοῦ μὴ ἀβυμεῖν ἐν ταἰς συμβαινούσαις συμφοραῖς, ἀκέραιον αὐτῆὶ τὸ μαγίδιν ἀποδέδωκεν, ὅπερ κεκλασμένον ἢν λαβών. Τοῦτο τὸ ἐξαίσιον βαῦμα ἐν τῷ αὐτῷ τόπῳ πᾶσιν ἐγένετο γνώριμον· ὥστε οἱ τοῦ τόπου ἐκείνου οἰκήτορες ἐν τῷ εἰσόδῳ τῆς αὐτόθι ἐκκλησίας τὸ ἡηθὲν μαγίδιν ἐκρέμασαν, πρὸς τὸ βεαβῆναι ὑπὸ πάντων τῶν εἰσιόντων καὶ ἐξιόντων εἰς δόξαν μὲν Θεοῦ, ἔπαινον δὲ τοῦ γνησίου αὐτοῦ δούλου Βενεδίκτου, καὶ τοῦ γνωσβῆναι πᾶσιν τὴν ἐν αὐτῷ οἰκοῦσαν ἐκ νεαρᾶς ἡλικίας θείαν χάριν. Οπερ σκεῦος πολλοῖς ἔτεσιν ἐν αὐτῷ τῷ εἰσόδῳ τοῦ σεβασμίου ναοῦ κρεμάμενον διήρκεσεν· ὥστε καὶ μέχρι τῆς τῶν Λαγγοβάρδων² ἐλεύσεως ὑπὸ πάντων ἐβεωρεῖτο.

Αλλό φιλό βεός τε καὶ μισόδοξος Βενέδικτος, πλειόνως τοῖς σωματικοῖς έαυτὸν ἐπεδίδου κόποις, βέλτιον εἶναι λογισάμενος τούτοις ἐντρυφᾶν, ἤπερ³ τοῖς ἀνθρωπίνοις ἐπαίνοις ἐπαίρεσθαι. Εἶτα τὴν ἰδίαν λάθρα καταλειπών⁴ τροφὸν, ἐν τοῖς τῆς ἐρημίας τόποις σχολάζειν ἡρετίσατο· καὶ καταλαβών⁵ τόπον τινὰ, ὁν ἐπιχωρίως ὀνομάζουσιν Λάκκον, ὁς ἀπὸ τεσσαράκοντα μηλίων τῆς τῶν Ρωμαίων διάκειται πόλεως, ἐν ῷ πληθὺς ὑδάτων ἀναβλύζειν εἴωθεν, ἐξ οὖπερ Λάκκου ἡ τιν ὑδάτων πληθὺς εἰς διεξόδους ῥυάκων ἀποφέρεται. Εν δὲ τῷ πορεύεσθαι τὸν τοῦ Θεοῦ ἀνθρωπον, μοναχός τις, Ρωμανὸς τῷ ὀνόματι τοῦτον πορευόμενον θεασάμενος, καὶ ἐν ῷ τόπῳ ἀπείη καταμαθών, καὶ τὴν ἐπιθυμίαν αὐτοῦ ἐγνωκώς, τὸ

¹⁾ Cod. Paris. σῶον αὐτῆ — 2) Codices alii Λογγοβάρδων vel Λογγιβάρδων, sic etiam in aliis locis — 3) Cd. noster εἴπερ — 4) Cdd. alii καταλιπών — 5) Alii κατέλαβεν — 6) Cd. Paris. πορευθῆναι. 7) Cd. Paris. ἀπήει, - Flor. ἀπίει. S. Nilus, Ode III. Δείξας τὴν θείαν χάριν ἐτέλεσας μαγίδα κεκλασμένην, καὶ ἐν σπηλαίω κατώκισας εξ μῆνας καὶ τριάκοντα ὑποταττόμενος Ρωμανῷ Χριςοῦ θεράποντι. Divinam gratiam ostendens vas perfractum integrum reddidisti, et sex et triginta menses in spelunca commoratus es, Romano, Christi servo, subiectus.

reddidit¹, quod fractum tulerat. Quae res in loco eodem a cunctis est agnita, atque in tanta admiratione habita, ut hoc ipsum capisterium ejus loci incolæ in ecclesiae ingressu suspenderint;² quatenus³ praesentes et secuturi omnes agnoscerent, Benedictus puer conversionis⁴ gratiam⁵ ex quanta perfectione coepisset, quod annis multis illic ante oculos omnium fuit, et usque ad haec Longobardorum⁶ tempora super fores ecclesiae pependit.

Sed⁷ Benedictus plus appetens mala ⁸ perpeti ⁹ quam laudes: pro¹⁰ Deo laboribus fatigari¹¹, quam vitae hujus favoribus¹² extolli, nutricem suam occulte fugiens, deserti loci secessum petiit, cui Sublacu¹³ vocabulum est, qui a Romana urbe quadraginta¹⁴ fere milibus¹⁵ distans, frigidas atque perspicuas emanat aquas. Quae illic videlicet aquarum abundantia in extenso prius lacu colligitur¹⁶, ad postremum¹⁷ vero in amnem¹⁸ derivatur. Quo dum fugiens pergeret, monachus quidam Romanus nomine, hunc euntem repperit, quo tenderet requisivit. Cujus cum desiderium cognovisset, et

¹⁾ reddedit 1. m; sed alia antiqua reddidit — 2) Alii suspenderent.
3) Cod. Ambrosianus quatinus — 4) Alii conversationis — 5) Cd. Ambr. gratia. Male edd. a quanta Benedictus puer conversationis gratiam perfect.. — Prius carpissent, sed erasum est n. — 6) Longobarum 1. m; sed 2. superaddidit dor; denique alia antiqua Langobardorum—7) Ante Sed nota numer. III. a 2 m. — 8) Alii mala mundi—9) Prius pepeti sed emend. perpeti. Edd. arbitrio suo laudes ab hominibus quaerere — 10) Alii et plus pro—11) Prius faticari.
12) Prius faev.. sed erasum e—13) Alii Sublacus—14) Prius quatrag.. — 15) Deest alterum l in millibus. Alii milliaribus.
16) Prius collegitur..—17) Prius prostrem..—18) Prius amne

μεν μυστήριον εν αὐτῷ εφύλαξεν, βοήθειαν δε καὶ συνδρομην παρέσχεν αὐτῷ, ἐν οἶς ἀν ἡ χρεία ἀπήτει. Αμφιάσας αὐτὸν² καὶ τὸ τῶν μοναχῶν ἄγιον σχῆμα, καὶ κατὰ τὸ δυνατον διηκόνει αὐτῷ ἐν ταῖς σωματικαῖς χρείαις. Ο δὲ Αεόφρων ούτος άνηρ, εν τῷ αὐτῷ τόπῳ εν στενωτάτῳ σπηλαίω ξαυτόν καθεῖρξεν, καὶ ἐν τρισὶν χρόνοις, πλην Ρωμανοθ τοθ μοναχοθ, τοῖς ἀνθρώποις ἄγνωστος παντελώς ὑπῆρχεν. όστις Ρωμανός, ού μήκοθεν έν μοναστηρίω ύπο τον τοῦ Αδεοδάτου πατρός κανόνα διῆγεν. Αλλ' εὐσεδώς ὁ αὐτὸς τοῦ οἰκείου ἀββᾶ τὴν ὄψιν ὑπέκλεπτεν, τῆ ὥρα τῆς έστιάσεως, και δια βητών τινων ήμερών τῷ τοῦ Θεοῦ ἀν-Βρώπω Βενεδίκτω άρτον εκόμιζεν. Εκ δε του μοναστηρίου Ρωμανοῦ όδὸς οὐχ ὑπῆρχεν φέρουσα ἐν τῷ τοῦ ὁσίου σπηλαίω. διότι ύψηλότατος ύπεράνω θεν κρημνός ύπῆρχεν. άλλ' έκ τοῦ αὐτοῦ κρημνοῦ έν μακροτάτω σχοινίω ὁ Ρωμανός κατάγειν αὐτῷ τὸν ἄρτον εἶ Ξιστο. Εν ῷ σχοινίῳ σεμνον 4 κώδωνα έβετο, δι αὐτοῦ σημαίνων τῷ άγίφ τὴν αύτου παρουσίαν και την του άρτου παροχήν. Αλλ' ό των εύσεδων έχθρος και της άρετης επίδουλός τε και βάσκανος δαίμων, τῷ μὲν Ρωμανῷ διὰ τὴν τῆς ἀγάπης συμωαθῆ φιλοφροσύνην αντέκειτο, Βενεδίκτω δε τω σεβασμίω έφθόνει, διὰ τὴν τῆς χρείας ἔνδειαν, καὶ πρὸς Θεὸν εὐχάριστον γνώμην. Βουλόμενος οὖν ταύτην ἀμβλῦναι, καὶ εἰς ράθυμίαν αὐτὸν ἀγάγαι,6 ἐν μιᾶ τῶν ἡμερῶν, ἐν ἡ κατὰ τὸ σύνηθες ο Ρωμανός τον άρτον δια του είρημένου σχοινίου τῷ ὁσίῳ ἐπεδίδου, ὁ τῶν ψυχῶν ἡμῶν ἐχθρὸς, ῥίψας λίθον, τον κώδωνα συνέτριψεν. Ο τιμιώτατος δε Ρωμανός ταῖς πρεπούσαις κατά Θεον έωινοίαις, ούκ ἀπέστη τῆς θεαρέστου έκείνης διακονίας.

¹⁾ Alii habent συντρεφήν pro συνδρεμήν — 2) Quidam αὐτῷ. 3) Cod. Colbertin. Αδεοδάτου άγιωτάτευ πατρὸς — 4) Γro σεμνὸν Cod. Parisien. μικρὸν — 5) Cod. Parisiensis ἀπαλύναι pro ἀμβλῦναι — 6) Alii codices melius ἀγαγεῖν pro ἀγάγαι.

secretum tenuit, et adiutorium inpendit, eique¹. sanctae conversationis habitum tradidit², et in quantum licuit, ministravit. Vir autem Dei ad eundem locum perveniens, in arctissimo specu³ se tradidit, tribusque⁴ annis, excepto Romano monacho, hominibus incognitus mansit: qui videlicet Romanus non longe in monasterio sub Deodati patris⁵ regula degebat. Sed pie ejusdem Patris sui oculis furabate horas, et quem sibi ad manducandum subripere⁷ poterat, diebus certis Benedicto panem ferebat. Ad eundem vero specum⁸ a Romani cella iter non erat, quia excelsa desuper rupis9 eminebat; sed ex eadem rupe in longissimo fune religatum¹⁰ Romanus deponere panem consueverat; in quo11 etiam restim¹² parvum tintinabulum¹³ inseruit, ut ad sonum tintinabuli vir Dei cognosceret quando sibi Romanus panem praeberet, quem exiens acciperet14. Sed antiquus hostis unius caritati¹⁵ invidens et¹⁶ alterius refectioni¹⁷, cum quadam die submitti panem conspiceret, jactavit lapidem, et tintinabulum fregit. Romanus tamen modis¹⁸ congruentibus ministrare non desiit.

dirivatur— 1) Prius eiquae, sed postea a erasum est— 2) Prius tradedit; sic et alias — 3) Alii arctissimum specum— 4) Alii et tribus— 5) Alii Adeodati, alii Theodati. In cod. suppletum s in patris— 6) Alii furabatur— 7) subrepere 1. manus; sed postea subrip...—8) Codex habet specu— 9) Alii rupes— 10) Prius relegatum, postea relig..—11) Alii in qua pro in quo— 12) Cd. prius restim, postea restem, alii resti— 13) Cod. tent.. et tintinab.. sic etiam inferius pro tintinnab..—14) Prius accep.. alii accipiens ederet— 15) Prius caritate— 16) In cod. deest et. 17) Codex refectione scribit—18) Alii habent horis pro modis.

Οτε δε ηυδόκησεν ό παντοδύναμος Θεός τον μέν Ρωμανον τοῦ κόπου τῆς φιλοθέου¹ ἐκείνης ὑπηρεσίας καταπαῦσαι, την δει τοῦ μακαρίου πατρός Βενεδίκτου πολιτείαν είς πολλών ωφέλειαν έπιδεῖξαι, μη συγχωρήσας έπί πολύ τῷ μοδίω κρύπτεσθαι τὴν δι' αὐτοῦ² ἀπαστράπτουσαν τῶν Βαυμάτων θείαν χάριν, τοῦτον ὑπεράνω τῆς λυχνίας έθετο, ὅπως λάμψη πᾶσιν τοῖς οὖσιν ἐν τῷ οἰκῳ τοῦ Θεοῦ. Πρεσβυτέρω γάρ τινι μήκοθεν διάγοντι τοῦ σπηλαίου, ἐν ῷ ὁ ἀοίδιμος ἡσύχαζεν Βενέδικτος, έτοιμασίαν έαυτῷ δαψιλών βρωμάτων πεποιηκότι, έν τη τοῦ άγίου πάσχα έορτη, δι όπτασίας ό κύριος όφθηναι κατηξίωσεν, λέγων « Ιδού σύ, πρεσδύτερε, έδεσμάτων ωολυτέλειαν έαυτῷ έτοιμάζεις, ό δὲ δοῦλός μου Βενέδικτος ἐν ἐκείνω³ τῷ σπηλαίω διὰ την προς με 4 άγάπην λιμ $\tilde{\varphi}$ συνέχεται.» Οστις παρευθύ αναστας εν αύτη τη έορτη⁵ του άγίου σάσχα, μεθ' ώνσερ έαυτῷ ἦν⁶ ωεωοιηκώς ἐδεσμάτων, ἐν τῷ σωηλαίῳ ἐπορεύθη, καὶ τὸν τοῦ Θεοῦ ἄνθρωπον ἐν τοῖς τῶν ὀρέων κρημνοῖς, έν ταῖς διορυγαῖς τῶν κοιλάδων, ἐν ταῖς ὀπαῖς τῆς γῆς έζήτει, ον εν τῷ σπηλαίω εύρων ήσωάσατο. Γενομένης δὲ εύχης παρ' άμφοτέρων, εύλογήσαντες τον Θεον έκαθέσθησαν, θείοις λόγοις τὰς ξαυτῶν ἐκτρέφοντες ψυχάς. Αναστὰς ούν ό ωρεσθύτερος παρεκάλει τον ἄγιον, λέγων « Δεῦρο, σάτερ, μεταλάδωμεν τροφής, ότι σήμερον πάσχα έστίν.» Πρός ον αποκριθείς ό ανθρωπος του Θεου, είπεν. « Οίδα ότι πάσχα ἐστὶν, ὅτι θεωρησαί σε ήξιώθην.» Ηγνότει γὰρ ό όσιος, ότι άληθώς της άναστάσεως τοῦ κυρίου ήμῶν Ιησοῦ Χριστοῦ ή άγία⁸ έορτη ύπηρχεν. 9 Ο δε εύλαβέστατος πρεσβύτερος προς τον τοῦ Θεοῦ ἄνθρωπον εἶπεν. « Επ' ἀληθείας,

¹⁾ Alii Θεοφίλου — 2) Quidam ἐξ αὐτοῦ. Colb. τὴν δὲ αὐτοῦ.
3) Alii cdd. ὑπ' ἐκείνω. Sed cd. Paris. ἐν.. — 4) Cdd. quidam πρὸς ἐμὲ — 5) Quidam αὐτῆ τῆ ὥρα καὶ ἑορτῆ — 6) τοῦ πάσχα μεθ' ὧν παρ' ἑαυτῷ ἦν — 7) Cdd. ἐκάθισαν pro ἐκαθέσθησαν.
8) In aliis cdd. deest ἀγία. — 9) Ηæc S. Nilus commemorat monachis Cassinensibus (vita p. 132): Πῶς ὁ ἄγιος Βενέδικτος τὰς κυριακὰς καὶ τὰς ἑορτὰς νηστεύων, cὐδ' αὐτὸ πάσχα ἡπίστατο πότε ἐςίν; Quomodo S. Benedictus diebus quoque dominicis et festis ieiunans ignorabat etiam quo die Pascha ipsum esset?

Cum¹ vero jam omnipotens Deus et Romanum vellet² a labore requiescere,³ et Benedicti vitam ' in exemplo4 hominibus demonstrare, ut posita supra candelabrum lucerna claresceret,⁵ quatenus omnibus qui in domo Dei sunt luceret, cuidam presbytero longius manenti, qui refectionem sibi in Paschali festivitate paraverat, per visum Dominus apparere dignatus est, dicens: Tu tibi delicias praeparas, et servus meus illo in loco fame cruciatur. Qui protinus surrexit, atque in ipsa sollempnitate⁷ Paschali cum alimentis, quae sibi paraverat, ad locum tetendit, et virum Dei per abrupta⁸ montium, per concava vallium, per defossa terrarum quaesivit, eumque latere in specu repperit. Cumque oratione facta, et benedicentes Dominum omnipotentem consedissent, post dulcia vitae conloquia, is qui advenerat presbyter dixit: Surge, et sumamus cibum, quia hodie⁹ Pascha est. Cui vir Dei respondit dicens: Scio quod¹⁰ Pascha est, quia videre te merui. Longe quippe ab hominibus positus, quia die eodem Paschalis esset sollempnitas ignorabat. Venerabilis autem presbyter rursus asseruit, dicens: Veraciter hodie Resurrectionis Dominicae Paschalis dies est; abstinere11 tibi minime congruit, quia et ego ad hoc missus sum, ut

¹⁾ Initio nota num. IIII. in marg. a 2. m.—2) Videtur prius vellit; sed adest rasura in fine verbi—3) Alii quiescere—4) Alii habent exemplum—5) Prius scriptum fuit clarisceret, quatinus.
6) Prius cod. apparet pro apparere dignatus est—7) Cd. hic et inferius sollempnit.. scribit—3) Prius codex arupta—9) Prius hodiæ scriptum est—10) Alii scio quia—11) Prius absten..

πάτερ, σήμερον τῆς ἀναστάσεως τοῦ κυρίου ήμῶν ἡ ἡμέρα ἐστίν, καὶ νηστεύειν σε οὐδαμῶς άρμόζει. Καὶ γὰρ ἐγῶ ἐπὶ τούτῷ πρὸς σὲ ὑπὸ τοῦ Θεοῦ ἀπεστάλην,¹ ὅπως τῶν δωρεῶν αὐτοῦ ἀμφότεροι μεταλάβωμεν. » Εὐχαριστήσαντες οὖν τῷ Θεῷ, μετέσχον ἐκάτεροι τροφῆς. Τελεσθείσης δὲ τῆς πνευματικῆς εὐφρασίας, καὶ τῆς τῶν γραφῶν ἐπωφελοῦς διαλέξεως, ἀσπασάμενος αὐτὸν ὁ πρεσβύτερος,² ἀνεχώρησεν, δοξάζων τὸν Θεὸν ἐπὶ τῆ τοῦ δικαίου ἀκτημοσύνη.

Εν αὐτῷ οὖν τῷ καιρῷ βοσκοί τινες τοῦτον ἐν τῷ σπηλαίῷ κρυπτόμενον ἑορακότες, ἀμφιάσμασιν δερματίνοις ἐνδεδυμένον, ἐδόκουν θηρίον τι βλέπειν. Καταλαβόμενοι δὲ αὐτὸν Θεοῦ δοῦλον ὑπάρχειν, τὴν ἑαυτῶν βηριώδη γνώμην ἀποβαλόντες, εἰς συμπάθειαν μετετράπησαν. Διέθεεν οὖν ἡ ωερὶ αὐτοῦ ἔνθεος φήμη ἐν τοῖς γειτνιάζουσι τόποις: ὡς ἐκ τούτου λοιπὸν πλεῖστοι³ παρέβαλλον πρὸς αὐτὸν τὰς τοῦ σώματος χρείας ἐπιφερόμενοι: ὁ δὲ ὅσιος πατὴρ τοῖς πνευματικοῖς τούτους μαλλον διέτρεφεν διδάγμασιν, ⁴ ἡ τοῖς αἰσθητοῖς βρώμασιν.

1) Pro ἀπεστάλην alii ἐστάλην — 2) Codices Paris. γέρων pro πρεσβύτερος — 3) Cdd. πλεῖστοι παρέβαλλον, sed noster πείστοι παρέβαλον — 4) Alii cdd. conficiunt caput ad verbum διδάγμασιν, Cd. Flor. cum nostro addit ἢ τοῖς αἰσθητοῖς βρώμασιν.

Ad hæc capitis I. S. Nilus (Inni p. 12). Πάτερ Βενέδικτε ἔνδοξε, σὺ τὸν σταυρὸν τοῦ Χριστοῦ ἐωὶ ωμων ἀράμενος, κατοικεῖν ἐπόθησας ἐν σωηλαίοις καὶ ὅρεσιν καὶ ταῖς ἐρήμοις καὶ ταῖς ὁ παῖς τῆς γῆς, ἐν ἐγκρατεία, καὶ ωροσευχῆ ἐκτενεῖ, ἀκτημοσύνη τε ὅθεν ἐχρημάτισας τοῦ παντουργοῦ Πνεύματος ἀοίδιμε δοχεῖον τὸ εὕχρηστον. Gloriose pater Benedicte, subiiciens humeros cruci Christi, montes habitare et speluncas et deserta atque abdita terrae exoptasti in continentia, prece assidua et paupertate; unde effectus es bene aptum receptaculum Spiritus, qui omnia operatur, o celebrande.

dona omnipotentis Domini pariter sumamus. Benedicentes igitur Deum sumpserunt cibum ¹. Expleta itaque refectione et conloquio, ad ecclesiam presbyter recessit.

Eodem quoque tempore hunc in specu latitantem etiam pastores invenerunt: quem dum vestitum pellibus inter fructeta cernerent aliquam bestiam esse crediderunt: sed cognoscentes Dei famulum, eorum multi ad pietatis gratiam a bestiali mente mutati sunt. Nomen itaque ejus per vicina loca cunctis innotuit; factumque est, ut ex illo jam tempore a multis frequentari coepisset, qui cum ei cibos deferrent corporis, ab ejus ore in suo pectore alimenta referebant vitae.

1) Cod. cybum sic et cybos scribit pro cib.. ut supra — 2) Prius frutecto, postea fruct.. pro frut.. — 3) Prius cernerent — 4) Alii habent afferrent - s. Bernardus Serm. in S. Benedict. § 6.. tribus annis soli Deo notus, hominibus mansit incognitus. Fructum quidem multum tulit, sed in tempore suo.

De Efide nunc Afile, de Sublacu, de ecclesia S. Petri etc. confer praeter alia doctum eruditumque opus Jannuccelli - Memorie di Subiaco - Genova 1856.

Ad Cap. I. animadvertimus cum cll. Dachery et Mabillon Acta SS. Benedict: t. I. p. 2, secessum S. Benedicti referri ad annum 494 Christi, eius vero nativitatem ad annum 480. Iidem ibidem p. 74, ediderunt vitam S. Romani a Gisleberto descriptam. De hoc secessu rem bene narrat et Gregorovius Storia.. di Roma v. II. p. 8. etsi alibi quædam confuse habeat; de Benedicto ait: « In mezzo alle rovine.. si eleva.. la persona solitaria e triste di un Latino che rifletteva in sè l'indole di quell' età di transizione; perocchè la sua vita e le sue opere dischiudono quei secoli tenebrosi che ora dobbiamo descrivere... »

КЕФАЛАІОН В'.

Περί τοῦ ἐπαναστάντος αὐτῷ σαρκικοῦ πολέμου 1.

Β΄. Εν μια οὖν τῶν ήμερῶν ήσυχάζοντι τῷ άγίω, ίδου ό πειραστής παραγέγονεν έν σχήματι δρνέου μέλανος, δπερ έωιχωρίως κόσσυφον προσαγορεύουσιν, καὶ τῷ ήγιασμένω αὐτοῦ προσώπω περιίπτασθαι ήρξατο ἀναιδῶς, ὥστε δύνασθαι ταῖς χερσί κρατηθήναι; εἰ ὅλως τοῦτο ὁ ἄγιος ήθελεν. Ο δε βεοφόρος οὖτος ἀνηρ την τοῦ ἐχβροῦ ἐνέδραν κατανοήσας, τῷ σημείω τοῦ ζωοποιοῦ σταυροῦ έαυτον καθοπλίσας, του εν σχήματι δρυέου φανέντα αὐτῷ δαίμονα ἄφαντον πεωοίηκεν. Τοσούτος δὲ πειρασμός της σαρκός ἐπετέθη τῷ άγίω μετα την ζοφοειδούς δρνέου αναχώρησιν, οξος ούπώποτε² τῷ ὁσίω ἐγεγόνει.3 Γυναῖκα γάρ τινα ἢν ποτε ἑορακώς ην έν τῷ καιρῷ τῆς νεότητος αὐτοῦ ὁ ἀπαθης οὖτος καὶ τίμιος άνηρ· ταύτην ό της πορνείας δαίμων σχηματίσας, τοῖς τοῦ δικαίου παρεστήσατο νοητοῖς όφθαλμοῖς. Τοσαύτην $\delta \hat{\epsilon}$ της σαρκός $\hat{\epsilon}$ ν αὐτ $\hat{\omega}$ σύρωσιν 4 ἀντικεί μενος ένηψεν, ωστε παρά βραχύ σαλευθήναι αύτον άπο τής ψυχικής άκηδίας, καί ἐπὶ τὸν κόσμον παλινδρομῆσαι. Αλλ' ή τοῦ Θεοῦ σωτήριος χάρις τοῦτον ἐνισχύσασα, νικητήν κατὰ τῶν παθῶν ανέδειξεν. Τῷ γὰρ βελτίονι καὶ σώφρονι λογισμῷ έαυτον ρυθμίσας, της τοῦ έχθροῦ πανουργίας περιεφρόνησεν. 5 Αναδλέψας δὲ τοῖς ὀφθαλμοῖς αὐτοῦ κνιδῶν τε καὶ ἀκανθῶν πληθος σύνεγγυς θεασάμενος και ἀπεκδυσάμενος τὸ ίμάτων, γυμνον έαυτον έν τοῖς τῶν κνιδῶν καὶ ἀκανθῶν όξυτάτοις κέντροις έρβιψεν, και έπι πολλαϊς ώραις έν αὐτοίς χυλισθείς έγχαρτερών. Και άπαν το έαυτοῦ σώμα αίμασιν περιββεώμενον βλέπων, γενναίως ύπενέγκας τὰς ἐκ τούτων6 άλγηδόνας, λυτρωθείς τε τοῦ τοιούτου βάνατηφόρου λογισμοῦ, τῷ Θεῷ μεγάλῳ διέμεινεν εὐχαριστῶν καὶ ἀπὸ τότε

¹⁾ Alii πολεμίου — 2) Cd. Parisien. οὐδέποτε — 3) Cd. ἐγεγόνη.
4) Alii πύρωσιν ἐν αὐτῶ — 5) Alii περιεφρούρησεν — 6) Quidam τὰς τούτων — 7) Alii διέμενεν.

CAPUT II.

De temptatione carnis superata.

Quadam¹ vero die dum solus esset, temptator² adfuit. Nam nigra parvaque avis, quae vulgo³ merula4 vocatur, circa ejus faciem volitare coepit, ejusque vultui inportune insistere, ita ut capi manu possit, 5 si hanc vir sanctus tenere voluisset: sed signo crucis edito recessit avis. Tanta autem carnis temptatio, avi6 eadem recedente, secuta est, quantam vir sanctus numquam fuerat expertus. Quandam namque aliquando faeminam viderat, quam malignus spiritus ante ejus mentis oculos reduxit: tantoque igne servi Dei animum in specie illius accendit, ut se⁷ in ejus pectore amoris flamma vix8 caperet, et jam9 pene¹⁰ deserere heremum¹¹ voluptate victus deliberaret. Cum¹² subito superna¹³ gratia respectus ad semetipsum reversus est, atque urticarum et veprium¹⁴ iuxta densa succrescere fructeta¹⁵ conspiciens, exutus indumento nudum se in illis spinarum aculeis et urticarum¹⁶ incendiis projecit; ibique diu volutatus, toto ex corpore vulneratus exiit, et per cutis vulnera eduxit a corpore vulnus mentis; quia voluptatem

^{1) 1.} m. notam num. II, serior manus V. posuit — 2) Prius temptatur — 3) Alii a vulgo — 4) Prius merola — 5) Alii posset.
6) Post avi rasura — 7) Alii ut dum in — 8) Quidam vim pro vix — 9) Quidam addunt etiam — 10) Prius paene — 11) Ita cod. pro eremum — 12) Alii Tum pro Cum — 13) Alii supernæ gratiæ respectu — Pro respectu alii aspectu, alii repletus — 14) Prius vebrium — 15) Prius fructecta; alii fruteta — 16) Cod. orticarum.

λοιπον, εν παντί τῷ τῆς ζωῆς αὐτοῦ χρόνῳ, ὁ εν σχήματι γυναίου φανείς αὐτῷ δαίμων τῆς πορνείας, οὐδαμῶς τούτῳ παρενοχλῆσαι ετόλμησεν, ναθώς αὐτὸς ὁ εν πειρασμοῖς ἀήττητος πατὴρ τοῖς έαυτοῦ μετέωειτα διηγήσατο μαθηταῖς.

Πολλοι οὖν τὰ τοῦ κόσμου τερπνὰ καταλείψαντες πρὸς αὐτὸν παρέβαλλον,² οἰκοδομῆς χάριν πνευματικῆς, καὶ ἐδι-δάσκοντο παρ' αὐτοῦ ἀνδρείως ταῖς τῆς πονηρίας ποικίλαις δυνάμεσιν ἀντιτάττεσθαι. Οθεν διὰ Μωϋσέως κελευόμεθα τοὺς Λευίτας³ ἀπὸ πέμπτου καὶ εἰκοστοῦ τῆς οἰκείας ἡλικίας χρόνου, πρὸς τὴν ὑπηρεσίαν ἐγχειρίζεσθαι, ἀπὸ δὲ πεντηκοστοῦ χρόνου, φύλακας τούτους τῶν σκευῶν εἶναι.

ΠΕΤΡΟΣ.

Εκ τῆς νυνὶ λεχθείσης μοι μαρτυρίας, θαυμαστή τις ἐπίγνωσίς μοι διαλάμπει ἀλλὰ δυσωπῶ τοῦτό μοι σαφῶς ἑρμηνεῦσαι.

ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ.

Δήλον, Πέτρε, πάσιν καθέστηκεν, ώς έν τη νεότητι της σαρκός ή τοῦ σώματος πύρωσις, καὶ ὁ βρασμός τῶν παθῶν τοῖς ἀνθρώποις ἐνοχλεῖν εἰωθεν· ἀπὸ δὲ χρόνου πεντηκοστοῦ ή φυσικῶς προσοῦσα⁴ τῷ σώματι θέρμη συστέλλεται. Σκεύη δὲ ἱερὰ καὶ τῷ Θεῷ ἀνακείμενα εἰσὶ τῶν πιστῶν τὰ νοήματα. Οἱ δὲ ἐκλεκτοὶ, ἐρ᾽ ὅσον ἐν τῷ τῶν παθῶν κλύδωνι χειμάζονται, ὑπηρεσίαις καὶ κόποις σωματικοῖς ἀναγκαῖον

1) Ioseph hymnograph. Od. I. Νόμω θεοῦ ὑποκλιθεὶς, παμμακάριστε, τὰ τῶν παθῶν σκιρτήματα ἐναπεμάρανας ἐγκρατείας ἱδρῶσι, καὶ τὴν τῆς ἀωαθείας χάριν ἐπλούτησας. Subiectus legi Dei, beatissime, insilientes passionum motus extinxisti laboribus continentiæ, et gratiam de sedatis passionibus abunde nactus es. Ode IV. Αγῶσιν ἐγκρατείας, ὅσιε, τῆς σαρκὸς νεκρώσας τὰ μέλη, νεκροὺς εὐχῆ ἡγειρας.. Continentiae certamine, o sancte, cum membra mortificasses, prece tua suscitasti mortuos.. Ode VII. Νέκρωσιν ζωηφόρον ἐκτήσω τῶν ἡδονῶν ἀποχῆ ὅθεν νεκροὺς ἐξεγείρειν κατηξίωσας, παμμάκαρ Βενέδικτε. Vivificantem mortem voluptatum continentia adeptus es; unde dignus es factus ut mortuos ad vitam revocares, Benedicte beatissime. — 2) Cdd. quidam ωαρέβαλον — 3) Edd. male λεβίτας. — 4) Quidam οὖσα pro προσσῦσα.

traxit¹ in dolorem. Cumque pœnaliter² arderet,³ foras exstinxit,⁴ quod inlicite ardebat intus. Vicit itaque peccatum, quia mutavit incendium. Ex quo videlicet tempore, sicut post discipulis ipse perhibebat, ita in illo est temptatio voluptatis edomita, ut tale in se aliquid minime sentiret.

Coeperunt postmodum multi jam mundum relinquere, atque ad ejus magisterium festinare. Liber quippe a temptationis vitio, jure jam factus est virtutum magister. Unde et per Moysen⁵ praecipitur, ut Levitae a viginti quinque⁶ annis et supra ministrare debeant: ab anno vero quinquagesimo⁷ custodes vasorum flant.

PETRUS.8

Jam quidem prolati testimonii mihi aliquantum intellectus interlucet; sed tamen hoc plenius⁹ postulo exponi.

GREGORIUS.

Liquet, Petre, quod in juventute carnis temptatio ferveat, ab anno autem quinquagesimo calor corporis frigescat: 10 vasa autem sacra sunt fidelium mentes. Electi ergo cum adhuc in temptatione sunt, subesse eos ac servire ne-

¹⁾ Alii carnis traxit — 2) Cumque bene poen.. — 3) Prius ardere.

⁴⁾ Cod. extincxit — 5) NUMER. IV. 3, et VIII. 24, etc. In Edd. praecipitur in Exodo ut; sed male. Ad hunc locum quædam in fine cap. animadverti — 6) Elementa nqu in quinque super rasur. 7) Prius viro quinquagins.. inferius quinquangens.. — 8) A 2. m.

in marg. not. num. VI—9) Tres cdd. planius — 10) Prius frigiscat.

αὐτούς ἐστιν διαμεῖναι. Ηνίκα δὲ παλαιωθεῖσα τῶν παθῶν τῆ νεότης, καὶ εἰς τὸν τῆς γαλήνης λιμένα καταντήση, καὶ ή τοῦ σώματος ἀποδράση βέρμη, τότε φύλακες τῶν σκευῶν καβίστανται διότι² τῶν ψυχῶν διδάσκαλοι γίνονται.

ΠΕΤΡΟΣ.

Ομολογῶ καὶ ἀρέσκομαι ἐπὶ τοῖς λεχθεῖσιν, ἀλλ' αἰτῶ, ἴνα τῆς³ προτεθείσης⁴ μαρτυρίας το⁵ δυσερμήνευτον φανερώσης, καὶ περὶ τῆς ζωῆς τοῦ δικαίου τούτου, καὶ τῆς ἐνάρξεως τῆς αὐτοῦ πολιτείας τὴν διήγησιν ἡμῖν ποιήσασθαι.

1) Cd. Colb. αὐτοῖς διαβῆναι — 2) Hæc ad finem lineæ in editione Vaticana desiderantur — 3) In quibusdam desideratur τῆς.
4) Alii προλεχθείσης μαρτυρίας διήγησιν ωοιήσης μοι — 5) Cod. fol. 47.

Ad cap. II. adnotamus huiuscemodi pænitentiæ genus mirabile usitatum esse etiam beato Nilo Cryptæferratæ fundatori, qui et cultor fuit insignis magni Benedicti, eiusque vestigiis adeo fideliter institit, ut etiam Cassinenses monachi, quando ad eos accessit, narrentur sibi δοκούντες ακούειν και βλέπειν, ή ότι μέγας Αντώνιος ἀπὸ Αλεξανδρείας πρὸς αὐτοὺς παρεγένετο, ἢ ἐκ νεκρῶν ήγερθη ό μέγας Βενέδικτος, ό θεῖος νομοθέτης αὐτῶν καὶ διδάσκαλος. Καί γε δρθῶς ελογίζοντο.. existimasse se audire et videre vel advenientem Alexandria magnum Antonium, vel excitatum a mortuis magnum Benedictum legislatorem suum et magistrum. Et sane recte iudicabant.. Sic S. Barptolomaeus in eius vita (p. 125), qui de tam nobili imitatore narrat (p. 35) fere verbis iisdem ac S. Gregorius de Benedicto: Υωέβαλλε δε αὐτῷ δ πονηρὸς και πύρωσιν δριμυτάτην εν τῆ σακρί αὐτὸς δὲ τῆ προσρίψει τῶν ἀκανθῶν και ἀγρίων κνιδῶν ἐσβέννυε διὰ τῆς ἐδύνης τὴν ήδο-งกุ่ง.. Vehementissimum malignus ei subiecit carnis incendium; ipse vero in spinis et asperis urticis se volutans, dolore voluptatem extinxit.

In Cod. Cryptensi B. γ. V. f. 74 Synaxarion habemus de S. Benedicto: κολασθείς δὲ ὑπὸ τῆς πορνείας ἐνέβαλεν ἐαυτὸν γυμνὸν εἰς κνίδας καὶ ἐλυτρώθη ἐξ αὐτῆς.. Cum ab impudicitia torqueretur, nudus inter spinas se coniecit, et ab ea liberatus est.

LUTHERUS eiusque socii irrident et incriminant Benedicti rigorem, sed Maurus a valentano (Adnot. ad Chronic. Subl. inedit.) eos refellit.

cesse est, et obsequiis laboribusque fatigari; cum vero jam mentis aetate tranquilla calor recesserit temptationis, custodes vasorum sunt, quia doctores animarum fiunt.

PETRUS.

Fateor, placet quod dicis: sed quia prolati testimonii clausa¹ reserasti,² quaeso ut de vita justi debeas, ea quae sunt inchoata, percurrerre.

1) Quidam habent claustra — 2) Ad hoc testimonium S. Scripturæ conqueruntur doctores. Calmet ait: « Septuaginta eosque secuti Patres et latini nullam ad hunc locum exhibent solutionem; legunt enim hi viginti quinque annos, ut et capit. VIII. 24. Ac ideo nonnulli hunc hebraici textus locum iuxta græcam LXX. versionem vellent emendari ». Sed præsto heic est Gregorius noster, qui cum moralem sensum quærat, et litteralem exhibet. Quod autem heic paucis innuitur a Gregorio, multis iam contenderat S. Nilus Synaita. Exerc. Mon. 22. — 36.

Animadvertendum enim est in hebraico legi trigesimo anno (HIERONYM. — GEBHARDT: Cod. græcus Venetus p. 287). Calmet ait « Locus hic pugnare videtur cum iis quae infra habentur cap. 8, 24—I Paral. 23—11. Paral. 21—I. Esdr. 3. » Sed haec non sunt habenda ut loca parallela; nam munia Levitarum secundum occasiones et tempora varia fuere. (cf. Quæst. hebraic. apud HIERONYM.) Nulla lex certa ad ministerium obeundum fuerat; sed ipsis Levitis videtur consuetum, ut ad res sacras agendas ante vicesimum annum nemo admitteretur (cf. saldenum de succ. Pont. 1. 2—outramum de sacrif. 1. 1). Gregorius secutus est lectionem e LXX derivatam (origenis hom. V. in Num. — vercellone Varr. lectt. — Field Origenis Hexapl.); et cum dicat: doctores animarum funt videtur præ oculis habuisse Samaritanam et Syriacam versionem: docebit fratres suos. Numer. cap. VIII. 26. (Synops. Critic. tom. 1. 642.)

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ Γ'.

Περί τοῦ προσενεχθέντος αὐτῷ φαρμάκου ἐν ωστηρίω ὑελίνω.

ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ.

Γ΄. Εκποδών ήδη γεγονότος ἀπὸ τοῦ ἀγίου τοῦ ἡηθέντος¹ ωειρασμοῦ,² ὡς ἐξ ἀκανθών λυτρωθεὶς ὁ Θεοῦ ἀνθρωπος, οὕτως διέμεινεν ἀταράχω λογισμῶ, καὶ λοιπὸν ὑπὸ τῆς τοῦ ἀγίου πνεύματος χάριτος³ καλλιεργηθείσης⁴ αὐτοῦ τῆς καρδίας εὐφορώτερον διδασκαλίας τὸν καρπὸν ἀπεδίδου, ὡς ἐκ τούτου ἐξάκουστον γενέσθαι πᾶσιν τὴν περὶ αὐτοῦ ἀξιοθαύμαστον φήμην.5

Ην δε μοναστήριον οὐ μακράν τοῦ σπηλαίου6 τοῦ έν άγίοις πατρός Βενεδίκτου, έν ῷ ὁ τῆς ἐκεῖσε συνοδίας έτελεύτησεν προεστώς. Πάντες οὖν οἱ ἐκεῖσε ὄντες ἀδελφοὶ, δμοθυμαδον προς τον μακάριον παραγενόμενοι, έλειπάρουν⁷ αύτον, δπως γένηται αύτοῖς πρός Θεόν όδηγός καὶ ποιμήν. Ο δε την εκ παιδόθεν συνακμάσασαν αὐτῷ θεομίμητον ταπείνωσιν καταλείψαι μη άνασχόμενος, την τοιαύτην αὐτῶν σαράκλησιν ἀπεσείσατο, άμαρτωλον έαυτον λέγων και άνάξιού, ἐπαγαγών καὶ τοῦτο· « Οτι τὰ ἐμὰ ἔθη⁸ οὐ συμφωνοῦσιν ήθεσιν ύμῶν. » Νικηθείς δε ύπο της συμπαθοῦς φιλαδελφίας, μόλις τῆ τούτων εἶξεν παρακλήσει. Εν δὲ τῷ τὸν μακάριον έν τη αὐτη μονη έπαγρύπνως φυλάττειν την τοῦ μοναστηρίου κατάστασιν, καὶ μὴ συγχωρεῖν αὐτοῖς τοῖς οίκείοις θελήμασιν φέρεσθαι, ώς εθεάσαντο την του δσίου άγιότητά τε και άκριβεστάτην άσκησιν μη συνάδουσαν τη έαυτῶν πονηρία, ἦρξαντο έαυτοῖς διαμάχεσθαι, και μεταμελεῖσθαι, ὅτι τοιοῦτον έαυτοῖς ἀκριβέστατον και ἀσκητικωτατον ανδρα ήγούμενον έξητήσαντο: έκείνων μεν οὖν ή στρεβλότης τῷ τοῦ μακαρίου διεμάχετο νόμω. τοῖς σκολιοῖς γαρ ήθεσιν βδελυκτή ύπαρχει ή των δικαίων πολιτεία.

¹⁾ Cd. Colb. τὸ ἡηθὲν — 2) Alii τοῦ ωειρασμοῦ — 3) Cd. Colb. καὶ χάριτ.. — 4) Cod. noster καλιερ.. — 5) Alii μνήμην pro φήμην. 6) Cod. Florent. οὐ μακρὰν τῆς πόλεως — 7) Alii ἐλιπάρουν.

⁸⁾ Cd. noster ἔθη, alii cdd. ἤθη. Idem pluries inferius factum est. — 9) Cd. Parisiensis οἱ δὲ ως.

CAPUT III.

De ampulla vitrea crucis signo rupta1.

GREGORIUS.

Recedente igitur temptatione, vir Dei quasi spinis erutis exculta terra de virtutum segete feracius² fructum³ dedit. Praeconio itaque eximiae conversationis celebre nomen ejus habebatur. Non longe autem monasterium⁵ fuit, cujus congregationis Pater defunctus est, omnisque ex illo congregatio ad eundem venerabilem Benedictum venit, et magnis precibus ut eis præesse deberet, petiit. Qui diu negando distulit, suis illorumque fratrum moribus convenire non posse praedixit: sed victus quandoque precibus adsensum dedit. Cumque in eodem monasterio regularis vitae custodiam teneret, nullique ut prius per actus inlicitos in dexteram laevamque⁸ partem deflectere⁹ a conversationis itinere 10 liceret, suscepti fratres insane saevientes semetipsos prius accusare coeperunt, quia hunc sibi præesse poscerant:11 quorum scilicet12 tortitudo¹³ in norma ejus rectitudinis offendebat.

Cumque sibi sub eo conspicerent inlicita non licere, et se dolerent assueta relinquere, durumque

¹⁾ Alii vase vitreo.. rupto.. Cd. scribit vidrea—2) Prius veracius.
3) Alii fructus — 4) Prius celebræ — 5) Monasterium hoc ad Vicum

Varronis (hodie Vicovaro) fuisse fertur [Cf. Jannucelli. l. c.].
6) Cod. Carnot suos illorumque fratrum mores convenire. Alii moribus se conv.. — 7) Prius praecibus scribitur — 8) Cod.

dextram levamque — 9) Serior m. flectere pro deflectere ut videtur a 1. m; rasura enim est — 10) Prius itenere — 11) Alii poposcerant — 12) Codex prius scelicet — 13) Editt. fortitudo.

Γνόντες οὖν οἱ στασ:ώδεις ἐκεῖνοι, ὅτι ἡ αὐτῶν φιλοτάραχος γνώμη κατά το αὐτοῖς δοκοῦν οὐκ ἐτελέσθη, φάρμακόν τι θανάσιμον οίνω συμμίξαντες, έν ποτηρίω τε ύελίνω βαλόντες, ανακειμένω τω πατρί κατα το σύνηθες εν τη της έστιασίως ώρα, τὸ τοιούτον θανατηφόρον ποτον επιδούναι τώ άγίω ἐτόλμησαν. Ο δὲ σημειοφόρος καὶ μέγας πατήρ Βενέδικτος έκτείνας την χείρα, τὸ σημείον τοῦ ζωοποιοῦ σταυροῦ πεποίηκεν, καὶ παραυτίκα τὸ σκεῦος διαβραγεν πέπτωκεν ἐπὶ της γης ούτως δε συνετρίδη, τη του τιμίου και πανσέπτου2 σταυροῦ δυνάμει, ώς νομίζειν τούς θεασαμένους λίθω το όλέθριον έχεῖνο συνβλασβήναι ποτήριον. Εγνω οὖν ὁ τοῦ βεοῦ ἀνβρωσος, ὅτι τὸ ποτὸν θανάσιμον ἦν, ἔσερ ὑσενέγκαι ούκ ήδυνήθη σεποιηκότος τοῦ άγίου τὸ σημείον της ζωής ήμῶν. Εὐθέως οὖν ἀναστὰς ίλαρῷ τῷ προσώπῳ καί γαληνῷ τῷ λογισμῷ, προσκαλεσάμενος τοὺς ἀδελφοὺς εἰπεν πρός αὐτοὺς. «Ελεήσοι ὑμᾶς τέκνα, ὁ ωαντοδύναμος Θεός. δια τί εν εμοί ποιήσαι ταῦτα ήθελήσατε; οὐχὶ πρώην εἶπον ύμιν, ότι οι ύμέτεροι τρόποι τοις έμοις ήθεσιν ού συνέρχονται; Απέλθατε,3 και κατά τὰ ήθη ύμῶν πατέρα έαυτοῖς ζητήσατε. 4 έγω 5 γαρ μεθ' ύμων είναι οὐ δύναμαι. » Τότε μετὰ πάσης προθυμίας ὁ ἄγιος τὸν τόπον κατέλαβεν ἔνθα τὸ πρίν κατώκει, την άρχηθεν αύτοῦ φίλην ήσυχίαν άσπαζόμενος, και ύπο του έν ύψηλοις κατοικούντος και τα ταπεινά έφορῶντος Θεοῦ μόνου φρουρούμενος, καὶ έαυτῷ προσέχων, κατώκησεν μεθ' έαυτοῦ.

ΠΕΤΡΟΣ.

Ολίγον, θεόρρημον⁶ δέσποτα, ἀσαφὲς καθέστηκέν μοι τὸ εἰρημένον· τί γάρ ἐστιν τὸ «Κατώκησεν⁷ μεθ' ἑαυτοῦ; »

1) Alii ωστήριον - 2) Colb. addit. και ζωοωοιος - 3) Alii ἀωέλθετε.

⁴⁾ Alii ἐκζητ.. - 5) Cd. f. 48. - 6) Cd. θεορημ.. - 7) Colb. κατεικήσαι. S. Nilus Od. III. Εξές ησαν εί φιάλη ποτίσαι σε ιὸν θανατηφόρεν βουληθέντες διαββαγεῖσαν ιδόντες εὐθὺς ς αυρεῦ τῷ τύπω· οῦς καὶ ἀνέτρεψας Βενέδικτε... Qui ausi fuerant phiala venenum tibi dare potui lethiferum, stupore perculsi sunt, ut viderunt eam signo crucis statim disruptam, e quibus etiam recessisti, Benedicte... Cf. Menologium Basilii Imperat. in synaxario die XXI. Martii.

esset quod in mente veteri cogebantur¹ nova meditari, sicut pravis moribus semper gravis est vita bonorum, tractare de ejus aliquid2 morte conati sunt, qui inito3 consilio venenum vino miscuerunt. Et cum vas vitreum, in quo ille pestifer potus habebatur, recumbenti Patri ex more monasterii, ad benedicendum fuisset oblatum, Benedictus extensa4 manu signum crucis edidit,5 et vas quod longius tenebatur, eodem signo rupit: sicque confractum est, ac si in illo vase mortis, pro cruce lapidem dedisset. Intellexit protinus vir Dei, quia potum mortis habuerat, quod portare non potuit signum vitae: atque illico surrexit, et vultu placido, mente tranquilla convocatos fratres adlocutus est, di-Misereatur vestri, fratres, omnipotens Deus; quare in me facere ista voluistis? Numquid non prius dixi, quia vestris acs meis moribus non⁹ conveniret? Ite, ¹⁰ et iuxta mores vestros vobis patrem quaerite; quia me post haec11 habere minime potestis. Tunc¹² ad locum dilectae solitudinis rediit, et solus in superni spectatoris¹³ oculis habitavit secum.

PETRUS. 14

Minus patenter intelligo 15, quidnam sit: « Habitavit secum. »

¹⁾ cogeban.. habet e super ras.—2) Alii aliqui, quidam omittunt.
3) Prius initio — 4) Prius extinsa—5) Prius ededit—6) Cod.
ilico—7) Alii dixi vobis quia—8) Cd. Bessar. vestri meis.. convenirent—9) Alii minime pro non—10, Alii Ite; iuxta vestros mores patrem vobis—11) Alii posthac me—12) Alii Tuncque—13) Alii inspectoris—14) Man. serior not. num. VII.—15) Prius intellego.

ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ.

Εφ' δσον δ άγιος ούτος άνηρ τους μεθ' έαυτοῦ άδελφους όμοψύχους τε καὶ εν πνέοντας μη εύρηκως, άλλα καὶ τῆς πολιτείας αὐτοῦ μακράν όντας, καὶ μὴ βιαζομένους έαυτους έν τῆ τοῦ Χριστοῦ ταπεινῆ όδῷ βαδίζειν, πολλάκις δὲ τῆς οἰκείας άμελήσαντος σωτηρίας αὐτους όρῶν, λίαν ἐσπλαγχνίζετο ἐπ' αύτους, και ύφ' έαυτον σκέπειχι τε και ποιμαίνειν έσωευδεν. Ηνίκα δε καθ' έκάστην ύπερ της εκείνων διορθώσεως εκοπία, έόρα δὲ έαυτὸν τῆς πρὸς θεὸν ἀναβάσεως ἐλαττούμενον, πλεονάκις έαυτον κατελίμωανεν, έκείνους δε ούχ ηυρισκεν έπει ποσάκις δια κινήσεως λογισμών απρεπών, έξωθεν ήμών έαυτων απαγόμεθα, και ήμεῖς μέν ἐσμεν, μεθ' ἑαυτων δε οὐκ έσμέν. Τὰ γὰρ καθ' έαυτους μη σκοπούντες, είς ετερα² περιφερόμεθα. 3 Καὶ γὰρ ἐκεῖνον ἔξω ἑαυτοῦ⁴ εἶναι λέγομεν, τὸν είς χώραν μακράν βαδίσαντα, και της οίκείας ούσίας το μέρος καταφαγόντα, καὶ ένὶ τῶν ἐκεῖσε πολιτῶν προσκολληθέντα,5 χοίρους τε βοσκήσαντα, οθς έόρα κεράτια ἐσθίοντας, έαυτον δε λιμώ τηκόμενον οστις ήρξατο έν έαυτώ διαλογίζεσθαι περί των άγαθων, ώνπερ άπωλεσεν. Γέγραπται γαρ περί αὐτοῦ, ὅτι « εἰς ἑαυτον ἐλθων, εἶπεν· Πόσοι μίσθιοι έν τῷ οἶκῳ τοῦ ϖατρός μου περισσεύονται⁶ ἄρτων; » Εἰ τοίνυν με Β' έαυτοῦ ήν, πῶς εἰς έαυτον ἐπανῆλθεν;8

Τοῦτον γοῦν τὸν τῆς εὐλογίας φερώνυμον πατέρα^θ μεθ' ἑαυτοῦ κατοικεῖν εἶπον, ὅτι ἐπαγρύπνω φυλακῆ ἑαυτὸν διαπαντὸς περιεσκόπει, τῷ τοῦ κτίστου ἀκοιμήτω ὀφθαλμῷ¹⁰ ἑκάστοτε ἑαυτὸν θεώμενον ἐπιστάμενος και τὰ οἰκεῖα ἑαυτοῦ ἐξετάζοντα κατὰ τὸν θεοπάτορα προφήτην Δαυὶδ, τὸν λέγοντα· «Προορώμην τὸν κύριον ἐνώπιόν μου διαπαντὸς, ὅτι ἐκ δεξιῶν μου ἐστὶν, ἵνα μὴ σαλευθῶ.¹¹»

1) Edd. σκέπτειν—2) Cd. Flor. ἔτερα κακὰ—3) Cd. Paris. περισκοπούμεθα — 4) Cod. male ἐαυτους — 5) χοίρους columna præcedens omissa est in scriptione codicis ob vitium membranæ — 6) Alii περισσεύουσιν. Luc. XV. 17. In cod. Bibl. (Cf. p. 28) deest ἐν τῷ οἶκῷ — 7) Alii minus bene ἐαυτὸν — 8) Alii ἐπανῆκεν — 9) Alii ἐπώνυμον πατέρα. — 10) Cod. Colbert. τὸν ἀκοίμητον ὀφθαλμὸν. 11) Psalm. XV. 8.

GREGORIUS.

Si sanctus vir contra se unanimiter conspirantes, suaeque conversationi longe dissimiles, coactos diu sub se tenere² voluisset, fortasse sui vigoris usum et modum tranquillitatis excederet, atque a contemplationis lumine mentis suae oculum declinasset. Dumque quotidie³ illorum incorrectione fatigatus minus curaret sua, et se forsitan4 relinqueret, et illos non inveniret. Nam quoties⁵ per cogitationis motum nimiae⁶ extra nos ducimur, et nos⁷ sumus, et nobiscum non sumus, quia nosmetipsos minime videntes per alia vagamur. An illum secum fuisse dicimus, qui in longinquam regionem abiit,8 portionem quam acceperat consumpsit, uni9 in ea civium adhæsit, porcos pavit, quos et manducare siliquas¹⁰ videret et esuriret; qui tamen cum postmodum cœpit cogitare bona quæ perdidit, 11 scriptum de illo est: In se reversus dixit: Quanti mercenarii12 in domo patris mei abundant¹³ panibus! Si igitur secum fuit, unde ad se rediit?

Hunc ergo venerabilem virum secum habitasse dixerim, quia in sua semper custodia circumspectus, 14 ante oculos Conditoris

¹⁾ Prius sancti viri contra se unianimiter — 2) Alii sustinere pro sub se tenere — 3) Cd. cotidiæ — 4) Alii forsitan — 5) Cd. quotiens.
6) Alii nimium — 7) Pro et nos alii nobiscum — 7) Codex qui longinqua regionem habiit — 9) Alii et uni — 10) Prius silequas — Cd. Bessarion. siliquas et vidit et esuriit — Alii viderit 11) Prius perdedit — 12) Cod. mercennarii — 13) Cod. habundant.
14) In circumspectus ex emendatione circum videtur a 1. m.

HETPO Σ^1 .

Πῶς οὖν περὶ του μακαρίου Πέτρου τοῦ ἀποστόλου γέγραπται, ὅτι ἐκ τοῦ δεσμωτηρίου διὰ τοῦ ἀγγέλου ἐξεβλήθη;
ὅτι ἐν ἑαυτῷ² γενόμενος, εἶωεν· «Νῦν οἶδα ἀληθῶς, ὅτι ἐξαπέστειλεν κύριος τὸν ἄγγελον αύτοῦ, καὶ ἐρύσατό με ἐκ
χειρὸς Ηρώδου, καὶ πάσης τῆς προσδοκίας τοῦ λαοῦ τῶν
Ιουδαίων.»

ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ.

Δυσὶ τρόποις, Πέτρε, ἔξω ήμῶν ἑαυτῶν ἀπαγόμεθα, ἢ διὰ τῶν ἐπισφαλῶν τε καὶ μοχθηρῶν διαλογισμῶν ὑφὶ ἑαυ-τῶν συμπίωτωμεν, ἢ διὶ ἐπισκοπῆς τῆς θείας χάριτος ὑπὲρ ἄνω ἑαυτῶν ἀνιστάμεθα. Εκεῖνος γοῦν ὁ τοὺς χοίρους βοσκήσας, διὰ τῆς τοῦ οἰκείου νοὸς ἀμελείας τε καὶ ἀκαθαρσίας, ὑφὶ ἑαυτὸν ὑωοπέωτωκεν οὖτος δὲ ὁ ὑπὸ τοῦ ἀγγέλου λυθεὶς, καὶ ἐκ τῆς φυλακῆς ἔξελθών, τοῖς νοεροῖς ὑπὶ αὐτοῦ φωτισθεὶς ὀφθαλμοῖς ἡρπάγη ἐν ἐκστάσει, καὶ οὐκ ἔξω ἑαυτοῦ, ἀλλὶ ὑπὲρ ἀνω ἑαυτοῦ γέγονεν. Οἱ ἀμφότεροι τοίνυν εἰς ἐαυτοὺς ἐπανῆλθον ἐκεῖνος μὲν ἐκ τῆς τῶν πονηρων ἔργων ωλάνης ἀνασφαλίσας³, ἐν τὴ οἰκεία καρδία συνήγαγεν ἑαυτὸν οὖτος δὲ διὰ τῆς τοῦ ἀγγέλου ὀπτασίας ἐν ἐκστάσει γενόμενος εἰς τοῦτο ἐπανῆλθεν, εἰς ὅπερ τῆ ἐπιγνώσει τῆς φυσικῆς κοινωνίας, τὸ πρότερον ὑπῆρχεν.

1) Cod. fol. 49—2) Prius εν αυτω postea ἐν ἐαυτῷ. Ad hanc variam antiqui codicis gregoriani lectionem iuvat referre, ut eandem habeat textus Actuum Apostolorum in ss. Bibl. Codice Græco Vaticano a nobis anno 1868 edito pag. 1399, ubi a l. m. scribitur ENAYTQ, a 2. m. EN'AYTQ, ut Cd. Cryptensis a quo varie legit Cd. Vat. OKΣ, pro κύριος absque articulo et EΞΕΙ-ΛΑΤΟ pro ἐρύσατο — 3) Alii ἀναστήσας, Cd. ἀνασφίλας. Apud ducange [Gloss. M. et Inf. Græcit.] est σφαλίζω, sed non ἀνασφαλίζω. Ad ea verba γενόμενος ἐν ἐαυτῷ S. Nilus Od. III. Ζῆλος Θεοσεβείας ἀνέφλεξε, τὴν καθαρὰν ψυχήνσου, Θεόφρον Βενέδικτε, καὶ καταλείψας τοὺς ἄφρονας ἐν σεαυτῷ γενόμενος καλῶς ἐπές ρεψας ἐν τῷ ἄντρῷ ῷ κατώκεις τὸ πρίν. Zelus pietatis erga Deum tuam puram inflammavit animam, o divine Benedicte, et desipientes derelinquens in temetipso consistens, rediisti prudenter in specum, in quo jam pridem habitaveras. Sic ex versione Sciommari.

se semper aspiciens, se semper examinans, extra se mentis suæ oculum non devulgavit.¹

PETRUS.

Quid ergo, quod de Apostolo Petro scriptum est, dum de carcere ab angelo eductus fuisset? Qui² ad se reversus dixit: Nunc scio vere³, quia misit⁴ Dominus angelum suum, et eripuit me de manu Herodis, et de omni expectatione plebis Judaeorum⁵.

GREGORIUS.

Duobus modis, Petre, extra nos ducimur: quia aut per cogitationis lapsum sub nosmetipsos recedimus⁶, aut per contemplationis gratiam super nosmetipsos levamur. Ille itaque qui porcos pavit, vagatione⁷ mentis et immunditia⁸ sub semetipso⁹ cecidit; iste vero, quem angelus solvit, ejusque mentem in exstasi¹⁰ rapuit, extra se quidem, sed super semetipsum fuit. Uterque ergo¹¹ ad se rediit, quando et ille ab errore operis se collegit ad cor, et ille¹² a contemplationis culmine ad hoc

¹⁾ Alii elongavit —2) Alii quia — 3) Cod. prius vire —4) Prius miset — 5) Act. App. XII. 11. —6) Prius recedemus postea recedimus, ut quidam alii, sic in cod. est; alii vero recidimus — 7) Cd. vagationem mentis, sed illud m in fine lineæ ex oscitantia et ex litera eadem incipientis lineæ posterioris factum videtur — 8) Cd. immunditiae — 9) Alii semetipsum — 10) Alii extasim — 11) Verba, quæ forte erant linea in codice archetypo, ex quo descriptus est Ambrosianus, omissa fuere; semetipsum fuit. Uterque ergo in marg. ab alia m. suppleta sunt. Initio supplementi additur etiam s. Illud s erat principium verbi; sed rasura est. — 12) Alii iste.

Ο οὖν προωρισμένος¹ ὑπὸ θεοῦ πατὴρ Βενέδικτος ἐν τἢ τῶν ἢθῶν ἡσύχω καὶ μονοτρόωω σεμνότητι κατοίκησεν² μεθ' ἑαυτοῦ δηλαδὴ. ὅταν ἑαυτοῦν ἐν τἢ τῶν λογισμῶν θεοωρεπεῖ κυβερνήσει διετήρησεν. ὁσάκις γὰρ τοῦτον τἢς ὀπτασίας τὸ μέγεθος εἰς ΰψος ἤρπασεν ἑαυτοῦν, τουτέστιν ὑφ' ἑαυτοῦν, κατέλιπεν.

ΠΕΤΡΟΣ.

Ηνέφαταί μοι ο λέγεις άλλ' αἰτῶ ἀποκριθηναί μοι, τίνος χάριν τοὺς ἄπαξ αὐτῷ ἐμπιστευθέντας ἀδελφοὺς κατέλειψεν, ὧν την φροντίδα ἀνεδέξατο;

ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ.

Καθώς έγω, Πέτρε, ύπολαμβάνω, ένωθέντες όμοψύχως έκει οι φρατριασται έωι τη έαυτων λύμη, ύπομονής πολλής δέον έστιν³ ωρός το ύωοφέρειν την των κακών αντιλογίαν, μάλιστα ἐὰν μὴ ωροσγίνεταί4 τις παρηγορία, εἰ συμβη ἐν αὐτοῖς ὀλίγους εύρεθῆναι ἀγαβούς. Επεὶ ἔνθα παντάπασιν καρπός έκ τοῦ κόπου οὐκ ἔστιν ἐλπιζόμενος, ἀνόνητος⁵ ἡ συνοίκησις, όμως συμβαίνει γίνεσθαι άγώνων τε καὶ ίδρώτων είς μοχθηρούς καὶ ἀδιόρθωτον γνώμην κεκτημένους κάματον σολύν άλλ' οὖν διάκενος εύρίσκεται. Μέγα οὖν ύπάρχει, έὰν οἱ οὕτω σκολιῶς διακείμενοι, τῷ Θεῷ δυνήσονται προσάγαγαι⁶ καρπον κρείττονα. Ο μακάριος οὖν ἐκεῖνος ανήρ τίνος χάριν σύν αὐτοῖς εἶχεν κατοικήσαι, ὁπόταν πάντας έκείνους όμοψύχους καταδιώκοντας αὐτὸν έόρα; Διαφόρως οὖν τελοῦνταί τινα ἐν ταῖς τῶν δικαίων ψυχαῖς άπερ άδύνατόν έστιν σιωωή παραδραμείν. Οταν γάρ θεάσονται τῶν οἰκείων κόπων τὸ ἀκερδες καὶ ἀνόνητον,9 εν ξτέρω τόπω μεταναστεύουσιν, έν ῷ καρποφορῆσαι δυνήσονται. Καθάπερ και ό τῆς ἀληθείας κήρυξ, ὅστις ἀναλύσαι¹ο ἐωόθει και σύν Χριστῷ εἶναι ὁ εἰπών· « Εμοι το ζῆν Χριστος· και το ἀποθανεῖν κέρδος·» ὁ τοὺς ἀγῶνας τὧν παθημάτων ού

1) Cd. ωροορ... - 2) Alii κατώκ... - 3) Cod. Paris. πολλῆς χρεία ἐστί - 4) Alii προσγένηται - 5) Quidam ἀνόητος. Cd. noster ἀνών.. pro ἀνόν.. - 6) Alii προσαγαγεῖν - 7) Cd. Paris. χάριν εἶχε κατοικεῖν ὁμοψύχως, sic varia usque ad ὁμοψύχως in textu— 8) Cd. Paris. σιωπῆσαι ἢ - 9) Alii ἀνόητον ut supra — 10) Alii ἀναλύεσθαι

rediit, quod intellectu¹ communi et prius fuit. Venerabilis² igitur Benedictus in illa solitudine habitavit secum, in quantum se intra cogitationis³ claustra custodivit:⁴ nam quotiescumque⁵ hunc contemplationis ardor in altum rapuit, se procul dubio sub se reliquit.

PETRUS.

Patet⁶ quod dicis: sed quaeso te,⁷ respondeas si deserere fratres debuit, quos semel suscepit.

GREGORIUS.

Ut ego, Petre, exaestimo, ibi adunati aequanimiter portandi sunt mali, ubi inveniuntur aliqui qui adjuventur boni. Nam ubi omnimodo fructus de bonis deest, fit aliquando de malis labor supervacuus: maxime si e vicino causae suppetant, quae fructum Deo valeant ferre meliorem. Vir itaque sanctus propter quem custodiendum staret, qui omnes unanimiter se persequentes cerneret? Et saepe agitur in animo perfectorum quod silentio praetereundum non est, quia cum laborem suum sine fructu esse considerant, in locum alium ad laborem cum fructu migrant. Unde ille quoque egregius praedicator, qui dissolvi cupit, et cum Christo esse; cui vivere Christus est, et mori lucrum qui certamina passionum

¹⁾ Alii in intellectu — 2) In margine nota numeralis VIII. et in textu nota. num. V. — 3) Prius cogitationes, sed emend.

⁴⁾ Prius costodivit — 5) Codex quotienscumque — 6) Alii Placet.
7) Alii omittunt te — 8) Postea existimo— 9) Suppletum est e post si — 10) Cod. habet loco alio — 11) A linea cum fructu usque ad lineam dicimus timuisse signum « in margine est. Hoc indicat locum ex Sacris Litteris depromptum — 12) Prius locrum.

μόνον αὐτὸς ὑπομείνας, ἀλλὰ καὶ ἐτέρους ταῦτα ὑπομένειν διδάξας έν Δαμασκῷ ποτε διωγρόν ύπομείνας, ίνα δυνηθῆ έκρυγεῖν, τεῖχος, σχοινίον, καὶ σπυρέδιον έζήτησεν, καὶ αὐτον λαθραίως κατενεχθήναι ήθέλησαν2. Μή τον μακάριον Παῦλον \Im άνατον λέγωμεν 3 δεδοικέναι, $\delta\varsigma^4$ ξαυτον διὰ τον προς 5 Ιησοῦν Χριστον πόθον μαρτυρίω ἐπέδωκεν; άλλ' ἔως μεν εν Δαμασκῷ ὑπῆρχεν, οὖ πάνυ ξαυτὸν καρποφοροῦντα ξόρα. Οθεν λοιπον αναγκαΐον έλογίσατο μεταναστεύσαι έν έτέροις τόποις, εν οίς καρποφορίαν πλεονάζουσαν σύν καμάτω πολλῷ τῷ Χριστῷ ωροσήγαγεν. Ως ἄριστος οὖν ἀγωνιστής ὑπερ Χριστοῦ οὐκ ἢνέσχετο ἔνδον τῶν κλίθρων8 Δαμασκοῦ μένειν. άλλα τοῦ ἀγῶνος τὸ στάδιον ἐζήτησεν, ἐν ὧ τὸν ἐχβρὸν ένίκησεν. Οθεν και ό Βεόφρων σατήρ Βενέδικτος, έαν ασμένως προσέχης τοις βηθησομένοις, τάχιον γνώση, ότι ζων πολλούς εν διαφόροις τόποις κατέλιπεν μαθητάς, καὶ τουτους κατά της του έχθρου πλάνης ένεύρωσέν τε και διανέ-GTYGEY.

ΠΕΤΡΟΣ.

Οὖτως ἐστὶν, καθώς διδάσκεις, καὶ ἡ προσενεχθεῖσα άρμοδίως μαρτυρία δηλοῖ ταῦτα οὖτως ἔχειν ἀλλ ἐκδυσωπῶ, ὅπως ἐν τἢ προτέρα τῆς τοῦ δικαίου πολιτείας ψυσωφελεῖο διηγήσει ἐπανέλθωμεν.

ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ.

Εν τῷ τὸν μακάριον ἐκεῖνον ἀνδρα, 10 ἐν τῷ προειρημένω σωηλαίω θείαις ἀρεταῖς ἐξαστράωτειν, δυνάμεσί τε καὶ σημείοις, οἶς ἐποίει δι αὐτοῦ ὁ Θεὸς, καὶ εἰς ὕψος ἀγγελικῆς δόξης ἀναβιβασθῆναι, πολλοὶ ἐντεῦθεν ἐν αὐτῷ τῷ

1) Cod. fol. 50. - Act. App. XI. 25.. διὰ τοῦ τεῖχος καθῆκαν αὐτὸν (Παῦλον) χαλάσαντες ἐν σπυρίδι.. et II. Ep. Ad Corinth. XI, 33... διὰ θυρίδος ἐν σαργάνη ἐχαλάσθην διὰ τοῦ τείχους. 2) Alii ἢθέλησεν vel ἐθέλησε. Cd. Colb. ἐκέλευσε - Cd. Parisiensis addit τοῦ τείχους ante verbum ἐκέλευσε — 3) Codices alii λέγομεν — 4) Cod. Parisiensis ως — 5) Cod. Paris. εἰς — 6) Cod. Paris. omittit Ιησοῦν — 7) Cod. Parisiensis ἀπέδωκεν — 8) Alii κλείθρων — 9) Cod. noster ψυχοφελῆ scripserat — 10) Prius Codex iste ἄνδραν, postea emendatum est ἄνδρα.

non solum ipse appetit, sed ad toleranda haec et alios accendit, Damasci persecutionem passus, ut posset evadere, murum, funem, sportamque quaesivit seque latenter deponi voluit. Nam¹ quidnam Paulum² mortem dicimus timuisse, quam se ipse pro Jesu amore testatur appetere? Sed cum in eodem loco minorem sibi fructum adesse conspiceret et gravem laborem, ad laborem se alibi cum fructu servavit. Fortis etenim prœliator Dei teneri intra claustra noluit, certamiminis campum quaesivit. Unde idem³ quoque venerabilis Benedictus, si libenter audis,⁴ citius agnoscis, quia vivos⁵ ipse indociles adseruit,quantos in locis aliis ab animae morte suscitavit.

PETRUS.

Ita esse, ut doces, et manifesta ratio, et prolatum congruum testimonium declarat. Sed quaeso, ut de vita tanti Patris ad narrationis ordinem, redeas.

GREGORIUS.

Cum sanctus vir diu in eadem solitudine virtutibus signisque succresceret, multi ab eo in loco eodem ad omnipotentis Dei sunt

¹⁾ Fecit Num 2. m.ut alii — 2) Suppletum est u in Paul. — 3) Cod. Unde eisdem — 4) Prius in codice audiis — 5) Alii pro vivos habent non tantos: quidam haec omittunt: alii si hos: alii vivus ipse indocibiles: Codex Bessarionis quia non tantos vivos impios indociles ipse deseruit: Cod. Nanianus quia dum vivus ipse indocibiles — Cod. noster prius adseruit, postea deseruit.

τόπω παραγέγοναν, αἰτούμενοι ὑπὸ ττὰν αὐτοῖ θεόσδοτον σοιμανθηναι χάριν. Ο δὲ φιλόθεός τε καὶ φιλόψυχος πατηρ Βενέδικτος δώδεκα αὐτόθι μοναστήρια τη τοῦ Χριστοῦ δυνάμει συνεστήσατο, ἐν οἶς ὥρισεν δὶς δέκα μοναχοὺς ἐν ἑναστη μονη εἶναι, όλίγους δὲ μεθ ἑαυτοῦ κατέσχεν, οὖς ὑπὸ τὴν ἑαυτοῦ διδασκαλικὴν παιδαρωγίαν ποιμανθηναι ἔκρινεν.

Ηρξαντο οὖν λοιπὸν πλεῖστοι, καὶ ἐκ τῆς Ρωμαίων σόλεως εὐγενέστατοι καὶ σπουδαῖοι⁴ πρὸς αὐτὸν φοιτᾶν, καὶ τοὺς ἑαυτῶν υἱοὺς διὰ αὐτοῦ τῷ Θεῷ προσφέρειν. Τότε τοίνυν τῆς καλῆς ἐλωίδος τὰ τέκνα Εβίτζιος⁵ καὶ Μαῦρος πρὸς αὐτὸν ἀπετάξαντο, καὶ Τέρτουλλος δὲ ὁ πατρίκιος Πλάκιδον παρέδωκεν ἔξ ὧν ὁ Μαῦρος νεανικώτερος ὑσάρχων, ἡνίκα τοῖς ἀγαθοῖς συνηύξησεν ἤθεσιν, ἤρξατο λοιπὸν συνεργὸς τοῦ διδασκάλου γίνεσθαι ὁ δὲ Πλάκιδος⁶ νέος ἔτι ὑσάρχων ἀσκητικοῖς πόνοις τὴν ἑαυτοῦ νεότητα κατεδάμαξεν.

- 1) Alii παραγεγόνασιν 2) Alii δώδεκα 3) Alii καὶ παιδαγωγίαν ἔκρ... 4) Alii add. ἄνδρες 5) Alii Εβίζιος 6) Cod. Paris. Πλακίδας.
- S. Nilus (Inni p. 12). Τοῖς φαρμακεῦσαί σε ψευδαδέλφοις ανεχόμενος ούτως έβόας όσιε εί και ἐπατάξατε τἢ προθέσει, και παρασκευάσατε εξ ύμῶν ἀποφεύγειν ἀδιακρίτως, ήδυνάμην τέρας έξαίσιον, λεγεώνι σαραδούναι δαιμόνων άλλα μακροθυμώ ίνα ριμητής, ού ἐφίεμαι, γένωμαι Λόγου, ἄδηλα καὶ κρύφια μυσταγωγοῦντός με. Falsos fratres, qui te veneno perimere conati sunt, patiens ita, o venerande, es allocutus: Etsi occideretis, uti propositum est, et ut indemnes effugeretis, amnia essent parata; possem mirabili portento vos legioni daemonum tradere. Sed sustineo atque misereor, ut imitator sim illius Verbi, quem diligo, quique me edocet mysteria ignota et occulta. Θεία σοι μάχαρ καθυσέταξε Πλακιδάν τόν κλεινόν παιδα τόν τοῦ Τερτύλλου, Εβίτζιον τὸν ἔνδοξον, και τον ίερον εύδοκία τον Ρώμης Μαθρον, Βεσπέσιε. Divinum placitum subdidit tibi Placidum celebrem filium Tertulli, Euthitium gloriosum, et sacrum Maurum bonæ spei Romæ natum, o divine. Joseph hymn. Δόξαντες θανατώσαι αφρόνως μάκαρ φαρμάκοις τονηροῖς σὲ τὸν φρουρούμενον θεία τοῦ παντουργοῦ παλάμη οἱ ἄφρονες κατησχύνθησαν φωραθέντες τη έν σοι του ωνεύματος προγνώσει. Qui stulte arbitrati sunt venenatis pharmacis morti tradere te, o beate, qui divina omnipotentis manu custodiebaris, insensati obprobrio affecti sunt, ob eam quæ in te erat, Spiritus præscientiam.

servitium congregati: ita ut illic duodecim monasteria cum omnipotentis Jesu Christi Domini opitulatione construeret, in quibus statutis Patribus duodenos monachos deputavit;¹ paucos vero secum retinuit,² quos adhuc in sua praesentia aptius³ erudire⁴ judicavit.

Coepere etiam⁵ ad eum Romanae urbis nobiles⁶ et religiosi concurrere suosque ei filios omnipotenti Domino nutriendos⁷ dare. Tunc quoque bonae spei suas soboles,⁸ Euitius⁹ Maurum, Tertullus¹⁰ vero patricius Placidum tradidit; e quibus Maurus iuvenior¹¹ cum bonis polleret¹² moribus, magistri adjutor coepit existere: Placidus vero puerilis adhuc indolis annos gerebat.

1) Prius depotavit —2) Prius detenuit —3) Alii altius — 4) Alii erudiri — 5) Alii etiam tunc —6) Prius nobilis — 7) Cod. Nan. sub omnipotentis Domini iugo nutr.. — 8) Cod. suos suboles; sed emendatur tantum sob.. — 9) Alii Equitius, alii Euticius, alii Evitius — 10) Codex Tertulus — 11) Alii iunior — 12) Prius pollerit.

Ad hoc postremum locum capitis III. multa historice disputata sunt a Benedictinis scriptoribus (cf. DACHERY, MABILLON, DELLA NOCE etc.) et ab aliis, ut BARONIUS, MURATORI, MASSIMO, GREGOROVIUS etc. Nos et ineditum Chronicon Sublacense vidimus cum observationibus mauri a Valentano, (ibi et duodecim monasteriorum notitiae habentur), nec non aliud ineditum opus inter meritas laudes lectum in cœtu academico ob ingressum viri I. B. Pitra Ord. S. B. in episcopatum Tusculanum ab eius auctore cl. v. Dominco Doct. Seghetti, qui sedulo versavit Sublacensis tabularii documenta et celebre Regestum nunc a cl. Leone Allodi monacho evulgando, et luce nova conspersit historiam Tusculanæ urbis, quam dicunt a Tertullo cum filio oblatam S. Benedicto in abatia Sublacensi. Ibi plura sunt de his nobilissimis Romæ viris ac de rebus gestis præcipue, quæ Romam et Tusculum spectant ab VI. ad XIII. sæculum. Opus certe, quod publici iuris fiat, dignum.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ Δ'.

Περί τινός μοναχοῦ ἐοῦντος¹ τὴν μονὴν καὶ σχολάζοντος εἰς γηϊνὰς θεωρίας.

Δ'. Εν ένι δε των αὐτων μοναστηρίων, ων πέριξ² συνεστήσατο ό τοῦ Θεοῦ θεράπων Βενέδικτος, ην τις μοναχός ύπὸ βάθυμίας όχλούμενος. όστις τῷ τῆς προσευχῆς καιρώ στῆναι σύν τοῖς άδελφοῖς ούκ ἐκαρτέρει. Αλλ' ήνίκα ωάντες οἱ άδελφοί είς γονυκλισίαν έαυτούς ένώπιον του Θεου έστρόννυον, έκεῖνος έξήρχετο έξω, καὶ τῆ ἀργολογία καὶ ἡαθυμία έαυτον έξεδίδου. Ο δε τούτου άββᾶς ωολλάκις αὐτον νου-Βετήσας, καὶ μηδὲν ἀνύσας, πρὸς τὸν τοῦ Θεοῦ ἀνβρωπον τοῦτον ἀπήγαγεν. ὅστις αὐτοῦ τὴν ματαιότητα σεμνώς τε καί πρεωόντως διήλεγξεν, και τη νουθεσία τουτον στηρίξας απέλυσεν ό δε εν τῷ μοναστηρίω υποστρέψας, μόλις δύο ήμέρας εν τη του ανθρώπου του Θεου νουθεσία διέμεινεν, έπεί τοί γε τη τρίτη ημέρα είς το διαβολικον έθος ύποστρέψας, πλάζεσθαι τῷ καιρῶ τῆς προσευχῆς ἦρξατο. Ο δὲ τούτου άββᾶς Βεασάμενος αὐτὸν ύπὸ τοῦ τῆς ἀχῆδίας δαί $μονος^3$ νικηθέντα, αὖθις πρὸς τὸν τοῦ Θεοῦ ἀνθρωπον παραγενόμενος, διηγήσατο αὐτῷ τὰ κατὰ τὸν ἀδελφὸν. Ο δὲ άγιος είπεν ωρός αὐτὸν· «Εγώ έλθων δι' έαυτοῦ⁵ διορθοῦμαι αὐτόν. » Ελθόντος οὖν αὐτοῦ ἐν τῆ μονῆ,6 καὶ τῆ ώρισμένη ώρα ήνίκα έπληρώθη ό της ψαλμωδίας υμνος, και έαυτους οί άδελφοι είς προσευχήν δέδωκαν γόνυ κλίναντες, είδεν8 ό άγιος, και ίδου νεανίσκος τις αιβίωψ τῷ είδει κρατήσας τὸ πτερύγιον τοῦ ξματίου τοῦ άδελφοῦ ἐκείνου τοῦ ἐν τῆ προσευχή καρτερήσαι μη δυναμένου, εξλκεν έξω⁹ της έκκλησίας. Τότε ὁ ἄγιος τῷ προεστῶτι τῆς μονῆς ἐκείνης, Πομωείανῷ10 τούνομα, καὶ Μαύρω τῷ δούλω τοῦ Θεοῦ μυστικώς εἶπεν· « Οὐχ' ὁρᾶτε τίς ἐστιν ὁ τὸν μοναχὸν τοῦτον ἔξω τῆς ἐκ-

¹⁾ In titulo alii ἐοῦντος. — 2) Cd. Flor. ὧνπερ συνεστ.. — 3) Cd. Paris. διαβόλου pro δαίμονος — 4) Cd. f. 51 - 5) Cod. Colb. δι' ε΄αυτὸν — 6) Cdd. ut Crypt. Paris. et Colb. ἐν τῆ μονῆ, alii εἰς τὴν μονὴν — 7) Alii δεδώκασι — 8) Alii εἶδεν — 9) Alii εἶλκεν αὐτὸν ἔξω — 10) Alii Πομωηϊαν.. sic et inferius.

CAPUT IV.1

De monacho vagae mentis ad salutem? reducto.

In uno autem ex eis monasteriis quae circumquaque construxerat, quidam monachus erat qui ad orationem stare non poterat: sed mox ut se fratres ad orationis studium inclinassent, ipse egrediebatur foras, et mente vaga terrena aliqua et transitoria³ agebat. Cumque ab abbate suo saepius fuisset admonitus, ad virum Dei deductus est, qui ipse quoque ejus stultitiae4 vehementer⁵ increpavit, et ad monasterium reversus, vix duobus diebus viri Dei admoninitionem tenuit; nam die tertio6 ad usum proprium reversus, vagari tempore orationis coepit. Quod cum servo Dei ab eodem monasterii patre quem constituerat, nuntiatum fuisset, dixit: Ego venio, eumque per memetipsum emendo. Cumque vir Dei venisset in eodem monasterio⁷ et constituta hora expleta psalmodia⁸ sese fratres in orationem dedissent, aspexit quod eundem monachum qui manere in oratione non poterat, quidam niger puerulus per vestimenti fimbriam foris trahebat. Tunc eidem Patri monasterii

^{1) 1.} m. not. num. IIII, sed 2. m. signum fecit veluti F. et hinc inde eius notæ numerales non apparent. — 2) In titulo ab antiqua manu, causa nobis ignota, ante reducto litteris capitalibus serioribus nunc semierasis: NESCIO DNE et post reducto eadem ratione NAMFVIT, sed extrema paululum incerta — 3) Prius transituria — 4) Alii stultitiam — 5) Prius videtur veheem.. sed postea erasum e — 6) Alii tertia — 7) Alii ad idem monasterium — 8) Alii hora orationis psalmodiae sese...

κλησίας ἔλκων: » οἱ δὲ ἀποκριβέντες, εἶπον· « Οὐχὶ πάτερ, » πρὸς οὖς ὁ ἄγιος εἶπεν· « Εὐξώμεθα ὅπως καὶ ὑμεῖς θεάσησθε ὅν οὖτος ὁ μοναχὸς ἀκολουβεῖ. » Ως δὲ ηὖξαντο ἐπὶ δύο ἡμέρας, Μαῦρος ὁ μοναχὸς ἐβεάσατο· Πομπεἰανὸς δὲ ὁ τοῦ αὐτοῦ μοναστηρίου πατήρ θεωρῆσαι οὐκ ἤδυνήθη· τῆ δὲ ἐπιούση ἡμέρα πληρωθείσης τῆς εὐχῆς ὁ τοῦ Θεοῦ ἄνθρωπος ἐξελθών ἐκ τοῦ εὐκτηρίου ἑστῶτα ἔξω τὸν μοναχὸν εὖρεν, καὶ τοῦτον διὰ τὴν τύφλωσιν τῆς καρδίας αὐτοῦ τῆς ῥάδοφ ἔτυψεν· ὅστις ἀπὰ αὐτῆς τῆς ἡμέρας ἡλευβερώθη ἐκ τῆς συνεχούσης αὐτὸν ῥαβυμίας τοῦ δαίμονος, καὶ λοιπὸν ἐν τῆ προσευχῆ προθύμως σὺν τοῖς ἀδελφοῖς μέχρι συμπληρώσεως διέμεινεν, 1 μηκέτι τοῦ ἐχθροῦ ἐκείνω τῷ ἀδελφῷ προσψαῦσαι τολμήσαντος, ὡς οἶα ὑπὸ τοῦ άγίου τῆ πληγῆ τῆς ῥάβδου μαστιγωθεὶς.

1) Alii διέμενε.

S. Nilus Od. V. Καταβαλών τον σονηρον Μωσαϊκή βακτηρία τον παϊδα ἀκηδίας τοῖτον ἡλευθέρωσας, και ιδάτων ρεϊθρα ἐποίησας ἀναβλύσαι τοῖς ἀδελφοῖς και εὐφρανθήσεσθαι τοὺς μετεσχηκότας, και αἶνον εὐχαρις ήριον σροσάξαι θεῷ. Mosaica virga malum adolescentem percutiens ab acedia hunc liberasti, et aquarum fluenta scatere iussisti, ut fratres et lætarentur haurientes, Deoque gratiarum laudes offerrent.

Pompeiano nomine, et Mauro Dei famulo secreto dixit: Numquid non aspicitis quis est qui istum monachum foris² trahit? Qui respondentes dixerunt: Non. Quibus ait: Oremus, ut vos etiam videatis, quem iste monachus sequitur. Cumque per biduum esset oratum. Maurus monachus vidit; Pompeianus autem³ ejusdem monasterii Pater videre non potuit. Die igitur alia, expleta oratione vir Dei oratorium4 egressus, stantem foris monachum repperit, quem pro cecitate cordis sui virga percussit; qui ex illo die nil persuasionis ulterius a puerulo⁵ pertulit, sed ad orationis studium inmobilis permansit: sicque antiquus hostis6 dominari non ausus est in ejus cogitatione, ac si ipse percussus fuisset ex verbere.

1) Pompeiano in fine habet rasuram: forte.. nno. fuerat — 2) Alii foras — 3) Alii vero pro autem — 4) Prius oraturium — 5) Alii nigro iam puer.. — 6) Duo codd. addunt ulterius.

Pompeianus abbas S. Michaëlis Archangeli fuisse dicitur, de quo monasterio in hoc Capite sermo est. Mirtz in Chronico cap. V. « Dictum sanationis miraculum in eo contigisse monasterio dico, prout sentierunt nostri majores et quemadmodum pictura ecclesiæ Sacri Specus vetustissima docet ad veritatis argumentum, quæ idiotis loco librorum inservit, et affirmat id quod repræsentat, nomen monasterii explicans, » Deinde notitias tradit, quas et habet Jannucelli. Ad hunc locum Cf. Gordianum - Vita S. Mauri.

KEDAAAION E'.

Περί του έξελθόντος χειμάζόου δια τοροσευχής αυτου έχ πέτρας ζώσης.

Ε΄. Εχ των βηβέντων τοίνυν μοναστηρίων, ώνπερ έν αὐτώ τῷ τόπῳ συνεστήσατο ὁ ἐν άχίοις κατήρ Βενέδικτος,2 τρία έξ αὐτῶν ὑωεράνω τῶν τοῦ ἐρους ἦσαν κρημνῶν,³ καὶ σφόδρα ύσηρχεν τοις άδελφοις έπίμοχθον του διηνεκές κατέρχεσθαι είς του λάκκου, καὶ τηυ τοῦ ύδατος πορίζεσθαι χρείαν ή γαρ πάροδος δια του έπικινδύνου μέρους του δρους ήν, ώστε σύν φόβω πολλώ κατιέναι αύτοῖς καὶ⁵ ανέρχεσθαι. Τότε συναχθέντες οί έν τοῖς τρισίν ἐκείνοις μοναστηρίοις κατοικούντες μοναχοί πρός τον δούλον του Θεού Βενέδικτον **σ**αρεγένοντο, παρακαλούντες αὐτὸν καὶ λέγοντες· « Πάτερ τίμιε, δύσκολον ήμεν έστι διά την του δρους άμφίκρημνον διάβασιν έως τοῦ λάκκου κατέρχεσθαι, καὶ τὴν τοῦ ΰδατος χρείαν πορίζεσθαι ἐπάναγκες οὖν ἐστι μετοικῆσαι⁶ τὰ μοναστήρια, ίνα μή τινες των άδελφων όλισθήσαντες βιαίω τικοῖς λόγοις ἀπαλείψας ἀπέλυσεν. Αὐτῆ δὲ τῆ νυκτὶ ταραλαβών νεανίαν τινά μεθ' έαυτοῦ, Πλάκιδον τοὖνομα, οὖ καὶ τὸ πρὶν μνείαν ἐωοιήσαμεν, ἀνῆλθεν ἐν τῷ αὐτῷ τοῦ ερους δυσβάτω κρημνώ, 8 και αὐτό Ωι εν τη τρος Θεον δεήσει προσκαρτερήσας, άναστας άπο της προσευχής, και τρείς άράμενος λίθους, εν αὐτῷ τῷ τόπῳ ἀπο διαστήματος εθετο. καὶ πάντων άγνοούντων τὸ γεγονὸς θαῦμα ἐν τῷ ἑαυτοῦ ύπέστρεψεν κελλίω.

Τῆ δὲ ἐπαύριον παρεγένοντο πρὸς αὐτὸν οι προειρημέ-

¹⁾ Titul. in Cod. Colb. περὶ τοῦ θαύματος τῆς πηγῆς — 2) Cod. Colb. ὁ ἄγιος πατὴρ ἡμῶν Βενέδ.. — 3) Cd. Colb. τῷ.. κρημνῷ.

^{. 4)} Alii τὸ διηνεκώς. Cd. Colbertin. τοῦ δ.. — 5) Alii αὐτοῖς καὶ. 6) Cd. Paris. μετοικίσαι — 7) Alii ἀπαλείψας — 8) Cd. Parisien. τω τόπω τοῦ κρημνοῦ.

CAPUT V.

De aqua¹ quam in montis² vertice

ex petra produxit.

Ex his autem monasteriis quae in eodem loco construxerat, tria sursum in rupibus montis² erant, et valde erat fratribus laboriosum, semper ad lacum³ descendere, ut aquam haurire⁵ debuissent: maxime quia ex devexo⁶ montis latere erat grave descendentibus in timore periculum. Tunc collecti fratres ex eisdem tribus monasteriis, ad Dei famulum Benedictum, venerunt, dicentes: Laboriosum nobis est propter aquam cottidie usque ad lacum descendere, et idcirco necesse est ex eodem loco monasteria mutari. Quos blande⁷ consolatus⁸ dimisit, et nocte eadem cum parvulo puerulo, nomine Placido, cujus superius memoriam feci, ejusdem montis ascendit rupem ibique diutius oravit. Et oratione conpleta, tres petras in loco eodem pro signo posuit, atque ad suum cunctis illic10 nescientibus monasterium rediit. Cumque die alio11 ad eum pro necessitate aquae praedicti fratres rediissent, 12 dixit: Ite, et rupem illam in qua tres super

¹⁾ In aliis titulus De aqua viri Dei oratione in montis vertice producta — 2) Cod. muntis — 3) Prius videtur luacum; sed per ras. emend. — 4) Prius hic et inferius discend... — 5) Cod. aurire 6) Alii e divexo — 7) Ut alibi cod. prius plande — 8) Alii consolans, alii consolatos — 9) Alii parvo — 10) Alii illis — 11) Quidam alia — 12) Prius rediisset.

όσιος πρός αὐτοὺς εἶωεν· « Ανέλβατε, ι τέκνα ἐν ἐκείνω τῷ κρημνῷ, ἐν ῷ εὕρήσητε² τρεῖς λίθους ὕπερβεν ἀλλήλων κειμένους, καὶ ἐν αὐτῷ τῷ τόωῳ ὀρύξατε· δυνατὸς γάρ ἐστιν ὁ παντοδύναμος Θεὸς καὶ ἐν ἐκείνω τῷ ὕψει τοῦ ὄρους ὕδωρ ὑμῖν δαψιλὲς παρασχεῖν, καὶ πὴν ἐπίμοχβον δυσκολίαν τῆς ὁδοῦ ῥαδίαν ωοιῆσαι.»

Οί δὲ ἀπελθόντες ἐν τῷ τοῦ ὄρους κρημνῷ εὖρον οὕτως, καθώς ὁ Πατὴρ εἶπεν. ἐν ῷ τόπῳ ἡ τοῦ ὄρους ἄνυδρος σκληρότης ἰκμάδας τινὰς καὶ ἱδρῶτας ὕδατος ἀνέπεμπεν. Ποιήσαντες οὖν ὄρυγμα μέγα παραυτὰ ὑδάτων πληθος ἀνέβλυσεν, ἄπερ μέχρι τοῦ νῦν ἀφθόνως ὑπερχεῖται, τὴν τοῦ ἀγίου θαυματουργίαν εἰς τὸ διηνεκὲς πᾶσιν δεικνύοντα ἡ δὲ τῶν ὑδάτων περισσεία ὑπὸ τὸ ὄρος διεκτρέχουσα φαίνεται.

1) Alii Ανέλθετε — 2) Alii εύρήσετε — 3) Cod. f. 52. — 4) Pri-

us ...χεῖνται; alii ὑπερεκχεῖται, Cd. Flor. ὑπερεκχύνεται.

S. Joseph hymnographus Ode V. 3. Σημειουργον εν Χριςῷ ὅδωρ πηγάσαι δι' εὐχῆς, ἔσιε, ἐκδυσωωεῖς τὸν ἀγαθοδότην, ὅπερ διαμένει ἐωανακηρύττον τὸ θαῦμα, Βενέδικτε. Oratione tua, o sancte Benedicte, deprecaris beneficum datorem mirabilium auctorem, ut aquam manare iubeat; quæ perdurat adhuc prædicans prodigium.

invicem positas petras invenitis,¹ in modico cavate: valet enim omnipotens Deus etiam in illo montis cacumine aquam producere, at vobis laborem tanti itineris² dignetur auferre. Qui euntes, rupem montis, quam Benedictus praedixerat, jam sudantem invenerunt. Cumque in ea concavum³ locum fecissent, statim aqua repletus est, quae tam sufficienter emanavit,⁴ ut nunc usque ubertim defluat, atque ab illo montis cacumine usque ad inferiora derivetur.⁵

1) Alii inveneritis — 2) Prius iteneris — 3) Prius cuncavum — 3) In emanavit super rasura em. — 5) Prius diriv.. ut alias.

Tria monasteria in rupibus constituta historici narrant fuisse dicata variis Sanctis. Inter alios Constantinus GAETANI in opere suo adhuc MSS. asservato in Bibliotheca Chisiana Urbis de duodecim monasteriis historiam narrat ex documentis Sublacensibus.

MIRTZ in Chronic. et Panella Pellegrinaggio p. 63. narrant apud monasterium S. Ioannis Baptistæ De aqua prodigium aquæ ex petra derivatæ accidisse.

Marcvs discipulus S. Benedicti, de eius recessu Sublaci in carmine suo dicit:

Ast huc perducto scopuli cessere, rubique Siccaque mirandas terra retexit aquas.

FRODOARDUS de prodigio cecinit (Act. SS. O. S. Bened. I. suppl.)

Athletis dux addit opes, dat commoda castris

Alto monte sitis, celsa de rupe profundit

Largifluas prece militibus sitientibus undas..

Et Bertharius Abbas Cassin. et martyr sæculo IX. in carmine suo de vita Benedicti habet:

Rupe latex exit, cum rogitas Dominum.

Περί τοῦ ἐκπεσόντος ἐν τῆ λίμνη σιδηροῦ ἐργαλείου. 1

ς΄. Αλλοτε ωάλιν ἀνήρ τις τῷ μὲν γένει Γότθος,² πτωχὸς δὲ τῷ, πνεύματι, ἐν ἐπιστροφῆ μετανοίας πρὸς τὸν ήγιασμένον Βενέδικτον παρεγένετο, δν ὁ ἀνθρωπος τοῦ Θεοῦ προθύμως ὑπεδέξατο.

Εν μιὰ δὲ τῶν ἡμερῶν ἐκέλευσεν ὁ ἄγιός τινι τῶν ἀδελρῶν δοῦναι αὐτῷ σιδηροῦν ἐργαλεῖον, ὅπερ ἐπιχωρίως ὀνομάζεται ξυλοκόπην,³ πρὸς τὸ ἐκκαθᾶραι ἀκανρώδη καὶ φρυγανώδη τόπον, εἰπως δυνηθῶσιν γεωργῆσαι κῆπον τοῖς ἀδελφοῖς ὁ δὲ τόπος ἐκεῖνος, ὁν ἐπὶ τῷ καθᾶραι ὁ Γότθος ἐδέξατο, ὑπεράνωθεν τοῦ λάκκου ἦν ἡνίκα δὲ ὁ Γότθος τὰ τῶν ἀκανθῶν δάση, τῆ τοῦ πατρὸς πειθόμενος ὑπακοῆ, δυνάμει ἐξέκοωτεν, τὸ σιδηροῦν ἐργαλεῖον ἐκ τοῦ συμβεβηκότος ἐν τοιούτω βάθει τοῦ λάκκου πέωτωκεν, ἐν ῷ οὐκ ἦν προσδοκία τῆς εὐρέσεως αὐτοῦ. Ο δὲ προβρηθεὶς Γότθος πρὸς Μαῦρον τὸν μοναχὸν ἔδραμεν, καὶ τὸ συμβὰν ἀνήγγειλεν αὐτῷ, καὶ ὑπὲρ τοῦ σφάλματος μετάνοιαν ἐξητεῖτο. Ο δὲ μοναχὸς Μαῦρος σπουδαίως τὸ γεγονὸς ἀνήγγειλεν τῷ ἀνθρώπῳ τοῦ Θεοῦ.

Ο δε βαυματουργός οὖτος ἀνήρ ταῦτα ἀκούσας, ἦλβεν εἰς τὸν τόπον ἐν ῷ ἦν πεσὸν τὸ σιδήριον, καὶ ἄρας τὸ μα-νούβριον⁴ ἐκ τῶν τοῦ Γότβου χειρῶν, καὶ τούτου τὸ μέρος ἐν ῷ ἦν καβηλωμένον τὸ ἐργαλεῖον ἐν τῷ λάκκῳ χαλάσας,

1) Titulum in Codice Colbertino habemus: Περὶ τοῦ Γότθου καὶ τοῦ ξυλοκοπίου. — 2) Codex noster hic et aliis locis inferius, ut alibi, scribere solet Γόθθος pro Γότθος — 3) Codex Paris. Regius habet ξυλοκόωιον, alii ut editiones ξυλοκόωιον. Colbertinus et Florentinus, ut Cryptensis Vaticanus — 4) Codex Reg. Parisien. et Colbertinus μανούβριον, sed Codex Florentin. μανύβριον.

S. Nilus (apud Jacobum Sciómmari Oper. citat. pag. VII) hæc quoque narrat in canticis suis de S. Benedicto Ode V. tropar. 2. Λέγειν οὺχ οἶός τέ εἰμι τῶν σῶν, σεφὲ, Βαυμασίων τὸ πλῆθος. Ελισσαίου γάρ σει τὸ τεράςιον ἐν τῷ Γότθω πλῆρες πεποίηκας, καὶ

CAPUT VI.

De ferro ex profundo aquae ad manubrium reverso.

Alio quoque tempore Gothus quidam pauper spiritu ad conversationem² venit: quem vir Domini Benedictus libentissime suscepit. Quadam vero die ei dari ferramentum jussit, quod a falcis similitudine³ falcastrum⁴ vocatur, ut de loco quodam vepres abscinderet,5 quatenus illic fieri hortus deberet. Locus autem ipse quem⁶ mundandum Gothus susceperat, super ipsam laci ripam jacebat. Cumque Gothus isdem⁷ densitatem veprium⁸ totius virtutis adnisu succideret,⁹ ferrum de manubrio prosiliens in lacu¹⁰ cecidit, ubi scilicet tanta erat aquarum profunditas, ut spes requirendi ferramentum¹¹ nulla jam esset; Itaque ferro perdito, tremebundus ad Maurum monachum cucurrit¹² Gothus: damnum quod fecerat nuntiavit, et reatus sui egit paenitentiam. Quod Maurus quoque monachus mox Benedicto Dei famulo¹³ curavit indicare. Vir igitur Domini Benedictus haec audiens accessit ad locum:14 tulit de manu Gothi manubrium, et misit in

¹⁾ Nota numeralis a 2.m. deest. — 2) Alii conversionem.

3) Alii cdd. ad falcis similitudinem — 4) Prius falicastrum.

5) Prius abscideret, quatinus — 6) Alii quem ad — 7) Pro idem Cod. isdem — 8) Ut alibi, prius vid. vebrium — 9) Prius succed.. — 10) Alii lacum — 11) Postea 2. manu ferramenti.

12) Prius cucorrit — 13) Cod. Nan. Dei filio — 14) Alii lacum.

εὐθέως ἐκ τοῦ βυθοῦ τοῦ ὕδατος τὸ ἐργαλεῖον ἀνελθὸν εἰσῆλθεν ἐν τῷ ἑαυτοῦ τόϖῳ. Οπερ ἀκανθοκόϖον ἐργαλεῖον ἀπέδωκεν ὁ ἄγιος τῷ Γότθῳ, εἰπών· « Ιδοὺ τὸ ἐργαλεῖον, δεξάμενος τοῦτο, ἐργάζου, καὶ μηδεν λυπηθῆς.

Φλορέντιον τὸν δεινὸν, πτω θέντα ἐκλαυσας τα αιδεύσας τὸν τοῦτο μηνίσαντα μαθητήν, πτώσει μή χαίρειν ἐχθρῶν. Par non sum, o sapiens, tuorum referre multitudinem miraculorum; Elisæi enim portentum in Gotho perfecisti, infestumque Florentium plorasti extinctum, discipulum hoc nunciantem corripiens, ne de inimicorum interitu gauderet.

Et idem. (Inni. pag. 14.) Ω Βενέδικτε πανόλβιε, σὲ Ελισσαῖον σαφῶς νέον ἄλλον ἐγνώκαμεν καὶ γὰρ άμιλλόμενος τοῦτον, ῷ ωολυθαύμαστε, ἐκ τῶν ὑδάτων αὖτι ἀνήγαγες, ὡσωερ ἐκεῖνος, σὺ τὸ σιδήριον. Ο Benedicte prorsus venerande, veluti novum alterum Elisaeum te conspicimus; quocum enim certans patrator multorum mirabilium, rursus, ut ille, e profundo aquarum educis ferrum.

lacum: et mox ferrum de profundo rediit, atque in manubrium intravit. Qui statim ferramentum Gotho reddidit, dicens: « Ecce labora, et noli contristari. »

1) Prius reddedit.

FAUSTUS in vita S. Mauri magistri sui § 14 (Act. SS. Ord. S. Benedicti t. I.) dicit: « cuius (Benedicti) pene omnibus virtutibus aut interfuit, aut cooperator extitit (Maurus)», et hoc refert prodigium.

Mirtz in Chronico Subl. hæc accidisse in eo loco qui prius Vinea columbaria appellabatur, ubi postea fuit unum e duodecim cœnobiis, B. Clementi mart. dicatum. Apud istud S. Benedictus habebat « pomiferum hortum, ubi herbæ et olera dispositis areolis nascebantur.. » cf. Jannucelli p. 77.

S. Bertharius Abbas Cassinensis et mart. in suo carmine ait: Ferrum, dum vepres resecat Gothus, insilit undis; Sed repetit manicas mox, ubi tinguis aquas.

КЕФАЛАІОN Z'.

Περί Μαῦρου μοναχοῦ τοῦ ἐωί τῶν ὑδάτων πεζεύσαντος.

Ζ΄. Εν μια των ήμερων, του σημειοφόρου τούτου ανδρός1 Βενεδίκτου έν τῷ έαυτοῦ ἡσυχάζοντος κελλίω, ὁ ωρολεχθείς μοναχός Πλάκιδος έπὶ τὸ ἀντλησαι ὕδωρ εἰς τὸν λάκκον ααραγέγονεν το ουν σκεύος έν ῷ το ύδωρ ἀντλησαι έβούλετο έκ της χειρός αὐτοῦ πεσόν, δια της τοῦ ὕδατος ρύμης έπεφέρετο. θέλων δε ό άδελφος έκ τοῦ ύδατος άφαρπάσαι το κεράμιου, καὶ αὐτὸς ὀλισθήσας, πέπτωκεν ἐν τοῖς ὕδασιν και ύπο της των ύδάτων σφοδροτάτης κινήσεως, έπι τα ένδον τοῦ λάκκου, σχεδον είπεῖν ώσει τόξου βολήν ό μοναχὸς Πλάκιδος ἐφέρετο. Ο δὲ τοῦ Θεοῦ πιστὸς Βεράπων Βενέδικτος ένδον τοῦ έαυτοῦ κελλίου σχολάζων, διέγνω το συμβάν, καί τον έαυτου μαθητήν Μαύρον συντόμως καλέσας έφη προς αὐτὸν· « Αδελφε Μαῦρε, σπεῦσον ὅτι² ὁ ἀδελφὸς Πλάκιδος εἰς τον λάκκον ένέπεσεν, και ή των ύδάτων κίνησις μακράν αύτου ἀπήγαγευ. » Θαυμαστου πρᾶγμα, και μετὰ Πέτρου του Απόστολον ξένη ἐπιτροωή· αἰτηθεῖσα γαρβ παρὰ Μαύρου τοῦ μοναχου πιστώς και ύπο του μακαρίου Βενεδίκτου παρασχεθεῖσα συντόμως. Εδάδιζε τῆ τοῦ πατρὸς κελεύσει, καὶ ἐν τῷ τόπῳ γενόμενος, ἐν ῷ ἐν τοῖς ὕδασιν ὁ Πλάκιδος ἐφέρετο, άδιστάκτω τη πίστει και ταίς του πατρός εύχαις θαρρών ἐπέβη τοῖς υδασιν, καὶ ώς ἐπὶ ξηρᾶς δρομαίως ἐβάδιζεν έως του τόπου εν ῷ διὰ τῆς τοῦ υδατος ὁρμῆς ὁ Πλάκιδος έπεφέρετο και δραξάμενος των της κεφαλης αύτου τριχών όξυτάτω δρόμω ύπέστρεψεν. Οστις ευθέως έωι την ξηράν ελθών, και εν έαυτω γενόμενος και επιγνούς ότι επάνω των ύδάτων έδραμεν, και ότι αὐτομολησαι τοῖς ὕδασιν

1) Paris. et Colbertin. τούτου τοῦ ἀγίου ἀνδρὸς — 2) Alii ὅτι καὶ 3) Alii omittunt γὰρ — 4) Cd. Florent. αἰτηθεὶς et παρασχεθεὶς συντόμως. Editores hoc in loco animadvertunt: (Migne Patrologia latina t. 66. c. 145): «Phrasis ut est in textu, in gravi mendo cubat. Legendum enim esset αἰτηθείσης γὰρ.. καὶ.. παρασχεθείσης εὐχῆς, συντόμως..» Verum attente legenti non videtur textus esse vexandus, sed recte interpungendus atque intelligen-

CAPUT VII.

De Mauro eius¹ discipulo, qui super aquas

pedibus ambulavit.

Quadam vero die dum idem² venerabilis Benedictus in cella consisteret, praedictus Placidus puer sancti viri monachus ad hauriendum³ de lacu aquam egressus est: qui vas quod tenuerat in aqua4 incaute submittens, ipse quoque cadendo secutus est. Quem mox unda rapuit, et pene⁵ ad unius sagittæ cursum a terra introrsus traxit.6 Vir autem Dei intra cellam positus, hoc protinus agnovit, et Maurum festine vocavit, dicens: Frater Maure, curre, quia puer ille, qui ad hauriendum aquam perrexerat, in lacu⁷ cecidit, jamque eum longius unda trahit. Res mira, et post Petrum⁸ apostolum inusitata! Benedictione etenim postulata9 atque percepta, ad Patris sui imperium concitus perrexit Maurus; atque usque ad eum locum quo ab unda ducebatur¹⁰ puer, per terram se ire exæstimans, super aquas11 cucurrit eumque per capillos tenuit, rapido quoque cursu rediit. mox¹² terram tetigit, ad se reversus post terga respexit, et quia super aquas cucurrisset

¹⁾ In titulo alii De monacho cius. — 2) Ut alibi, Codex isdem.
3) Prius auriendum, alii hauriendam — 4) Alii in aquam — 5) Cd.
pæne in un. — 6) Alii eum.. rapuit — 7) Alii lacum — 8) Prius
Patrum, sed emendatur — 9) Cod. postol. — 10) Alii deducebatur — 11) Alii aquam — 12) Alii mox ut.

αδύνατον αὐτῷ ἦν, εἰ μὴ ἡ τοῦ σημειοφόρου πατρός εὐχὴ τοῦτον ἐνίσχυσεν βαυμάσας, ἐτρόμασεν τὸ γενόμενον, καὶ ὑποστρέψας¹ πρὸς τὸν πατέρα τὸ τελεσβὲν θεῖον τεράστιον ἀνήγγειλεν αὐτῷ. Ο δὲ ἀνθρωσος τοῦ Θεοῦ Βένέδικτος τοῦτο τὸ βαῦμα, οὐ τῷ ἑαυτοῦ ἀγιότητι, ἀλλὰ τῷ ἐκείνου ὑπακοῷ ἐπεγράφετο ὁ δὲ Μαῦρος τὴν τοῦ ἀγίου τιμιωτάτην κέλευσιν ἔφασκεν τοῦτο πεωραχέναι ἔλεγεν γὰρ μὴ εἶναι ἑαυτὸν ἐν αὐτῷ τῷ δυνάμει, ἐν ῷ ἦν ὅτε ἐπέδη τοῖς ὕδασιν. Προσχών δὲ ὁ μοναχὸς Πλάκιδος τῷ τούτων βεομιμήτῳ ταπεινολογία² καὶ ωροσφιλεστάτῃ ἀμφιλογία, ἔλεγεν «Εγώ ἐν οσῳ ἐσυρόμην ὑωὸ τῆς τῶν ὑδάτων ὁρμῆς ἐπάνω τῆς κεφαλῆς μου του ἀββᾶ μου τὴν μηλωτὴν ἐθεώρουν, καὶ αὐτόν με ἐκ τῶν ὑδάτων ἐκδάλλοντα κατενόουν.

ΠΕΤΡΟΣ.

Μεγάλα εἰσὶν σφόδρα, ἄπερ λέγεις, καὶ μεγίστην ψυχαῖς οἰκοδομὴν παρέχοντα· ἐγω δὲ τοῦ άγίου τουτου ἀνδρὸς τὰ Βαυμάσια,² ὅσω πλεῖον ἐκπίνω, πλειοτέρως διψω.

dus: θαυμαστὸν πρᾶγμα! καὶ μετὰ Πέτρον τον ἀπόστολον ξένη ἐπιτροπη αἰτηθεῖσα γὰρ ωαρὰ Μαύρου μοναχοῦ ωιστῶς, καὶ ὑπὸ τοῦ μακαρίου Βενεδίκτου παρασχεθεῖσα. Συντόμως ἐβάδιζε.. Sic codex habet «Res mira! etiam post Petrum apostolum inusitata commissio, a Mauro quidem monacho cum fide postulata et a beato Benedicto data. Statim perrexit..»

1) Cd. Paris. καὶ θαυμάσας τὸ γεγονὸς ἐτρόμαξεν, καὶ ὑποστρέψας - Cod. Colbertin. tantum ἐτρόμαξε pro ἐτρόμασε varium ha-

bet — 2) Cd. Colbert. Θεολογία — 3) Quidam Θαύματα.

S. Nilus Ode IV. Ισχύϊ μη φέρων την ολίσθησιν τη τοῦ ρείθρου φορὰ, ἐφέρετο ὁ μείραξ· τὸν Πέτρον δὲ μιμούμενος Μαῦρος σαῖς εὐχαῖς, ἐφ΄ ὑδάτων πεζεύσας τοῦτον διέσωσεν. Lapsu exanimatus adolescens ille, profluentis aquæ impetu ferebatur; Maurus vero tuis precibus Petrum imitatus, super aquas incedens, hunc sospitem reduxit.

Idem (Inni pag. 14.) Πέτρος δ' ώς αὖ πάλιν ἐφ' ύδάτων ὅπερ-Θεν πεζοβαδῶν Πλάκιδον ἀνηλκυσεν Θανατηφόρου βυθοῦ. Ut olim Petrus rursus pedibus ambulans (Maurus) super aquas sursum

Placidum e lethali gurgite eduxit.

agnovit, et quod praesumere non potuisset ut fieret, miratus extremuit factum.¹ Reversus ad² Patrem, rem gestam retulit.³ Vir autem venerabilis Benedictus hoc non suis meritis, sed obedientiae illius deputare⁴ coepit. At e contra Maurus pro solo ejus imperio⁵ factum dicebat: seque conscium⁶ in illa virtute non esse, quam nesciens fecisset. Sed in hac humilitatis mutuae amica⁻ contentione accessit arbiter puer qui ereptus est; nam dicebat: Ego cum ex aqua traherer, super caput meum abbatis melotem videbam, atque ipsum me ex aquis educere considerabam.

PETRUS.

Magna sunt valde quae narras, et multorum aedificationi⁸ profutura: ego autem boni viri miracula cum⁹ plus bibo, plus sitio.

1) Cd. Bess. quod petere non præsumpsisset ut fieret, miratur factum Alius Cd. extimuit factum — 2) Alii itaque ad — 3) Prius rettulit.
4) Vid. prius depotare — 5) Prius imperium — 6) Prius consium — 7) Alii mutua amicaque — 8) Alii et ad multorum ædificationem — 9) Prius quod pro cum, — Alii quo plus bibo eo plus.

Gordianus, Vita S. Placidi § 11. 12. Et in vita metrica, Paulo Diacono perperam adscripta, (Act. SS. O. S. Ben. t. I. p. 283) legimus:

Obstvpeat ratio, Maurus quod in amne cucurrit; En Petrus alter adest; obstupeat ratio.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ Η'.

Περί τοῦ ζυμωθέντος ἐν •τῷ ἄρτω φαρμάκου.

ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ.

Η΄. Εν τῷ τὸν μακάριον διαλάμψαι ἐν τοῖς τόποις¹ ἐκείνοις, πολλοί δια τον πόθον τοῦ κυρίου ήμων Ιησοῦ Χριστοῦ μήκοθεν πρός αὐτὸν παρεγίνοντο, και την τοῦ βίου ματαιότητα καταλειμπάνοντες ύπο τον χρηστον του κυρίου ζυγον τον έαυτων καθυπέτασσον τράχηλον: Ο δε του φθόνου γεννήτωρ, και των εὐσεβων ἀρχαῖος ἐχθρὸς, μὴ δυνάμενος φέρειν τὰς ἀω αὐτοῦ ἀωαστραπτούσας τῶν θαυμάτων μαρμαρυγάς, και όρῶν έαυτον ήττώμενον ύπο τῆς τοῦ άγίου θεοσδότου δυνάμεως, ένσκήψας² έν ταῖς τῶν ἀτάκτων ψυχοφβόροις διανοίαις, καθώς σύνηβες αὐτοῖς ἐστιν φθονεῖν τοῖς τῶν έτέρων κατορθώμασιν ὁ γὰρ τοῦ καβαρεύοντος ἔπαινος, τῶν ὑπὸ βασκανίας μολυνομένων ὄνειδος τυγχάνει. Οθεν τῆς αὐτόθι γειτνιαζούσης ἐκκλησίας πρεσβύτερός τις, Φλορέντιος τοὖνομα, ό τοῦ ήμετέρου ὑποδιακόνου Φλορεντίου πάππος, τοῦ παγκάκου δαίμονος τὸ μῖσος καὶ τὸν φθόνον ἐν ἑαυτῷ ύποδεξάμενος, ήρξατο σκώπτειν3 τε καί βασκαίνειν ταῖς τοῦ όσίου ανδρός αρεταίς, έλπίζων έκ τούτου πολλούς αποσπασαι έκ της τοῦ άγίου ψυχωφελοῦς διδαχης. Ως δὲ τῆς φρενοβλαβοῦς ἐλπίδος ἀπέτυχεν, και ἐθεώρει πολλούς ὑπό τῆς αύτοῦ φήμης έλκομένους, καὶ πρὸς αὐτὸν φοιτῶντας,5 καὶ ταῖς αὐτοῦ διδαχαῖς πληθυνομένους, καβάπερ ὑωο βελῶν τιτρωσκόμενος δ Φλορέντιος, την μεν τοῦ δσίου ἀνδρὸς πολιτείαν διέβαλλεν, εσαινετήν δε ζωήν έαυτῷ ἐπισπᾶσθαι δί άσκητικών άγώνων οὐδαμώς είλατο. Οστις ύπο τοῦ διαβόλου σκοτισθείς τους της καρδίας όφθαλμους μέχρι τούτου έχώρησεν, ΐνα τον δοῦλον τοῦ Θεοῦ δηλητηρίω θανατώση. Φυράσας γαρ αλευρον, εἶτα ζυμώσας αρτον, καὶ ἐν αὐτῷ ἐγ-

¹⁾ Alii πόνοις pro τόποις — 2) Editores quidam addunt Forte ἐνέσκηψε — 3) Codex σκόπτειν scripserat — 4) Codex noster, ut aliis locis, scribit ψυχοφέλοῦς — 5) Cd. φυτ.. pro φοιτ.. scripserat. 6) Alii δσίου πατρὸς — 7) Quidam διέβαλεν.

CAPUT VIII.

De pane veneno infecto per corvum longius proiecto.¹

GREGORIUS.

Cum jam loca eadem in amore Dei Domini Jesu Christi longe lateque fervescerent,2 multi relinquerent, et sub saecularem vitam leni Redemptoris jugo cervicem cordis edomarent, sicut mos pravorum est invidere aliis virtutis bono, quod ipsi habere non appetunt, vicinae ecclesiae presbyter, Florentius nomine, hujus nostri subdiaconi Florentii4 avus, antiqui⁵ hostis malitia perculsus, sancti viri studiis coepit aemulari, ejus quoque conversationi derogare: quosque etiam posset,8 ab illius visitatione conpescere. Cumque se jam conspiceret ejus provectibus9 obviare non posse, et conversationis illius opinionem crescere, atque multos ad statum vitae melioris, ipso quoque 10 opinionis ejus praeconio indesinenter vocari¹¹ invidiæ facibus magis magisque succensus, deterior fiebat: quia conversationis illius habere appetebat laudem, sed habere¹² laudabilem vitam nolebat. Qui ejusdem invidiae tenebris¹³ caecatus, ad hoc usque

¹⁾ In titulo alii: De pane veneno infecto — 2) Prius fervisc...

3) Alii bonum — 4) Prius suddiaconi Florenti — 5) Cod. prius anqui pro antiqui — 6) Alii percussus. — 7) Alii eiusque pro eius quoque — 8) Cod. possit — 9) Alii profectibus — 10) Prius ipso quoquo, sed emend. 2. m. — 11) Quidam vocare. In aliis deest verbum — 12) Verba appetebat laudem, sed habere suppleta in margine ab ipsa 1. manu — 13) In fine i super rasur.

χούψας δανατηφόρου φάρμακου, καί δπτήσας, ώς δήθευ εύλογίας χάοιν τῷ τοῦ Θεοῦ ἀνδρώπω ἀπέστειλεν. Ο δὲ δισρατικός έχείνος άγκρο του μέν άρτου εύχαριστως έδέξατο. ού μέν τοι δε διελαθεν αύτον ό έν τῷ ἀρτω κουπτόμενος ठेडी.डड्. ६० ठेड़ उप कुटब इ० पूँ डा कहा ह ब्रीडड् उड्डिंड पहरबारबान βάνειν, δονεον, το δή λεγόμενον κόρκξ, έν τη σύνεγγυς ύλη την οίχησεν έχου, κατά το σύνηθες ήρχετο ποός τον άγιον, καί έκ των τιμίων αύτου χειρών άρτον πρός τροφήν έαυτώ έδέχετο. Ο δε ίερος έκεῖνος άνης λαβών τον Βανατηρόρον αρτον, δνπερ την αυτώ αποστείλας Φλορεντιος ο πρεσβύτερος, Επηχεν ένο πιον του κόρακος, και εκέλευσεν αυτώ, λέγων «Εν τῷ ὀνόματι Ιησοῦ Χριστοῦ τοῦ υίοῦ τοῦ Θεοῦ τοῦ ζῶντος λαβε του άρτου τούτου, και εν τοιούτω τόπω βίψου αὐτον, ίνα μηδείς ανδρώσων εύρήση αυτόν. > Τότε ὁ χέραξ ανεφημένο το στόματι και ήπλωμέναις ταις πτέρυξιν, πέριξ τοῦ ἄρτου αὐτοῦ ωεριίπτασθαι καὶ κράζειν Κρέατο, καὶ τοῖς κινήμασιν μηνύειν την έν αύτς ούσαν διαβολικήν σκευωρίαν.3 Πρός ον ο του Θεου άνβρωσος πάλιν ζοξατο λέγειν. « Αρον τούτο, άρον άμερίμνως, και έκει αύτον άπόθου, ένθα εύρε-Αγναι ού δύναται.» Τότε ο κόραξ την του άγίου κέλευσιν έπλήρου,⁴ καὶ σύν φόβω σολλώ λαξών τον άρτον τῷ στόματι, οπζλθεν και τουτον δίψας έν τόπω αβάτω παντελώς τοῖς ἀνθρώποις, μετὰ τρεῖς ὥρας ὑωέστρεψεν, και ἐκ τῶν τοῦ άγίου χειρών την είωθυῖαν τροφήν έδέξατο. Ο δε άπλούστατος και κατά πάντα⁵ επιεικέστατος πατήρ⁶ Βενέδικτος, θεασάμενος την του Φλορεντίου δολοφονείαν, ότι ούχ οξός τε γέγονεν την τούτου πονηρίαν διορθώσασθαι, ύπερ έκείνου μαλλον, η ύπερ αύτου τῷ Θεῷ προσηύχετο.

Αλλ' ὁ προλεχθεὶς Φλορέντιος τοῦ άγίου τὸ σῶμα Βανατῶσαι μὴ ἰσχύσας, ἑτέραν πάλιν κακόνοιάν τε καὶ σατανικὴν πανουργίαν κατὰ τῶν τοῦ άγίου μαθητῶν ἐτεκτήνατο.

¹⁾ Cod. fol. 54. — 2) Cod. Parisiensis & έντες pro èν τῷ ἀρτῳ.
3) Cod. σκεωρίαν pro σκευωρίαν scripsit. — 4) Codex noster ἐωλήρου scripsit. — 5) Cd. scribit καιτὰ pro και κατὰ — 6) Cod. Parisien. ut noster. Quidam ανήρ pro πατήρ — 7) Cod. Florentin. τὴν τούτου δολοφονίαν.

perductus est, ut servo omnipotentis Domini infectum veneno panem quasi pro benedictione transmitteret. Quem vir Dei cum gratiarum actione¹ suscepit,2 sed eum, quæ pestis lateret in pane non latuit. Ad horam vero refectionis illius, ex vicina silva corvus venire consueverat, et panem de manu ejus accipere. Qui cum more solito venisset, panem, quem presbyter transmiserat, vir Dei ante corvum projecit, eique praecepit dicens: In nomine Jesu Christi Domini³ tolle hunc panem, et tali eum in loco projice,4 ubi a nullo homine⁵ possit inveniri. Tunc corvus⁶ aperto ore, expansis alis circa eundem panem coepit discurrere, atque crocitare, ac si aperte diceret, et obedire se velle; et tamen jussa implere non posse.8 Cui vir Dei iterum atque iterum praecipiebat dicens: Leva, leva securus, atque ibi projice, ubi inveniri non possit. Quem diu demoratus, quandoque corvus momordit, levavit, et recessit. Post trium vero horarum spatium abjecto pane rediit, et de manu hominis Dei annonam, quam consueverat accepit. Venerabilis autem Pater contra vitam suam inardescere sacerdotis animum videns, 10 illi magis quam sibi doluit. Sed praedictus Florentius, quia magistri corpus necare potuit, se ad extinguendas discipulorum animas

¹⁾ Cod. Bessarion. cum benedictione — 2) Prius suscipit — 3) Alii Domini nostri — 4) Cod. proice, sic et inferius — 5) Alii hominum.

⁶⁾ Prius curvus — 7) Alii omittunt atque — 3) Alii posset.

⁹⁾ Prius videtur annona — 10) Prius vides.

Αίτων γαρ έν τω κήπω έργαζομένων, ό του διαβολου έργάτης Φλορέντιος έπτα κόρας ώραίας τῷ είδει, καὶ γυμνάς1 όλω τῷ σώματι ἐν τῷ κήπω ἀπέστειλεν, καὶ ταύταις προσέταξεν τοῦ στοηνιάν καὶ παίζειν ενώσειον τῶν μοναχῶν, βουλόμενος καὶ ἐν τούτω τὴν τῶν ἀνδοῶν ἀχοειῶσαι ϖαοθενίαν. Αλλά καὶ ἐν τούτω ἡ παμπόνησος αὐτοῦ διήμαρτεν άφοοσύνη. Την γάρ τούτου διαβολικήν ἐπίνοιαν βεασάμενος ό τοῦ Χριστού μιμητής Βενέδικτος, καὶ φοβηβείς την τών μαθητών ψυχικήν βλάξην, ύπερ δε μόνου του καθ έαυτον φθόνου λογισάμενος, ταύτα τον μιαρώτατον έκείνον Φλορέντιον πράττειν, βέλτιον έχρινεν ο τοῦ θεοῦ δεράπων διὰ τῆς έαυτοῦ ἀναχωρήσεως την των οίκείων μαθητών πραγματεύσασθαι² σωτηρίαν. Καλέσας οθν τους των μοναστηρίων άδελφούς,3 καὶ οἰκονόμους αὐτοῖς ἐγκαταστήσας, παραθέμενός τε αύτους τῷ Θεῷ, λαβών μεθ έαυτοῦ ὀλίγους τινὰς τῶν μοναχών άνεχώρησεν έκ του έαυτοῦ κελλίου, το μῖσος καί την έκείνου δυσμένειαν ταπεινοφρόνως έκκλίνας. Αλλ' ὁ μέν Φλορέντιος ήνόμησεν άμαρτήσας διακενής. Ο δε θεός τον οίκεῖον θεράποντα λυτρωσάμενος είς πολλών σωτηρίαν διεφύλαξεν, πατάξας τὸν ἀλητήριον. Τοῦ γὰρ θεοστυγοῦς ἐκείνου Φλορεντίου έ α ι τη τοῦ μακαρίου ἀνδρός α υποχωρήσει ἀγαλλιασθέντος, και έν τῷ ήλιακῷ τοῦ οἰκου, ἐν ῷ ἐκατώκει, έστῶτος, ἀθρόον συν τῷ ῥηθέντι ἡλιακῷς ἀρ' ΰψους μεγάλου πέπτωκεν, άξίαν της έαυτοῦ σονηρίας δίκην τίσας,6 καὶ βάνατον όλέβριον ἀπενεγκάμενος. Τουτο θεασάμενος ὁ ἀνωτέρω πολλάκις μνημονευθείς Μαύρος ό τοῦ άγίου πατρός φοιτητης, τόη τῷ άγίῳ ἀπέκοντι όδοῦ διάστημα σημείων δέκα ἀπέστειλεν πρός αὐτὸν, λέγων «Υπόστρεψον, πάτερ, ὑπόστρεψον ο πρεσβύτερος γαρ ο μάτην σε καταδιώξας τέθνηκεν.» Ταῦτα ἀκούσας ὁ τοῦ Θεου ἀνθρωπος Βενέδικτος, ἑαυτον έν μεγάλω πένθει κατέτηξεν, δια τον έκεινον οίκτιστου

¹⁾ Cod. Florentin. γεγυμνωμένας — 2) Alii πολιτείσασθαι pro πραγματεύσασθαι — 3) Cod. Parisiensis μοναχούς pro ἀδελφούς.
4) Alii πατρὸς pro ανδρὸς — 5) Cod. Parisiensis σωλαρίω pro ήλιακῷ — 6) Cod. fol. 55.

accendit: ita ut in horto cellae, cui Benedictus inerat, ante eorum oculos nudas septem puellas mitteret, quae coram eis sibi invicem manus tenentes,1 et diutius ludentes, illorum mentem ad perversitatem² libidinis inflammarent³. Quod sanctus vir de cella conspiciens, lapsumque adhuc tenerioribus discipulis pertimescens,4 idque pro sua solius persecutione pertractans,⁵ invidiae locum dedit, atque oratoria6 cuncta quae construxerat⁷ sub statutis⁸ praepositis, adjunctis fratribus ordinavit, et paucis secum monachis ablatis habitationem mutavit loci. Moxque vir⁹ Dei ejus odia humiliter declinavit, omnipotens Deus terribiliter¹⁰ percussit. Nam cum praedictus presbyter stans in solario Benedictum discessisse cognosceret,11 et exultaret, perdurante inmobiliter tota domus fabrica, hoc ipsum, in quo stabat, solarium cecidit, et Benedicti hostem conterens exstinxit.12 Quod viri Dei discipulus, Maurus¹³ nomine, statim venerabili Patri Benedicto, qui adhuc a loco eodem vix decem millibus14 aberat, aestimavit esse nuntiandum, dicens: « Revertere, quia presbyter, qui te persequebatur, extinctus est. » Quod vir Dei

¹⁾ Pro tenentes alii tendentes — 2) Alii mentes a perversitate — 3) Cod. inflamar... — 4) Prius pertimisc.. — 5) Alii sui persecutione fieri pers.. alii addunt sua solius pers.. — 6) Prius oraturia — 7) Cod. construcxerat — 8) Alii substitutis pro sub statutis — 9) Alii ut vir — 10) Cod. terrebiliter — 11) Prius cognoscere — 12) Cod. extincxit — 13) Alii Mauro — 14) Cod. decim milibus.

θάνατον· ελυπήθη δε επί τῷ οἰκείῳ μαθητῆ, ὡς δῆθεν ἐπιχα ρέντι τῷ τοῦ Φλορεντίου ἐλεεινῷ πτώματι, ἐντειλάμενος αὐτῷ, μετανοεῖν ὑπερ τοῦ τοιούτου σφάλματος, ὡς οἶα² χαραποιηθέντι ἐπὶ τῷ τοῦ Φλορεντίου θανάτῳ.

ΠΕΤΡΟΣ.

Θαυμαστά εἰσιν ὄντως καὶ ἐκπλήττοντά με ἄπερ ἐφης. ἐπὶ γὰρ τοῦ ὕδατος τοῦ διὰ τῆς τοῦ μακαρίου προσευχῆς ἐκ τοῦ ὀρους ποταμηδὸν βλύσαντος, τὸν Μωῦσῆν κατανοῶ. ἐν δὲ τῷ σιδηρῷ ἐργαλείῳ, τῷ ἐκ τοῦ βυθοῦ τῶν ὑδάτων τοῦ λάκκου ἀνελθόντι, Ελισσαῖον ὁρῶ ἐν τῆ τοῦ ὕδατος πορείᾳ Πέτρον νοῶ, ἐν δὲ τῆ τοῦ κόρακος ὑπακοὴ Ηλίαν βλέπω. Ως οὖν ὑπολαμβάνω ὁ ἀνὴρ οὖτος χαρίσματος τοῦ πνεύματος πάντων τῶν δικαίων τούτων ἀνάπλεος ὑπῆρχεν.

ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ.

Ο τοῦ Θεοῦ ἄνθρωπος Βενέδικτος, Πέτρε, ένὸς πνεῦμα εἶχεν, 5 ὅπερ διὰ τῆς δωρηθείσης ἀπολυτρώσεως πάντων τῶν ἐκλεκτῶν τὰς καρδίας ἐπλήρωσεν. Περὶ οὖ ὁ εὐαγγελιστὴς Ιωάννης εἰρηκεν. «Ην τὸ φῶς τὸ ἀληθεινὸν ὁ φωτίζει πάντα ἄνθρωπον ἐρχόμενον εἰς τὸν κόσμον. » περὶ οὖ πάλιν γέγραπαι. «ἐκ τοῦ πληρώματος αὐτοῦ πάντες ἐλάβομεν. » Καὶ γὰρ οἱ τοῦ Θεοῦ ἄγιοι ἄνθρωποι ἡξιώθησαν παρὰ κυρίου χαρισμάτων δύναμιν δέξασθαι, οὐ μὴν δὲ καὶ ἄλλοις παραδοῦναι. αὐτὸς δὲ σημεῖα δυνάμεως δέδωκεν τοῖς ὑποτεταγμένοις, ὅστις ἑαυτὸν δοτῆρα τοῦ κατὰ τὸν Ιωνᾶν σημείου ὑπεσχετο τοῖς ἐχθροῖς δοῦναι, ὅπως ἐνώπιον τῶν ὑπερηφάνων ἀποθανεῖν καταξιώση, καὶ ἐπὶ ὄψεσιν τῶν ταπεινοφρόνων ἀναστῆναι, ἵνα ἐκεῖνοι μὲν, ὅπερ καταλεῖψαι, ὡρελον βθεάσωνται, καὶ οὖτοι, ὅπερ σεβόμενοι ἀγαπῆσαι ώφελον. Εξ οὖπερ μυςηρίου γέγονεν τοῦτο, ἵνα οἱ μὲν ὑπερήφανοι θεάσωνται

¹⁾ Codex prius scripserat μαθητί ex eadem pronunciatione.
2) Quidam omittunt οἶα — 3) Alii addunt πάνυ — 4) Alii attice ἀνάωλεως — 5) Cod. Parisiensis Reg. ένὸς ωνεύματος ὑπῆρχεν.

⁶⁾ Codd. Paris. ωφειλ.. Sic et paulo post ut noster scribunt.

Benedictus audiens, sese in gravibus lamentis¹ dedit, vel quia inimicus occubuit, vel quia de inimici morte discipulus exultavit. Qua de re factum est, ut eidem quoque discipulo paenitentiam indiceret, quod mandans talia, gaudere de inimici interitu praesumpsisset.

PETRUS.

Mira sunt et multum stupenda quae dicis. Nam in aqua ex petra producta, Moysen: in ferro² vero, quod ex profundo aquae rediit,³ Elisaeum⁴: in aquae itinere, Petrum: in corvi obedientia, Eliam⁵: in luctu autem mortis inimici, David video. Ut perpendo, vir iste spiritu justorum omnium plenus fuit.

GREGORIUS.

Vir Domini Benedictus, Petre, unius⁶ spiritum habuit, qui per concessae redemptionis gratiam electorum corda omnium implevit, de quo Johannes dicit: Erat lux vera quae inluminat omnem hominem venientem in hunc mundum.⁸ Et quo⁹ rursus scriptum est: Et de plenitudine eius nos omnes accepimus. Nam sancti Dei homines potuerunt a Domino virtutes habere, non etiam aliis tradere. Ille autem signa virtutis dedit¹⁰ subditis, qui se daturum signum Jonae promisit inimicis, ut coram superbis mori digna-

¹⁾ Alii lamentationibus — 2) Prius ferru vel ferrum, sed statim emend. — 3) Cod. Nan. produxit pro rediit — 4) Cod. Heliseum. 5) Cod. obædientiam Heliam — 6) Alii unius Dei sp... — 7) Cdd. Nan. Bes. illic et quidam unum spiritum — 8) In marg. secundum Ioannem cf. nostra SS. Bibl. Vet. frag. II. p. 336. — 9) Cd. Et quo pro De quo — 10) Cod. Bes. et etiam aliis tradidit.. virtutesque dedit.

τῶν τοῦ θανάτου έξουδένωσιν· οἱ ταπεινόρρονες δὲ τὴν δόξαν τῆς κατὰ τοῦ Βανάτου έξουσίας.

ΠΕΤΡΟΣ.

Δυσωσώ οὖν σε, σεβάσμιε δέσποτα, μετα ταῦτα εν ποίοις τόποις ὁ ໕γιος ἐκεῖνος ἀνὴρ μετοίκησεν,¹ καὶ τίνας ἐν αὐτοῖς δυνάμεις διεσράξατο, γνώρισον ἡμῖν.

грнгоріох.

Ο όσιώτατος οὖτος ἀνὴρ ἐν ἑτέροις μετοικήσας τόποις οἴκησιν μὲν ἤλλαξεν, ἐχβρὸν δὲ οὐχί. Μεγάλους γὰρ μετέπειτα καὶ βαρυτέρους πολέμους ὑπὸ τοῦ τῆς κακίας εὑρετοῦ ὑπέμεινεν. Οσον δὲ τὰς τῶν πειρασμῶν νιφάδας ὁ ἀδάμας οὖτος ἀνὴρ καβ ἑαυτοῦ ἐπινοουμένας ἑόρα, τοσοῦτον ἔσπευδεν ἀνταγωνιστὴν ἀήττητον ἑαυτὸν ὀφθῆναι, κατὰ τῶν ἐκείνου μηχανημάτων τῷ τοῦ ζωοποιοῦ σταυροῦ θυρεῷ καθοπλιζόμενος.

Κάστρον τοίνυν, ὅπερ Κάσινον λέγεται, ἐν τῷ ὑψηλῷ τοῦ ὁρους πλαγίῳ διάκειται, ὅπερ ὁρος τῷ ἑαυτοῦ ἐκτάσει τὸ εἰρημένον ἐνκολωίζεται³ κάστρον, καὶ ἔως τριῶν μηλίων ἡ τοῦ ὁρους ἄκρόρια⁴ ὑπέρκειται, ὥστε⁵ παρὰ τοῖς ἀγνοοῦσιν ὡς ἀστέρα φαίνεσθαι. Εν ῷ παλαιότατον μιαρονο ἑλληνικον ὑπὸ τῶν ἀρχαίων ὡκοδομημένον ὑπῆρχεν ἐν τούτῳ ὑπὸ τῶν τοῦ λαοῦ ἀπλουστέρων ὁ Απόλλων ἐσέβετο. Κύκλῳ δὲ τοῦ μιαρωτάτου ἐκείνου ναοῦ, πλῆθος βωμῶν ἐτύγχανεν. Καὶ ἔως τότε τῶν ἀπίστων ἀνήρχετο ἐκεῖσε πλῆθος πολὺ, βυσίαις τε καὶ σπονδαῖς, δὲ κνίσσαις τῷ αὐτόθι τοῦ Αωόλλωνος ἀγάλματι λατρεύοντες.

Ο δε τον νοῦν πεφωτισμένος, καὶ τῆς εὖσεβείας ζηλωτὴς Βενέδικτος, ἐπὶ τον τόπον παραγενόμενος, καὶ

1) Alii hic, ut alibi scribunt μετώχησε — 2) Quidam ἀδάμαστος, sed Codices Parisienses, ut noster, habent — 3) Alii ἐγκολ.. pro ἐνκολ.. — 4) Alii ἀκρώρεια scribunt pro ἀκρόρια — 5) Cod. fol. 56. — 6) Alii ἰερὸν habent pro μιαρὸν — 7) Codex Reg. Parisien. ἐτιμᾶτο pro ἐσέβετο — 8) Codex noster scripsit χνίσαις.

retur, coram humilibus resurgere: quatenus et illi viderent quod temptarent,¹ et isti quod² venerantes amare debuissent. Ex quo mysterio actum est, ut dum superbi aspiciunt despectum³ mortis, humiles contra mortem acciperent⁴ gloriam potestatis.

PETRUS.

Quaeso te post haec, ad quae loca vir sanctus migraverit, vel si aliquas in eis virtutes⁵ ostenderit, innotesce.⁶

GREGORIUS.

Sanctus vir ad alia⁷ demigrans locum non hostem mutavit. Nam tanto post graviora prœlia pertulit, quanto⁸ contra se aperte pugnantem ipsum magistrum malitiae invenit. Castrum namque quod Casinum dicitur, in excelsi montis latere situm est, qui videlicet mons distenso⁹ sinu hoc idem castrum recepit,¹⁰ sed per tria millia¹¹ in altum se subrigens, velut¹² ad aëra cacumen tendit: ubi vetustissimum fanum fuit, in quo ex antiquorum more gentilium ab stulto rusticorum populo Apollo colebatur. Circumquaque etiam in cultu daemonum luci succreverant, in quibus adhuc eodem tempore infidelium insana multitudo sacrificiis sacrilegis insudabat. Ibi¹³

¹⁾ Pro temptarent alii contemnerent — 2) Suppletum est quod.

³⁾ Prius dispect.. — 4) Pro acciperent quidam aspicerent.

⁵⁾ Alii virtutes postmodum — 6) Prius innotisce — 7) Alii ad alia loca — Quidam ad alium demigrans, locum non hostem. Cdd. Bess. Becc. ad alia demigrans loca, locum non hostem. 8) Alii quantum — 9) Prius vid. mox distensu — 10) Alii recipit.

¹¹⁾ Cd. milia — 12) Ut alibi, Cd. velud — 13) Alii Rluc pro Ibi.

βαρσαλείω τῷ φρονήματι εἰσελθών, το ἀγαλμα τοῦ Απόλλωνος συνέτριψεν, τοὺς βωμοὺς κατέστρεψεν, καὶ τὰ άλση ἐνέπρησεν, καὶ ἐν ἀυτῷ τῷ ναῷ τοῦ Απόλλωνος εὐκτήριον ἡγιασμένον τοῦ άγιου Μαρτίνου πεποίηκεν ἐνθα δὲ ὁ βωμὸς τοῦ Απόλλωνος ἱδρυτο, σεβάσμιον εὐκτήριον τοῦ άγιου Ιωάννου² συνεστήσατο.

Εντεύθεν λοιπόν το έκεισε κατοικούν του λαού πλη-3ος τη αύτοῦ διδασκαλία όδηγούμενον πρός Θεόν έπεστρέφετο. Αλλά τα τα μι ύπορέρων ό σκολιός των πιστών έχθρὸς, οὐκέτι λοιπὸν ἀφανῶς, ἢ δι ἐνυωνίων, ἀλλά φανερῶς έαυτον τοῖς τοῦ τατρος όρθαλμοῖς ἐπεδείκνυτο, καὶ μεγίσταις φωναῖς έβόα, βίαν αὐτὸν ὑπὸ τοῦ άγίου ὑπομεμενηχέναι, ώστε καὶ τους άδελφους τῶν φωνῶν αὐτοῦ ἀκούειν, εί καὶ τὰ μάλιστα τοῖς σωματικοῖς ὀςθαλμοῖς τοῦτον ούκ έθεώρουν. Πρός ους ό της άληθείας διδάσκαλος έλεγεν « Πιστεύσατε, τέχνα, ότι τοῖς αἰσθητοῖς μου ὀφθαλμοῖς τὸν έχθρόν τινα, φοβερον καί³ σωινθηρακώδη ταῖς φαντασίαις φαινόμενον όρω. όςτις διά τε του στόματος και των όφβαλμων φλόγας πυρός έκπέμπει.» Εί τι ούν ό δόλιος έφθέγγετο, ήχουου πάντες. Πρότερου μεν γαρ έξ ονόματος έχαλει τον άγιον. 4 Ηνίκα δε μηδαμώς αὐτῷ ἀποκρινόμενον τον τοῦ Θεοῦ ανθρωπον έθεάσατο, εύθέως ταῖς κατ' αύτοῦ λοιδορίαις την μιαρωτάτην αὐτοῦ ἐκίνησεν γλῶτταν, και τὸν τοῦ Θεοῦ φίλον ταῖς ὕβρεσιν ἔβαλλεν. Εἶτα πάλιν ἐφώνει τὸν ἄγιον, λέγων· « Βενέδικτε, Βενέδικτε. » αὐτοῦ δὲ μη ἀποκρινομένου, παραυτά προσβείς έλεγεν· «Κατηραμένε, κατηραμένε, καί ούκ εύλογημένε, τί έχεις μετ' έμοῦ; τί με καταδιώκεις; »

1) Cdd. et noster scribunt $\mathcal{L}_{\alpha\rho\sigma\alpha\lambda\alpha\dot{i}\rho}$ - Edit. animadvertit Forte $\mathcal{L}_{\alpha\rho\sigma\alpha\lambda\dot{i}\rho}$ - 2) Sic ut codd. Paris. alii vero εὐχτήριον ήγιασμένον τοῦ Ιωάννου - 3) Cod. Colbertin. τῶν ἐχ \mathcal{L}_{ρ} ρῶν τινα, καὶ ώς. 4) Codd. Paris. Reg. et Colbertin. δίκαιον.

S. Nilus Ode V. Μηκέτι Ξέλων δυσωετεῖν ἀναχωρεῖς πειρασμοῦν, κινδύνους μεν ως νομίζων διαφεύγειν όσιε άλλα ωάλιν ἄλλους ἐφούρηκας ἐν Κασίνω γὰρ δ δεινὸς Αωόλλων ἄνωθεν λαὸν ἐξηωάτα καὶ τοῦτον καταβαλών φροῦδον ἀπέδειξας. Nolens amplius adversitatem pati, recedis, utpote tentationum quidem pericula evitare

itaque vir Dei perveniens, contrivit idolum, subvertit aram, succidit lucos, atque in ipso templo Apollinis² oraculum beati Martini,³ ubi vero ara eiusdem Apollinis fuit,4 oraculum sancti construxit Iohannis; et commorantem circumquaque multitudinem praedicatione⁵ continua ad fidem vocabat. Sed hæc antiquus hostis tacite non ferens, non occulte vel per somnium, sed aperta visione ejusdem Patris se oculis6 ingerebat, et magnis clamoribus vim se perpeti conquerebatur,7 ita ut voces illius etiam fratres audirent, quamvis imaginem minime cernerent. Ut enim discipulis suis venerabilis Pater dicebat, corporalibus ejus oculis idem⁸ antiquus hostis teterrimus et succensus apparebat, qui in eum ore oculisque flammantibus saevire videbatur. Iam vero quae diceret audiebant omnes: prius enim hunc vocabat ex nomine. Cui cum vir Dei minime responderet, ad ejus mox contumelias erumpebat. Nam cum clamaret, dicens: Benedicte, Benedicte; et eum sibi nullo modo respondere conspiceret, protinus adjungebat: Maledicte, non Benedicte,

¹⁾ Alii quidam succendit lucos — 2) Prius Appollenis bis. — 3) Alii Martini fecit — 4) In aliis deest fuit — 5) Animadverte hoc exemplo uti S. Thomam Aqvin. in opusc. XIX. c. 4. ad confirmandum licere religiosis viris praedicare verbum Dei. Ait enim Divino iudicio aliqui religiosi sunt reputati idonei, ut eis immediate a Deo prædicationis committatur officium; sicut de Equitio monacho B. Gregorius narrat in Dialogis (lib. I. cap. 4.), et etiam de B. Benedicto. (l. 11. c. 8.)—6) Alii se oculis pro oculis sese. —7) Cod. conquir.. — 8) Prius isdem — 9) Ex rasura Cod. Maledicte, sed prius Maledicite. Cod Bessar. dicens: Maledicte.

Υπομνητέα όντως τὰ κατὰ τὸν δοῦλον τοῦ Θεοῦ πρὸς τὸν ἀρχαῖον ἐχθρὸν νέα ἀγωνίσματα, ὧ τινι πολέμους τοιούτους παρήγαγεν ἀλλὰ τῆ ὑποβέσει τῆς νίκης διηκόνησεν ὁ βίος.

existimans, sed denuo alia adinvenisti: in cacumine enim Casini Montis dolosus. Apollo populum decipiebat, atque hunc prosternens abolitum ostendisti.

S. Baptolomæus in vita S. Nili (p. 124.) Haligernum appellat τον τοῦ ἀγίου Βενεδίκτου ἡγούμενον τοῦ ὅρους Κασσίνου.. hegumenum S. Benedicti Montis Cassini. Blasius II. Ab. Cryptæ Ferratæ in Typico S. Barptolomæi renovato opera Iosephi Melendytæ die XXI Martii: Τῆ αὐτῆ ἡμέρα (μνήμη) τοῦ ἀσίου πατρὸς ἡμῶν Βενεδίκτου ἡγουμένου ὄρους Κασίνου Εadem die (memoria) sancti patris nostri Benedicti Hegumeni montis Casini. Cf. Toscani (Animado. ad Typica p. 92.).

S. Nilus vulgari ratione, etsi græce montem Casinum appellat (Inni p. 6.) ὁ χορὸς Μοντεκασίνου βοήσατε νῦν... chorus Monte casini voces nunc elevate...

STRABONEM Geograph. l. V. de via Latina per fines Tusculanos ad civitatem Cassinum ducente retulimus in opella - Il Tuscolano di M. T. Cicerone 1866. § II. Via Latina. ή Λατίνη συμωίωτουσα τῆ Απωία κατὰ Κασῖνον.. Latina quæ coningitur Appiæ ad Casinum.

quid mecum habes? quid me persequeris? Sed jam nunc spectanda¹ sunt contra Dei famulum antiqui hostis nova certamina, cui pugnas² quidem volens intulit, sed occasiones victoriae ministravit invitus.

1) Alii spectanda — 2) Alii pugnas.

De antiqua Arce Cassini, unde, sicut in ipso titulo libri huius dicitur, Benedicti conditoris vel Abatis monasterii quod appellatur Arcis.. confer doctum eruditumque opus v. Em. Dominici Cardinalis Bartolini « L'antico Cassino e il primitivo monastero di S. Benedetto restituito alla luce dai suoi ruderi» Tip. di Monte Cassino 1880.

Marcus poeta S. Benedicti discipulus nobilissimum carmen suum exorditur:

Coeca prophanatas coleret dum turba figuras,

Et manibus factas crederet esse Deos,

Templa ruinosis hæc olim struxerat aris,

Quis dabat obscæno sacra cruenta Iovi...

Hunc plebs stulta locum quondam vocitaverat Arcem...

Dante Alighieri - Divina Commedia-Paradiso, canto XXII.

Quel monte a cui Cassino è ne la costa

Fu frequentato già in su la cima

Da la gente ingannata e mal disposta;

Ed io son quei che vi portai in prima

Lo nome di colui che in terra addusse

La verità, che tanto ci sublima...

KEΦAΛΑΙΟΝ Θ'.

Περι λίθου σαμμεγέθους δια προσευχής αὐτοῦ ἐλαφρου •
γεναμένου. 1

- Θ΄. Εν μιά των ήμερων, των άδελφων κτιζόντων την του κελλίου οἴκησιν² ἔνθα τον ἄγιον ήσυχάζειν έχρην, λίθος έν τῷ μέσω έκειτο, δυ έν τω κτίσματι Βείναι³ οι άδελφοι ήβούλοντο. 4 Εν δε τῷ ἐλθεῖν ἐωὶ τὸ κινῆσαι τὸν λίθον τρεῖς τὸν ἀριθμον τούς άδελφούς, τούτον άπο της γης κουφίσαι ούκ ίσχυσαν. Πλεῖστοι δὲ σάλιν συναχθέντες,5 και μηδεν ονίσαντες,6 διέμεινεν ό λίθος ἀσάλευτος, ὥστε δοκεῖν αὐτοὺς ἐργαζόμενον έν τη γη αὐτὸν εἶναι. Τοῦτο δὲ πᾶσιν φανερὸν γέγονεν, ότι έπάνω αὐτοῦ αὐτὸς ὁ διάδολος ἐκαβέζετο, ὃν τοσούτων ανδρών χειρες κινήσαι οὐκ ἰσχυον. Εν απορία δε γενόμενοι οί άδελφοι πρός του του Θεου άνβρωπου απέστειλαν, έπι τῷ αὐτον⁸ σκυλέντα⁹ ἀποδιώξαι τον έχθρον δια¹⁰ τῆς έαυτοῦ ' πρός Θεόν πρεσβείας, όπως τόν λίθον άραι δυνηθώσιν. Οστις εύθέως παραγεγονώς, και εύχην ποιήσας, ἐπέτρεψεν τοῖς μαθηταῖς άραι τον λίθον. Τοσαύτη δὲ εὐκόλω σπουδή ὁ λίθος ήρθη, ώστε νομίζειν αὐτούς μηδεν βάρος αὐτον ἐσχηκέναι, του πρότερου ακίνητου όντα.
- 1) Alii γενομένου 2) Cod. Reg. Parisiensis οἰχοδομὴν ἔνθα ήσυχάσειν ἐχρῆν 3) Cod. noster θεῖναι scripsit. 4) Alii ἐβούλοντο 5) Alii συνελθόντες 6) Codex Colbertin. ὀνήσαντες. Cod. Reg. Parisiensis ἀνύσαντες 7) Alii habent ἐβριζώμενον. 8) Codex Florentin. ἄστε αὐτὸν 9) Cod. Reg. Parisiensis σχολέντα 10) Cod. fol. 57.
- S. Nilus Ode VI. Νέος ἄλλος Νεςκαισαρείας, πάτερ, Γρηγόριος ήμιν ἀναφανείς ἐν λόγω λίθον μέγαν ἐκκυλίεις, βαῦμα τοῖς μαθηταῖς σου ἐναποδεικνύμενος καὶ ἀκήκοας τοῦ διαβόλου ἀναφωνοῦντός σοι τί ἐμοί τε καὶ σοί; παῦσαι τοῦ λοιποῦ καταδιώκων με. Novus alter Neocæsariensis, o Pater, Gregorius nobis visus in sermone magnum devolvis lapidem, tuis discipulis miraculum ostendens, diabolumque contra te exclamantem audivisti: Quid mihi et tibi? posthac me persequi desiste.

CAPUT IX.

De ingenti saxo per eius orationem levato.1

Quadam² die dum fratres habitacula ejusdem cellæ construerent, lapis in medium³ jacebat quem⁴ in ædificium⁵ levare decreverunt.⁶ Cumque eum duo vel tres movere non possent, plures adjuncti sunt, sed ita inmobilis mansit, ac si radicitus in terra teneretur; ut palam daretur intelligi,⁷ quod super eum ipse per se antiquus hostis sederet, quem tantorum virorum manus movere non possent. Difficultate⁸ igitur facta, ad virum Dei missum est, ut veniret, et⁹ orando hostem¹⁰ repelleret, ut lapidem levare potuissent.¹¹ Qui mox venit, orationem¹² faciens benedictionem dedit, et tanta lapis celeritate levatus est, ac si nullum prius pondus habuisset.

¹⁾ In titulo alii viri Dei pro eius, et pro levato Cod. habet levigato — 2) Huius capitis et partem sequentis confer fac-simile in The Palæographical society - Fac-similes of manuscripts and Inscriptions edited by E. A. Bond and E. M. Thompson P. I-VIII London 1873-1878. Tab. 121. — 3) Alii medio — 4) Quidam addunt monachi—5) Prius videtur aedificiom — 6) Alii decreverant.

⁷⁾ Prius intellegi sed super e inscriptum est i a 2. manu. 8) Prius dificult.. postea difficult.. — 9) In cod. omissum est et; videtur non iteratum, quod erat in fine verbi veniret praecedentis.

¹⁰⁾ Prius hostum videtur, postea emend. — 11) Alii possent.

¹²⁾ Ante orationem alii addunt et.

КЕФАЛАІОN I'.

Περί τοῦ εὐρεθέντος χαλκοῦ ζωδίου, ζθεν ἐξῆλῶεν ἐν φαντασία τὸ τοῦρ. 1

Ι΄. Εδοξεν ούν τῷ άγίω τοῖς οἰκείοις ἐωιτρέψαι μαθηταῖς, ίνα εν τῷ τόωω ἐκείνω, ἐν ῷ ὁ λίθος τὸ ωρὶν ἔκειτο, τὴν γην δρύξωσιν κατά τὸ προσταχθέν αὐτοῖς ούν, βαθύ δρυγμα σεποιηκότες, είδωλον χαλκούν εύρον έκεισε, όπερ έν τῷ μαγειρίω³ ριφεν, αἰφνίδιον πῦρ ἐξηλθεν ἀπ' αὐτοῦ, καὶ ἐν οφθαλμοῖς πάντων των μοναχών έδειξεν ταῖς έαυτοῦ φαντασίαις, ώς ότι ἄπαν τὸ τοῦ μαγειρίου κτίσμα κατεκαύθη. Ηρξαντο οὖν οἱ ἀδελφοὶ ἐν θορύδω πολλῷ ὕδωρ ἐπιχέειν. ὡς δήθεν σβεννύοντες την έν όφθαλμοίς αὐτῶν ἀπό τοῦ έχθροῦ φαντασιώδη φλόγα γεγονυΐαν. Αἰσθόμενος δὲ ὁ τοῦ Θεοῦ άνθρωπος τους άδελφους έν θορύβω πολλώ γεγονότας, καί την αἰτίαν σαρ' αὐτῶν έγνωκῶς, ἐν τῷ μαγειρίῳ σαραγέγονεν, καὶ τὸ πῦρ ὅσερ ἔλεγον οι ἀδελφοι ὁρὰν, αὐτὸς ἔφασκεν μηδαμώς τουτο βεωρείν ευβέως δε την κεφαλήν τώ Θεώ κατά το σύνηθες είς προσευχήν κλίνας, έδέετο ύπερ του ἀπελαθήναι ἀπο των ἀδελφών την έν όφθαλμοῖς αὐτών φανεϊσαν τοῦ ἐχθροῦ¹ φαντασιώδη χλεύην. Αναστάς δὲ ἀπὸ τῆς προσευχής, τους απατηθέντας των αδελφών όφθαλμους έβρωμένους εν τη τοῦ σώματος φυσική δράσει ἀπεκατέστησεν δια της αύτοῦ πρός τον Θεον έχεσίας, ωστε ούκέτι έθεάσαντο τὸ τοῦ μαγειρίου κτίσμα ταῖς τοῦ διαβόλου φλογαῖς καιόμενον άλλ' έν όφθαλμοῖς αὐτῶν όρᾶτο λοιπονο ἄφλεκτον καὶ ἀσάλευτον.

1) In Codice Colbertino titulus est: Περί τοῦ χαλκοῦ εἰδώλου.

2) Cod. ὥρυγμα scripsit — 3) Alii μαγειρείω sic et inferius.
4) Cod. Reg. Parisiensis ἀπελθεῖν ἀπὸ τῶν ἀδελφῶν την εν ὀφθαλμοῖς αὐτῶν φαντασιώδη - Cod. Colbert. habet in primo verbo ἀπελαθῖναι ut codex noster - Alii ἀπελθεῖν ἀπὸ τῶν ὀφῶαλφῶν τῶν ἀὸελφῶν τὴν φανεῖσαν αὐτοῖς τοῦ ἐχῶροῦ φαντασιώδη — 5) Alii ἀποκατ.. — 6) Cod. Reg. καιόμενον ἐν ὀφθαλμοῖς αὐτων ἀλλ' ὡρᾶτο λοιπὸν.

S. Nilus Ode VI. Εένα όντως ξένα και μεγάλα πάτερ τὰ ση-

CAPUT X.

De phantastico coquinæ incendio.

Tunc in conspectu² 'viri Dei placuit, ut in loco eodem terram foderent. Quam dum fodiendo altius penetrarent, æreum illic idolum fratres invenerunt. Quod³ ad horam⁴ casu in coquinam⁵ projecto, exire ignis repente visus est, atque in cunctorum monachorum oculis, quia omne ejusdem coquinæ ædificium consumeretur ostendit. Cumque jaciendo aquam, et ignem quasi extinguendo perstreperent, pulsatus eodem tumultu vir Domini⁶ advenit. Qui eundem ignem in oculis fratrum esse, in suis vero non esse considerans, caput protinus in orationem flexit, et eos quos phantastico repperit igne deludi, revecavit⁸ fratres, ut oculos suos⁹, ad et sanum illud coquinæ ædificium adsistere cernerent, et flammas quas antiquus hostis finxerat, 10 non viderent.

¹⁾ In titulo Cod. fantast: ubi prius tantum p et postea f.

2) Prius conspectum — 3) Prius Quo pro Quod — 4) Cod. ora pro hora, sic alias — 5) Cod. hic et inferius quoquin.. — 6) Alii Dei — 7) Prius phantastico; sed 2. m. phantasmatico — 8) Prius deludere vocavit; serior manus fecit deludi; sed per rasuram; non apposuit re ante voc.. — 9) Alii fratres, ut oculos suos signarent monuit — 10) Cod. fincxerat.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ ΙΑ΄.

Περί τοῦ συντριβέντος παιδός ἐν τῷ συμπτώματι.

ΙΑ΄. Πάλιν οἰκοδομούντων τῶν ἀδελφῶν τοίχον, καὶ εἰς ίψος το κτίσμα άγειν σπευδόντων, ο τοῦ Θεοῦ θεράπων είς τὸ έαυτοῦ κέλλιον σχολάζων ἦν ἐν τῆ προσευχή. ὧτινι ὁ σαμμίαρος έχθρος έσιχαιρόμενος το δοκείν ώφθη, καί ότι πρός τους έν τη οίκοδομη έργαζομένους άδελφους² έπορεύετο, έμήνυσεν. Ο σερ γνούς ό θεοφόρος ανήρ δια μηνύσεως ταχυτάτης τοῖς ἀδελφοῖς ἐσήμανεν λέγων· «Τέκνα, προσέχετε έαυτους, ότι προς ύμας τη ώρα ταύτη ό ωειράζων διάβολος έρχεται. » Ο δε την άγγελίαν τοῖς άδελφοῖς άγαγών, μήπω ταύτην έξαγγεῖλαι φθάσας, δου το πονηρον πνευμα τον κτιζόμενον τοίχον κατέστρεψεν,⁴ καὶ ἕνα μοναχον ἔτι νέαν άγοντα την ήλικίαν, υίον γενόμενον κοριαλίου τινός, το γεγονος σύμπτωμα συνέτριψεν. Οί δε τοῦ άγίου μαθηταί τοῦτο έωρακότες οὐ6 τοσοῦτον διὰ τὴν τοῦ τοίχου καταστροφήν, όσον δια τον τοῦ άδελφοῦ κίνδυνον, τῷ σεβασμίω πατρί Βενέδικτω μετά δακρύων προσήλθον, το συμβάν άπαγγέλλοντες. 8 Ο δε συμπαθέστατος πατήρ προσέταξεν τοῦτον πρός έαυτον ένεχθηναι, δυτινα ταῖς χερσέν άραι οὐκ ἰσχυσαν,

μεΐα τα σα και γαρ συρώδη φλόγα φαινομένην εν τῷ μαγειρείω έωραμένην προσευχή ήφάντωσας κρημνισθέντα νεανίαν πάλιν καί Βνήσκειν μέλλοντα ήγειρας ύγιη πέμψας ύπουργείν καθά και ωρότερον. Admiranda sane, admiranda, et magna, o Pater, tua sunt prodigia: ardentem enim flammam coquina apparenter excitatam oratione evanescere fecisti, atque iterum puerulum ruina contritum, et iam iam moriturum sanum suscitasti ad pristinum mittens laborem. Quidquam simile legitur et in vita b. Nili p. 76. 1) Hic et inferius pluries codex scribit τυχ.. pro τοιχ.. ex simili pronunciatione — 2) Quidam omittunt ἀδελφεύς, sed cum nostro habent Cdd. Reg. Paris. et Colbert. - 3) Codd. Reg. et Colbert. Τοῦ δὲ τὴν ἀγγελίαν ἀδελφοῖς ἀγαγόντος, καὶ μήσω ταύτην διαγγεῖλαι φθώσαντος - 4) Alii ἐκάλασε vel ἐχάλαζε. 5) Cod. Colb. κυριαλίου, Cod. Florentin. κυραλιτίου, sed melius κοριαλ.. vel κουριαλ.. ex latino curialis — 6) Codd. alii præmittunt καὶ περίλυποι γενόμενοι — 7) In τὸν super ras. ο apparet. — 8) Alii ἀναγγέλ..

CAPUT XI.

De servo Dei puerulo ruina confracto, et sanato.1

Rursum² dum fratres parietem, quia res ita exigebat,3 paulo altius ædificarent, vir Dei in orationis studio intra cellulæ4 suae8 claustra morabatur. Cui antiquus hostis insultans apparuit, et quia⁶ ad. laborantes fratres pergeret indicavit.⁷ Quod vir Dei per nuntium celerrime fratribus nuntiavit,8 dicens: «Fratres, caute vos quia ad vos hac hora malignus⁹ spiritus venit.» Is qui mandatum detulit, vix verba conpleverat et malignus¹⁰ spiritus eundem parietem, qui ædificabatur evertit, atque unum puerulum monachum cujusdam curialis filium opprimens, ruina contrivit.11 Contristati omnes ac vehementer12 adflicti non dapno¹³ parietis, sed contritione fratris, quod¹⁴ venerabili Patri Benedicto studuerunt celeriter cum gravi luctu nuntiare. Tunc idem¹⁵ Pater¹⁶ Benedictus ad se dilaceratum¹⁷ puerum deferri jubet. Quem portare non nisi in sago potuerunt; quia conlapsi saxa¹⁸ parietis, ejus non solum

¹⁾ Titulus sic et apud Mabillon, in quibusdam vero: De puerulo monacho parietis ruina confracto et eius oratione sanato, in aliis aliter — 2) Alii Rursus — 3) Prius exgebat — 4) Quidam cellam — 5) Alii omittunt suae — 6) Alii et ei quod ad. 7) Prius pergerent indecavit — 8) Alii indicavit pro nuntiavit. 9) Prius ora mallignus — 10) Hic cod. malegnus — 11) Prius videtur conterivit — 12) In vehementer alterum e super ras. 13) Sic codex scribit. — 14) Alii omittunt quod — 15) Cod. ut alibi isdem — 16) Alii addunt Benedictus — 17) Cod. delacer. 18) Alii saxi.

καξ' ότι οἱ πεπτωκότες λίβοι ἀπό τοῦ τοίχου οὐ μόνον αὐτου το σώμα, άλλα και τα όστα συνέτρυμαν. Αθυνέτως ούν έχουτες ταῖς χερσίν, ὡς εἰρηται, τοῦτου ἀραι, ἀναγκαῖον ήγήσαντο² έν σαγίω άνακλιναι αύτον, και σύτως πρός τον³ σημειοφόρου άγαγεῖυ Βευέδικτου. Παραυτά δὲ ἐκέλευσευ αὐтอง สิงสริสงสะ เง รฉี ย์สงรอง ปุเสร์เฉ ยัง ฉี้ ยั่งเฮริสเ ยไม่ระเรื και έκθαλών έξω τους άδελφους, και την Ξύραν του κελλίου ασοκλείσας, εξαυτόν εξς προσευχήν εκθέθωκεν· και κλίνας γόνο του Θεου έκέτευεν ύπερ της του συντοιδίντος άθελφου ίάσεως. Καὶ την ίδεῖν έν τη ώρα ἐκείνη θαυμα άληθως φρίκης και έκστάσεως άξιου μετά γάο την της προσευχής τελείωσιν, παραυτίκα δ νεανίας μόνος ανέστη ύγιης δλω τῷ σώματι. Ο δε άγιος τούτου σάλιυ απέστειλευ πρός τούς άδελφούς, έπεὶ τῷ σύν αὐτοῖς ἐργάζεσθαι ἐν τῷ τοῦ συμπεπτωκότος τοίχου οίκοδομή. Ο δε έχροὸς ποοσθοκήσας τή έαυτοῦ ἀπατηλή ἐνεργεία, διὰ τοῦ παρ αὐτοῦ ἐωινοηθέντος κινδύνου θάνατον ἐπαγάγαι^τ τῷ ἀδελφῷ, μαλλον δὶ αὐτοῦ κατησχύνθη, καὶ χλεύην, ήνπερ το μακαρίω ήτρίμασεν έαυτῷ ἐπεσπάσατο, ὀνειδός τε καὶ καταφρόνησις, παρὰ τοῖς τοῦ άγίου φοιτηταῖς γενόμενος. Εντεύθεν λοιπόν ό του Θεού άνθρωπος προφητείας χάριν παρά Θεού έχομίσατο τού προλέγειν τὰ μέλλοντα, καὶ μηνύειν ώς ἐνεστώτα.

¹⁾ Prius in cod. vid. συνέτριψεν — 2) Male edd. habent τίτήσαντο — 3) Cod. fol. 58. — 4) Cod. ανεθ.. scripserat — 5) In
cod. εἰώθι male, sed ex simili pronunciatione — 6) Cod. αποκλίσας — 7) Alii ἐπαγαγειν melius — 8) Codex scribit φυτ.. Alii
μαθηταῖς.

membra, sed etiam ossa contriverant.¹ Eumque vir Dei præcepit statim in cella sua in psiatio,² quod vulgo matta vocatur, in quo³ orare consuerat,⁴ proici,⁵ missisque foras fratribus cellam clausit: qui orationi⁶ instantius quam solebat incubuit. Mira res, eadem hora hunc incolumem,⁵ atque ut prius valentem ad eumdem iterum laborem misit, ut ipse quoque parietem cum fratribus perficeret,⁶ de cujus se interitu antiquus hostis Benedicto insultare credidisset.⁶

Cœpit vero inter ista vir Dei prophetiæ etiam spiritu pollere, ventura prædicere, præsentibus etiam absentia nuntiare.

1) Cod. Florent. contriverunt. Eumque vir Dei in pisiato strato quo orare. Alii verba varie transponunt. Animadvertunt Hæfenus, Mabillon, aliique verba quod vulgo matta vocatur fuisse ad ditamentum in margine codicum; sed omnes cdd. in textu ea habent, ut a Gregorio descripta. — 2) Quidam psiathio vel Psyato, Cod. Bessarion. Psiato. — 3) Alii in quo pro quo tantum.

4) Alii consueverant — 5) Cod. proici — 6) Prius oratione
7) Prius incolomen — 8) Prius perficerit — 9) Prius crededisset

Gordianus in vita S. Placidi § 14 hunc puerulum Severum appallatum dicit, cui nomini favet inscriptio capitis huius in codice Cassinensi 85: De Severo Dei famulo etc, atque rudis scriptio in Codice Cassinensi 175. etsi Della noce et Quirini dormitantem librarium incusent, quasi Severo Dei scripserit, ad hæc quo pacto componi possint cum sequenti verbo non apparet; legendum enim esset: De Servo Dei famulo...

BERTHARIUS in carmine suo:

Attritus puer est, murali mole peremptus, Suscitat hunc, et opus iussit adire suum

КЕФАЛАІОН ІВ.

Περί των μοναχών των μεταλαβόντων 1 τροφής παρά του κανόνα.

ΙΒ΄. Παράδοσις κανονική ύπο τοῦ άγίου ἐν τῆ μονῆ ὑπῆρχεν νομοθετηθεῖσα, ίνα ἀποστελλομένων άδελφῶν είς διακονίαν, μήτε βρώσεως, μήτε πόσεως μεταλάβωσιν, μέχρις αν έν τη μονη ύποστρέψωσιν καὶ ούτως 2 ό κανών ἀκριβης 3 παρ 3 αὐτῶν 4 ἐφυλάττετο. Εν μιᾶ οὖν τῶν ἡμερῶν, τινὲς τῶν άδελφών είς διακονίαν ύπο του τιμίου τούτου ανδρός έστάλησαν συνέβη οὖν τους σταλέντας μοναχους διάστημα πολύ της όδου διανύσαντας, και μη φθάσαντας έσαναλυσαι έν τῆ μονῆ όψίας ήδη γεναμένης, και τῆς ώρας κατεπειγούσης, καταλύσαι πρός τινα σεμνωτάτην παρθένον, καὶ ἐν τῷ κελλίω αὐτης μεταλαβεῖν⁵ τροφης. Απέστειλαν δὲ ἔνα τῶν άδελφῶν πρὸς τὸν ἡγιασμένον ωατέρα Βενέδικτον ωρὸς τὸ αἰτήσασθαι εὐχὴν κατὰ τὸ ἔθος, ἵνα μεταλάβωσιν τροφής: ό δὲ προγνωστικός ἐκεῖνος σατήρ ήρώτησεν αὐτὸν, λέγων « Ποῦ μετελάβετε⁶ τροφῆς; » ὁ δὲ ἀπεκρίνατο, ⁷ « Οὐδαμοῦ, πάτερ· » προς ονδ ο άγιος έφη· « Ινα τί ούτω ψεύδεσ Ες ούχί έν τῷ κελλίῳ τῆσδε τῆς 10 $ωαρθένου^{11}$ κατελύσατε, καὶ τροφῆς μετελάβετε; ούχι 12 τούτων κάκείνων των έδεσμάτων έγεύσασθε; ούχι τοσαύτα ποτήρια ἐπίετε; » Τη ἐπαύριον δὲ ἐπανελθόντων τῶν ἀδελφῶν ἐκ τῆς προσταχθείσης αὐτοῖς διακονίας, σοφῶς 14 τε καὶ ἐπιστημόνως ὑπὸ τοῦ πατρὸς διελεγχθέντες,15 τήν τε οἰκίαν τῆς γυναικὸς καὶ τὰ εἴδη τῶν βρωμάτων,

¹⁾ Alii μεταλαμβανόντων — 2) Alii οὖτος — 3) Cod. Florentin. ἀχριβῶς — 4) Cod. Flor. αὐτοῦ — 5) Cod. Flor. μεταλαμβάνειν. 6) Cod. Reg. Paris. Ου μετελάβετε — 7) Codd Reg. parisien. et Flor. ἀπεχρίθη — 8) Alii οὖς — 9) Alii ψεύδη in codice nostro scribitur ψευδεσε - Codex Colbertin. οὖτως ψεύδεσθαι — 10) Quidam omittunt τῆσδε, quidam vero τῆς sequens — 11) Cod. Colb. τῆς δεσποίνης pro τῆς παρθένου — 12) In cod. Florent. a verbo cὐχι ad ἐπίετε desiderantur — 13) Quidam μεναχῶν pro ἀδελφῶν. 14) Cod. Reg. Paris. σαφθς — 15) Edd. quidam διελεχθέντων.

CAPUT XII.

De servis Dei qui cibum contra regulam sumpserunt.

Mos² etenim cellæ fuit, ut quoties³ ad responsum aliquod egrederentur fratres, cibum4 potumque extra cellam minime sumerent. Cumque hoc 'de usu regulæ sollicite servaretur, quadam die ad responsum fratres egressi sunt, in quo⁵ tardiori conpulsi sunt hora demorari. Qui manere juxta religiosam faeminam noverant, cujus ingressi habitaculum sumpserunt⁶ cibum. Cumque jam tardius ad cellam rediissent, benedictionem Patris ex more petierunt. Quos ille protinus percontatus⁸ est, dicens: Ubi comedistis? Qui responderunt: dicentes? Nusquam. Quibus ille ait: Quare ita mentimini? Numquid illius¹⁰ talis faeminæ habitaculum non intrastis? Numquid hos atque illos cibos non accepistis?¹¹ numquid tot calices non bibistis? Cumque eis venerabilis Pater et hospitium mulieris, et¹² genera ciborum, et numerum potionum¹³ dice-

¹⁾ Titulus in aliis: De monachis qui extra cellam comederant.

²⁾ Verba quædam superioris capitis in editis ad hoc referuntur.

³⁾ Cod. ut alibi quotiens — 4) Ut alias cod. cyb... scribit, sic et inferius — 5) Alii et in eo pro in quo — 6) Prius sumser..

⁷⁾ Prius redissent — 8) Cod. percunctatus — 9) Alii omittunt dicentes quod habent Codd. Bessar. et Nanian. — 10) Videtur prius talius cod. per ras. emend. — 11) Cod. Bess. sumpsistis? Additum et manu seriori — 12) Additum et — 13) In potionum primum o ex emendatione rubri coloris. Cod. Bessar. potuum.

καί το μέτρον τῶν ποτηρίων φανερώσαντες. Εαυτούς καταγνώντες προς τοὺς τιμίους αὐτοῦ ποόδας ἔπεσαν, ήμαρτηκέναι όμολογοῦντες αὐτος δὲ ὁ πραότατος πατηρ εὐθέως τὸ σφάλμα αὐτοῖς συνεχώρησεν, πληροφορηθείς τοῦτο ὡς ἀπόντος αὐτοῦ, οὐ μη τοῦ λοιποῦ παραβῶσιν την παραδοθείσαν αὐτοῖς ὑπὸ τοῦ ἀγίου ἐντολην, ηνπερ ἐν πνεύματι ἀγίω συμπαρόντα αὐτοῖς καὶ ἀποῦσιν ἔγνωσαν.

1) Cod. Floren. φανερώσαντος — 2) Cod. Flor. ἔωεσον — 3) Huc usque Codex Colbertinus — 4) Cod. fol. 59.

Narratio haud huic dissimilis habetur in vita b. Nili Cryptæferratæ p. 68.

MENAEA VENETA 1879 - Μάρτιος σελ. 59, ut et vetustioria in Synaxario: Καὶ τὰς μὲν ἄλλας τῶν ωαραδοξοποιιῶν διεξοδικώτερον ἡ κατ' αὐτοῦ Ιστορία δηλοῖ, δι' ὧν παντοῖα κατειργάσατο θαύματα καὶ νεκροὺς ἀνιστῶν, καὶ τὰ μέλλοντα ωρολέγων, καὶ περὶ τῶν ἀωόντων ὡς παρόντων διαλεγόμενος.. De eius mirabilibus rebus gestis prolixius eiusdem narrat historia; utpote prodigia omne genus sit operatus, mortuos ad vitam revocaverit, futura prædiærit, et de absentibus tamquam præsentibus sit locutus...

ret, recognoscentes cuncta quæ egerant, ad ejus pedes tremefacti ceciderunt, e se¹ deliquisse confessi sunt. Ipse autem protinus culpam pepercit,² perpendens quod in ejus absentia ultra non lecerent, quem præsentem sibi esse in spiritu scirent.

1) Alii et se -2) Prius vid. perpendis.

S. BENEDICTI Regula cap. LI « Frater qui pro quovis re-« sponso dirigitur, et ea die speratur reverti ad monasterium,

« non præsumat foris manducare, etiamsi a quovis rogetur,

« nisi forte ei ab abbate suo præcipiatur.»

· Bertharius in carmine suo:

Non licitis domibus sumpserunt prandia fratres,
Absens ipse videt, arguit et nimium.

Paulus Diaconus, ut volunt, in carminibus ei tributis:
Abdita facta patent, patulo produntur edaces
Muneris accepti: abdita facta patent.

Περί του σαρκικου άδελφου Βαλεντίνου μοναχού.

ΙΓ΄. Ανήρ τις υπηρχεν, κοσμικός μεν το σχήματι, σπουδαΐος δε τοῖς τρόποις και λίαν ριλομόναχος, άδελφος τυγχάνων Βαλεντίνου μονάζοντος, οὖ καὶ τὸ πρότερον μνείαν ωεποίημαι. Οστις κατ' ένιαυτον παρέβαλλεν¹ πρός τον σημειοφόρον πατέρα Βενέδικτον ἐπὶ τῷς ἀπολαύειν τῆς τούτου ψυχωφελούς διδασκαλίας, και ἐπισκέψεως χάριν Βαλεντίνου τοῦ ἐαυτοῦ ἀδελφοῦ. Οὖτος τοίνυν ὁ ἀνήρ νομοθεσίαν ἐαυτῷ ην δεδωκώς, ίνα έξερχύμενος έκ της έαυτοῦ οἰκίας μηδαμώς μεταλάβη τροφής, μέχρις αν της του άγιου άξιωθή εύχης, ην και διεφίλαττεν. Εν μια ούν όδεύοντος αύτου έπι τὸ μοναστήριον, αἰρνίδιον γέγονέν τις αὐτῷ συνοδοιπόρος, άγνωστος παντελώς, όστις ἐπεφέρετο ἐδεσμάτων ποικιλίαν.5 Βραδυτέτης οὖν ώρας παρελβούσης, εἶπεν πρὸς αὖτὸν ὁ συνοδοιωόρος. « Δεύρο, άδελφέ, γευσώμεθα, μήωως άτονήσωμεν εν τη όδω » πρός όν ἀποκριθείς εἶπεν· « Απέστω, ἀδελφε, ού μη ωριήσω τρύτο, διότι ωρός τόν σεβάσμιον πατέρα Βενέδικτον νηστις έχω συνήθειαν άπέρχεσθαι. » Ταύτην την απόκρισιν δεξάμενος πρός όλίγον ήσύχασεν όδεύσαντες8 δέ όλίγον της όδοῦ διάστημα, πάλιν ὁ συνοδοιπόρος τοῦτον τροφής μεταλαβείν προετρέπετο ό δε ύσακουσαι τούτου ούκ ηνέσχετο, αλλα την πορείαν νηστις διήνυσεν.9 Παλιν ουν διάστημα πλεῖστον όδεύσαντες, ἐκ μήκους δὲ τοῦ μοναστηρίου όντες, ήλθον επί τινα τέωον τερπνον, εν ζ πηγή διαυγεστάτου10 ύδατος ύπηρχεν, και λιβάδιον εὐανθές. Τότε δ συνοδοιπόρος τοῦτον αύβις προτρεπόμενος έλεγεν· « Ιδού υδωρ, ίδου λιβάδιον, ίδου έπιτ ίδειος τόπος, έν ῷ δυνησόμεθα τροφής μετασχεῖν καὶ ἀνεβήναι ὀλίγον, ὅπως τὴν ὁδὸν ή-

¹⁾ Quidam παρέβαλε — 2) Alii τὸ — 3) Alii ὅτου — 4) Codice Floren. ἐφύλαττεν — 5) Cod. Floren. ποικιλίας — 6) Cod. scribit νήστης ex simili pronunciatione; sic inferius — 7) Super ras. elementa συν — 8) Alii ὁδεύσαντες — 9) Alii διήνοισεν scripserat — 10) Cod. Parisien. Reg. διειδεστάτου.

CAPUT XIII.

De fratre Valentiniani monachi, quem vir Dei in via comedisse cognovit.

Frater quo que Valentiniani ejus monachi, cujus superius memoriam feci, vir erat laicus, sed religiosus. Qui ut servi Dei orationem perciperet,² et germanum fratrem videret, annis singulis de loco suo ad cellam³ jejunus venire consueverat. Quadam igitur die dum iter ad monasterium faceret, sese illi alter viator adjunxit4 qui sumendos cibos in⁵ itinere⁶ portabat. Cumque jam hora tardior excrevisset, dixit: Veni frater, sumamus cibum, ne lassemur in via. Cui ille respondit: absit, frater, non facio⁸, quia ad venerabilem Patrem Benedictum⁹ jejunus semper venire10 consuevi. Quo responso percepto, ad horam conviator conticuit.11 Sed cum post haec12 aliquantulum itineris spatium egissent, rursus admonuit ut manducarent. Noluit consentire qui jejunus pervenire decreverat. Tacuit quidem qui ad manducandum invitaverat, et cum eo jejunus adhuc pergere¹³ ad modicum consensit. Cumque et14 iter longius agerent, et eos tardior

¹⁾ In titulo post monac adiungitur tantum ut supra — 2) Cod. prius perceperet — 3) Alii addunt eius — 4) Cod. adiuncait scribit — 5) Additum in a 2. m. — 6) Prius itenere ut alias et inferius — 7) Alii addunt hoc — 8) Alii faciam — 9) In verbo Patrem emendatio est, ut in Benedictum prius Bedictum. 10) Alii pervenire, sed illud per videtur iteratio novissimæ syllabæ præcedentis — 11) Alii tacuit — 12) Quidam hoc — 13) Prius pergeret — 14) In aliis et desideratur.

μῶν ἀκόωως διανύσωμεν. Αρεσθείς οὖν τη τοῦ τόπου τερπνότητι, καὶ δελεασθείς τῆ τοῦ συνοδοιπόρου τρισσῆ συμδουλία, άναπεσών και συνεστιασθείς αὐτῷ άναστας είχετο της είς² τὸ μοναστήριον ἀπαγούσης όδοῦ. Οψίας δε γενομένης κατέλαβεν τὸ τοῦ άγίου πατρὸς κελλίον, καὶ δή μηνυθεὶς ἐδέχθη ὑπὸ τοῦ σεβασμίου πατρὸς 3 Βενεδίκτου. Πεσών οὖν ἐπὶ τὴν γῆν εὐχὴν ἦτήσατο4 λαδεῖν. Ο δὲ προορατικός έκεῖνος ἀνὴρ τὸ παράπτωμα, ὅωερ κατὰ τὴν ὁδον αὐτῷ συμβέβηκεν, δυείδισεν, λέγων «Τί έστιν, άδελφε, δπερ ό έχθρός σοι διά τοῦ συνοδοιωίρου κατειργάσατο; τὸ ωρῶτον πλανῆσαί σε ούκ ίσχυσεν, είς το δεύτερον δελεάσαι σε ούκ ήδυνήθη, είς το τρίτον ενίκησεν, και εν οίς ήθελησεν κατέλαβεν.6 Τότε έκεῖνος τὴν ἀμαρτίαν τοῦ ἑαυτοῦ ἀσθενοῦς λογισμοῦ γνωρίσας, τοίς του άγίου ποσίν προσκυλινδούμενος, τοσούτω μάλλον ήρξατο θρηνείν τε και αίδείσθαι το έαυτου σφάλμα, όσον ξαυτῷ⁸ ἐπέγνω ἡμαρτηκέναι, καὶ τοῦ τοῦ πατρὸς ασουσία γενομένην αύτω ύπο του έχθρου συμφοράν, έπέγνω σαφώς ταύτην 11 έν τοῖς τοῦ δικαίου 12 όφ2αλμοῖς ταύτην 13 πεωαραχέναι.

ΠΕΤΡΟΣ.

Εγώ τοῦ ἀγίου τούτου ἀνδρὸς τὰς πράξεις ἀκούων, ἐν μὲν τῷ προορῷν τὰ μέλλοντα, καὶ τὰ ἐν κρυφῆ δρώμενα εἰς φανερὸν ἄγειν, τοῦ Ελισσαίου τὸ πνεῦμα ἐν αὐτῷ ὑπάρ—χειν ὁρῶ, ὅτι ἀπόντι τῷ μαθητῆ, 14 ὡς παρών τὰ κατὰ αὐτοῦ διέγνω.

¹⁾ Alii ἀνύσωμεν — 2) Cod. Flor. τῆς.. τερπνότητος — 3) Quidam ἀγίου addunt et ἀνδρὸς pro πατρὸς — 4) Cod. Flor. ἡτεῖτο. 5) Alii συέβηκεν — 6) Cod. Flor. κατέβαλλε — 7) Cod. τοσοῦτο Alii τοσοῦτον — 8) Quidam ἐαυτὸν — 9) Cod. fol. 60 - 10) Cd. Flor. addit τῆν — 11) Verbum a quibusdam omissum — 12) Quidam πατρὸς pro δικαίου — 13) In Flor. deest ταύτην — 14) Cd. μαθητί scribit.

hora fatigaret ambulantes, invenerunt in itinere pratum et fontem, et quæque poterant ad reficiendum corpus delectabilia videri. Tunc conviator1 ait: Ecce aqua, ecce pratum, ecce amœnus locus, in quo possimus² refici et parum quiescere, ut valeamus iter nostrum postmodum incolumes³ explere. Cum igitur et verba⁴ auribus et loca oculis blandirentur, hac⁵ tertia admonitione persuasus, consensit et comedit: ' vespertina vero hora pervenit ad cellam. Præsentatus autem venerabili Benedicto Patri, sibi orationem petiit:6 sed mox ei vir sanctus hoc quod in via egerat inproperavit, dicens; Quid est, frater, quod malignus hostis, qui tibi per cumviatorem⁷ tuum⁴ locutus est, semel tibi persuadere non potuit, secundo⁸ non potuit, ad tertium persuasit,9 et te ad hoc quod voluit, superavit? Tunc ille reatum infirmæ suæ mentis agnoscens, ejus pedibus provolutus, tanto magis cœpit culpam deflere et erubescere, 10 quanto se cognovit etiam absentem in Benedicti Patris oculis deliquisse.

PETRUS.

Ego sancti viri præcordiis Elisæi spiritum video inesse, qui absenti discipulo praesens fuit.¹²

¹⁾ Alii convivator — 2) Alii possumus — 3) Cod. incolomes scribit — 4) Alii addunt hæc — 5) Omittunt hac alii — 6) Alii dari petiit — 7) Alii conviat.. — 8) Prius secundum — 9) Alii at tertio suasit — 10) Prius erubiscere — 11) Cd. Helisei — 12) Alii extitit.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ ΙΔ΄.

Περί Τότιλα1 του ρηγός πειράσαντος τον σγιον.

ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ.

ΙΔ΄. Δέον ἐστὶ, Πέτρε, ἡσυχάζειν σε τέως, ὅπως ἀκούσης τὰ μέγιστα.² Εν τοῖς των Γότθων³ καιροῖς, ὁ τούτων ῥίζ⁴ Τότιλας τοθνομα, άκηκοως τὰ τοῦ άγίου κατορθώματα, καὶ ὅτι προφητικοῦ χαρίσματος ἀνάπλεος τυγχάνει, ἐπὶ τὸ μοναστήριον ώρμησεν έλθεῖν. Καὶ δὴ μήκοθεν τοῦ μοναστηρίου στας, την έαυτοῦ παρουσίαν τῷ μακαρίῳ ἐμήνυσεν. Ο δὲ άγιος έπέτρεψεν τοῦ παραγενέσθαι αὐτον προς αὐτόν. Εκεῖνος δε λογισάμενος εν έαυτῷ ἀδύνατον είναι φβαρτον ἄνθρωπον ὄντα προφητικής χάριτος μετέχειν, τουτον πειράσαι ετόλμησεν. Ενα δέ τινα τῶν αύτοῦ σπαβαρίων, Ρίγγωνα λεγόμενον, τμφίασεν τοῖς έαυτοῦ ίματίοις, καὶ τοῖς ὑποδήμασιν ὑπέδησεν, - καὶ τοῦτον ἐν τῷ ἑαυτοῦ ὀνόματι πορευθήναι ωρὸς τὸν τοῦ Θεοῦ ἄνβρωπον ἐκέλευσεν, ώς δήθεν πειράζων αὐτον, παρασχόμενος αὐτῷ δορυφόρους πλείονας. Σὺν αὐτοῖς δὲ καὶ κόμητας απέστειλεν, τουτέστιν Βούλ Ρουδερϊκ^{, 7} καί Βριδήν,8 εκ δεξιών τε αὐτοῦ καὶ έξ εὐωνύμων πλ. θη άρχόντων καὶ στρατιωτών πορευθήναι ἐπέτρεψεν,9 οἰόμενος διά τῆς ἐπιπλάστου ταύτῆς καὶ ψευδοῦς θεωρίας ἀπατησαι τὸν τοῦ Θεοῦ δοῦλον. Ως δὲ τὸ μοναστήριον κατέλαβεν ὑπὸ τῆς τῶν στρατιωτῶν τε καὶ ἀξιωματικῶν δορυφορούμενος τάξεως, συνέβη τον άγιον έν τινι ύψηλώ τότώ καθήμενον θεωρείν τοῦτον ἐρχόμενον καὶ ἀπο διαστήματος όντος αὐτος 10 αὐτοῦ

¹⁾ Editiones passim accentum apponunt alteri syllabæ, sed Codex noster vulgarem usum secutus, adiecit primæ, ut et inferius.

2) Quidam δέοντα pro μέγιστα - Cod. Floren. ἀχούσης τὰ ἐν τοῖς omisso μέγιστα et δέοντα — 3) Ut superius Cod. scribit Γόθθων.

4) Alii scribunt ρηξ — 5) Alii attice ἀνάπλεως — 6) Quidam μετασχεῖν — 7) Alii Βουλτερῖκον Ρουδερῖκον sed codex BOYA POΥ-ΔΕΡΙΚ' Cod. Flor. βούλ ρουδέριν — 8) Alii βρινδῖνον, sed codex BPIΔΗΝ Cod. Flor. βλίδην — 9) Quidam προσέταξε — 10) In aliis αὐτὸς desideratur.

CAPUT XVI.

De simulatione regis Totilæ deprehensa.1

GREGORIUS.2

Oportet, Petre, ut interim sileas, quatenus adhuc majora cognoscas. Gothorum namque temporibus, cum rex eorum Totila sanctum virum prophetiæ habere spiritum audisset, ad ejus monasterium pergens, paulo longius substitit,3 eique se venturum esse nuntiavit. Cui dum protinus mandatum de4 monasterio fuisset ut veniret, ipse, sicut perfidæ mentis⁵ fuit, an vir Domini⁶ prophetiæ spiritum haberet explorare conatus est. Quidam vero ejus spatarius⁷ Riggo dicebatur, cui calciamenta⁸ sua præbuit, eumque indui vestibus regalibus fecit, quem quasi in persona sua pergere ad Dei hominem præcepit. In cujus obsequio tres qui sibi præ cæteris adhærere consueverant, comites misit, scilicet, Vul¹⁰ Ruderic, et Blidin, ut ante servi Dei oculos ipsum regem Totilam esse simulantes, ejus lateri¹¹ obambularent; cui alia quoque obsequia atque spa-

¹⁾ In codice capitis numerus paulo post verbum Gothorum apponitur — 2) Ut alias quatinus. — 3) Prius substetit — 4) In e adest rasura — 5) In mentis suppletum est n - 6) Alii Dei. 7) Sic Cod. cum rasura inter t et a, sed non videtur ibi fuisse h ut alii habent. — 8) Alii calceam... — 9) Codex scelicet. 10) Alii vulteric sed cod. ex Ambrosianus, ut codex Cryptensis hic habet, ut etiam in aliis duobus nominibus —11) Alii lateribus.

έξι οὖπερ, ή τοῦ ἀγίου φωνή ἤδύνατο παρ ἐκείνου ἀκουσθήναι, ἔκραξεν ὁ ἄγιος, λέγων. «Απόθου, τέκνον, ἀπόθου τοῦτο
ὅπερ ἐνδέδυσαι, οὐκ ἔςι γὰρ σόν.» Οστις Ρίγγων ταῦτα ἀκούσας παρ αὐτοῦ πεσών ἐπὶ τὴν γῆν ἐξές η, μετανοῶν ἐφὶ
οἶς ἔδρασεν ὅτι τοιοῦτον ἄγιον, καὶ διορατικώτατον ἀνδρα
διαχλευασαι ἀπετό μησεν. Πάντες οὖν οἱ σὺν αὐτῷ ὄντες τῷ
ἀνθρώπῳ τοῦ Θεοῦ ἐπὶ τὴν γὴν προσεκύνησαν ἀνας άντες
δὲ οὐδαμῶς τῷ ἀγίῷ πλησιάσαι ἐτόλμησαν ἀλλὰ πρὸς τὸν
αὕτῶν ῥῆγα ὑπές ρεψαν τρέμοντες, καὶ ἑαυτοὺς μεμφόμενοι
ἔπὶ τῃ οἰκεία κουφίτητι.

1) Cod. fol. 61.

Procopius de Bello Gothico lib. III.

S. Nilus Ode VI. Οι τον νόμον τον δεδωρημένον σοῦ μη συντηρήσαντες προφητική έρσσει διελέγχονται, το ποτηρίων ποσον μαθόντες, διακώς πεωόκασι και τον Τότηλα τον βασιλέα πειράζειν μέλλοντα ήλεγξας ωροφανώς πᾶσι ωροειπών έν οις έμωέση κακοίς. Qui regulam a te traditam non observarunt per propheticam redarguuntur visionem, quot pocula malitiose biberint rescientes; Totilamque regem, qui de te exploraturus erat, aperte coarguisti coram omnibus ea mala prædicens, in quæ ille incideret.

tharios¹ præbuit, ut tam ex eisdem obsequiis quam ex purpureis vestibus rex esse putaretur. Cumque idem² Riggo decoratus vestibus, obsequentum frequentia comitatus monasterium fuisset ingressus, vir Dei eminus sedebat. Quem venientem³ conspiciens, cum jam ab eo audiri4 potuisset, clamavit, dicens: Pone, fili, pone hoc quod portas; non est tuum. Qui Riggo protinus in terram cecidit, et qui tanto viro inludere præsumpsisset, expavit: omnesque qui cum eo ad hominem Dei veniebant, terræ consternati⁵ sunt. Surgentes autem, ad eum propinquare minime præsumpserunt, sed ad suum regem reversi, nuntiaverunt trepidi in quanta velocitate fuerant deprehensi.6

1) Hic cod. addit h, et verbum scribit spatharius, quæ scriptura favet editionibus, non raro enim u pro o usurpatur, et vicissim; sed 2. m. scripsit spatharium — 2) Cod. isdem — 3) In venientem suppleta sunt ien a 1. m.' — 4) Cod. audire male.
5) Verbum super ras. — 6) Ut in titulo Cod. deprhændi scribit.

Mabillon adnot. ad vitam S. Benedicti. Act. SS. t. I. 12. Troya St. d'Italia nel M. E. vol. II. p. 1473.

De S. Benedicto et Totila confer cantu' Storia Universale Torino 1842. tom. VIII. pag. 424. qui parum diverse a Gregorio rem narrat « per accertare se fosse (Benedetto) dotato di profe« tico spirito, vestì uno scudiero cogli abiti suoi, ed egli si po« se indistinto nel corteggio, ma il santo lo riconobbe, e a lui « difilatosi, lo rimproverò. »

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ ΙΕ'.

Περί ής εξέθετο προφητείας τῷ αὐτω ρηγί.

ΙΕ΄. Τότε δι' έαυτοῦ ὁ αὐτὸς ῥήξ Τότιλας πρὸς τὸν τοῦ Θεοῦ άνθρωπον παραγέγονεν. ον ήνίκα μήκοθεν καθεζόμενον έ-Βεάσατο, οὐδαμῶς ἐτόλμησεν προσεγγίσαι αὐτῷ, ἀλλ' ἑαυτὸν έπι την γην ρίψας, έδέετο της παρα του άγίου τυχείν συγχωρήσεως. Ο δε τοῦ Θεοῦ Βεράπων τοῦτον δίς καὶ τρίς προσφωνήσας ανας ήναι, και βεασάμενος τῷ φόβῷ αὐτὸν συσχεθέντα μη άνιστάμενον,² Βενέδικτος ό τοῦ κυρίου Ιησοῦ Χριστοῦ οἰκέτης³ δι' έαυτοῦ ἀνας-ῆσαι τὸν ἡηθέντα ἡῆγα Τότιλαν κατηξίωσεν, καὶ τοῦτον ωερὶ τῶν⁴ έαυτοῦ διήλεγξεν πράξεων. καὶ ἐν ὀλίγοις ῥήμασιν πάντα τὰ μέλλοντα αὐτῷ συμδεβηκέναι⁵ προεμήνυσεν, λέγων· «Πολλά κακά ἐποίησας καὶ ποιεῖς, λοιπον ἀπός ηθι της ἀνομίας, καὶ μετανόησον, κᾶν όψέ ποτε καὶ γὰρ ἐν Ρώμη μέλλεις εἰσιέναι, καὶ θάλασσαν περάσαι έχεις, εννέα έτη⁶ βασιλεύσεις, τῷ δεκάτῳ δε έτει τελευτήσεις.» Ταῦτα ἀκούσας ὁ τῶν Γότθων ῥηξ, καὶ τῆ ἀπροσδοκήτω τοῦ μακαρίου προφητεία έκθαμβος γενόμενος, εβρίψεν έαυτον έπι την γην, και εύχην αιτήσας, άνεχώρησεν της μονης. Και άπο τότε της έαυτου ωμότητός τε και άπανθρώπίας μετεποιήθη, δια της του όσίου διδασκαλίας, και έπωφελους παραινέσεως. Και ού μεταθ πολύν χρόνον έν Ρώμη είσηλθεν, και έν Σιχελία παραγέγονεν δεκάτω δε έτει της αυτου βασίλείας, ή θεία δίκη τουτον ζην ούκ είασεν άλλα κατα την του άγίου προφητείαν, το βασίλειον μετά της ζωίς ἀωώλεσεν.

Οθεν λοιπον ό τῆς Κανουσίων ἐκκλησίας ἐπίσκοπος⁹ πρὸς τὸν μέγαν Βενέδικτον κατὰ τὸ σύνηθες παραβαλών διὰ γὰρ

¹⁾ Alii παρεγένετο — 2) Alii ἀνιστα.. — 3) Quidam δεῦλος — 4) Alii τοῦ — 5) Quidam συνβαίνειν — 6) Cod. scripsit ἔτι — 7) Cd. Florent. ἐκθαμβούμενος — 8) Alii μεθ' οὖ — 9) Hie sanctus Canusinæ civitatis Episcopus Savinus vocatur a Gordiano in actis S. Placidi § 41. De Canusia urbe in Apulia ad Aufidum fluvium tribus millibus a Cannis sita et Procopius de bello gothico - De

CAPUT XV.

De prophetia eidem regi Totilae et Canusinæ civitatis antisiti facta.

Tunc per se² idem³ Totila ad Dei hominem accessit: quem cum longe sedentem cerneret, ausus accedere sese in terram dedit. non Cui dum⁴ vir Dei bis et ter⁵ diceret : Surge, sed ipse ante eum de terra erigi non auderet Benedictus Iesu Christi Domini⁶ famulus per semetipsum dignatus accedere est ad regem prostratum; quem de terra levavit, de suis actibus increpavit, atque in paucis sermonibus cuncta quæ illi erant ventura prænuntiavit, dicens: ' Multa mala facis, multa⁸ mala fecisti, jam aliquando ab iniquitate compescere. Et quidemº Romam ingressurus es, mare transiturus, novem annis regnas, 10 decimo morieris. Quibus auditis, rex vehementer territus, oratione petita recessit, atque ex illo jam tempore minus crudelis fuit; Cum¹² non multo¹³ post Romam adiit, ad Siciliam perrexit; anno autem regni sui decimo, omnipotentis Dei judicio regnum cum vita perdedit.14

¹⁾ In codice titulus habet sic: De prophetia quae eodem regi totila facta est.—2) In se suppletum s a 1. m. — 3) Cod. isdem ut solet.—4) Alii cum — 5) Alii terve pro et ter — 6) Quidam et præmittunt — 7) Hic quoque alii addunt mala — 9) Alii Equidem — 10) Manus serior regnaturus alii regnabis — 11) Prius orationem Cod. Bessarionis hic habet orationem petiit ac recessit dum Romam abiit.—12) Alii et.—13) 1. m. multom — 14) Deinde 2. m. perdidit.

την της πολιτείας αὐτοῦ ἀγιωσύνην σφόδρα τοῦτον ήγάπα ό σεβάσμιος Βενέδικτος. Καθεσθέντων οὖν αὐτῶν, καὶ λόγου κινηθέντος περί τε της εν τη πόλει εἰσόδου τοῦ έηγὸς Τότιλα, καὶ τῆς τῶν Ρωμαίων πόλεως ἀπωλείας, λέγει πρὸς τὸν μακάριον ὁ ἐπίσκοπος. « Διὰ τοῦ ἡηγὸς τούτου ἡ πόλις Ρώμη καταλυθήσεται, πρός το μηκέτι οίκισθηναι υπό² άνθρώπων.» Προς δυ ό τοῦ Θεοῦ ἀνβρωπος ἀπεκερίθη· «Η τοῦ Ρωμαίων πόλις ύπο εθνών ου μή καταλυθήσεται, άλλ' άνάγκαις, άς ραπαίς τε και ταραχαϊς και σεισμοῖς σαλευθείσα τακήσεται έφ' έαυτήν. Καὶ ίδου τὰ μυς ήρια τῆς τοῦ σεβασμίου ἀνδρὸς προφητείας γλίου λαμπρότερα έν όφθαλμοῖς πάντων πρόκειται και γάρ έν αὐτῆ τῆ μεγίς ης ωόλει την ωερικαλλή ταύτης κόσμησιν ούχ όρωμεν, άλλα καταχωσθέντας οίκους, έκκλησίας έρημωθείσας διά των έπιγεγονότων σεισμών κατανοούμεν, καί τά κτίσματα αὐτῆς παλαιωθέντα ύωο γάρ τῶν συμπτωμάτων, καί τῶν συνεχῶν σεισμῶν ή τῶν οἰκοδομημάτων ποικιλία πατερβυπώθη. Ταύτης της Βεοσδότου του όσίου ανδρός προφητείας την έξηγησιν έποιήσατο ωρός με Ονοράτος ό τοῦ άγίου φοιτητής. Ελεγεν δε ταῦτα ὁ αὐτὸς εὐλαβές ατος Ονοράτος οὐ παρά τοῦ άγίου ἀκηκοέναι, ἀλλὰ παρὰ ἀδελφῶν άληθευόντων πιςωθείς έμαρτύρει ταῦτα.

eodem (Dialog. l. III. c. 5.) περι Σαβίνου τοῦ τῆς Κανουσίας ἐωισκόωου ut vertit Zacharias, narratur a Gregorio prodigium coram Totila patratum.

1) Editores monent hoc aoristum verbi parum usitari — 2) Alii παρά — 3) Prius κατασκοθ.. — 4) Cod... ριπώθη — 5) Cd. φυτιτής.

Procopius Cæsariensis De bello Gothico cap. Vl. narrat anno octavo eiusdem belli et primo regni Totilæ. Τώτιλας... ἐς μὲν τὰ Ρώμης ὅρια εὐδαμῆ ἦλθεν.. Καμωανούς καὶ Σαμνίτας αὐτίκα ἦκων Βενεβέντον πόλιν ὀχυρὰν ωαρεστήσατο οὐδενὶ πόνω... Totila.. Romæ finibus abstinuit.. et ad Campanos et Samnitas repente ingressus Beneventum urbem validam nullo negatio in potestatem suam redegit. Hoc tempore, nempe anno 542, Benedictum invisit. Baronius Annal. Eccl. 543.

Præterea Canuisnæ antistes ecclesiæ ad eundem Domini¹ famulum venire consueverat, quem vir Dei pro vitæ suæ merito valde diligebat.2 Is itaque dum cum illo de ingressu regis Totilæ et Romanæ urbis³ perditione colloquium⁴ haberet, dixit: Per hunc regem civitas ista destruetur, ut jam amplius habitetur.⁵ Cui vir Domini respondit: Roma a gentibus non exterminabitur, sed tempestatibus, coruscis, et turbinibus, ac' terrae motu fatigata,8 in semetipsa marcescet. Cujus prophetiae mysteria nobis jam facta sunt luce clariora, qui in hac urbe dissoluta mœnia, eversas domos, destructas ecclesiasº turbine cernimus, ejusque aedificia longo senio lassata, quia ruinis crebrescentibus¹⁰ prosternantur, vidimus. 11 Quamvis hoc Honoratus ejus discipulus, cujus mihi relatione conpertum est, nequaquam ex ore illius audisse se perhibet; sed quia hoc dixerit, dictum sibi a fratribus fuisse¹² testatur.

¹⁾ Alii Dei — 2) Prius diligebat. — 3) Prius orbis — 4) Prius colloquiom — 5) Alii inhabitetur. — 6) Prius corussis — 7) Alii et.

⁸⁾ Prius faticata — 9) Cd. domus distructas æccl.. DE Rossi Bol. arch. II. V. 75. de basidica Petronillæ destructa - 10) Prius crebics..

¹¹⁾ Alii videmus. — 12) Prius vid. fuesse. Cd. Bess. suis pro fuisse. Muratori Annali d'Italia anno DXLII. «In questi suoi

[«] progressi (Totila) arrivato a Monte Cassino volle visitar S.

[«] Benedetto celebre allora abbate di quel monasterio, il quale

[«] gli predisse molte cose avvenire e l'esortò alla clemenza. »
TROYA St. d'Italia nel M. E. l. cit.

Notae Anonym. Cas. Cod. 175.. in poio (podio).. ibi carrivit Totila..

De S. Honorato Mirtz Chron. - Muratori Chron. Subl. Antiq. Ital. XII. 16.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ Ic.

Περι τοῦ δαιμονιοῦντος κληρικοῦ, και δια προσευχής αὐτοῦ ἰαθέντος.

Ις΄. Εν² αὐτῷ τοίνυν τῷ καιρῷ κληρικός τις ἐκ τῆς Ακυϊνῶν ἐκκλησίας ἐτύγχανεν ὑπὸ δαίμονος ἀκαθάρτου ἐνοχλούμενος ό δε τούτου όσιώτατος επίσκοπος Κωνστάντιος έν διαφόροις των άγίων κοιμητηρίοις πολλάκις τοῦτον ἀπέστειλεν, όπως δυνηθη ιάσεως τυχεῖν 3 άλλ' οι άγιοι τοῦ Θεοῦ μάρτυρες της ιάσεως το δώρον τούτω παρασχείν ούχ είλαντο,4 ἐωιδεῖξαι ωᾶσιν Βελήσαντες την ἐν τῷ μακαρί ω Βενεδίκτω έπιωολάζουσαν θείαν χάριν τῶν ίαμάτων. Αωηνέχθη τοίνυν ο ἀσθενών πρός τον τοῦ Θεοῦ δοῦλον Βενέδικτον, έστις τῷ κυρίω Ιησοῦ Χριστῷ τὰς δεήσεις προσενέγκας, τὸ άκάθαρτον πνευμα ἀω' αὐτοῦ ἀπελάσας, ὑγιῆ τοῦτον τῆ τοῦ Θεοῦ χάριτι ἀπεκατέστησεν, εἰπων αὐτῷ· « Απελθε, ίδου βῆς· οἶα⁶ δ' αν ήμέρα ίερατικον αξίωμα ἐφ' έαυτον δέξασθαι πολμήσεις,7 εύθέως ύπο την έξουσίαν τοῦ ἀκαβάρτου δαίμονος ανελεημόνως υποβληθήση.» Επανελθών δε είς τα ίδια ό ἰαθεὶς, ἐπελάθετο τῆς παρὰ τοῦ άγίου δοθείσης αὐτῷ εντολης, καὶ μετὰ ἐτῶν πολλῶν περίοδον, ἡνίκα ἐβεάσατο τους προτερεύοντας έν τῷ ἵερατικῷ καταλόγῳ έκ τοῦδε τοῦ βίου μεταστάντας, και τους ξαυτοῦ ξλάσσονας εν ίερατικῷ προβαίνοντας τάγματι, λήθην,8 ώς είρηται, ὑπομείνας τῶν παρὰ τοῦ άγίου πρὸς αὐτὸν γενομένων νουθεσιῶν, ἱερατικῷ ἐπέδη τάγματι παραυτά δὲ εἰς αὐτὸν ὁ δαίμων, ώσσερ ανήμερος Αήρ εἰσοικισβεὶς, ανηλεῶς τοῦτον διεσσαραττε μέχρι Βανάτου.

1) In titulo editores animadvertunt: forte ἐωιδεῖξαι Θελήσαντες ωᾶσι.. δαιμενιώντος — 2) Codex noster fol. 62 — 3) Cod. Flor. habet τυχεῖν ἢν εὐκ εἴλαντο — 4) Cod. ἢλοντο pro εἶλεντο scribit — 5) ἀποκατ.. — 6) Alii εἴαν δ' ᾶν ἡμέραν quidam οῖα γὰρ ἡμέρα — 7) Alii τολμήσης — 8) Cod. scribit λίθην.

De Constantio Aquinati Zacharias papa sic vertit verba Gregorii (lib. III. cap. 8.) Ανήρ τις πάνυ τῆ ζωῆ εὐλαβέστατος Κωνστάντιος τοὖνομα ἐισίσκοιος τῆς Ακυίνου ισόλεως ὑπῆρχεν... « Vir

CAPUT XVI.

De clerico a demonio liberato.

Eodem quoque tempore quidam Aquinensis Ecclesiae² clericus daemonio vexabatur, qui a venerabili³ viro⁴ Constantio Ecclesiae ejus antistite⁵ per multa fuerat martyrum loca transmissus, ut sanari potuisset. Sed sancti⁶ martyres noluerunt ei sanitațis donum tribuere,7 ut quanta esset in Benedicto gratia demonstrarent. Ductus itaque est ad omnipotentis Dei famulum Benedictum; qui Jesu Christo Domino preces fundens, antiquum hostem de obsesso homine protinus expulit. Cui sanato praecepit, dicens; Vade, et post hæc carnem non comedas; ad⁸ sacrum vero⁹ ordinem numquam accedere praesumas; quacunque die 10 sacrum ordinem temerare praesumpseris, statim juri diaboli 11 iterum manciparis. 12 Discessit igitur clericus sanus, et sicut terrere solet animum poena recens, ea quae vir Dei praeceperat, interim custodivit. Dum¹³ vero post annos multos omnes priores illius de hac luce

¹⁾ Alii addunt ad tempus — 2) Prius vid. eclesia — 3) Antevener.. est parva rasura — 4) Prius vero — 5) Prius antestis sed s in fine dubie eras. — 6) Alii addunt Dei — 7) Cod. Bessarionis gratiam conferre — 8) Cod. praecum alii precem — 9) Alii præmittunt et — 10) Alii omittunt vero — 11) Quidam praemittunt autem — 12) Prius diabuli — 13) Alii mancipaberis. 14) Quidam Dum.

ΠΕΤΡΟΣ.

Ο προορατικος τοῦ Θεοῦ οὖτος ἄνθρωπος, ὡς ὁρῶ, ἀποκεκρυμμένα μυστήρια διέγνωσεν,¹ ὅστις ὑπὸ Θεοῦ φωτισθεὶς, τουτονὶ τὸν κληρικὸν διὰ τοῦτο τῷ διαβόλῷ παραδοθέντα συνῆκεν, πρὸς τὸ μὴ ἀυτομολίσαι² τοῦτον ἱερατικῆ ἐγχειρισθῆναι ἀξία.

ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ.

Διὰ τί ἀγνοεῖν εἶχεν τὰ τῆς θεότητος μυστήρια ὁ τοῦ Χριστοῦ τὰ προστάγματα φυλάττων; καθώς γέγραπται· «Ο προσκολλώμενος τῷ κυρίῳ ε̂ν πνεῦμά ἐστιν.³ »

ΠΕΤΡΟΣ.

Ει⁴ εν γίνεται σύν τῷ κυρίῳ πνεῦμα ὁ τῷ Θεῷ προσκολλώμενος, τί ἐστιν ὅπερ πάλιν ὁ αὐτὸς πάνσοφος κήρυξ εἰρηκεν, φήσας: «Τίς ἔγνω⁵ νοῦν κυρίου; ἢ τίς σύμβουλος αὐτοῦ ἐγένετο;⁸ » Λίαν ἀσύμφωνόν μοι εἶναι δοκεῖ, εἰ ὁ νοῦς σὺν τῷ κυρίῳ εν πνεῦμα γενόμενος τὰ μέλλοντα ἀγνοήσει.⁷

ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ.

Οί ἄγιοι ἄνδρες, ἐφ᾽ ὅσον σὺν τῷ κυρίῳ ἔν εἰσιν, τὸν νοῦν κυρίου οὐκ ἀγνοοῦσιν, ὁ γὰρ αὐτὸς Απόστολος λέγει· «Τίς οἶδεν ἀνθρώπων τὰ τοῦ ἀνθρώπου, εἰ μὴ τὸ πνεῦμα τοῦ ἀνθρώπου τὸ οἰκοῦν ἐν αὐτῷ; οὕτως καὶ τὰ τοῦ Θεοῦ οὐδεὶς ἔγνω, εἰ μὴ τὸ πνεῦμα τοῦ Θεοῦ. 10 » Ινα οὖν έαυτὸν ἐπιδείζη τὰ τοῦ Θεοῦ μὴ ἡγνοηκέναι μυστήρια, προσέθηκεν· «Ημεις δὲ οὐχὶ τὸ πνεῦμα τοῦ κόσμου τούτου ἐλάβομεν, ἀλλὰ τὸ πνεῦμα τὸ ἐκ τοῦ Θεοῦ· » ὅθεν εἴρηκεν πάλιν «Α

- « quoque venerabilis vitæ Constantius Aquinæ civitatis episco-« pus fuit.. »
- 1) Alii διέγνωκεν 2) Alii αύθις τολμήσαι pro αὐτομολίσαι.
- 3) $\Pi\rho\delta\varsigma$ KOPINOIOY A'. $E\pi\iota\varsigma$.. Cod. Vat. pag. 1463, de quo supra, habet $\pi o\lambda\lambda\omega\mu\epsilon\nu o\varsigma$ 4) Alii $\Delta\iota\alpha\tau\iota$ 5) Cod. noster male $\gamma\omega$ pro $\epsilon\gamma\nu\omega$ scribit 6) $\Pi\rho\delta\varsigma$ PQMAIOY Σ $E\pi\iota\varsigma$.. ib. p. 1456.
- 7) Alii αγνοήσει 8) Alii αὐτὸς κύριος δια τοῦ ἀποστόλου λέγει.
- 9) Alii \mathring{ov} $\tau \omega$ 10) $\Pi \rho \mathring{o}_{\varsigma}$ KOPINOIOY Σ B'. $\mathring{e}\pi$. In eodem Cod. Vat.
- p. 1463 deest οικουν, habet ουτως, et εγνωκεν pro έγνω 11) Cod. Var. habet ου pro ουχι.

migrassent, et minores¹ sibimet superponi in sacris ordinibus cerneret, verba viri Dei quasi ex longo tempore oblitus postposuit,² atque³ ad sacrum ordinem accessit: quem mox is, qui reliquerat, diabolus tenuit, eumque vexare⁴ quousque animam ejus excuteret, non cessavit.

PETRUS.

Iste vir Dei divinitatis, ut video, etiam secreta penetravit, qui⁵ perspexit hunc clericum idcirco diabolo⁶ traditum, ne ad sacrum ordinem auderet accedere.

GREGORIUS.

Quare divinitatis secreta non nosset, qui divinitatis praecepta servavit, cum scriptum sit: Qui adhæret Domino, unus spiritus est??

PETRUS.

Si unus fit cum Domino spiritus, qui Domino adhaeret, quid est quod iterum idem egregius praedicator dicit: Quis novit sensum Domini, aut quis consiliarius ejus fuit? Valde enim esse inconveniens videbitur sensum, cum quo unus factus fuerit, ignorare.

GREGORIUS.

Sancti viri in¹¹ quantum cum Domino¹² unum sunt, sensum Domini non ignorant. Nam idem

¹⁾ Alii addunt suos — 2) Cod. posposuit — 3) Prius adque.

⁴⁾ Cod. Bessar. addit coepit, et paulo post omittit eius — 5) Alii quia — 6) Prius idcircum diabulum — 7) Ep. I. cor. VI. 17.

⁸⁾ Cod. adheret et h supplet. a l. m. — 9) Ep. Rom. XI, 34.

¹⁰⁾ Alii addunt eius — 11) Quidam in omittunt. — 12) Alii Deo.

όφθαλμὸς οὐκ εἶδεν, καὶ οὖς οὐκ ἦκουσεν, καὶ ἐωὶ καρδιαν ἀνθρώπου οὐκ ἀνέβη, ἀ ήσοίμασεν ὁ Θεὸς τοῖς ἀγαπῶσιν αὐτὸν, ἡμῖν δὲ ἀπεκάλυψεν διὰ τοῦ πνεύματος αὐτοῦ.¹»

ΠΕΤΡΟΣ.

Εί² τῷ Αποστόλῳ αὐτὰ τὰ τοῦ Θεοῦ ὑπάρχοντα, διὰ τοῦ πνεύματος τοῦ Θεοῦ ἦσαν ἀποκεκαλυμμένα,³ πῶς πρὸ τούτων ὧν προεθέμην λέγειν, προφθάσας εἶπεν· « Ω βάθος πλούτου καὶ σοφίας καὶ γνώσεως Θεοῦ, ὡς ἀνεξερεύνητα τὰ κρίματα αὐτοῦ, καὶ ἀνεξιχνίαστοι αἱ ὁδοὶ αὐτου⁴» Πάλιν δὲ μοὶ ταῦτα λέγοντι ἑτέρα ὑπεισέρχεται ἐρώτησις· καὶ γὰρ Δαυἰδ ὁ προφήτης τῷ Θεῷ ἐντυγχ ένῶν ἔλεγεν· « Εν τοῖς χειλεσί μου ἐξήγγειλα πάντα τὰ κρίματα τοῦ στόματός σου. 5 » Εἰ οὐν τὸ γνῶναι τὰ τοῦ Θεοῦ κρίματα μεῖζόν ἐστι τοῦ ἀναγγεῖλαι, πῶς ὁ μακάριος Παῦλος ἀνεξερεύνητα τὰ τοῦ Θεοῦ κρίματα ἀναγγέλλει, ὁ δὲ Δαυἰδ οὐ μόνον ταυτα γνῶναι, ἀλλὰ καὶ τοῖς χείλεσιν ἀναγγεῖλαι μαρτυρεῖ;

ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ.

Εν έκατέραις ταύταις σου ταῖς ἐρωτήσεσιν ἐν τοῖς ἀνωτέρω εἰρημένοις ὡς ἐν συντόμω ἀπεκρίθην, λέγων, ὅτι οἱ ἄγιοι ἄνδρες ἐφ' ὅσον μετὰ τοῦ κυρίου ἔν εἰσιν, τὸν νοῦν κυρίου οὐκ ἀγνοοῦσιν. Πάντες γὰρ οἱ διὰ προσευχῆς ἀπερισπάστου τῷ κυρίῳ ἀκολουθοῦντες, δηλονότι ἐν τῆ εὐχῆ ὄντες σὺν τῷ κυρίῳ εἰσιν οἱ δὲ τῷ ἐφολκίῳ τοῦ γεώδους τούτου καὶ ἐπικήρου σώματος τοῖς πάθεσιν βαρούμενοι, σὺν τῷ κυρίῳ εἶναι οὐ δύνανται. Τὰ ἀπόκρυφα οὖν τοῦ Θεοῦ κρίματα, ὅταν ἡνωμένοι τῷ κυρίῳ εἰσιν, ἐπίστανται. ὅταν δὲ ὑπὸ τῆς τοῦ σώματος ἀσθενείας κώλυμα ὑποστῶσιν, καὶ

¹⁾ In Codice Flor. deest $\alpha \dot{\nu} \tau o \ddot{\nu}$, ut etiam in textu biblico Cod. Vat. Græc. qui etiam habet pag. 1463. $o \sigma \alpha$ pro $\hat{\alpha}$ et $\gamma \alpha \rho$ pro $\hat{\delta} \dot{\epsilon} - 2$) Aliqui Ev $\tau \ddot{\omega}$ $\dot{\alpha} \pi o \sigma \tau$. Hic Codicis fol. 63. — 3) Cod. $\hat{\sigma}$ - $\omega \cos \alpha \lambda \nu \mu \dot{\epsilon} \nu \alpha$ scribit — 4) $\Pi \rho \dot{\delta} \dot{\epsilon}$ POMAIOYS ubi Cod. Vatican. Græc. pag. 1456 legit 1. manu $\alpha \nu \epsilon \dot{\epsilon} \epsilon \rho \alpha \nu \nu \nu \tau \alpha$ a 2. manu — 5) $\Psi \alpha \lambda \mu \dot{\delta} \dot{\epsilon}$ PIH'. — 6) Verbum $\dot{\alpha} \gamma \nu o c \ddot{\nu} \sigma \iota \nu$ sequitur facies folii vacua, quia ad scriptionem parum apta videbatur. 7) Quidam scribunt $\delta \tilde{\eta} \lambda o \nu \tilde{\sigma} \tau \iota$.

quoque apostolus¹ dicit: Quis enim scit hominum, quæ hominis sunt, nisi spiritus hominis, qui est in ipso? Ita et quæ Dei sunt, nemo cognovit, nisi spiritus Dei.² Qui, ut se ostenderet nosse, quae Dei sunt, adjunxit:³ Nos autem non spiritum hujus mundi accepimus, sed spiritum, qui ex Deo est. Hinc⁴ iterum dicit; Quod oculus non vidit, nec auris audivit, nec in cor hominis ascendit, quae præparavit Deus diligentibus se; nobis autem revelavit per spiritum suum.

PETRUS.

Si ergo eidem apostolo ea, quae Dei sunt, per Dei Spiritum fuerant revelata, quomodo super hoc quod proposui, praemisit dicens: O altitudo divitiarum sapientiæ et scentiæ Deil quam inconprehensibilia sunt judicia ejus, et investigabiles viæ ejus! Sed rursum mihi haec dicenti alia suboritur quaestio. Nam David propheta Domino loquitur, dicens: In labiis meis pronuntiavi omnia judicia oris tui?. Et cum minus sit nosse quam etiam pronuntiare, quid est quod Paulus incomprehensibilia esse Dei judicia asserit; David autem haec se omnia non solum nosse, sed etiam in labiis pronuntiasse testatur?

¹⁾ Cod. apostulus — 2) Ep. I. cor. II. 11. — 3) Cod. adiuncxit. — 4) Alii Hic — 5) Quidam et Cod. Bessarion proposuit 6) Ep. Rom. XI. 33. — 7) PSALM. CXVIII. 13. — 8) In Cod. Bessarion. desunt verba in labiis

ἀπὸ Θεοῦ πρόσκαιρον ἀπασχοληθῶσιν τὸν νοῦν, τὰ κρίματα τοῦ κυρίου άγνοοῦσιν, και τὰ ἀπόκρυφα αὐτοῦ μυστήρια άδηλα αύτοῖς καβίστανται και λοιπον τότε άνεξερεύνητα τὰ κρίματα τοῦ Θεοῦ είναι λέγονται. Ηνίκα δὲ τῷ Θεῷ τῆ διανοία ένωθωσιν δια της των βείων γραφών αναπτύξεως, και κρυπτών μυστηρίων ἀποκαλύψεως,1 ὅσον παρά Θεού κο $μίζονται τὸ μέτρον γινώσκουσιν καὶ αὐτο<math>^2$ οἰδασίν τε καὶ προμηνύουσιν. Τὰ μυστήρια τοίνυν, ἄπερ παρὰ τῷ Θεῷ ἐν αποκρύφω είσιν, αγνοουσιν, α δε ό Θεος αποκαλύπτει, γινώσκουσιν. Οθεν και Δαυίδ ό προφήτης φήσας.3 « Εν τοῖς χείλεσίν μου έξηγγειλα σάντα τὰ κρίματα.4 » παραυτὰ προσ-Βείς έπήγαγεν «του στόματός σου·» μονονουχί λέγων πρός Θεόν. Εκείνα έγω κρίματα γνώναί τε και αναγγείλαι ήδυνήθην, ἄπερ λαλήσαντά σε πρός με έγνων, επι έκεινα ἄπερ αὐτὸς οὐ λέγεις, παρ' ήμῖν άδηλα ὑπάρχουσιν καὶ ανέκφραστα. Συμφωνεῖ λοιπον ή τε προφητική καὶ Αποστολική μαρτυρία, ὅτι καὶ ἀνεξιχνίαστά εἰσι τὰ τοῦ Θεοῦ` κρίματα, καὶ τὰ ἐκ τοῦ στόματος αὐτοῦ προερχόμενα τοῖς ανθρωπίνοις χείλεσιν έσονται προφερόμενα καὶ γαρ ύπο άνθρώπων έκεῖνα λαληθηναί τε και γνωσθηναι δύνανται, άσερ ο Θεός άποκαλύψει, και πάλιν έκεινά είσι παρ' ήμιν κρύφιά τε και άφανη, άπερ αύτος τοῖς ξαυτού άνεφίκτοις κρίμασιν έν άδήλω έθετο.

ΠΕΤΡΟΣ.

Εν τῆ προσθήκη τῆς ἐμῆς ἐρωτήσεως τῶν προβρηθέντων μαρτυριῶν τὸ δυσερμήνευτον, λέγω δη τοῦ τε προφήτου Δαυἶδ καὶ τοῦ Αποστόλου, τηλαυγῶς διεσάφησας. ἀλλὰ δυσωπῶ, εἰ ὑπολέλειπταί τι περὶ τῆς ἀνεπιλήωτου πολιτείας τοῦ ἀγίου ἐκείνου ἀνδρὸς, δαψιλῶς φράσον ἡμῖν.

¹⁾ Aliqui ἀποκαλύψεων — 2) Alii αὐτὰ — 3) Alii φῆσιν pro φήσας — 4) Cod. κριμα pro κριματα habet — 5) Cod. ἔγνω pro ἔγνων. Hinc Codicis fol. 64. — 6) Cod. διασαφίσας scribit. 7) Cod. prius ἐκει postea 2. m. ἐκείνου.

GREGORIUS.

Ad utraque haec tibi superius sub brevitate respondi, dicens, quod sancti viri in quantum cum Domino unum sunt, sensum domini non ignorant. Omnes enim qui devote dominum sequuntur, etiam devotione cum Deo sunt, et adhuc carnis corruptibilis pondere gravati cum Deo non sunt. Occulta itaque Dei judicia, in quantum conjuncti sunt, sciunt; in quantum disjuncti¹, nesciunt. Quia enim secreta ejus adhuc perfecte non penetrant, inconprehensibilia ejus judicia esse testantur; quia vero mente ei inhaerent, atque inhaerendo vel sacræ² Scripturae eloquiis vel occultis revelationibus³, in quantum accipiunt, agnoscunt, et norunt haec et pronuntiant. Judicia igitur4 quae deus tacet nesciunt, quae deus loquitur, sciunt. Unde et David propheta cum dixisset: In labiis meis pronuntiavi omnia judicia, protinus addidit, oris tui, ac si aperte dicat: Illa ego judicia et nosse et pronuntiasse potui, quae te dixisse cognovi. Nam ea quae ipse non loqueris, nostris procul dubio cognitionibus abscondis. Concordat ergo prophetica apostolicaque sententia; quia et inconprehensibilia sunt dei judicia, et tamen quae de ore ejus prolata fuerint, humanis labiis pronuntiantur; quoniam sciri⁵ ab hominibus et prolata per Deum possunt, et occultata⁶ non possunt.

PETRUS.

In objectione meae quaestiunculae patuit causa rationis. Sed quaeso te, si qua sunt adhuc de hujus viri virtute⁷ subjunge.

¹⁾ Alii add. sunt — 2) Alii sacris — 3) Prius relat.. — 4) Alii itaque — 5) Alii scire — 6) Alii occulta — 7) Alii virtutibus.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ IZ'.

Περὶ τῆς ἐρημώσεως τοῦ μοναστηρίου. Τ

ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ.

ΙΖ΄. Ανήρ τις υπηρχεν εύγενέστατος, όμωνυμος δέ του μακαρίου Βενέδικτος,² όστις ύπὸ τῆς αὐτοῦ θεοσόφου διδασκαλίας παιδαγωγηθεις, την του βίου καταλείψας τερπνότητα πρός θεόν ἐπανέδραμε·3 και διὰ την ἐν τῷ άγίῳ οὖσαν μεγίστην της πολιτείας άρετην 4 την της πνευματικης παβρησίας πρός αὐτον ἐκτήσατο ἀσφάλειαν. Τούτου κατά τὸ σύνηθες πρὸς τὸν τοῦ Θεοῦ ἄνθρωπον παραγεγονότος, και έν τῷ κελλίω εἰσεληλυθότος, εὖρεν τὸν θεσπέσιον πατέρα πικρώς κλαίοντα και όδυρόμενον έπι πολύ δε έστως, και θεασάμενος την των άκατασγέτων αύτου δακρύων φοράν, έν αμηχανία γέγονεν, μη έσρακῶς τοῦτον, καθώς σύνηθες αὐτῷ ην, εν τη της προσευχης ώρα ἐν ήσυχέα δακρύειν, ἀλλ' οίμωγάς και βρηνώδεις στεναγμούς έκπέμποντα. Εμφοβος δε και έντρομος γενόμενος, τί αν ην το αίτιον σαρά του άγίου μαθείν ἐπεζήτει τοῦ τοσούτου όδυρμοῦ, πρός δν ό θεόσοφος 5 πατήρ ἀπεκρίθη· « Ολον τοῦτο 6 τὸ μοναστήριον ὅπερ δια τοῦ Θεοῦ οἰκοδόμησα, καὶ πάντα ὅσα τοῖς ἀδελφοῖς ήτοίμασα, τη τοῦ παντοδυνάμου Θεοῦ κρίσει τοῖς ἔθνεσιν παρεδό βησαν μόλις δε διά προσευχής τον Θεόν εξιλεωσάμην τοῦ χαρισθήναί μοι τὰς ψυχάς τῶν ἐν κυρίω, μου ἀδελφῶν τῶν ἐν τῷ μοναστηρίω⁸ οἰκούντων. » Βενέδικτος μεν ἐκεῖνος ο τῷ άγίω παραβαλών, τῆς τῶν μελλόντων προφητείας παρ' αύτου δεξάμενος τὰ ἐνέχυρα, ἄνεχώρησεν ἐκ τῆς μονῆς θαυμάζων. Ημεϊς δε δρώμεν άρτίως ύπο τοῦ ἔθνους τῶν Λαγγοβάρδων¹⁰ καταλυθέν¹¹ το μοναστήριον αὐτοῦ. Αναπαυομένων

¹⁾ Extrema αὐτοῦ προφητείας vel αὐτοῦ προφητεία alii addunt.

²⁾ Cod. Paris. et Flor. Βενεδίκτου — 3) Cod. Florentin. ἀνεδρ..

⁴⁾ Quidam præmittunt τὴν — 5) Alii θειφόρις — 6) Cod. male τοῦτον Codex vero Florent. hic habet ὅλα ταῦτα τὰ μονας ήρια.
7) Codd. quidam Χριςῷ ἀδελφῶν μιν — 8) Cod. Flor. τοῖς μο-

νας πρίοις — 9) Alii γένους — 10) Ut alios Λογγ.. alii — 11) Male eod. καταλυθέντα.

CAPUT XVII.

De prophetia destructionis monasterii sui.1

GREGORIUS.

Vir quidam nobilis, Theopropus² nomine, ejusdem Benedicti³ Patris. fuerat admonitione conversus, qui pro vitae suae merito magnam apud eum familiaritatis fiduciam habebat. Hic cum quadam die ejus cellulam4 fuisset ingressus, hunc amarissime flentem repperit. Cumque diu subsisteret, ejusque finiri⁵ lacrimas non videret, nec tamen vir Domini6 ut consueverat orando plangeret, sed mærendo,7 quaenam caussa tanti luctus existeret, inquisivit. Cui vir Dei illico⁸ respondit : Omne hoc monasterium quod construxi,9 et cuncta quae fratribus praeparavi, omnipotentis Dei judicio gentibus tradita sunt. Vix autem obtinere potui, ut mihi ex hoc loco animae cederentur. 10 Cujus votunc Theopropus audivit, nos cernimus, qui destructum¹¹ modo a Longobardorum¹² gente ejus monasterium scimus. Nocturno enim tempore et quiescentibus fratribus,

¹⁾ Titulus in aliis est: De destructione monasterii viri Dei ab ipso prædicta. — 2) Alii Theoprobus: sic et inferius — 3) Rasura est inter c et t, forte prius i fuerat — 4) Alii cellam — 5) Alii hic addunt non, quod omittunt ante videret — 6) Quidam Dei. 7) Cod. scribit maerendo — 8) Cod. ilico — 9) In cod. construcæi. 10) Alii concederentur — 11) Codex distructum — 12) Manus posterior Langob.. sic etiam inferius.

γάρ των άδελφων μεσονυκτίω, άφνω είσωηδήσαντες έν τω μονας πρίω οἱ Λαγγοβάρδοι, πάντα τὰ ἐν τῆ μονῆ διαρωάσαντες, ού συνεχωρήθησαν ωαντελώς τινος των άδελφων έωικρατείς γενέσθαι. Η γαρ τοῦ ἀνβρώσου τοῦ Θεοῦ προσευχή εφρούρει τούτους, πρός το πάσιν δειχθήναι την ένυπάρχουσαν αὖτῷ της θείας δυνάμεως χάριν ό γάρ ωιστός έν έωαγγελίαις Θεός, όπερ τῷ ἐαυτοῦ γνησίω θεράποντι Βενεδίκτω ὑπέσχετο έπλήρωσεν· εί γὰρ καὶ τὰ ὑπάρχοντα τῆς μονῆς¹ ἐκ συγχωρήσεως Θεοῦ διήρπασαν, ἀλλ² οὖν ομως ή τῶν ψυχῶν περι-**ઝ**οίησις ύπο κυρίου έδωρήθη αὐτῷ. Οὕτως ἔγνωμεν καὶ τὸν μακάριον Παθλον τον Απόστολον ύτερ του πλήθους των συμωλωτήρων αὐτοῦ ἐκδυσωπήσαντα τὸν Θεὸν ἐν τῇ κατὰ τον πλοῦν ζαλώδει ἀνάγκη, καὶ τῆς δεήσεως μη ἀποτυχόντα.3 εί γαρ και τα μαλιστα του έν τω ωλοίω όντος φόρτου ή ἀποβολή γέγουεν, ἀλλ' οὖν γε ή τῶν ψυχῶν ἐωικερδής σωτηρία παρά Χριστοῦ ἔχαρίσθη αὐτῷ.

- 1) Cod. Flor. ὑπάρχοντα τῶν μοναχῶν ἐκ παραχωρήσεως 2) Cd. fol. 65 3) Quidam ἀποτυγχάνοντα.
- S. Joseph hymnographus Ode III. Ροαίς σου τῶν δαπρύων ἀρδευόμενος, ὡς δένδρον Βενέδικτε καρποφόρον, εὐκαρπίαν θείας ἡνεγκας ἀρετῶν καὶ θαυμάτων θεία χάριτι: Fluentis lacrymarum irrigatus, veluti arbor fructifera fructus abundantes virtutum et prodigiorum divina gratia protulisti Cathism... μονήν συγκροτήσας ἱερὰν προσενήνοχας κυρίω σωζομένων πληθύν παναοίδιμε... cum asceterium sacrum congregasses obtulisti Domino multitudinem servatorum, o celebrande Ode VII Εἰργάσω τοῖς ἐσιόις πόνοις σου μάνδραν ἀπείρων μοναστῶν, ἤτις ἀεὶ διαμένει τειχίζομένη ταῖς προςασίαις σου, ἀξιάγασε, πειθομένη τοῖς καλῶς ὑπὸ σοῦ τυποθεῖσι. Sanctis laboribus tuis adunasti gregem innumerabilium monachorum, quæ semper permanet praesidio tuo custodita, o admirande, cum subiecta sit egregiis praeceptis tuis.

nuper illic Longobardi ingressi sunt; qui diripientes omnia, ne unum quidem hominem illic tenere potuerunt; sed implevit omnipotens Deus quod fideli famulo Benedicto promiserat, ut si res gentibus traderet, animas custodiret. Qua in re Pauli vicem¹ video tenuisse Benedictum, cujus dum navis rerum omnium jacturam² pertulit, ipse in consolatione vitam omnium, qui eum comitabantur, accepit.

1) Prius codex vocem — 2) Codex jactura scribit.

Leo ostiensis seu marsicanus Chronicon Cassinense. » § 1.

- «Cum die quadam divinitus sibi revelatum fuisset idem mo-
- « nasterium, quod ipse fundaverat, a gentibus destruendum atque
- « propterea inconsolabiliter fleret: coelesti protinus oraculo con-
- « solatus audivit eundem locum suis nihilominus meritis in po-
- « tiorem et ampliorem quam tunc statum fore venturum...

Tosti Storia di Monte Cassino t. I. - Em. Bartolini Di S. Zaccaria.. commentar. p. 259. doc. p. 57.

Quirini cum Mabillon contendit hæc evenisse anno 580. Sunt qui ad annum 579 referunt — Della noce eis annum 985 assignat; M. Lauret in animadvers. ad Chronicon Cassinense, ad annum 589 perducit.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ ΙΗ'.

Περί του ἀωοκρύψαντος τὸ φλασκην εν τη ὁδῷ, καὶ ἐκ προοράσεως τοῦ άγίου ἐλεγχθέντος.

ΙΗ΄. Εν έτέρω τοίνυν καιρώ Εξιλαράτος² ό ήμέτερος, ον αὐτὸς ἐπιστρέψαντα³ γινώσκεις, ἀπεστάλη ὑπὸ τοῦ κυρίου αύτοῦ πρὸς τὸν τοῦ Θεοῦ ἄνβρωπον, ἐπιφερόμενος οἶνου γέμοντα δύο ξύλινα σκεύη, ἄσερ τῆ κοινῆ διαλέκτω φλασκία4 καλούνται δστις το μέν εν απήγαγεν προς τον άγιον, το δὲ ἔτερον κατὰ τὴν όδον ἔκρυψεν. ὁ δὲ διορατικός ἐκεῖνος πατήρ, 5 ον ούδεν των έκείνου πρακτέων 6 διέλα θ εν, 7 το μεν έν φλασκίον μετ' εύχαριστίας έδέξατο, απολύσας δε αυτον παρήγγειλεν αὐτῷ λέγων· « Βλέπε, τέκνον, έξ ἐκείνου τοῦ φλασκίου, οὖπερ8 κατὰ τὴν όδον ἔκρυψας, μηκέτι πίεις9 λοιπον έξ αύτοῦ· άλλὰ κένωσον αύτο τετηρημένως, καὶ εύρήσεις όπερ ενδον έχει.» Ο δε σφόδρα καταισχυνθείς ενώπιον τοῦ όσίου βαλών μετάνοιαν, ύπέστρεψεν έλθων δε έν - τόσω ήν το αὐτο άποκρύψας φλασκήν,10 θέλων δοκιμάσαι εἰ άληθη είσιν τὰ παρὰ τοῦ άγίου ρηθέντα ωρος αὐτον, ἔκλινεν το σκεύος, ίνα κενώση αὐτὸ καὶ ίδου παραυτά όφις έξηλθεν σύν τῷ κενωθέντι οἶνῳ. Θεασάμενος οὖν ὁ προλεχθείς Εξιλαράτος τὸ σφάλμα ὁ πεποίηκεν, καὶ ἔμφοβος γεγονώς 11 κατανυγείς μετενόησεν.

1) Alii φλάσκιον, quidam φλασκήν — 2) Cod. Εξηλ.. scribit bis, Cod. Floren. vero Εξηλαρότητος utroque in loco — 3) Verbum omissum in Florent. — 4) Cod. Flor. φλασκεῖα - quidam φλάσκι λέγονται — 5) Quidam ἀνήρ — 6) Elementa κτεων super rasur. 7) Alii ἐλαθεν - Editt. addunt. οὐκ — 8) Quidam ὅπερ — 9) Alii πίης — 10) Quidam φλασκίου — 11) Cod. Flor. γενόμενος.

S. Ioseph hymnogr. Ode VII. Ξηράς τε καὶ ἀνίκμνους ὅσιε ἀπειργάσω ψυχὰς γονίμους ζωτικῷ λόγῳ σου, καὶ τῶν θαυμάτων ἐπιδείξει, ποιμὴν θεοπρόβλητος γενόμενος καὶ μοναζόντον κόσμος ώραιότατος - Aridas et infructuosas animas, o sancte, verbo tuo vi-

CAPUT XVIII.

De fluscone sublato, per spiritum cognito.1

Quodam quoque tempore Exhilaratus noster, quem ipse conversum nosti, transmissus a domino suo fuerat, ut Dei viro in monasterium vino plena duo lignea vascula, quae vulgo2 flascones vocantur, deferret:3 qui unum detulit, alterum vero pergens in itinere4 abscondit. Vir autem Domini, quem facta absentia latere non poterant, unum cum gratiarum actione suscepit, et discedentem puerum monuit, dicens: Vide, fili, de illo flascone quem abscondisti jam non e bibas, sed inclina illum caute, et invenies quid intus habet. Qui confusus valde a Dei homine exivit. Et reversus volens adhuc probare quod audierat, cum flasconem inclinasset, de eo protinus serpens egressus est. Tunc praedictus Exhilaratus puer, per hoc quod in vino repperit, expavit malum quod fecit.

¹⁾ Titulus in aliis: De flascone abscondito et a viro Dei per spiritum cognito. — 2) Codd. Vallis clarae et Bessar. a vulgo.

3) Prius deferrit — 4) Ut alibi itenere — 5) Alii hic addunt ne — 6) Hic alii omittunt jam non — 7) Prius invenis — 8) Cd. Bessar. vide quid intus kabet..

KEΦAΛΑΙΟΝ ΙΘ'.

Περι τοῦ λαβόντος ὑπὸὶ ωαραμοναστρίας ἐγχείρια, καὶ ὑπὸ τοῦ ἀγίου ἐλεγχθέντος·

10'. Εμπόριον ήν οὐ μακράν της τοῦ άγίου μονης, ἐν ώ πολύ πληθος ανδρών είδωλομανών 2 ύπηρχεν. Ούτοι ούν ύπο της του μακαρίου ψυχωφελούς διδασκαλίας φωτισθέντες, έπι την τοῦ Θεου σωτήριον πίστιν ἐπέστρεψαν.3 Εν αὐτῷ τοίνυν τῷ ἐμπορίῳ ἀσκητήριον ἐτύγχανεν εὐλαβῶν τε καί σεμνῶν παρθένων, ὧν διὰ την ύσερδάλλουσαν άγιωσύνην, τους οἰκείους μαθητάς πρός οἰκοδομήν, καὶ νουθεσίαν αὐτῶν εἰώθει4 ἀποστέλλειν. Εν μιᾳ οὖν τῶν ἡμερῶν κατὰ τὸ σύνηθες, απέστειλεν ό τοῦ Θεοῦ ανθρωπος τινα μοναχόν είς τὸ τῶν παρθένων ἀσκητήριον πρός ψυχικήν αὐτῶν ἀφέλειαν. έκεῖνος δε ό ἀποσταλείς μοναχός μετὰ τὴν τοσαύτην παραίνεσιν την ωαρά του τιμίου ωατρός γενομένην, παρακληθείς ύπο τῶν ἀειπαρθένων γυναικῶν 5 ἐγχείρια ἐλαβεν, καὶ ἐν τῷ έαυτοῦ κόλπω ταῦτα κατέκρυψεν. Εν δὲ τῷ παραγενέσθαι αὐτὸν πρὸς τὸν πατέρα, διελέγξας αὐτὸν περὶ τούτου, αὐστηρώς έφη πρός αὐτὸν· «Αδελφέ, πώς ή ἀνομία εἰσῆλθεν έν τῷ κόλπῳ σου; » Εκεῖνος δε ἐκωλαγεὶς ὑπὸ τοῦ φόβου, καὶ τη ἀπροσεξία ἐπιλαθόμενος του οἰκείου σφάλματος περί οὖ ὑπὸ τοῦ ἰδίου πατρὸς διελέγχετο, ήγνόει τι πρὸς αὐτὸν ό πατήρ ἔλεγεν. Πρός ον ό ἄγιος ἔφη « Μήτοι γε έγω οὐκ ήμην αὐτόθι παρών, ὅτε ωαρὰ τῶν ἱερῶν παρθένων ἐδέξω τὰ ἐγχείρια, και ἐν τῷ κόλπῳ σου ταῦτα⁷ κατέκρυψας; » Ο δε ταῦτα ἀκούσας τοῖς ἔχνεσιν τοῦ ἀγίου προσκυλινδούμενος, έαυτον ήμαρτηκέναι έλεγεν ἄσερ8 δε ήν λαβών σαρά τῶν παρθένων ἐγχείρια, ταῦτα ἐκ τοῦ ἐαυτοῦ κόλπου ἐκθαλων, ενώσειον τοῦ άγίου ρίψας γνησίως περί⁹ τοῦ πταίσματος τούτου μετεμελήθη.

vifico et prodigiorum ostensione fructiferas effecisti, visus a Deo datus pastor et monachorum pulcherrimum decus.

¹⁾ Alii et omittunt ὑπὸ et scribunt ϖαρὰ μοναςρίας — 2) Cod. Paris et alii εἰδωλολατρῶν — 3) Quidam ὑπεςρ.. — 4) Cod. ειωθι scribit. — 5) Alii omittunt γυναικῶν — 6) Alii ἰδίου — 7) Cod. Flor. omittit ταῦτα — 8) Cod. fol. 66 — 9) Cod: Flor. ὑπὲρ.

CAPUT XIX.

De mappolis a servo Dei acceptis.1

Non longe autem a monasterio vicus erat, in quo non minima² multitudo hominum ad fidem Dei ab idolorum cultu Benedicti fuerat exhortatione conversa. Ibi quoque quaedam³ sanctimoniales feminae inerant, et crebro illuc pro exhortandis animabus fratres suos mittere Benedictus Dei famulus curabat. Quadam vero die misit ex more; sed is qui missus fuerat monachus, post ammonitionem4 factam, a sanctæ monialibus⁵ faeminis rogatus mappulas⁶ accepit, sibique eas abscondit in sinu. Qui mox ut reversus est, eum vir Dei vehementissima amaritudine coepit increpare, dicens: Quomodo ingressa est iniquitas in sinu tuo?7 At ille obstupuit,8 et quid egisset oblitus, unde corripiebatur ignorabat. Cui ait: Numquid⁹ ego illic praesens non eram quando ab ancillis Dei mappulas accepisti, tibique eas in sinum¹⁰ misisti? Qui mox ejus vestigiis provolutus, stulte se egisse paenituit,11 et eas, quas in sinu absconderat, mappulas projecit.

Nonnulla ad hæc animadverterunt Haeftenus, Della noce, Quirini et præsertim Mabillon tom. I. act. SS. O. S. B. Præf. § 3. Gallicioli dicit forte apùlas, ut apulias a Tertulliano memoratas, esse linteamina, quae ab Apulia nomen ducunt.

¹⁾ Alii in titulo: De mappularum receptione ab eodem cognita.

2) Cod. Theod non magna — 3) Prius quedam — 4) Sic Cod. pro admon.. — 5) Cod. sic pro sanctimon. — 6) Hic mappul.. et sic in titulo et inferius mappol. Cod. Bessar. semper apulas.

7) Alii sinum tuum — 8) Prius obstibuit — 9) Prius Nunquit.

10) Forte fuerat sinu, rasura est — 11) Prius paenetuit.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ Κ.

Περί του μοναχού του κατά διάνοιαν εξουθενουντος τον άγιον.

Κ΄. Εν μια των ήμερων κατά την ώραν έν ή τον άγιον της συνήθους έχρην μεταλαβείν τροφής, έσπέρας λοιωόν 6αθείας ούσης, συνέβη τινά μοναχόν υίον γεγονότα δεφένσορός τινος, ενώπιον της του άγίου τραπέζης τον λύχνον κατέχειν. Εσθίοντος δε τοῦ άγίου, ὁ δαίμων τῆς ὑπερηφανείας ηρξατο αὐτῷ² ἐνοχλεῖν, καὶ ἐπάρσεως λογισμούς αὐτῷ ἐπαφίειν,³ και άλαζονευόμενος έν έαυτῶ, ἔλεγεν· «Τίς ἐστιν ουτος, ῷ ἐγω παριστάμενος ὑπηρετῶ, καὶ λύχνον ἐπὶ χεῖρας βαστάζων δουλεύω; καὶ ἵνα τί τούτω έγω ως δοῦλος καθυωουργῶ; » Ταῦτα δὲ αὐτοῦ κατὰ διάνοιαν λογιζομένου,⁴ δ τῷ προορατικῷς κατηγλαϊσμένος χαρίσματι σατήρ Βενέδικτος, διελέγξας αὐτὸν σωλάγχνοις πατρικοῖς, εἶωεν· « Σφράγισον την καρδίαν σου, άδελφί τνα τι άλαζονείας λογισμοί έν σοι αναφύονται; πρόσεχε σεαυτώ.» Καλέσας οὖν τους αδελφούς εκέλευσεν παραυτά τον λύχνον έκ των χειρών αὐτοῦ ἀρθηναι. Ο δε έξελθων έξω ἐκάθητο σύνδακρυς. 6 ὅστις παρά τῶν ἀδελφῶν ἐρωτώμενος, τί ἄν εἰη πεωραχώς, καὶ τίς ή παρά τοῦ άγίου πρὸς αὐτὸν άγανάκτησις, ἀπεγύμνωσεν αὐτοῖς τὴν έαυτοῦ κατὰ διάνοιαν διαβολικὴν πλάνην, καὶ πῶς τῷ τῆς ὑπερηφανείας ἐφυσιώθη πνεύματι, καὶ ὁποῖα κατα τοῦ⁷ ἀνθρώπου τοῦ Θεοῦ βήματα ἐν τῆ ἑαυτοῦ καρδία μελετών έκορυφούτο. Οθεν λοιπόν πάσιν φανερόν γέγονεν ο εν τη καρδία αύτου κεκρυμμένος ίδς, και την του άγίου πατρός προδιορατικήν έβαύμαζον καθαρότητα, ότι τά έν τη διανοία ύπο του κοινού έχβρου φυόμενα, τούτον λαθεῖν οὐ δύνανται.

¹⁾ Cod. Floren. διαφένσερες Vide Codinum de officiis — 2) Cod. Florent. sic αὐτῷ alii αὐτὸν — 3) Editt. animadvertunt legendum ἐπαφιέναι — 4) Alii διαλεγιζ... — 5) Quidam ωρογνωστικῷ. 6) Alii σὺν δάκρυσιν — 7) Quidam omittunt κατὰ τεῦ — 8) Quidam φανεοὸν.

CAPUT XX.

De superba cogitatione pueri per spiritum cognita.1

Quadam quoque die dum venerabilis Pater vespertina jam hora corporis alimenta perciperet,² ejus monachus cujusdam defensoris³ filius, fuerat, qui ei ante mensam lucernam tenebat. Cumque vir Dei ederet, ipse autem cum⁴ lucernae ministerio adstaret, cœpit⁵ per superbiæ spiritum in mente sua tacitus volvere, et per cogitationem dicere: Quis est hic, cui ego manducanti assisto,` lucernam teneo, servitium inpendo? Quis sum ego, ut isti serviam? Ad quem vir Dei statim conversus, vehementer eum coepit increpare, dicens: Signa cor tuum, frater; quid est quod loqueris? signa cor tuum. Vocatisque statim fratribus, praecepit eis6 lucernam de manibus tolli, ipsum vero jussit a ministerio recedere, et sibi hora eadem quietum sedere. Qui⁷ requisitus a fratribus, quid habuerit in corde, per ordinem narravit quanto superbiae spiritu intumuerat, et quae contra virum Dei verba per cogitationem tacitus dicebat. Tunc liquido omnibus patuit, quod venerabilem Benedictum latere nil possit,8 in cujus aure9 etiam cogitationis verba sonuissent.

¹⁾ Alii: De cogitatione monachi superba a Dei viro cognita—2) Cd. Bes. percipisset — 3) De Defensore, et vera nobilitate Benedicti Haeftenus, Mabillon et Della noce disserunt — 4) Quidam omittunt cum — 5) Alii accepit — 6) Alii ei — 7) Qui omissum a 1. m. supplet. a 2. m. — 8) Alii posset — 9) Alii auribus tacitæ.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ ΚΑ΄.

Περι τοῦ εύρεθέντος ἀλεύρου ἐν καιρῷ λιμοῦ ἔμπροσ Ξεν τῆς τοῦ ἀγίου κέλλης.

ΚΑ΄. Εν άλλω τοίνυν καιρώ έν τοῖς τῆς Καμπνίας μέρεσιν, λιμός γέγονεν και των αναγκαίων βρωμάτων πάντων στένωσιν. Σπάνη οὖν σίτου καὶ τῷ τοῦ άγίου φροντιστηρίω ύπηρχεν και λεϊψις των άρτων ώστε μη πλείους των πέντε άρτων εύρεθηναι έν τη ώρα της των άδελφων έστιάσεως. Ιδών δε αὐτοὺς ὁ τίμιος πατήρ σκυβρωπάζοντας² τὴν όλιγοψυχίαν αὐτῶν τῆ ξαυτοῦ πραοτάτη διορθώσει, καὶ ἀληβεῖ ὑποσχέσει διαναστήσας,³ ἔλεγεν· « Ινα τί περίλυποί ἔστε ένεκεν της των άρτων λείψεως; σήμερον μέν οὖν λεῖψιν ἔχετε,4 αύριον δε πλησμονήν των άναγκαίων άφθόνως έξετε.» Και τη έξης ήμέρα τη του Θεου οίκονομία άλεύρου μοδίους διακοσίους έμπροσθεν της πύλης του μοναστηρίου έν σακκίοις 5 εὖρον· ἄπερ ὁ πρύτανις πάντων Θεός τισιν ἐ ϖ ιφερομένοις ένεφοίτησεν, και την τούτων απόθεσιν ένώπιον της τοῦ μοναστηρίου πύλης ποιήσασθαι, οί τινες τὸ παράπαν άγνωστοι τοῖς ἀδελφοῖς ὑπῆρχον. Αγασθέντες8 οὖν ἐπὶ τῆ παραδόξω τοῦ άγίου θαυματοποιεία, τῷ Θεῷ δόξαν ἀνέπεμψαν, μαθόντες λοιπον μη δυσφορείν εν λιμώ, είποτε τύχοι τοῦτον συμβηναι, ἐνέχειρον⁹ ἔχοντες την τοῦ σήίου πρός Θεον παρρησίαν.

ΠΕΤΡΟΣ.

Εἰπὲ, δυσωπῶ, τὸ πνεύμα τῆς προφητείας διαπαντὸς ἐν τῷ ἀνβρώπῳ του Θεοῦ ἦν, ἢ ἐν διαφόροις καιροῖς ἐν αὐτῷ ἐνείργει;

¹⁾ Quidam omittunt τῶν — 2) Codex noster scribit σχυθρωπάντας male — 3) Quidam editores διαστήσας male — 4) Hic super
ras. χ fortasse prius ξ fuerat, ut paulo post — 5) Alii σαχίοις
vel σάχχοις — 6) Codex ενεφυτ.. scripserat — 7) Alii ἐποί ησεν.
8) Ut noster, habet codex Florent. sed quidam ἀγαλλιασθέντες.
9) Cod. fol. 67. Editores animadvertunt forte ἐνέχυρον legendum
esse.

CAPUT XXI.

De ducentis¹ farinae modiis famis tempore ante² cellam inventis.

Alio igitur³ tempore in eadem Campaniae regione fames4 incubuerat, magnaque omnes alimentorum indigentia coangustabat. Jamque in Benedicti monasterio triticum deerat: panes vero pene omnes consumpti fuerant, ut non plus quam quinque ad refectionis horam fratribus inveniri5 potuissent. Cumque eos venerabilis Pater contristatos6 cerneret, eorum pusillanimitatem7 studuit modesta increpatione corrigere,8 et rursum promissione sublevare, dicens: Quare de panis inopia vester animus contristatur? Hodie quidem minus est, sed die crastina abundanter habebitis. Sequenti autem die ducenti¹⁰ farinae modii ante fores cellae¹¹ in saccis inventi sunt, quos omnipotens Deus quibus deferentibus transmisisset, nunc usque manet incognitum. Quod cum fratres cernerent, Domino gratias referentes, didicerunt¹² jam de abundantia¹³ nec in egestate dubitare.

PETRUS.

Dic, quaeso te: numquidnam¹⁴ non credendum est huic Dei famulo semper prophetiae spiritum adesse potuisse? an per intervalla temporum ejus mentem prophetiae spiritus implevit?¹⁵

¹⁾ Alii duocenti—2) Alii add. viri Dei—3) Alii quoque—4) Prius famis — 5) Cd. invenire — 6) Prius contristatus — 7) Prius posillan.. — 8) Prius corregere—9) Prius habibitis—10) Prius ducentæ—11) Cod. Comp. fores ecclesiæ cellæ—12) Prius dedicer.. 13) Cod. bis habund..—14) Alii nunquid—15) Alii implebat.

ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ.

Τής προφητείας το πνεθμα, Πέτρε, τῶν προφητῶν τον νοῦν ού πάντοτε είωθεν λαμπρύνειν καθάπερ γάρ² περί τοῦ άγίου πνεύματος γέγρασται ὅτι « ὅσου θέλει πνεῖ, » οὕτως 3 γνωστον έστιν, ότι και ότε βέλει πνεί τοῦτο γάρ έστιν όπερ ό προφήτης Νάθαν παρά του βασιλέως Δαυίδ αίτηθείς εί τῷ Θεῷ φίλον ὑωάρχει οἰκοδομῆσαι αὐτὸν τὸν ναὸν κυρίου, ωρώτον μεν συνεβούλευσεν, μετέπειτα δε εκώλυσεν· έστιν δωερ Ελισσαῖος ό προφήτης κλαίουσαν τὴν γυναῖκα έθεάσατο τὸ δὲ ωρᾶγμα ήγνόει, ωρὸς δὲ τὸν κωλύοντα αὐτην παΐδα έλεγεν·4 « Αφες αὐτην, ὅτι ή ψυχη αὐτης κατώδυνός έστιν, και κύριος ἀπέκρυψεν ἀπ΄ έμοῦ, και οὐκ έφανέρωσέν μοι. » Οπερ ό πρύτανις πάντων Θεός έκ μεγίστης εὐσπλαγχνίας οἰκονομικῶς κατασκευάζει τῆς γάρ ωροφητείας τὸ πνεῦμα ποτὲ μὲν ωαρέχων, ωοτὲ δὲ σοφῶς άφαιρούμενος, τῶν προφητευόντων τον νοῦν διεγείρει μεν ἐν τῷ ΰψει, διατηρεί δε πάλιν έν τη ταπεινώσει, ίνα και δεχόμενοι το πνευμα έσιγινώσκωσιν την παρά του Θεου έν αύτοις έμπνευσιν, καὶ πάλιν ώσαύτως άφαιρούμενοι, οἰκονομικῶς μά-Βώσιν, ἀφ' έαυτων τί είσιν.

ΠΕΤΡΟΣ.

Οὔτως εἶναι καθομολογῶ, καὶ μεγάλως πεπληροφόρημαι. Λιπαρῶ δὲ ἵνα τὸ ἐλλεῖπον τῆς διηγήρεως τῶν καθορτωμάτων⁸ τοῦ σεβασμίου πατρὸς Βενεδίκτου ἀναπληρώσης, καὶ εἰ τι δ' ἀν ὑπαντᾳ τῆ σῆ ἡγιασμένη ψυχῆ, διέξελθέ⁹ μοι.

1) Cd. scripsit iωθ...-2) Cd. Floren. omittit γαρ - 3) Alii εΰτω.4) παῖδα ἔλεγεν super ras. a l. manu -5) Cod. πρύτανυς scripsit -6) Cod. Flor. σαρῶς - 7) Cod. Florent. omittit -8) Cd. scripserat καθερτ...-9) δι super ras.

Procopius Cæsariensis De bello gothico, de hac fame per totam Italiam grassantem narrat. Flagellum hoc contigit anno 538

GREGORIUS.

Prophetiae spiritus, Petre, prophetarum mentes non semper irradiat: quia sicut de sancto Spiritu scriptum est: Ubi vult spirat, ita sciendum est, quia et quando vult adspirat. Hinc est enim quod Nathan a rege requisitus si construere templum potuisset³ prius consensit⁴ et postmodum prohibuit. Hinc est quod Elisaeus⁵ cum flentem mulierem cerneret, causamque nescisset, ad prohibentem⁶ hanc puerum dicit: Dimitte eam, quia anima eius in amaritudine est, et Dominus celavit a me et non indicavit mihi. Quod omnipotens Deus ex magnae pietatis dispensatione disponit:8 quia dum prophetiae spiritum aliquando dat, et aliquando subtrahit, prophetantium mentes, et elevat in celsitudine et custodit in humilitate; ut et accipientes spiritum¹⁰ inveniant quid de Deo sint, et rursum prophetiae spiritum non habentes cognoscant quid sint de semetipsis.

PETRUS.

Ita hoc esse, ut asseris, magna ratio clamat. Sed, quaeso, de venerabili Patre Benedicto quidquid adhuc animo occurrit, exequere.

¹⁾ Cd. Nan. add. Spiritus - 2) Io. III. 8. - 3) Alii posset - 4) Cd. Bess. et; Vall. cl. concessit 5) - Cd. Bes. add. propheta - 6) Prius vid. prohibendum - 7) Cod. Bess. caelavit me - 8) Cod. Bes. disposuit - 10) Cd. Bess. addit prophetiae. Leo ost. Chr. § 48. « mo- « nasterium in Theano crematum est.. ubi etiam et regula, quam « S. Benedictus manu sua conscripserat, nec` non et sacci, in « quibus iussu Dei cœlitus eidem B. Patri escæ delatæ sunt. » Anonym. Cass. cd. 175. a pede de turre inbenit moia de farina.

КЕФАЛАІОН КВ'.

Περί τοῦ κατ' ἔναρ χρηματισμοῦ, ἔνεκεν τῆς οἰκοδομῆς τῆς ἐν Τερμακίνη μονῆς.

ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ.

ΚΒ΄. Εν έτέρω καιρῷ ὁ τὸν νοῦν πεφωτισμένος πατήρ Βενέδικτος παρεκλήθη ύπό τινος πιστοῦ καὶ εὐλαβεστάτου ἀνδρός, όπως δια της αύτου έπιτροπης και συνδρομης, έν τζ έαυτοῦ χωρέω πλησίον διακειμένω τῆς Τεββακηνῶν¹ πόλεως, ίνα² ἀποστείλας τινάς των έαυτου μαθήτων, οἰκοδομήση αὐτόθι μοναστήριον. Καὶ δὴ εἴξας τῆς αὐτοῦ παρακλήσει, καλέσας ους έδοξεν αυτώ αποστεϊλαι,3 δρισεν, αυτοῖς πατέρα καταστήσας δε και οίκονόμον, άπελυσεν αύτους έν είρήνη. οξς και υπέσχετο διαβεβαιούμενος, και λέγων· « Απέλθατε,4 άδελφοί, και τήδε τη ήμέρα έγω παραγίνομαι πρός ύμας, καὶ ὑποδεικνύω ὑμῖν ἐν ποίω τόπω τὸ εὐκτήριον ὀφείλει5 οίκοδομη Απναι, και έν ποίω τόπω το άριστητήριον των άδελφῶν, και εν ποίω τόπω τὸ είς ύποδοχην τῶν ξένων, και τὰ ἄλλα πάντα ἄσερ ή χρεία ἀσαιτεῖ.6 » Οἴτινες τὴν τοῦ άγίου εύχην λαβόντες εύθέως έπορεύθησαν, και συναγαγόντες τὰ πρὸς τὴν τῆς οἰκοδομῆς χρείαν ἄπαντα, καὶ τὸν τόπον σερικαβάραντες ήτοίμασαν πάντα, ίνα τοῦ τιμίου πατρός σαραγινομένου κατά την οἰκείαν ύπόσχεσιν την τοῦ κτίσματος διάταξιν ποιήσηται. Τη δε νυκτί έκείνη έωιρωσκούσης της ήμέρας, εν ή την έαυτοῦ παρουσίαν ο άγιος καθυπέσχετο, ὦφθη τῷ ἐκεῖσε ϖαρ' αὐτοῦ ϖροβληθέντι ήγουμένω και τω οικονόμω αύτου, εν δράματι υποδεικνύων αύτοῖς τους τῆς οἰκοδομῆς τόπους, καὶ σχεδον εἰωείν πάντα μετα ακριβείας α έχρην γενέσθαι αυτόθι διετάξατο αυτοίς. Αναστάντες οὖν ὅ τε ἀββᾶς τῆς μονῆς, καὶ ὁ τούτου οἰκο-

¹⁾ Alii Τεββακιν.. — 2) Editt. animadvertunt illud ΐνα redundare.
3) Cd. Flor. heic sic contrahit ἀποστέλλειν, ἀπέστειλεν ἀυτούς ἐν εἰρήνη, cἶς ὑπέσχετο διαβεβαιούμενος — 4) Alii Απέλθετε — 5) Quidam ὀφείλη — 6) Super ras. αιτεῖ — 7) Cod. fol. 68:

CAPUT XXII.

De fabrica¹ monasterii Terracinensis² per visionem ab eo³ disposita.

GREGORIUS.

Alio quoque tempore a quodam fideli viro fuerat rogatus ut in ejus praedio juxta Terracmensem⁴ urbem missis discipulis suis construere monasterium debuisset. Qui roganti consentiens, deputatis⁵ fratribus Patrem constituit et qui eis⁶ secundus esset ordinavit. Quibus euntibus spopondit dicens: Ite, et die illo ego venio, et ostendo vobis in quo⁸ loco oratorium, in quo refectorium fratrum, in quo susceptionem hospitum, vel quaeque sunt necessaria, aedificare debeatis. Qui benedictione percepta illico¹⁰ perrexerunt, et constitutum diem magnopere praestolantes, paraverunt omnia, quae his qui cum tanto Patre venire potuissent, videbantur esse necessaria. Nocte vero eadem, qua promissus illucescebat dies eidem servo Dei, quem illic Patrem constituerat, atque ejus praeposito vir Domini in somniis¹¹ apparuit, et loca singula, ubi quid aedificari¹² debuisset,¹³ subtiliter designavit. Cumque utrique a somno surgerent, sibi invicem quod viderant, retulerunt.14 Non tamen visioni illi o-

¹⁾ Prius vid. fabreca — 2) Alii Tarracinensis — 3) Deest in cd. ab eo — 4) Codex bis Terracens.. — 5) Cod. depotat.. — 6) Alii ei — 7) Cod spondit — 8) Suppletum quo ab alia manu. 9) Cod. oraturium — 10) Cod. ilico — 11) Quidam somnis — 12) Alii aedificare — 13) Alii debuissent — 14) Prius rettulerunt.

νόμος μετά φόβου καί χαρᾶς μεγάλης Βάτερος Βατέρω την ύπο τοῦ άγίου φανεῖσαν αὐτοῖς ὀπτασίαν διηγήσατο.1 Πιστωθέντες ούν δια τής ύπο του ανθρώσου του θεου φανείσης αὐτοῖς ὀπτασίας, ὅτε προεστώς τῆς μονῆς σύν τῷ οἰκονόμῳ την του χριστοφόρου ανδρός σωματικήν έξεθέχοντο παρουσίαν. Ως δε παρήλθεν λοιπον ή της δρισθείσης προθεσμίας ήμέρα εν ή έδει αὐτὸν ωρὸς αὐτοὺς αἰσθητώς παραγενέσθαι,2 καὶ τῆς προσδοκίας ἀποτυχόντες, ἐλυσήθησαν σφόδρα. Παραγενόμενοι δε πρός αὐτὸν τὴν αἰτίαν ἦτουν μαθεῖν δι' ἢν πρός αὐτοὺς οὐ παραγέγονεν, καὶ λυπούμενοι ένεκάλουν αὐτῷ, λέγοντες· « Πάτερ όσιε, καθώς ύπέσχου την σην άφιξιν έξεδεχόμεθα, ίνα ύποδείξης ήμιν την των οίκοδομημάτων τοποθεσίαν. » Πρός ους ό του Θεου φίλος άποκριθείς, είσεν «Διατί, άδελφοι, διατί ταύτα ούτως λέγετε πρός με; ούχι καθώς ύσεσχόμην παραγέγονα πρός ύμᾶς; » Εκείνων δε⁴ είπόντων, « ὅτι φύσει, ωάτερ, οὐ παραγέγονας πρὸς ἡμᾶς· » αὐτὸς ὁ ἀπεκρίθη λέγων «Μή οὐκ ὤφθην ὑμῖν ἀμφοτέροις καθεύδουσιν; καὶ ὑπέδειξα πῶς ὀφείλει ἡ τοῦ μοναστηρίου κτισθήναι τοποβεσία; ἀπέλθετε, καὶ καθώς διὰ τῆς ὀπτασίας έθεάσασθε, καὶ τῆ χειρὶ ύμιν ύπέδειξα, οὕτως οἰκοδομήσατε.» Οἱ δὲ ταῦτα ἀχούσαντες, καὶ λίαν θαυμάσαντες, έν τῷ προλεχθέντι χωρίω ὑπέστρεψαν, καὶ πάντα τὰ τοῦ μοναστηρίου οἰκοδομήματα, καθώς διὰ τῆς όπτασίας ἐτυπώθησαν, ούτως και ώκοδόμησαν.

ΠΕΤΡΟΣ.

Διδαχθήναι θέλω ποία τάξει γενέσθαι δύναται, ΐνα μήκοθεν ἀπέλθη ἀπόκρισις πρός καθεύδοντας ἄνδρας, ὅπερ οί ἄγιοι δι' ὀπτασίας ήκουσαν καὶ ἐγνώρισαν.

ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ.

Ινα τί ἐρευνῶν διστάζεις, Πέτρε, περὶ τοῦ κατὰ τάξιν γεγονότος κεφαλαίου; ἢ ἀγνοεῖς ὅτι ἡ τοῦ πνεύματος φύσις 1) Cod. Florent. διηγήσαντο — 2) Alii παραγίν.. — 3) Quidam ἄνθρωπος — 4) Cod. Florent. omittit ἐκείνῶν δὲ — 5) Deest αὐτὸς in Florentin.

mnimodo fidem dantes, virum Dei sicut, se venire promiserat, exspectabant. Cumque vir Dei constituto die minime venisset, ad eum cum moerore reversi sunt, dicentes: Expectavimus, Pater, ut venires sicut promiseras, et nobis ostenderes ubi quid aedificare deberemus, et non venisti. Quibus ipse ait: Quare, fratres, quare ista dicitis? Nunquid sicut promisi, non veni? Cui cum ipsi dicerent: Quando³ venisti? respondit: Numquid utrisque vobis dormientibus non apparui, et loca singula designavi? Ite, et sicut per visionem audistis, omne habitaculum monasterii ita construite. Qui haec audientes, vehementer admirati, ad prædictum prædium sunt reversi, et cuncta habitacula sicut ex revelatione didicerant construxerunt.

PETRUS.

Doceri velim quo ordine fieri potuit, ut longe iret, responsum dormientibus diceret, quod ipsi per visionem audirent⁸ et recognoscerent.

GREGORIUS.

Quid est, quod perscrutans rei gestae ordinem ambigis, Petre? Liquet profecto, quia mobilioris naturae est spiritus quam corpus. Et certe Scriptura teste novimus quod propheta ex Judaea sublevatus repente est cum prandio in Chaldaea depositus, quo videlicet prandio prophetam refecit seque repente in Judaea iterum invenit. Si igitur tam

¹⁾ Cod. com moerore scribit — 2) Cod. dicetis — 3) Prius vid. quomodo — 4) Edd. ut graece vidistis — 5) Prius ite— 6) Quid. edd. relat.. — 7) Cod. dedic... — 8) Cod. audierent. — 9) Quid. edd. et Bolland. nobil.. male.

κινητική εστιν ύπερ το σωμα; άληθως της γραφης μαρτυρούσης άκηκόαμεν. ὅτι ὁ προφήτης Αμβακούμ ἐκ τῆς Ιουδαίας ύψωθείς ἄφνω είς την των Χαλδαίων γην σύν τῷ άρίστω ω ην έαυτω έτοιμάσας, πρός τον προφήτην Δανιηλ παραγέγονεν. καὶ τοῦτον ἐμωλήσας ἐν τῆ Ιουδαία ωάλιν έαυτον εὖρεν; Εἰ οὖν ὁ προφήτης Αμβακούμ ἐκ τοσούτου μεγίστου διαστήματος ύπο Θεοῦ μετάρσιος γεγονώς, καὶ ἐν μιᾶ καιροῦ ξοωή σωματικώς Δανιήλ τὸν προφήτην πρὸς¹ ἄριστον παραγενόμενος έκόμισεν,² τί θαυμαστον εἶ ὁ πατὴρ Βενέδικτος διά προσευχίζε έν πνεύματι άγίω μετάρσιος γέγονε, και τοῖς δυσίν ήγουν τῷ ήγουμένω καὶ τῷ αὐτοῦ οἰκονόμω ώφθη, καὶ περὶ τῆς οἰκοδομῆς τῆς μονῆς διετάξατο, δν τρόπον δε ό προφήτης την σωματικήν τροφήν επιφερόμενος πρός Δανιήλ τον προφήτην σωματικώς παραγέγονεν, τον αυτον δή τρόπον και ό πατήρ Βενέδικτος έν πνεύματι πρός τούς μαθητάς παραγέγονεν, βρώσιν άθάνατον αὐτοῖς ἐπιφερόμενος, τουτέστιν την της μονης σύστασιν και οἰκοδομήν;

ΠΕΤΡΟΣ.

Τῆ δεξιὰ χειρὶ τῆς³ ψυχωφελοῦς καὶ σωτηριώδους διηγήσεως ἐκμαξάμενος τὴν ἐν τῆ διανοία μου ἐνοῦσαν δειλίαν
ακμάζουσαν τὴν τῆς ἐρωτήσεως προθυμίαν ἀπειργάσω, ἀλλ' ἤθελον γνῶναι ὁποῖος ὑϖῆρχεν ὁ ἀνὴρ οὖτος ἐν τῆ κοινῆ
συντυχία.

1) Alii omittunt $\varpi \rho \delta \varsigma - 2$) Quidam $\pi \rho \rho \kappa \epsilon \kappa \sigma_{\mu} \kappa \kappa \epsilon$, sed Cod. Flor. et Paris. ut Cryptensis — 3) Alii addunt $\sigma \tilde{\eta} \varsigma$.

Ioseph hymnogr. Ode VI. 2. Ως περίδοξος, μάχαρ, ὁ βίος σου, ὡς περιφανής ή σεπτή πολιτεία σου, δι' ής ἀγέλας είλχυσας μοναζόντων πρὶς γνῶσιν σωτήριον. Quam gloriosa est vitæ tuae ratio, beate! quam celeber conversatio tua veneranda! per quam greges duaisti monachorum ad salutarem scientiam.

longe Habacuc¹ potuit sub momento corporaliter ire, et prandium deferre, quid mirum si Benedictus pater obtinuit,² quatenus³ iret per spiritum, et fratrum quiescentium spiritibus necessaria narraret, ut sicut ille ad cibum corporis corporaliter perrexit, ita et⁴ iste ad institutionem spiritalis vitae spiritaliter pergeret?

PETRUS.

Manus tuae locutionis tersit a me, fateor, dubietatem mentis; sed velim nosse in communi locutione, qualis iste vir fuerit.

1) Cod. Abbacuc — 2) Cod. obtenuit — 3) Cod. quatinus — 4) Alii et omittunt.

MABILLON - Itinerarium Italicum-de monasterio verba facit.

Della noce narrat usque ad suam aetatem extitisse istud monasterium S. Stephano dicatum. Ad hoc Monasterium a S. Benedicto missi sunt, narrante Gregorio (Dialog. IV. cap. 8.),

- « duo nobiles viri, atque exterioribus studiis eruditi, germani
- « fratres, quorum unus Speciosus alter vero Gregorius diceba-
- « tur, quos idem Pater venerabilis in Monasterio, quod iuxta
- « Terracinensem urbem construxerat, fecit habitare... et in eodem.
- « monasterio permanserunt etc. » Hinc apparet quam male Editores quidam velint hic et alibi legere Tarraconensem pro Terracinensem.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ ΚΓ'.

Περί τῶν χωρισθεισῶν σαρ' αὐτοῦ τῆς κοινωνίας μοναστριῶν.

ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ.

ΚΓ΄. Σπανίως, Πέτρε, και αὐτη ή συνήθης αὐτοῦ διάλεκτος ήστόχει θείας δυνάμεως. ύπο γαρ της των σημείων ένεργείας ή τοῦ μακαρίου φωνή βριβομένη, ένεργης ύπηρχεν και ού διάκενος.2 Ο γαρ την έαυτοῦ καρδίαν έν τοῖς ύψηλοῖς ἀνατείνας οὐδαμῶς ἐκ τῶν προερχομένων ἐκ τοῦ στόματος αὐτοῦ λόγων, κενόν τινα η διασίπτοντα εύρίσκεσθαι. Εί δὲ καὶ συμβέβηκέν ποτε σύν ἀπειλη φθέγγεσθαι αὐτὸν, λίαν δυνατός ήν ό τούτου λόγος διότι ου μετά δειλίας, ή σκέψεως, αλλα δι' αποφέσεως σοφώς έπετίμα. Επεί ούν ού μακράν του μοναστηρίου αύτου δύο τινές παρβένοι άσκήτρίαι εύγενεστάτου γένους τυγχάνουσαι έν τῷ ξαυτῶν ἀνεστρέφοντο οίκω, ανήρ δέ τις σπουδαΐος και εύλαβής την λειτουργίαν της αὐτῶν χρείας τε και οἰκονομίας συνήθως διηκόνει άλλ ή του γένους ευγένεια ου πάσιν συμβαίνει ωρόξενος γίνεσθαι της του νοὸς νίψεως, ένα έαυτους έν τῷδε τῷ κόσμῷ βδελυξάμενοι μηδέν πλέον ξαυτούς τῶν ἄλλων ήγήσωνται είναι. Τοῦτο δὲ εἰ έγνωσαν καὶ διὰ μελέτης έποιούντο, ούκ αν αι προβρηθε σαι ίεραι βήλειαι την έαυτης3 γλώσσαν δίκην ζυροῦ κατά τοῦ σπουδαιοτάτου έκείνου άνδρός του την υπηρεσίαν προθύμως αύταις των άναγκαίων του σώματος χρειών προσπορίζοντος, είς υβρεις λκόνησαν, καί είς Βυμόν τοῦτον ἐκίνησαν. Ο δὲ εὐλαθης ἐκεῖνος ἀνηρ μηκέτι λοιπον δυνάμενος ύπενέγκαι την ύσερβέλλουσαν των βηλειών είς αὐτὸν γινομένην⁶ ἀτιμίαν, πρὸς τὸν τοῦ Θεοῦ άνθρωσον παρεγένετο, και την των παρθένων έστηλίτευσεν άχάριστον γνώμην, καὶ πόσας υβρεις παρ' αὐτῶν ἐδέξατο, ανέθετο τῷ άγίω. Ο δε σημειοφόρος πατήρ Βενέδικτος ταῦτα

¹⁾ Cod. male χαρισθέντων — 2) Cd. Flor. διάκεωςς — 3) Alii melius $\dot{\epsilon}$ αυτῶν — 4) Cd. $\dot{\xi}$ ηρ.. — 5) Alii δικαιστάτου — 6) Cd. Flor. γενομ.

CAPUT XXIII.

De ancellis Dei quæ post mortem per oblutionem ejus communioni sunt redditæ.

GREGORIUS.

Vix ipsa, Petre, communis ejus locutio a virtutis erat pondere vacua; quia³ cujus cor sese in alta suspenderat,⁴ nequaquam verba de ore illius incassum cadebant. Si quid vero umquam non jam decernendo, sed minando diceret, tantas vires sermo illius habebat, ac si hoc non dubie⁵ atque suspense, sed jam per sententiam protulisset.

Nam⁶ longe ab ejus monasterio duae quaedam sanctæmoniales⁷ fæminae nobiliori genere exortae, in loco proprio conversabantur; quibus quidam religiosus vir ad exterioris vitae usum praebebat obsequium. Sed sicut nonnullis solet nobilitas generis parere ignobilitatem mentis, ut minus se in hoc mundo despiciant, qui plus se ceteris aliquid fuisse meminerunt; necdum praedictae sanctæmoniales fæminae perfecte linguam¹⁰ sub habitus sui frenum restrinxerant, et eumdem religiosum vi-

¹⁾ Sic codex pro ancillis; alii habent sanctimonialibus — 2) Alii addunt ecclesiae — 3) Quidam quanta — 4) Rasura est in hoc verbo. 5) Prius dubiae — 6) Codex a Nam resumit lineam, et primam lineam rubro describit colore, elementum primum N coloribus exornat. Post Nam alii addunt non — 7) Alii sanctim... sic e inferius — 8) Cod. dispiciant — 9) Alii addunt se — 10) Alii addunt suam.

ακούσας περί τῶν παρθένῶν, ἐδήλωσεν αὐταῖς, λέγων· « Διορθώσασθε ἑαυτὰς, καὶ τὴν γλῶσσαν ὑμῶν σωφρονίσατε,¹ ἐπεὶ ἐὰν μὴ διορθώσησθε, ἀκοινωνήτους ὑμᾶς ποιῶ » Ταύτην οὖν τὴν τῆς ἀκοινωνησίας ἀπόφασιν, οὐχὶ ὡς δεσμῶν αὐτὰς ἐν τῷ τοῦ ἐπιτιμίου χωρισμῷ ἀπέστειλεν, ἀλλὰ σοφῶς τε καὶ πατρικῶς τὴν ἐκείνων ἀχάριστον προαίρεσιν βελτιῶσαι βουλόμενος ἐκεῖναι δὲ τῆς οἰκείας ἀφροσύνης οὐκ ἀπέστησαν, οὐδὲ λόγον ἐποιήσαντο της τοῦ άγίου παραινέσεως.

Μετ' δλίγας οὖν ἡμέρας αι προβρηβεῖσαι παρβένοι τέλει τοῦ βίου έχρήσαντο, καὶ ἐν τῆ ἐκκλησία ἐτάφησαν. Ηνικα δὲ ἐν τῆ αὐτῆ ἐκκλησία τῆς θείας λειτουργίας 2 αί συνάξεις επετελούντο, και κατά το σύνηθες ο διάκονος έκραξεν· «Εί τις οὐ κοινωνεῖ, ἐξέλθη τῆς ἐκκλησίας ἔξω,» ή τροφός τῶν ρηθεισών παρθένων, ήτις ὑπερ αὐτῶν συνήβως προσφοράν τῷ κυρίω προσέφερεν, τὰς αὐτὰς δύο παρθένους έκ των μνημάτων αὐτῶν προερχομένας, καὶ ἀπὸ τῆς έκκλησίας έξερχομένας έθεώρει. Ως δε πολλάκις τοῦτο γινόμενον έθεασατο, καὶ πρὸς την τοῦ διακόνου ἐκρώνησιν ἐκείνας έξερχομένας έκ των μνημάτων, και έν τη έκκλησία μένειν μη δυναμένας, είς μνήμην έλθουσα ή βηθεισα τούτων τροφός, ότιπερ ό τοῦ Θεοῦ ἀνθρωσος ἔτι ζώσαις αὐταῖς έδήλωσεν, και της των βείων μυστηρίων μεταλήψεως ταύτας στερήσαι εἶπεν, ἐὰν μὴ τὰ ἑαυτῶν ἔβη⁴ καὶ τοὺς λόγους διορθώσωνται, μετα σπουδής πρός τον του Θεου φίλον Βενέδικτον παραγίνεται, και σύν όδυρμῷ πολλῷ πρὸς τοῖς ποσίν αύτου κυλινδουμένη, την οίκτου και φρίκης μεστην έκείνην θεωρίαν, ήνωερ τοῖς ὀφβαλμοῖς τοῖς οἰκείοις ἐθείσατο, ανήγγειλεν τῷ πατρί. Ο δὲ άγιος ταῦτα ἀκούσας, καὶ ὑπὸ της συνούσης αὐτῷ συμπαθείας κινηθείς, λαθών μίαν προσφοράν, δέδωκεν⁷ εν τῆ χειρί αὐτῆς, εἰπών πρὸς αὐτὴν· « Aπελθε, καὶ ταύτην τὴν προσφοράν ύπερ αὐτῶν8 τῷ κυριώ

¹⁾ Quidam σωφρονήσετε — 2) Cod. Flor. omittit τῆς θείας λειτουργίας — 3) Male cod. ρηθέντων — 4) Ut alibi alii ηθη. Hinc codicis fol. 70-5) Alii διορθώσωσιν — 6) Alii δοῦλον — 7) Alii ἔδωκεν — 8) Cod. Flor. hoc in loco ἱπὲρ αὐτῶν προσενεχθῆναι

rum, qui ad exteriora necessaria eis obsequium praebebat, incautis saepe sermonibus ad iracundiam provocabant. Qui cum¹ diu ista toleraret, perrexit ad Dei hominem, quantasque pateretur verborum contumelias,2 enarravit. Vir autem Dei haec de illis audiens, eis protinus mandavit, dicens: « Corrigite linguam vestram; quia, si non emendaveritis, excommunico3 vos » Quam videlicet excommunicationis sententiam non proferendo intulit, sed intentando.4 Illae autem5 a pristinis moribus nihil mutatae, intra paucos dies defunctae sunt, atque in ecclesia6 sepultae. Cumque in eadem ecclesia missarum solemnia celebrarentur, atque ex more diaconus clamaret: «Si quis non communicat, det locum, » nutrix earum, quae pro eis oblationem domino deferre consueverat, eas de sepulcris suis s progredi et exire de ecclesia9 videbat. Quod dum saepius cerneret, quia ad vocem diaconi clamantis exibant foras, atque intra ecclesiam permanere non poterant, ad memoriam rediit10, quae vir Dei illis adhuc viventibus mandavit. Eas quippe se communione privare dixerat, nisi mores suos et verba corregerent.11 Tunc servo Dei cum gravi

¹⁾ Quidam dum — 2) Cod. contumil.. — 3) Cdd. Carnot. Prat. excommunicabo — 4) Codd. Germ. Longip. Bessarionis, Florent. Nannian. Norman. habent ut codex Ambros. Sed codex Theod. II. intentando quod est comminando scribit. Cdd. Norm. quidam intendendo — Cod. Carnot. intepretando. Alii minando. 5) In aliis deest autem — 6) Cod. ecclesiam — 7) Quidam offerre. — 8) Cd. addit suis 2. m. — 9) Cdd. Bessar. Nan. exire eclesiam — 10) Alii reduxit — 11) Alii corrig..

προσενεχθήναι ποίησον, καὶ τοῦ λοιποῦ οὐκ ἔσονται ἀκοινώνητοι.» Τής τοίνυν προσφορᾶς ὑπὲρ αὐτῶν προσενεχθείσης τῷ κυρίω, καὶ τοῦ διακόνου κατὰ τὸ σύνηθες κράζοντος, ἵνα οἱ μὴ μεταλαμβάνοντες ἔξέλθωσιν τῆς ἔκκλησίας, οὐκ ἔτι λοιπὸν ἔθεωρήθησαν ὑπὸ τῆς τούτων τροφοῦ ἔκβαίνουσαι τῆς ἔκκλησίας. Οθεν πιστεύομεν ἔκτὸς πάσης ἀμφισβητήσεως, ὅτιὶ ἡνίκα ἡ παρὰ τοῦ άγίου δοθεῖσα προσφορὰ ὑπὲρ αὐτῶν ἔτύθη,² παραυτὰ τῆς συγχωρήσεως ἡξιώθησαν, καὶ τὴν τῆς ὁσίας κοινωνίας μετάληψιν παρὰ κυρίου διὰ τοῦ μακαρίου Βενεδίκτου ἔδέξαντο.

ΠΕΤΡΟΣ.

Θαυμαστόν σφόδρα έστιν εί³ τοῦτον τόν σεβάσμιον και άγιώτατον ἄνδρα⁴ έν ταύτη τῆ⁵ φβαρτῆ⁶ σαρκὶ όντα ἰσχύειν ψυχὰς λῦσαι έν αύτῷ λοιωόν τῷ ἀοράτῷ κριτηρίῷ τεταγμένας.

ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ.

Μή τι οὖν, Πέτρε, εν ταύτη τῆ σαρκὶ ἔτι οὐκ κν ὁ πα-ρὰ Θεοῦ ἀκούσας, «Ο ἐὰν δήσης ἐπὶ τῆς γῆς ἔσται δεδεμένον καὶ ἐν τοῖς οὐρανοῖς καὶ ὁ ἐὰν λύσης ἐπὶ τῆς γῆς ἔνσται λελυμένον καὶ ἐν τοῖς οὐρανοῖς, » οὖτινος καὶ νῦν τὴν τάξιν ἐπικρατοῦσιν, δεσμεύοντες καὶ λύοντες, οἱ τὸν βρόνον τοῦ ἀγίου Αποστόλου καὶ Ποιμένος τῆ πίστει καὶ τοῖς ἡθεσιν κοσμουντες. Ινα οὖν δόξης τοσαύτης γήῖνος ἀνβρωπος καταξιωθῆ, ὁ οὐρανοῦ καὶ γῆς ποιητὴς ἔξ οὐρανοῦ ἐπὶ τὴν γῆν κατῆλθεν, καὶ ἵνα·ἡ σάρξ ἐκ τοῦ πνεύματος κρῖναι

διεχελεύσατο καὶ τῆς προσφορᾶς προσενεχθείσης. In ora folii rubro charactere scribitur teste Quirini, ἀναγκαῖον εἰς τοὺς Λατίνους διὰ τὰς ἀναφορὰς — 1) Cod. Florent. omittit ἔτι — 2) Alii male ἐθύθη — 3) Editores notant εἶ redundare — 4) Quidam addunt ἔτι — 5) Alii addunt ζωῆ ἀντα καὶ — 6) Alii hic habent ἀντα. 7) Codex Florentin. omittit Μὴ — 8) Cod. Florentin. omittit παρὰ θεοῦ.

mœrore indicatum est, qui manu sua protinus oblationem dedit, dicens: Ite¹ et hanc oblationem pro eis offerri Domino facite, et ulterius excommunicatae non erunt. Quae dum oblatio pro eis fuisset immolata,² et a diacono³ juxta morem clamatum est, ut non communicantes ab ecclesia exirent, et⁴ illae exire ab ecclesia ulterius visae non sunt. Qua ex re indubitanter patuit, quia dum inter eos qui communione privati sunt, minime recederent, communionem a domino per servum domini recepissent.

PETRUS.

Mirum valde, quamvis venerabilem et sanctissimum virum adhuc tamen in hac carne corruptibili degentem, potuisse animas solvere in illo jam invisibili judicio constitutas.

GREGORIUS.

Numquidnam, Petre, in hac adhuc carne non erat, qui⁵ audiebat: Quodcumque ligaveris⁶ super terram, erit ligatum et in cælis: et⁷ quæ solveris super terram, soluta erunt⁸ in cælis? Cuius nunc vicem et ligando et solvendo⁹ obtinent, qui locum sancti regiminis fide¹⁰ et moribus tenent. Sed ut tanta valeat homo de terra, coeli et terrae conditor in terram venit e caelo, atque ut judicare caro etiam

¹⁾ Cod. omittit Ite ex oscitantia. — 2) Cdd. Bess. Nan. oblata.

3) Cd. diacone — 4) Alii omittunt et — 5) Cod. Nan. addit a Domino — 6) Prius legaberis et postea legatum — 7) Cod. Venet.

S. Mariae Gratiosae et quodcumque solveris super terrum solutum erit in coelis — 8) Alii et pro erunt — 9) Cod. prius vecem, et pro et alii habent in. Cdd. Carnot. Valliscl. habent ligandi et solvendi — 10) Codd. Vallisclar. vita pro fide.

δυνηθείη, ταῦτα αὐτῆ παρασχεῖν ἠξίωσεν, ὁ Θεὸς ων γέγονεν διὰ τοὺς ἀνθρώπους σάρξ. Εξω δὲ αὐτοῦ¹ ἡ ἀσθένεια ἡμῶν· οὐ γὰρ ὑπ' αὐτῆς ἡ τοῦ Θεοῦ δυναστεία² ἡσθένησεν.

ΠΕΤΡΟΣ.

Μετὰ τῆς τῶν σημείων δυνάμεως καὶ ἡ τῶν ἡημάτων ἀπολογία προσφόρως ἐξεφωνήθη.

1) Cod. Florent. omittit αὐτοῦ — 2) Cod. Flor. δύναμις.

Zacharias in paraphrasi sua apertissime asserit successoris Petri potestatem supremam, de qua confer opellam nostram tempore Concilii Vaticani editam. « De Romani Pontificis auctoritate disciplinari testimoniis ecclesiæ græcæ comprobata 1870, et aliam S. Ireneo Dell'autorità del R. Pontefice, studi illustrati da A. Rocchi 1876. – Et revera non dicit tantum cum Gregorio qui locum sancti regiminis fide et moribus tenent; sed qui thronum sancti Apostoli et Pastoris fide et moribus exornant. Locus animadversione dignus.

de spiritibus possit hoc ei¹ largire² dignatus³ factus pro hominibus caro:⁴ quia inde surrexit ultra se infirmitas nostra, unde sub se infirmata est firmitas Dei.

PETRUS.

Cum virtute signorum concorditer loquitur ratio verborum.

- 1) Alii et pro ei 2) Alii largiri 3) Quidam addunt est.
- 4) Alii hic Deus addunt.

Quirini multa animadversione digna esse dicit quae in hoc capite narrantur, praesertim quae liturgicas, canonicas, censorias res spectant.

Della noce hic quaestionem de sacerdotio S. Benedicti excitat, et videtur satis congrue demonstrare ex vetustis testibus, monumentis et picturis Benedictum diaconatus ordinem suscepisse. Ex Tusculanis documentis recensemus diploma donationis Petri Alberici de Tusculana, in quo Benedictus levita appellatur.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ ΚΔ.

Περί τοῦ μοναχοῦ τοῦ ωαρὰ γνώμην τοῦ ἀγίου εἰς τοῦς γονεῖς ἀπελθόντος, κἀκεῖ τελειωθέντος.

ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ.

ΚΔ΄. Αλλοτε πάλιν μοναχός τις νεανικῶς βιῶν, τῆς μονῆς τοῦ ἀνθρώπου τοῦ Θεοῦ ὑπάρχων, τοὺς ἑαυτοῦ κατὰ σάρκα γονείς ύσερ μέτρον άγαπῶν, και έν τῆ οἰκία αὐτῶν συνεχῶς ἄνευ τῆς τοῦ άγίου πατρός ωαραθέσεως ἀπερχόμενος, συνέβη εν μια ήμερα κατά το σύνηθες αύτω προς τους γονεῖς παραγενέσθαι εἰσελθόντος δὲ αυτου ἐν τῷ οἰκία, ἐτελεύτησεν. Είτα κηδεύσαντες αὐτὸν, καὶ ταφῆ παραδόντες, τη έξης ήμέρα το σωμα αλτού έξω εδρον έδριμμένον. Καί τουτο πάλιν θάψαντες, αὖθις² ύωο τῆς γῆς ἐκβρασθὲν ώς τὸ πρότερον έθεάσαντο. Ταΰτα οὖν έωρακότες οἱ αὐτοῦ κατὰ σάρκα γονεῖς, πρὸς τὸν συμπαθέστατον ωατέρα Βενέδικτον μετά μεγίστου κλαυθμοῦ προσέδραμον, δεόμενοι όπως διά της ένούσης έν αὐτῷ θείας χάριτος οἰκτειρίσας τὸν οὕτως άθλίως θανέντα, προστάξη τοῦτον ύπο της γης κατασχεθήναι. Εωρακώς οὖν ό μακάριος την κατώδυνον αὐτῶν καρδίαν, λαβών ἀπὸ τοῦ δεσποτικοῦ σώματος μερίδα μίαν δέδωκεν έν τη χειρί αὐτῶν, εἰπών πρὸς αὐτούς. « Απέλθατε, καὶ τοῦτο τὸ δεσποτικόν σῶμα ἐπάνω τοῦ στήθους αὐτοῦ βαλόντες τη προσηκούση ταφή παραδόσατε.6 » Τοῦτο οὐν πεποιηκότες οι του τεθνεώτος γονείς, ουκέτι υπό της γης έξεβρίφη το ταφέν σωμα, άλλα κατά τλν του άγίου πρόσταζιν, έμεινεν κατασχεθέν ύπο της γης. Οράς, Πέτρε, ποίας κατακρίσεως⁸ παρα Ιησοῦ Χρις οῦ ήξιώθη ἐκεῖνος⁹ ὁ ἀνὴρ· ὅτι τὸ σώμα αὐτοῦ ή γη ἀπέρριψεν, διότι την τοῦ μακαρίου Βενεδίκτου ευμένειαν ουκ έσχεν.

ΠΕΤΡΟΣ.

θαυμάζω άληθώς, και σφόδρα εκπλήττομαι.

1) Cod. Florent. νεανίσκος pro νεανικῶς βιῶν — 2) Alii εὐθύς.
3) Alii Cod. μεγάλης παρακλήσεως — 4) Alii Βανόντα — 5) Cod.
fol. 71 — 6) Alii παραδίδοτε — 7) Alii γῆς ἐρριμμένον τὸ ταφὲν σῶμα εἶδον — 8) Cod. Florent. κατεκρίθη — 9) Alii Χριστοῦ ἐν πείρα γέγονεν ἐκεῖνος.

CAPUT XXIV.

De puerulo monacho, quem sepultum terra projecit.

GREGORIUS.

Quadam quoque die dum quidam ejus puerulus monachus parentes suos ultra quam deberet diligens, atque ad eorum habitaculum tendens sine benedictione de monasterio exiisset,2 eodem die mox ut ad eos pervenit, defunctus est. Cumque esset sepultus, die altero projectum foras corpus ejus inventum est, quod rursus tradere sepulturæ curaverunt. Sed sequenti die iterum projectum exterius atque inhumatum, sicut prius invenerunt. Tunc conciti3 ad Benedicti Patris vestigia currentes, cum magno fletu petierunt, ut ei suam gratiam largiri4 dignaretur. Quibus vir Dei manu sua protinus communionem dominici⁵ corporis dedit dicens: Ite, atque hoc dominicum corpus super pectus ejus⁶ ponite, eumque sepulturae sic7 tradite. Quod dum8 factum fuisset, susceptum corpus ejus terra tenuit, nec ultra projecit. Perpendis, Petre, apud9 Iesum Christum dominum cujus meriti iste vir fuerit, ut ejus corpus etiam terra projecerit, qui Benedicti gratiam non haberet. 10

PETRUS.

Perpendo plane, et vehementer stupeo.

1) Alii puero — 2) Cod. exisset — 3) Alii concite — 4) Alii largire — 5) Prius dominico male — 6) Alii addunt cum magna reverentia — 7) Alii et sic sepulturae eum — 8) Emendatio est in dum, prius videtur dom — 9) Codex aput — 10) Manus posterior punctum interrogativum apposuit.

КЕФАЛАІОН КЕ'.

Περι τοῦ ἐξελθιντος μοναχοῦ τῆς μονῆς, εὖτινος ἐν τη.
όδῷ δράκων ὑπήντισεν.¹

ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ.

ΚΕ΄. Ην τις έκ τῶν μοναχῶν τῆς μονῆς τοῦ ὁσίου πατρὸς Βενεδίκτου, όστις τῷ τῶν λογισμῶ ῥεμβασμῷ ὑπὸ τοῦ τῆ; ακηδίας δαίμονος κυριευθείς, τῆ τοῦ κανόνος ακριβεστάτη παραδόσει στοιχήσαι² ουδαμώς ήθελεν. Ο δὲ τοῦ Θεοῦ ἀν-Βρώπος τοῦτον νουθετών οὐ διέλειπεν,3 καὶ συνεχώς παιδεύων ούκ ήμέλησεν. Εκεΐνος δὲ ούχ είλατο τῆς τοῦ πατρὸς ὑπακοῦσαι παραινέσεως, ἀλλὰ καὶ ἀναιδῶς τῷ άγίω προσπίπτων ούκ επαύετο, ίνα έαθη ύπ' αύτοῦ πρὸς τους έαυτοῦ γονείς πορευθήναι. Εν μια οὖν ήμέρα ό σεβάσμιος πατήρ ὑπὸ τῆς αὐτοῦ παρακλήσεως ὀχληθείς, ἐν θυμῷ ἐκέλευσεν ἵνα τῆς μονης ύποχωρήση. Οστις εὐθέως ήνίκα ἐκ τοῦ μοναστηρίου έξηλθεν, κατενώπιον αὐτοῦ ἐν τῆ όδῷ δράκοντα ἀνεωγμένω τῷ στόματι εὖρεν, καταπιεῖν τοῦτον⁶ θέλοντα. Ηρξατο ουν αὐτὸς τρέμειν, καὶ ψηλαφῶν μεγίσταις φωναῖς κράζων ἔλεγεν· « Δράμετε, δράμετε, ότι ό δράκων οὖτος καταφαγεῖν με Βέλει.» Δραμόντες δε οί άδελφοί, τον μεν δράκοντα ούδαμώς έθεωρήσαντο, τρέμοντα δε, και ψηλαφώντα τον μοναχον εύρόντες, είς τὸ μοναστήριου ύπέστρεψαν. Οστις εὐθέως ύπέσχετο μηδέποτε έκ του μοναστηρίου έξιέναι, ή αποστήναι. Απο ούν της ώρας έκείνης έν τη έαυτου ύποσχέσει διεπέμεινεν, εκαὶ ταῖς τοῦ άγίου ἀνδρὸς εὐχαῖς τειχισθεὶς, τὸν κατέναντι αὐτοῦ έστῶτα δράκοντα, ὅντινα πρότερον μὴ ὁρῶν ήκολούθει, τοῦτον οὐδαμώς τοῦ λοιποῦ έβεάσατο.

¹⁾ Alii ὑπήντησε — 2) Alii στοιχίσαι — 3) Cod. Paris. δίελιπε. 4) Quidam εἴλετο — 5) Alii τῶν ἡμερῶν — 6) Cdd. Paris. Flor. δρόκοντα ἀνεωγμένον τὸ στόμα ἔχοντα εὖρε καταπιεῖν αὐτὸν — 7) Quidam omittunt δὲ ci ἀδελφοὶ τὸν μὲν δράκοντα cὐδαμῶς et δὲ postea. Ex his Cod. Reg. Parisien. pro oi habet ὁμοῦ δύο, et cừ pro cὐδαμῶς. — 8) Alii ὑπέμεινε.

CAPUT XXV.

De monacho ingrato, qui eodem monasterio discedens draconem in itinere invenit.

GREGORIUS.

Quidam autem ejus monachus mobilitati mentem dederat,² et permanere in monasterio³ nolebat. Cumque eum vir Dei assidue corriperet,4 frequenter admoneret, ipse vero nullo modo consentiret in congregatione persistere, atque inportunis precibus ut relaxaretur inmineret4 quadam die idem⁵ venerabilis Pater, nimietatis ejus taedio affectus, iratus jussit ut discederet. Qui mox ut monasterium exiit, contra se adsistere aperto ore draconem in itinere invenit. Cumque eum idem draco qui apparuerat devorare vellet,6 coepit ipse tremens et palpitans magnis vocibus clamare dicens: « Currite, 7 currite, quia draco iste me devorare vult. » Currentes autem fratres draconem minime viderunt, sed trementem atque palpitantem monachum ad monasterium reduxerunt. Qui statim promisit numquam se esse iam⁸ a monasterio recessurum, atque ex hora eadem in sua promissione permansit: quippe qui sancti orationibus contra se adsistere draconem viderat, quem prius non videndo sequebatur.

¹⁾ In titulo alii qui de monasterio discedens draconem contra se in — 2) Gussanville et Editores quidam mentis deditus erat.

3) Cod. monasterium — 4) Quidam addunt et — 5) Ut alibi Cd. isdem, item inferius — 6) Prius vellit — 7) Cod. Carnot. Occurrite. Quidam Editt. Succurrite bis — 8) Alii omittunt iam.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ Κς'.

Περί τοῦ ὶαθέντος ωαιδός ἀωδ τῆς λέπρας.

- Κς΄. Νομίζω μηδὲ τοῦτο σιγῆς ἄξιον ὑπάρχειν, ὅσερ ἰλλουστρίω ἀνδρὶ Αντωνίνω¹ τοὖνομα διηγουμένω ἤκουσα· ὅςις
 ἔλεγεν τοῦ πατρὸς ἀυτοῦ παῖδα ἐπίχυσιν ἐλεφαντίας ὑπομείναντα, καὶ λοισοὸν τῶν τριχῶν αὐτοῦ πεπτωκυιῶν,² τὸ δέρμα
 αὐτοῦ ἐφυσήθη.³ Εἶτα προϊούσης τῆς νόσου λαθεῖν οὐκ ήδύνατο, πρὸς δὲ τὸν ἄνθρωπον τοῦ Θεοῦ ὑπὸ τοῦ ἑαυτοῦ
 πατρὸς ἀπες άλη, καὶ ἐν τὴ προτέρα ὑγεία ὁ παῖς ἀποκατας αθεὶς, τῷ οἰκείω γεννήτορι μετὰ πάσης σπουδῆς ἀπεδόθη.
- 1) Alii Αντωνίω, sed editiones Αντωνίνω ut et Codex Florentin.
 2) Male codex σεπτωκότων, ni credas in infima græcitate nomen θρίξ capillus fuisse generi masculino tributum 3) Cod. scripserat ἐφυσίθη 4) Codex ὑγία.

Phavorinus in Λεξίκω edito Romæ 1563 dicit: Ελεφαντίασις

γένος λέωρας. Elephantiasis genus lepræ est.

S. Josephus hymnograph. Ode III. 1. Ναμάτων ζωτικών του Θείου πνεύματος πλησθεῖσα, Βενέδικτε, ή ψυχή σου, ποταμούς θαυ μάτων ἔβλυσε νοσημάτων ξηραίνοντας ἐτσήρειαν. - Vivificis divini Spiritus fluentis anima tua, o Benedicte, repleta fluvios prodigiorum manavit, qui auferunt morborum impetus.

CAPVT XXVI.

De elephantioso curato.

Sed neque hoc silendum puto, quod inlustri viro Aptonio² narrante cognovi, qui aiebat³ patris sui⁴ puerum morbo elephantino⁵ fuisse correptum,⁶ ita ut jam pilis cadentibus cutis intumesceret⁷, atque increscentem saniem⁸ occultare⁹ non possit.¹⁰ Qui ad virum Dei ab eodem patre ejus missus est¹¹ et saluti pristinæ sub omni celeritate restitutus.¹²

1) Alii titulum habent: De puero a morbo elephantino sanato.
2) Sic Cod. Sangerm. et Comp. et S. M. Grat. Alii Antonio vel Antonino — 3) Male in codice agebat — 4) Cod. Bessarionis patri suo — 5) Cod. scribit elefantino — 6) Gussanvill. edidit corruptum — 7) In elementis ume est emendatio in Codice, videtur prius intumisceret — 8) Codices duo Carnot. et codd. Theod. et Vallisclaræ increscente sanie — 9) Codex male occultari — 10) Alii posset — 11) Ex emendatione est — 12) Prius restitus.

BERTHARIUS abbas in carmine:

Rusticus adveniens variato corpore lepra Abscessit sospes glorificando Deum.

Morbum elephantinum, vel elephantioso esse lepram animadvertunt cum aliis Della noce et Quirini. Hæftenus de morbo diffuse agit, descriptionem Celsi refert et versus Q. Sereni Saronici:

> Est Elephas morbus tristi quoque nomine dirus, Non solum turpans nefandis ora papillis, Sed cito praecipitans funesto fata veneno.

Αλλ' ἐπὶ τὸ προκείμενον ἡμῖν ἐπανιτέον αὖθις διηγουμένοις τὰ τοῦ σημειοφόρου πατρὸς θεῖα τεράς ια, ἄπερ παρα των αύτου φοιτητών των έν ταύτη τη βίβλω ανωτέρω μνημονευθέντων, ακοή σαρείληφα. Ην τις ανήρ ός ις είχεν έτερον ζηλοτυπούντα αὐτῷ, καὶ ἐχθρωδῶς πρὸς αὐτὸν διακείμενος· ο οὖν μισόκαλος δαίμῶν ἐπὶ τοσοῦτον² ἐμμανῶς τοῦτον συνώθησεν, ώς ε θανατηφόρον έπινοήσασθαι κατ' αὐτοῦ δηλητήριον, και τουτο άγνοουντα τον άνδρα πιείν παρεσκεύασεν,3 ΐνα τοῦτον τῆς προσκαίρου ζωῆς θᾶττον ἀπαλλάξη. καί ό μεν ανήρ το δηλητήριον πεπωκώς ου τέθνηκεν άλλ' έκχυθείσης εν όλω τω σώματι⁴ αύτοῦ της ελεφαντίας το είδος, έλεεινον θέαμα τοῖς άπάντων όφθαλμοῖς προύκειτο. εἶτα πρός του του Θεου άνθρωπου άπευεχθείς, την προτέραν ύγείαν ταχέως ἀπέλαβεν. Τῆ γὰρ σημειοφόρω αὐτοῦ δεξιά άψάμενος τοῦ σώματος αὐτοῦ, πᾶσαν ἀπὸ τοῦ δέρματος αὐτοῦ τὴν τῆς ἐλεφαντίας νόσον ἐφυγάδευσεν.

1) Alii ἐπανελθῶμεν pro ἐωανιτέον — 2) In Cod. Flor. deest ἐπὶ τοσοῦτον — 3) Cdd. Paris. et Florent. παρεκέλευσε — 4) Alii τῷ σώματι δλον pro ἐν δλῳ τῷ σώματι — 5) Cod. Floren. τὴν ἐλεφαντίαν.

Joseph hymnograph. Sticher. I.. Πολλεῖς ἀγωνίσμασι τὴν σάρκα νεκρώσας χάριν τῶν ἰαμάτων πλουσιως ἔλαβες παύειν ἀσθενείας ποικίλας.. Multis laboribus carnem cum mortificasses, gratiam sanationum abunde adeptus es, ut varias compesceres infirmitates..

agnovi. Quidam vir gravissima adversarii sui æmulatione laborabat, cujus ad hoc usque odium prorupit, ut ei nescienti in potu² venenum daret. Qui⁴ quamvis vitam auferre non valuit, cutis tamen colorem mutavit, ita ut diffusa⁵ in corpore ejus varietas, leprae morem imitari videretur. Sed ad Dei hominem deductus salutem pristinam citius recepit: nam mox ut eum contigit, omnem cutis illius varietatem fugavit. 6

1) Cod. Bessar. processit — 2) Prius poto et puto — 3) Cod. S. Audoen. et Lyran. misceret — 4) Alii Quod — 5) Prius defusa postea deffusa — 6) Cod. Nan. mutavit.

Codex Anonym. Cassin. 175 ibi (in fundo turris) supra arca tredecim solidi de auro ceciderunt, et idem Anonymus de turri S. Benedicti ait: ibi resanavit Severum contritum et leprosum et ibi cunctas virtutes fecit.

Bertharius Abbas in carmine:

Aurea dona Putri funduntur cælitus almo, Ut poscens habeat debita quo redigat.

KEФAAAION KH.

Περί τος βιφέντος ἀνακλας αρίου σύν τῷ ἐλαίῳ κατ ἐπιτροπην αὐτοῦ, και μη κλασθέντος.

ΚΗ΄. Κατ' έκεῖνου τοίνυν τὸν καιρὸν, καθ' ον τὴν Καμπανίαν λιμός συνείχεν βαρύτατος, ό τοῦ Χριςοῦ ωις ὸς καὶ φρόνιμος οίκονόμος ούκ έπαύετο πάσιν τοῖς ένδεέσιν τὴν πρέπουσαν συμπαθώς διανομήν των άναγκαίων του σώματος χρειών ποιούμενος, έως οὖ πάντα έκ τοῦ μονας ηρίου έξέλιπον, και ουδεν έτερον ην υπολειφθέν έν τῷ κελλαρίω τής μονής, εί μη βραχύ τι έλαίου έν υαλίνω σκεύει. Είς δέ τις ύποδιάχονος, την προσηγορίαν Αγαπητός, ήλθεν πρός τον τοῦ Θεοῦ φίλον πάνυ αὐτὸν δυσωπῶν, ὅπως ἔλαιον ὁλίγον ἐπιτρέψη δοβηναι αὐτῷ. ὁ δὲ θεσπέσιος οὖτος ἀνηρ, ος ήδη πάντα εν τη διανοία θέμενος διανέμειν τε καί σκορπίζειν έν τῆ γῆ, ἵνα ἐν τῷ οὐρανῷ αὐτῷ² τηρηβῶσιν, ἐκεῖνο τὸ βραχὸ τοῦ ἐλαίου, ὅπερ ἐν τῷ κελλαρίω της μονης ἐναπέμεινεν,³ ἐκέλευσεν τζ αἰτοῦντι δοθήναι. Ο μοναχὸς δὲ ὁ τὴν τοῦ κελλαρίου διακονίαν έγκεχειρισμένος, ύπήκουσεν μεν της τοῦ πατρός κελεύσεως, άλλα πληρώσαι ταύτην ούχ είλατο. Μετ' ολίγον οὖν ἐπηρώτησεν 4 ὁ πατήρ τὸν κελλάριον, 5 εἰ τὸ βραχυ εκείνο έλαιον δέδωκεν τῷ αἰτήσαντι; ὁ δὲ ἀποκριθείς ώμολόγησεν μη δεδωκέναι αύτο, είπων προς αύτον. ότι έάν όλον το έλαιον έκεῖνο παρασχεθήναι τῷ ἀνδρὶ κελεύσης, παντάπασιν τοῖς άδελφοῖς οἰαδοῦν παραμυθία οὐχ ὑπολειφθήσεται. Τότε θυμωθείς ὁ πραότατος ἐκεῖνος πατήρε προσέταξεν τοῖς ἀδελφοῖς, όωως τὸ ρηθεν ύάλινον σκεῦος, ἐν ώ το δλίγου του έλαίου ἀπέμεινεν, διὰ της Αυρίδος ρίψωσιν, ίνα μη έν τῷ μονας ηρίω τι τῶν τῆς παρακοῆς ἐναπομείνη. Γέγονε τοίνυν καθώς δ μακάριος προσέταξεν. Υπό δε την θυρίδα ἐκείνην σωρός ην λίθων σολλών και μεγάλων, ἐφ' ών

Alii ἐξέλιπεν — 2) Cdd. quidam omittunt αὐτῶ — 3) Cd. Flor. ἐναπομεῖναι — 4) Cod. Flor. addit αὐτὸν — 5) Alii κελλαράριον.
 6) Cod. fol. 73 — 7) Cod. Floren. melius οἱαδηποτοῦν — 8) Alii ἀνῆρ —9) Cod. Flor. et quidam Editt. ὄρος.

· CAPUT XXVIII.

De ampulla, vitrea1 in saxis projecta

et non fracta.

Eo quoque tempore, quo alimentorum inopia Campaniam graviter adfligebat, vir Dei diversis indigentibus monasterii sui cuncta tribuerat, ut pene nihil in cellario nisi parvum quid olei in vitreo vase remaneret. Tunc quidam subdiaconus Agapitus nomine advenit, magnopere postulans ut sibi aliquantulum oleum dari debuisset. Vir autem Domini, qui cuncta decreverat in terra tribuere, ut in caelo omnia servaret, hoc ipsum parvum quod remanserat olei, jussit petenti dari. Monachus vero qui cellarium tenebat audivit quidem jubentis verba, sed implere distulit. Cumque post paululum, si id quod jusserat datum esset inquireret, respondit monachus se minime dedisse; quia si illud⁸ tribueret, omnino nihil fratribus remaneret. Tunc iratus, aliis praecepit, ut hoc ipsum vas vitreum in quo parvum⁹ olei remansisse videbatur, per fenestram proicerent, 10 ne in cella aliquid per inobedientiam¹¹ remaneret. Factumque est. Sub fenestra autem eadem ingens praecipitium patebat saxorum molibus asperum.¹² Projectum itaque vas vitreum venit in

¹⁾ In Cod. vidrea — 2) Quidam Alio — 3) Cod. scribit vasæ 4) Cod. postol.. — 5) Alii olei — 6) Alii reservaret — 7) Quidam parvum — 8) Alii addunt ei — 9) Ut supra alii parvum 10) Alii proiicer..—11) Cd. inobæd..—12) Mabillon aspersum.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ ΚΘ'.

Περὶ τοῦ γεμισθέντος τοίθου 1 έλαίου 2 διλ προσευχής αὐτοῦ.

ΚΘ΄. Τοῦτου δὲ γεγονότος, ἄμα τοῖς ἀδελφοῖς έαυτὸν ό σεβάσμιος πατήρ είς προσευχήν δέδωκεν. έν δε τῷ τόπῳ έκείνω εν ω μετά των άδελφων εν τη προσευχή ίσατο, πί-Βος κενός ύπῆρχεν τῷ σκεπάσματι κεκαλυμμένος. Εν δὲ τῷ τον άγιον σατέρα προσκαρτερείν έν τη προσευχή, ήρξατο το πώμα τοῦ αὐτοῦ ωιθαρίου³ κουφίζεσθαι, τοῦ ἐλαίου πληθυνθέντος έν τῷ πίθω.4 Οὕτινος κινηθέντος τε καὶ ύψωβέντος, τὸ αύξηθεν έλαιον το τοῦ πιβαρίου σόμα ύπερβλύσαν, ἄπανδ το έδαφος έπλήρωσεν, έν ῷ ἦν είς προσευχήν κύψας ὁ ἄγιος. Τοῦτο δὲ θεασάμενος ὁ θαυματουργὸς ωατήρ Βενέδικτος, τή εύχη τέλος ἐπέβηκεν. Τὸν δὲ ἀπισον ἐκεῖνον καὶ ἀνήκοον6 άδελφον πατρικώς ενουθέτησεν είπών. «Τέκνον κτίσαι πίς ιν άδίς ακτον καὶ ταπεινοφροσύνην άξίαν τοῦ μοναχικοῦ ἐπαγγέλματος. » Ο δε άδελφος έκεῖνος πρεωόντως καὶ σωτηριωδώς ύως του ωατρός παιδευβείς ήδέσβη, ο γάρ αρίδιμος ούτος πατήρ την ίσχυν της έαυτου νουθεσίας, ήνπερ έδίδασκεν, ταύτην τη τοῦ παντοδυνάμου Θεοῦ χάριτι τοῖς θείοις θαύμασιν σάσιν ύπεδείκνυεν, και ούκ ήν λοιπόν τινά σοτε της αὐτοῦ συνοδίας ἐν ταῖς τοῦ άγίου ὑποσχέσεσιν δειλιάν, ἢ άπις είν τοίς ὑπ' αὐτοῦ λεγομένοις. Καὶ μάλις α έωρακότες την εν μια καιρού ροπη γεναμένην⁹ παρά Θεού ύπερβάλλουσαν έωίσκεψιν ύωερ γαρ ύαλίνου σκεύους όλίγον ωάνυ ξλαιον έχοντος, πίθον ύπερβλύσαντα έλαίου απέδωκεν.

Codex Florentin. τοῦ ωίθου — 2) Cod. male scribit ἐλαίν.
 Alii πίθου, sic et inferius — 4) Alii ἐν τῷ, αὐτῷ — 5) Cod.
 Flor. omittit ἄπαν — 6) Alii ἀωήκοον — 7) Cd. Flor. ω: ευματικῶς.

8) Codex ἐνουθέτισεν — 9) Alii γενομένην.

S. Joseph hymn. V. Τὸν ἐν ἐλέει θεὸν ἐκδυσωπῶν, πάτερ σοφὲ, ἀκλησας ως Ηλιοῦ καμψάκην ἐλαίου, τὸ ἀγγος τὸ μέγα ὑπὸ πάντων ὁρώντων πιστῶς θαυμαζόμενος. Deum in misericordia, o pater sapiens, deprecatus, ut Eliæ dolium, vas magnum replevisti, videntibus et mirantibus in fide omnibus. Stich. III... βλίζειν δὲ τὸ ἔλαιον ἀγγος ἐποίησας.. vas oleo emanare fecisti.

CAPUT XXIX.

De doleo vacuo et oleo repleto.

Qua increpatione conpleta, sese cum isdem fratribus in orationem dedit. In eo autem loco, ubi cum fratribus orabat, vacuus³ erat ab oleo doleus et coopertus. Cumque sanctus vir in oratione persisteret, coepit operimentum ejusdem dolei oleo excrescente sublevari. Quo commoto atque sublevato, oleum quod excreverat, ora dolei transiens, pavimentum loci in quo incubuerat,4 inundabat. Quod Benedictus Dei famulus⁵ aspexit, protinus orationem conplevit, atque in pavimentum oleum defluere cessavit. Tunc diffidentem inobedientemque fratrem latius admonuit, ut fidem habere disceret et humilitatem. Idem⁷ vero frater salubriter correptus erubuit: quia venerabilis Pater virtute omnipotentis Domini,8 quam admonitione intimaverat, miraculis ostendebat; nec erat jam ut quisquam de ejus promissionibus dubitare possit,9 qui in uno eodemque momento pro vitreo vase pene vacuum¹⁰ plenum oleo doleum reddidisset.11

¹⁾ Alii dolio ut et inferius — 2) Alii omittunt et — 3) Alii vacuum.. dolium et coopertum — 4) Cdd. Theod. Long. Gemet. incubuerant — 5) Alii addunt ut — 6) Cd. Bess. laetius — 7) Cd. Isdem — 8) Alii Dei — 9) Alii posset — 10) Alii vacuo — 11) Prius reddedisset.

Cod. Anonym. Cass. 175. In fundo turris fecit miraculum de labello olei. Ad haec Hæftenus refert verba regulae S. Basilii M. Interrog. 52.

εκ δεήσεως γίνονται. Ποτε δε κατ' έξουσίαν, καθάπερ ό εὐαγγελις ης Ιωάννης λέγει «Οσοι γάρ, φησιν, ελαβον αὐτον, έδωκεν αὐτοῖς έξουσίαν τέκνα Θεοῦ γενέσθαι.1 » οἱ οὖν διά της έξουσίας του Θεού τέχνα υπάρχουσιν, τί θαυμας ον έαν σημεῖα ὑπὸ τῆς έξουσίας ποιῆσαι δύνανται; ὅτι δὲ καὶ ἑκατέρω² τρότω Βαυμάσια ποιούσιν, μαρτυρεί Πέτρος ό την Ταβιθάν³ Βανοῦσαν δι' εὐχῆς ἀνας ήσας, Ανανίαν τε καὶ Σαπφείραν ψευσαμένους διελέγξας, και τῷ Βανάτω παραδούς, ούδε γαρ εύξασθαι αύτον γέγρασται έν τη έκπνεύσει αύτων, άλλα μόνον το πταῖσμα, ὅπερ πεποίηκαν,⁵ διήλεγξεν. Συμβαίνει δε, ότι ωρτε μεν κατ' έξουσίαν ποιούσιν, πρτε δε απο δεήσεως έξ ων έκείνοις μέν την ζωήν διελέγχων, κατ' έξουσίαν παρεπήρε, και ταύτην πάλιν δι' εύχης την ζωήν περιεποιήσατο. Εν δυσίν τοίνυν τρόποις θαυμάτων την του γνησίου δούλου του Θεοῦ Βενεδίκτου δύναμιν προτίθημι, έν οίς λαμπρότερον τοῦτον ἀναδείκνυμι και ωστε μεν τοῦτον γινώσκομεν λαβόντα Βεόθεν έξουσίαν, σοτε δε δι εύχης ζσχύσαντα, βαυματουργίας ἐπιτελεῖν.

1) IQANN. A'. In Cod. Græc. Vaticano prius ελαβαν — 2) Alii ὅτι ἐτέρω τρόωω. In quibusdam deest tantum δὲ — 3) Alii Ταβιτᾶν.

4) Quidam Σαμφειράν — 5) Alii ωεποιήκασι — 6) Alii ισχύοντα. S. Joseph hymnograph. Ode III. 2. Πρὸς πλάτος παραδείσου κατεσκήνωσας παμμάκαρ, ὁδεύσας στενήν τρίβον καὶ δαιμόνων πανουργεύματα καὶ πορείας ἀτάκτους ἀωεστένωσας. Amplitudinem paradisi inhabitasti, o beatissime, postquam arctam confecisti viam, et dæmonum insidias et inordinatos incessus debilitasti.

troque solent, ut mira quaeque aliquando ex prece¹ faciant, aliquando ex potestate. Cum enim Joannes² dicat: Quotquot³ receperant eum, dedit eis potestatem filios Dei fieri; qui filii Dei ex potestate⁵ sunt, quid mirum si signa facere ex potestate valent? Quia eo in utroque modo miracula exhibeant, testatur Petrus, qui Tabitham⁸ mortuam orando suscitavit. Ananiam⁹ vero et Sapphiram 10 mentientes morti increpando tradidit. Neque enim orasse in eorum extinctione legitur, sed solummodo culpam, quam perpetraverant, increpasse. Constat ergo quod aliquando haec ex potestate, aliquando vero exhibent ex postulatione, dum et istis vitam increpando abstulit, et illi¹¹ reddidit orando, Nam duo quoque fidelis Dei famuli Benedicti facta nunc replico, in quibus aperte clareat, aliud hunc accepta¹² divinitus ex petestate, aliud ex oratione potuisse.

1) Cd. Bessar. oratione — 2) Cod. Iohannis — 3) In aliis add. autem — 4) Cod. Germ. et Norm. Quod si filii — 5) Cd. Bess. addit Dei — 6) Alii valeant — 7) Alii enim pro eo in — 8) Alii Thabitam scribunt — 9) Cod. Annanium — 10) Cod. Safphiram 11) Prius reddedit — 12) Prius acepta.

GRATIANUS in Decreto 23. q. 8. c. 16 ex his refert, de S. Petro apostolo.

De oratorio S. Ioannis in vertice montis Cassini sito confer Emn. v. Bartolini opus L'antico Cassino.. p. 16, etc.

Bertharius Abbas Cassini in carmine:

Quo properas, Satana, medicarum more paratus?
Vado tuis potum fratribus ut tribuam.

Dex era sancta senem mox illo daemone captum
Salvavit Pater, depulit et Satanam.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ ΑΑ'.

Περί τοῦ γεωργοῦ τοῦ ἀοράτως ἐκ τῶν δεσμῶν λυθέντος, μόνον ἐσιβλέψαντος τοῦ ἀγίου.

ΑΑ΄. Ην τις¹ τῷ γένει Γότθος, τῆ δὲ προσηγορία Τζαλλᾶς ἐπονομαζόμενος,² τῆς τῶν Αριανῶν³ ἀθέου δυσπιστείας⁴ ὑπαρχων. Οστις ἐν τοῖς χρόνοις Τότιλα τοῦ τῶν Γότθων ἡηγὸς, οὖ τὸ πρὶν μνείαν ἐποιησάμεθα, θυμῷ ἀνυποστάτω κατὰ τῶν τῆς άγίας και καθολικῆς ἐκκλησίας σπουδαίων ἀνδρῶν ἐκκαυθεὶς, καὶ τῆ ἑαυτοῦ συντρόφω ωμότητὶ συνήθως χρώμενος, ἐάν τινα κατὰ προσώπων ἐθεάσατο, εἴτε κληρικὸν εἴτε μοναχὸν, παραχρῆμα τούτους διεχειρίζετο, τῷ διὰ ξίφους ὑποδάλλον θανάτω.

Εν μιᾶ οὖν τῶν ἡμερῶν τῆ ζέσει τῆς οἰκείας ὁμότητος ἐκκαυθεὶς, και ὑπὸ τῆς των πραγμάτων συγχύσεως
τὸν νοῦν κλαπεὶς, τινὰ χωρικὸν τῆ τύχη εὐρικώς, τοῦτον
ώμοτάτοις ἔθλιβεν βασάνοις, και διαφόροις κριτηρίοις ἐμάστιζεν. Μηκέτι οὖν τὰς βασάνους ὁ χωρικὸς ὑποφέρων, ἀπαιτούμενος ὑπὸ τοῦ σοβαροῦ ἐκείνου καὶ βαρβάρου τὰ διαφέροντα αὐτῷ πράγματα, τῷ δούλῳ τοῦ Θεοῦ Βενεδίκτῳ ἔφη θ
παραθέσθαι αὐτά. Τοῦτο ἴσως 10 πραγματευσάμενος πρὸς τὸ
ἐκφυγεῖν τὴν τῶν βασάνων τιμωρίαν, καὶ τῆς ζωῆς κερδάναι τὴν σωτηρίαν. Τότε ὁ αὐτὸς Τζαλλᾶς ἔπαυσεν τοῦ βασανίζειν αὐτὸν, προσέταξεν δὲ τοὺς βραχίονας αὐτοῦ λώροις
ἰσχυροῖς δεσμευθέντας σφιγχθῆναι, καὶ τοῦτον ἔμπροσθεν
τοῦ ἐαυτοῦ ἴππου ἤρξατο ἐλαύνειν πρὸς τὸ ὑποδεξάμενος.
Όστις χωρικὸς τοῖς βραχίοσιν δεδεμένος ἔμπροσθεν αὐτοῦ

¹⁾ Cod. Flor. addit ἀντρ — 2) Alii προσαγερευόμενος — 3) Alii Aρειανῶν scribunt — 4) Cd. Floren. δυναστείας — 5) Alii omittunt και et quidam post καθολικῆς addunt ἀπος ολικῆς — 6) Quidam ερῶν — 7) Codex Florentin. ut dicunt, hic prosequitur και τῆ εαυτοῦ συντρόφω ωμότητι συνήθως χρώμενος, ἐάν τινα τοιοῦτον ἐθεάσατο ἐποίει καθώς και προείρηται ὑπὸ δὲ τῆς τῶν πραγμάτων. 8) Quidam addunt ἀκίαις — 9) In fine est rasura — 10) Alii Τούτοις tantum.

CAPUT XXXI.

De ligato rustico et solo eius visu soluto.1

Gothorum quidam Zalla² nomine³ perfidiae fuit Arianae,4 qui Totilae regis eorum temporibus, contra catholicae Ecclesiae religiosos viros⁵ ardore inmanissimae crudelitatis exarsit: ita ut quisquis ei⁶ clericus monachusve ante faciem venisset, ab ejus manibus vivus nullo modo exiret. Quadam vero die avaritiae suae aestu succensus, in rapinam rerum inhians, dum quendam rusticum tormentis orudelibus adfligeret, eumque per supplicia diversa laniaret, victus pœnis rusticus, se⁷ res suas Benedicto Dei famulo commendasse professus est, ut dum hoc a torquente creditur, suspensa interim crudelitate ad vitam horæ raperentur. Tunc idem⁸ Zalla⁹ cessavit rusticum tormentis adfligere, sed ejus brachia loris fortibus adstrigens, ante equum suum cœpit inpellere, ut quis esset Benedictus, qui ejus res susceperat, demonstraret. Quem ligatis brachiis rusticus antecedens, duxit ad sancti viri monasterium, eumque ante ingressum cellæ solum sedentem repperit et legentem. Eidem autem subsequenti et sævienti Zallae10 rusticus dixit: « Ecce

¹⁾ In aliis: De rustico ligato et solo aspectu viri Dei soluto.

2) Prius Tzalla ut græce; Baronius et Cdd. Long. et Vallisclaræ Galla scribunt — 3) Prius nomne — 4) Prius arriane — 5) Cd. prius religiosus virus — 6) Quidam praemittunt se — 7) Alii se tantum — 8) Cod. isdem — 9) Hic ut supra — 10) Hic nomen sine T. a 1. m.

προτρέχων ἀπήγαγεν τὸν ἀλαζόνα Τζαλλᾶν εἰς τὸ τοῦ άγίου ανδρός μοναστήριον εύρον δε τον μακάριον μόνον κατέναντι της εἰσόδου τοῦ κελλίου καθεζόμενον, καξε ἀναγινώσκοντα. Τῷ δὲ αὐτῷ Τζαλλά ἀκολουθοῦντι, και Βυμομαχουντι, είπεν ό χωρικός. « Ιδου ουτός έστιν ό πατήρ Βενέδικτος, περί οὖ εἶπόν σοι. » Εκεῖνος οὖν ὁ ὑωερήφανος, ζέοντι τῷ θυμῷ, καὶ διεστραμμένω τῷ βλέμματι, γνώμης ἀνυγιοῦς γεγονώς εν τῷ τὸν ἄγιον ὁρᾶν, εδόκει τῶ έαυτοῦ φόβω τοῦτον έκπλήττειν. Καὶ ἀτενώς αὐτῷ προσέχων μεγίσταις ήρξατο κράζειν φωναῖς, και λέγειν πρὸς τὸν ἄγιον· « Ανάστα, άνάστα, και τὰ τοῦ χωρικοῦ τούτου πράγματα, ἄπερ είληφάς, ἀπόδος. » Οὖτινος τη φωνη εὐθέως ὁ τοῦ Θεοῦ ἀνθρωπος τους ξαυτοῦ ήρεν ὀφθαλμούς ἀπὸ της ἀναγνώσεως, καὶ θεωρήσας τον ἐπαρμένον⁴ ἐκεῖνον Τζαλλᾶν, σὺν αὐτῷ δὲ μόνον τον χωρικόν δέσμιον έστωτα, προσέσχεν τοῖς δεσμευθείσιν αὐτοῦ βραχίοσιν τοῖς λώροις, και τὸ παντὸς ἐπέκεινα θαύματος ήκολούθει μυστήριον. Παραυτά γάρ τοῦτον μακάριον το ξαυτού έκτε ναι θεοφώτιστον όμμα είς τον δέσμιον, τοσαύτη ταχύτης παρηκολούθησεν της τῶν λώρων λύσεως, οξα ούκ ᾶν πολλών ανδρών σπουδή ἐπιτελέσαι ήδύνατο. Θεασάμενος οὖν ὁ Τζαλλας τὸν ὑπ' αὐτοῦ δεβέντα χωρικὸν διὰ της του άγίου έξουσίας άνευ χειρών λυθέντα, έντρομος γεγονώς ἔπεσεν ἐπὶ τὴν γῆν, καὶ τὸν ἑαυτοῦ τράχηλον τὸν τη αλαζονεία επηρμένον, εκτεταμένον ύπο τα τίμια ίχνη τοῦ ἀνθρώπου του Θεοῦ ὑπέθηκεν ταῖς αὐτοῦ εὐχαῖς έαυτὸν παραθέμενος. Ο δε άγιος άνηρ οὐδαμῶς ἀπὸ τῆς ἀναγνώσεως ἀνέστη, ἀλλὰ καλέσας τους ἀδελφους ἐπᾶραι τοῦτον έσω προσέταξεν, όπως μεταλάδη τροφής.8 Ο δε είς έαυτον έλθων ένουθετεῖτο ύπο του ήγιασμένου σατρος του παύσασθαι τῆς τοσαύτης ὤμότητός τε καὶ ἀπανθρωπίας. Οστις Τζαλλᾶς συγκεκλασμένος ἀπὸ τῆς μονῆς ὑποστρέψας,9 οὐδεν

¹⁾ Alii male εύρων. Editores monuere forte εύρεν — 2) Cd. fol. 75.

³⁾ Alii τυχών — 4) Cd. Flor. επηρμ.. — 5) Alii τοῦ τὸν, alii τῷ τὸν.

⁶⁾ Ed. Migne corrigit ταχύ τις, phrasin emendat, λύσις εἶαν scribit — 7) Cd. Flor. omittit verbum — 8) Nescio unde apud Mabil-Lon (p. 21) παραφῆς veniat, error librarii — 9) Alii ἐωιστρ..

iste est de quo dixeram¹ Benedictus Pater. Quem dum fervido spiritu cum perversae mentis insania fuisset intuitus, eo terrore quo consueverat, acturum se existimans,2 magnis cœpit vocibus clamare, dicens: «Surge, surge, et res istius rustici redde, quas accepisti. » Ad cujus vocem vir Dei protinus oculos levavit a lectione, eumque intuitus, mox etiam rusticum, qui ligatus tenebatur, attendit; ad cujus brachia dum oculos deflexisset,3 miro modo tanta se4 celeritate cœperunt inligata brachiis lora devolvere,5 ut dissolvi tam concite nulla hominum festinatione potuissent. Cumque is qui ligatus venerat, cœpisset⁶ subito adstare solutus, ad tantae potestatis vim tremefactus Zalla ad terram corruit, et cervicem crudelitatis rigidae ad ejus vestigia inclinans, orationibus se illius commendavit. Vir autem sanctus a lectione minime⁷ surrexit, sed vocatis fratribus, eum introrsus tolli, ut benedictionem acciperet,8 praecepit. Quem ad se reductum, ut a tantae crudelitatis insania quiescere deberet, ammonuit. Qui fractus⁹ recedens, nil ulterius petere a rustico praesumpsit, quem vir Dei non tangendo, sed respiciendo solverat. Ecce est, Petre, quod dixi: quia hi10 qui omnipotenti Deo familiarius serviunt, aliquando mira facere etiam

¹⁾ Alii addunt tibi — 2) Cod. exaestimans — 3) Cod. Bigot. defixisset — 4) Verbum ex emendatione — 5) Codices Sangerman. Longipont. Norm. et Bessarionis dissolvere — 6) Ante t erasum est elementum in codice, forte n — 7) Prius menime — 8) Cod acceperit — 9) Alii correptus — 10) Cod. scribit hii.

το παράπαν ἀπο τοῦ χωρικοῦ τοῦ λοιποῦ έζήτησεν, ον δ τοῦ Θεοῦ ἀνθρωπος οὐκ ἐγγίζων, ἀλλ' ἢ μόνον βλέμματι ἔλυσεν.

Ιδού τοῦτό ἐστιν, Πέτρε, ὅπερ ἔφην ὅτι οὖτοι οἱ τῷ παντοδυνάμῷ Θεῷ μετὰ παρρησίας λατρεύοντες, ποτὲ μὲν θαύματα δι ἐξουσίας ποιῆσαι δύνανται, ποτὲ δὲ δι εὐχῆς τὴν τῶν σημείων πληθύν ἐνεργοῦσιν. Ο γὰρ τὴν Эηριώδη τοῦ Γότθου μανίαν καθεζόμενος ὑποτάξας, τὰ λῶρα δὲ καὶ τοὺς τῶν δεσμῶν κόμβους, ἄπερ τοῦ ἀθώου τοὺς βραχίονας συνέσφιγγαν,² διὰ τὴς τῶν οἰκείων ὀφθαλμῶν ὁράσεως λύσας, δηλοῖ διὰ τῆς τοῦ θαύματος συντομίας, ὅτι ἀπὸ ἐξουσίας ἔλαβεν σχεῖν ὅπερ ἐποίησεν. Καὶ ὅσα δὲ θαύματα καὶ ὁποῖα δι εὐχῆς ἡδυνήθη ποιῆσαι, προσθήσω τῷ διηγήματι.

1) Alii μόνω - 2) Alii συνέσφιγγον.

De benedictione quam sæpe græce εὐλογία vertitur, et hic a Zacharia τροφή, quid sit, et quid hoc loco valeat, disserunt Quirini et Galliccioli. Alter dicit sic appellari quod a Christianis exhibetur sive cibus, sive aliud quippiam. Alter vero rem altius repetens, e Sacra Scriptura verba producit tum ex hebraico, tum etiam e græco et latino textu et præcipue quæ dicuntur in libro I. Reg. c. XXIX, v. 27 de his quæ uxor Nabal obtulit Davidi, quæque appellantur εὐλογία. De hac et Haeftenus agit et testimonia profert ex Regulis S. Basilii ubi dicitur: – Si quis mittat alicui benedictionem, aut aliunde accipiat, excepto archimandrita, careat benedictione. et S. Benedicti, cap. XXV.

ex potestate possunt. Qui enim ferocitatem¹ Gothi terribilis sedens repressit, lora vero nodosque ligaturae, quae innocentis brachia adstrinxerant, oculis² dissolvit, ipsa miraculi celeritate indicat, quia ex potestate acceperat habere, quod fecit. Rursum quoque quale quantumque miraculum orando voluit obtinere, subjungam.

1) Cod. ferocitate — 2) Cod. male oculi.

BARONIUS dicit Zallam seu Gallam ducem fuisse exercitus Gothorum - Vide et Troya loc. cit.

Cod. Anon. Cass. 175.. in poio (podio) qui est in dormitorio ante porta de turre solvit rusticu..

Alphanus Archiepisc. Salernit. ait in carminibus. manuum-que lora - Visio solvit.

FRODOARDUS in carminibus ait:

Rusticus ille etiam loris tortoris adactus Indicat intuitus sola virtute solutus. Et Geta mansuescens animosque adstratus omittens..

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ ΛΒ'.

Περί του άναστάντος νεκρού δια προσευχής του άγίου.

ΑΒ΄. Εν μια ουν ήμερα εξηλθεν σύν τοῖς άδελφοῖς ὁ μακάριος έργάσασθαι έν τῷ ἀγρῷ. Καί τις γηπόνος είγεν υίον προ βραχέως θανέντα,² οδ τινος το σωμα έν ταις άγκάλαις φέρων, και τη των δακρύων πλημμύρα συγκαιόμενος είς τὸ μοναστήριον παραγέγονεν, καὶ τὸν πεφωτισμένον πατέρα Βενέδικτον ἐπεζήτει. Εδδέθη οὖν αὐτῷ, ὅτιπερ μετα τῶν ἀδελφῶν ἐν τῷ ἀγρῷ ἐργάζεται, καὶ βραδῦναι ἔχει. Τοῦτο οὖν ἀκούσας ἐνώπιον τῆς τοῦ μοναστηρίου πύλης τὸ σχήνωμα τοῦ τελευτήσαντος αὐτοῦ υίοῦ ἀποθέμενος, καὶ τή άφορήτω³ λύπη πιεσθείς, πρός την τοῦ σεβασμέου πατρός ζήτησιν ξαυτόν συντόμως δρόμω εκδεδωκεν. Καί ίδου έν αὐτη τη ώρα ό τοῦ Θεοῦ ἀνθρωπος έκ τοῦ ἔργου ην καταπαύσας, και λοιωόν συν τοῖς άδελφοῖς ἐπὶ τὸ μοναστήριον ύπέστρεφεν. Τοῦτον έορακώς ὁ τοῦ τεθνεῶτος παιδός πατήρ, ηρξατο σύν δάκρυσιν βράν πρός τον άγιον, και λέγειν. « Απόδος μοι τον υίον μου, απόδος μοι τον υίον μου. » Ο δε ανθρωπος τοῦ Θεοῦ ἐκπλαγεὶς ἐπὶ τούτω,8 ἔστη λέγων «Μή τι γε, ανθρωπε, έγω τον υίόν σου έπηρα; » πρός δυ ό τοῦ καιδός πατήρ ἀπεκρίθη· « Απέθανεν ὁ υίός μου, σεβάσμιε πάτερ, άλλα δεύρο, ανάστησον αὐτόν. » Τούτων τῶν βημάτων ἀκούσας ό θαυματουργός έκεῖνος πατήρ, καὶ σφόδρα λυπηθείς ει πεν· « Αναχωρήσατε, 10 άδε).φοί, άναχωρήσατε, ταῦτα οὐ/. ύπάρχουσιν ήμέτερα, αλλά των άγίων αποστόλων εἰσί. Τί ήμιν, άδελφοί, φορτία θέλετε ἐπιτιθέναι,11 ἄπερ οὐκ ἱσχύομεν βαστάσαι; 12 » Ο δε τοῦ τεθνηκότος παιδίου πατήρ ύπο σφοδροτάτου πόνου πληττόμενος έν τῆ ξαυτοῦ αἰτήσει διέμεινεν

¹⁾ Alii μιᾶ τῶν ἡμερῶν — 2) Alii θανόντα scribunt — 3) Alii ἀπορρήτω — 4) Alii συντόμω Cod. Florentin. συντόνω — 5) Cod. fol. 76 — 6) Alii ἐπεςρ... et addunt καὶ — 7) Cod. Florentin. αὐτὸν — 8) Alii τοῦτο — 9) Alii Μήτοιγε — 10) Cod. Floren. pro εἶπεν habet ἡρξατο λέγειν οὕτως, et postea Αναχωρεῖτε — 11) Alii ἐπιθεῖναι — 12) Alii βαστάζειν.

CAPUT XXXII.

De mortuo suscitato.

Quadam¹ die cum fratribus ad agri opera fuerat egressus, Quidam vero rusticus defuncti filii² corpus in ulnis ferens, orbitatis luctu aestuans, ad monasterium venit, Benedictum patrem quaesivit. Cui cum dictum esset, quia idem³ Pater cum fratribus in agro moraretur, protinus ante monasterii januam corpus extincti filii projecit, et dolore turbatus, ad inveniendum venerabilem Patrem sese concitus in cursum dedit. Eadem vero hora vir Dei ab agri opere iam cum fratribus revertebatur. Quem mox ut orbatus rusticus aspexit, clamare cœpit: « Redde filium meum, redde filium meum. » Vir autem Dei in hac voce substitit,4 dicens: « Numquid ego tibi filium tuum abstuli? » Cui ille respondit: « Mortuus est, veni, resuscita⁵ eum. » Quod mox ut Dei famulus audivit, valde contristatus est, dicens: « Recedite, fratres, recedite; haec nostra⁶ non sunt, sed sanctorum apostolorum sunt.7 Quid nobis onera vultis inponere, quae non possumus portare? At ille, quem nimius⁸ cogebat dolor, in sua petitione perstitit, jurans quod non recederet, nisi ejus fiilium resuscitaret. Quem mox Dei famulus inquisivit, dicens: «Ubi est? ». Cui ille respondit:

¹⁾ Alii Quodam — 2) Prius fili — 3) Prius isdem — 4) Prius substetit — 5) Cod. ressuscita — 6) Quidam fecit nos — 7) In aliis sunt deest — 8) Alii nimium — 9) Prius perstetit.

διαθεβαιούμενος και όμνύων ότι « ού μη άποχωρήσω, έὰν μη τον 1 υίον μου ἀναστήσης. * Ηρώτησεν οὐν αὐτον ό τοῦ Θεοῦ ἀνθρωπος, λέγων « Ποῦ ἐστιν το σῶμα τοῦ παιδίου; » ὁ δὲ ἀποκριθεὶς, εἶπεν· « Προς τῆ ωύλη² μοναστηρίου κείται, τίμιε πάτερ. » Τότε παραγενόμενος ό τοῦ Θεοῦ ἀνβρωπος ἐπὶ τὸν τόπον μετὰ τῶν συνόντων αὐτῷ ἀδελφῶν,3 ἔκλινεν τὰ γόνατα εἰς προσευχὴν καὶ ἐϖάνω τοῦ σώματος τοῦ παιδίου την τιμίαν αὐτοῦ κεφαλην ἐπικλίνας, και αύθις άνας ας τας χειρας είς τον ουρανον έξέτεινεν, λέγων· «Κύριε ὁ Θεὸς, μη ἐπιβλέψης ἐπι τὰς άμαρτίας μου, άλλ' ἐπι τὴν πίστιν τοῦ ἀνθρώωου τούτου τοῦ δεομένου ἀνας ήναι τον υίον αύτοῦ και ἀπόδος τῷ σώματι τούτῷ ήν ηρας ψυχήν. » Ούπω δε της του άγίου ευχής πληρωθείσης, ή ψυχη ἐν τῷ σώματι εἰσηλθεν, καὶ τὸ του παιδίου σκήνωμα όλον έδονήθη και τρέμων τη χειρι έψηλάφα, ώστε ύπο πάντων τῶν αὐτόθι ωαρόντων θεαθῆναι τὴν τοῦ άγίου 5 ἐπὶ τ \wp παιδίο γενομένην φρικώδη θαυματουργίαν οδτινος της χειρὸς λαβόμενος ὁ ἄγιος τῷ ϖατρὶ ζῶντα καὶ ὁλόκληρον ἀποδέδωκεν. Τοῦτο οὖν, Πέτρε, τὸ Βαῦμα ἐν τῆ ἑαυτοῦ ἐξουσία ούκ έσχεν, αλλα είς προσευχήν έαυτον ύποστρώσας ήτήσατο, ίνα δυνηθή τούτο ωριήσαι.

ΠΕΤΡΟΣ.

Πάντα οὖτω, καθώς λέγεις, εἶναι ὁμολογῶ. Εμφανῶς γὰρ τοὺς λόγους, οὖς προέθου, ἔργοις ἐπίςωσας. Αλλ' αἰτῶ σε,

- S. Joseph hymnograph. Ode VII. Νέκωρισιν ζωηφόρον ἐκτήσω τῶν ἡδονῶν τῆ ἀποχῆ, ὅθεν νεκροὺς ἐξεγείρειν κατηξιώθης, παμμακαρ Βενέδικτε, θαύμαζόμενος ὑωδ πάντων τῶν ωιστῶν ὡς Ηλιοῦ ὁ μέγας. Vivificantem mortem voluptatum continentia adeptus es, unde factus es dignus ut mortuos suscitares, Benedicte beatissime, quem omnes fideles admiratione prosecuntur sicut magnum Eliam. Et in Stich. III. Πάλαι ος Ηλίας.. πάτερ ἐντεύξει θεία.. νεκρὸν

«Ecce corpus ejus ad januam monasterii¹ jacet.» Ubi dum² Dei vir cum fratribus pervenisset, flexit genu,³ et super corpusculum infantis incubuit, seseque erigens, ad caelum palmas tetendit dicens: «Domine,⁴ non aspicias peccata mea, sed fidem hujus hominis, qui resuscitari⁵ filium suum rogat, et redde in hoc corpusculo animam, quam abstulisti.» Vix in oratione verba conpleverat, et regrediente anima, ita corpusculum pueri omne contremuit, ut sub oculis omnium, qui aderant, apparuerit⁶ concussione mirifica tremendo palpitasse. Cuius mox³ manum tenuit, et eum patri viventem atque incolumem dedit.

Liquet, Petre, quia hoc miraculum in potestate non habuit, quod prostratus petiit, ut exhibere potuisset.

PETRUS.

Sic cuncta⁸ esse, ut asseris, constat patenter: quia verba, quae praeposueras,⁹ rebus probas.

1) Unum tantum elementum m inservit fini prioris et initio sequentis verbi — 2) Alii cum — 3) Alii genua — 4) Animadvertit ad hunc locum Hæftenus orationem D. Gregorio Magno tributam, quæ est in canone Missae: « Domine ne respicias peccata mea, sed fidem etc. a verbis relatis sumptam fuisse. Sed Gavantus apud Merati t. I. p. 587 animadvertit hanc orationem pro pace non esse apud antiquos; eam tamen indicat Durandus et extat in cd. Vat. 2743 missali - Selvaggi Antiquitat: Christianae. II. part. II. c. 3. § 25 ait: «...Sequuntur tres orationes pro pace etc.. quarum origo non ab summis pontificibus repetenda est, sed monachorum privatae religioni accepta referenda, ut inquit Micrologus cap. 18. » Nihilominus illius precationis quædam verba ex verbis orationis S. Benedicti derivari nemo inficiatur. 5) Cod. ressuscitari — 6) Prius vid. apparueret — 7) Prius vid. vox — 8) Cd. sicuncta scribit — 9) Alii propos.

ίνα είπης έὰν οἱ ἄγιοι ἄνδρες πάντα ἄπερ Βέλουσιν δι'νανται, καὶ εἰ εἰς πάντα ἐπιτυγχάνουσιν, ἄπερ λαβεῖν ἐπιθυμοῦσιν.

ἐξανέστησας καὶ ἄλλα μύρια θαύματα ἐτέλεσας εἰς δόξαν, ὅσιε, πάντως τοῦ θεοῦ καὶ σωτῆρος ὅθεν σου την ἔνθεον μνήμην πόθω ἔορτάζομεν, Βενέδικτε. Ut olim Elias.. pater sancte Benedicte, divino nutu.. mortuum ad vitam revocasti, et alia innumera prodigia patrasti omnino ad gloriam Dei et Servatoris; unde divinam memoriam tuam ex affectu celebramus.

S. Nilus Œc. II. Δύναμις θεία τοῦ παρακλήτου τὴν καρδίαν σου, μάκαρ, καθαρὰν ἐκ παθῶν εύριῦσα ἐν σοὶ ἐσκήνωσε, καὶ αὐτουργόν σε πολλῶν θαυμάτων, καὶ φωστῆρα δεικνύει τῶν ἐν τῷ σκότει ἔνθεν σαφῶς ἔξεγείρεις νεκρούς... Divina virtus Paracliti, ο beate, cor tuum passionibus vacuum inveniens in te habitavit, et multorum miraculorum te auctorem ostendit, et luminore iis qui sunt in tenebris; hinc palam mortuos ad vitam revocas..

Sed quaeso te, indices¹ si sancti viri omnia quae volunt possunt, et cunc ta impetrant, quae desiderant obtinere.

1) Alii praemittunt ut.

Inscriptio in ipso sacello ad introitum monasterii Cassinensis: Caravita « I codici e le arti ec. » t. II. p. 79.

Mortuus hic puer est, Benedicti voce revixit.

Cod. An. Cass. 175.. resuscitavit mortuum ad pede de turre extra portam.

Frodoardus in carmine (Act. SS. O. S. B. t. I. p. 658.)

Extant et suplici praeclara precamine gesta.

Ruricola ut nati quondam miserabile funus

Advectans ulnis effundere vota coëgit

Improbus, ingeminans et raptum morte reposcens;

Dum genibus flexis animam obtinet ille precatu

Ignea restaurans gelidis alimenta medullis..

Alphanus Salern. in carmine suo ait: reddito puero vitæ. Bertharius in carmine:

Postulat orbatus reddi sibi pignus adeptum, Cum rogitat sanctus, vita redit puero.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ ΑΓ΄.

Περὶ εὖ παρεκάλεσεν Σχελάστικα¹ ἡ αὐτεῦ ἀδελφή.΄ ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ.

ΑΓ΄. Τίς ἐστιν, Πέτρε, ἐν ταύτη τῆ ζωῆ τοῦ Παύλου ὑψηλότερος; άλλ' ούτος περίε τοῦ σκόλωπος τῆς σαρκὸς αὐτοῦ τρὶς³ τὸν κύριον παρεκάλεσεν, καὶ οὖπερ ἐφίετο τυχεῖν ούκ ήδυνήθη. Εκ τούτου οὖν καὶ ωερὶ τοῦ σεδασμίου ωατρός Βενεδίκτου διηγήσομαί σοι, ότι ύωπρχέν τι όωερ ήθέλησεν, άλλ' ούδαμώς ήδυνήθη έκπληρώσαι. Αδελφή ύπηρχεν τῷ μακαρίῳ κατὰ σάρκα, ή ὄνομα Σχολάστικα, ή τις εὐδοκία του παντοδυνάμου θεου ήγιασμένη ύπηρχεν έκ νεότητος αύτης. Αύτη οὖν ἄπαζ τοῦ ἐνιαυτοῦ έθος εἶχεν πρὸς τὸν μακάριον αύτῆς ἀδελφὸν παραγίνεσθαι, πρὸς ἡν ὁ τοῦ θεοῦ ἄνθρωπος, οὖ μήκοθεν ἔξω τῆς ωύλης ἐν κτήματι τοῦ μοναστηρίου κατήρχετο. Εν μιᾶ οὖν ἡμέρα παρεγένετο πρὸς αὐτὴν κατὰ τὸ σύνηθες ὁ τοῦ θεοῦ ἄνθρωσος, ἄμα τῶν έαύτοῦ μαθητών. Πάσαν δε την ήμεραν έν ταῖς τών [ερών8] λογίων, καὶ τῶν θεοπνεύστων γραφῶν διηγήσεσιν σχολάσαντες, όψίας γενομένης, και λοιπον ήδη10 σκοτίας ούσης, άναπεσόντες, τροφής μετελάμβανον. Εν δε τῷ αὐτοὺς ἐσθίειν, καὶ ἐν τῆ τῶν Βεοπνεύστων γραφῶν ὁμιλία ἐγχρονίζειν, τὸ σολύ τῆς νυκτος μέρος¹¹ διέδραμεν. Η οὖν ίερωτάτη καὶ τιμία ἐκείνη ωαρθένος και κατά σάρκα αὐτοῦ άδελφη ήτήσατο αὐτον, λέγουσα· «Παρακαλῶ σε, ἀδελφέ μου, μη ἐάσης με τη νυκτί ταύτη, ίνα μέχρι πρωίας περί της έπουρανίου χαράς, καὶ τῆς ἀϊδίου διαλεχθώμεν ζωῆς. » Πρὸς ἡν ό μακάριος ἀπεκρίθη. «Τί ἐστιν ὁ λέγεις, ἀδελφή; ἔξω τοῦ κελλίου μου ούδαμῶς μένειν δύναμαι.» Τοιαύτη οὖν εὐδία του άέρος υπηρχεν, ώς μηδαμού 12 ίχνος νεφέλης φαίνεσθαι.

¹⁾ Quidam accentum ponunt Σχολαςίκα — 2) Cod. Flor. ὑωέρ.

³⁾ Male codex τρείς — 4) Alii ἢδύνατο — 5) Cod. Flor. χάριτι.

⁶⁾ Alii μ ı $\bar{\alpha}$ δὲ τῶν ἡμερῶν — 7) Cod. Floren. τοῖς αὐτοῦ μ αθηταῖς — 8) Cod. fol. 77 — 9) Alii addunt δὲ — 10) Alii ἔτι pro ἡδη — 11) Cod. Flor. omittit μ έρος — 12) Alii μ ηδαμῶς.

CAPUT XXXIII.

De miraculo Scholasticæ sororis ejus.

GREGORIUS.

Quisnam erit, Petre, in hac vita Paulo sublimior, qui de carnis suae stimulo² ter Dominum rogavit, et tamen quod voluit, obtinere non valuit? Ex qua re necesse est, ut tibi de venerabili Patre Benedicto narrem, quia fuit quiddam quod voluit, sed non valuit implere.

Soror³ namque ejus,⁴ Scholastica⁵ nomine, omnipotenti Domino ab ipso infantiae tempore dicata, da de eum semel per annum venire consueverat. Ad quam vir Dei non longe extra ianuam in possessione monasterii descendebat.7 Quadam vero die venit ex more, atque ad eam cum discipulis venerabilis ejus descendit frater; qui totum diem in Dei laudibus sacrisque conloquiis ducentes, incumbentibus jam noctis tenebris simul acceperunt cibos. Cumque adhuc ad mensam sederent, et inter sacra conloquia tardior se hora protraheret, eadem sanctimonialis8 faemina soror ejus eum rogavit, dicens: «Quaeso te, ut⁹ ista nocte me non¹⁰ deseras, ut usque mane aliquid11 de cælestis vitæ gaudiis loquamur. » Cui ille respondit: «Quid est quod loqueris, soror? manere extra cellam nullatenus12 possum. » Tanta vero erat caeli serenitas, ut nul-

¹⁾ Codex Sculastici scribit — 2) Prius stimolo — 3) Linea rubricata et grandis littera capitalis — 4) Cod. Bess. Benedicti.

⁵⁾ Hic codex Scolastica — 6) Alii dedicata — 7) Cod. discend..

⁸⁾ Ut alibi Cd. sanctæmonialis et inferius — 9) Alii ne — 10) A-lii omittunt non — 11) Alii omitt. aliquid — 12) Prius nullatinus.

Η δε άγιωτάτη εκείνη παρθένος, θεασαμένη τον άδελφον μηδαμώς ειξαντα τη έαυτης παρακλήσει, πλέξασα τους έαυτης δακτύλους, ἐπάνω τῆς τραπέζης τὰς χεῖρας ἐβετο· ὑπεράνω δε των χειρών την έαυτης κεφαλήν κλίνασα, τον σαντοδύναμον Θεον εδυσώπει. Εγένετο δε εν τῷ ἀναστήναι τὴν αὐτης κεφαλήν ἀπὸ της τραπέζης τοσούτων ἀστραπών καί βροντών ήχος, καὶ ύετοῦ τοσαύτη ἐωηκολούθησεν ἔκχυσις, ώστε μήτε τον σεβάσμιον τοῦ θεοῦ ἄνβρωπον Βενέδικτον, μήτε τους συν αυτώ παραγεγονότας άδελφους δύνασθαι της τοῦ οίκου φλιᾶς βραχύ τι έξω προελθεῖν. Η δε άγιωτάτη έκείνη βήλεια την κεφαλήν έν ταῖς χερσίν, ώς ην έπὶ τῆς τραπέζης κλίνασα δακρύων ποταμούς έξέχεεν,² δι' ών την του άέρος ευδίαν είς πληθος ύετων μετέβαλεν, ώστε μετά την εύχην ή τοῦ ύδατος ἐπηκολούθησεν κίνησις.3 Τοσαύτη δε της ευχης $\frac{1}{2}$ ην η δύναμις, ώστε την έαυτης κεφαλην έκ της τραπέζης μετά του της βροντης ήχου άναστησαι, και έν μια καιρού βοωή την των αμφοτέρων γενέσθαι συνέλευσιν, τήν τε τῆς κεφαλῆς τῆς ἐερᾶς παρθένου ἀνάνευσιν, καὶ την τοῦ ύετοῦ κατένεγξιν.6 Ο δὲ μακάριος κατανοήσας μη δύνασθαι έαυτον επί το μοναστήριον επιστρέφειν, δια την τῶν ἀστραπῶν καὶ βροντῶν ταραχήν, καὶ τὴν τοσαύτην τοῦ ύετου επίκλυσιν, λυπηθείς είπεν πρός την έαυτου άδελφήν. « Συγχωρήση σοι ὁ παντοδύναμος Θεός, ἀδελφή. Τί ἐστιν ο ἐποίησας; » ωρος ον ἀποκριβεῖσα, εἶπεν· « Ιδού παρεκάλεσά σε καὶ ὑπακοῦσαί μου οὐκ ἡθέλησας. Παρεκάλεσα τὸν κύριόν μου, και εἰσήκουσέν μου ἀρτίως λοιπον ἐὰν δύνησαι9 έξελθε, κάμε καταλείψας είς το μοναστήριον ἄπελθε. » Αὐτὸς οὖν ἔξω τοῦ οἴκου προκύψαι μη δυνάμενος, έκουσίως ἐν τῷ τόπῳ μεῖναι μὴ ἀνασχόμενος, ἀκουσίως ἔμεινεν ϖαρ* αὖτη̃. 10 Πᾶσαν δὲ τὴν νύκτα ἐκείνην ἀγρυπνοῦντες διετέλεσαν έν τοῖς τῆς αἰωνίου ζωῆς ῥήμασιν, και τοῖς τῶν Βεοπνεύ-

¹⁾ Cod. Flor. non habet èv $\tau \tilde{\omega}$ ἀνας ῆναι τὴν αὐτῆς κεφαλὴν ἀπὸ τῆς τραπέζης — 2) In èξ adest rasura — 3) Alii χύσις — 4) Cd. Flor. ταῖς εὐχαῖς — 5) Cod. ἦχους scribit — 6) Cod. et alii κατένεξιν — 7) Cod. Flor. θεέν — 8) Cd. Florent. addit δὲ — 9) Cod. Flor. δύνασαι — 10) Deest παρ' αὐτῆ in Cod. Florentino.

la in aëre nubes appareret. Sanctimonialis autem faemina, cum verba fratris negantis audisset, insertas digitis manus super mensam posuit, et caput in manibus omnipotentem Dominum rogatura declinavit. Cumque levaret de mensa caput, tanta coruscationis et tonitrui virtus, tantaque inundatio pluviae erupit, ut neque venerabilis Benedictus, neque fratres, qui cum aderant, extra loci limen quo consederant, pedem movere potuissent. Sanctimonialis quippe faemina caput in manibus declinans, lacrimarum fluvios2 in mensa³ fuderat, per quas serenitatem aëris ad pluviam traxit. Nec paulo tardius post orationem inundatio illa secuta est; sed tanta fuit convenientia orationis et inundationis, ut de mensa caput jam cum tonitru⁴ levaret: quatenus⁵ unum idemque esset momentum, et levare caput, et pluviam deponere.6 Tunc vir Dei inter coruscos et tonitrus⁷ atque ingentis pluviae⁸ inundationem videns se ad monasterium non posse remeare, cœpit conqueri contristatus, dicens: « Parcat tibi omnipotens Deus, soror; quid est quod fecisti? » Cui illa respondit: « Ecce te rogavi, et audire⁹ me noluisti; rogavi Dominum meum, et audivit me. Modo ergo si potes, egredere; et me dimissa ad monasterium recede. » Ipse autem exire extra tectum non valens, qui remanere sponte noluit, in loco mansit invitus. Sic-

¹⁾ Prius consederat — 2) Prius fluvius — 3) Alii mensam — 4) Alii tonitruo — 5) Cod. quatinus — 6) Cd. Bess. dimittere — 7) Prius tonitros - Alii tonitruos — 8) Cod. male pluvia — 9) Migne audiri.

στων γραφων διηγήμασιν έαυτους έμπλήσαντες. Ιδού ουν περὶ τούτου εἰρηκα Ξελῆσαι αὐτον ποιῆσαί τι καὶ μὴ ἰσχύοντα. Εὰν δὲ τοῦ σεβασμίου τούτου πατρὸς τὸ θέλημα κατανοήσωμεν, οὐχ εὐρίσκομεν τοῦτον διστάσαντα. Αὐτὴν γὰρ τὴν εὐδίαν ἤθελεν διαμεῖναι, ἤνπερ συνέθη εἶναι, ὅτε ἀπὸ τῆς μονῆς κατῆλθεν² πρὸς τὴν ὁσιωτέτην αύτοῦ ἀδελφήν. Αλλὰ τὸ ἐναντίον γέγονεν, ὅπερ ἤθέλησεν διὰ τῆς τοῦ Θεου δυνάμεως ἐν τῆ ἑαυτοῦ ἱερωτάτη παρθένω καὶ ἀδελφῆ Ξαῦμα. Θαυμας ὸν γὰρ ὄντως ἐστὶν, ὅτι³ ἡ παρθένος ἐν ἐκείνω τῷ καιρῷ πλεῖον αὐτοῦ ἤδυνήΞη, ἤτις μεγάλως τὸν ἀδελφὸν ἐπεπόθει θεάσασθαι. Κατὰ γὰρ τὴν Ιωάννου φωνὴν. « ὁ Θεὸς ἀγάπη ἐς ὶν. 5 » Δικαία οὖν πάνυ τῆ κρίσει πλεῖον ἤδυνήΞη ἐκείνη, ἤτις πλεῖον ἤγάπησεν.

ΠΕΤΡΟΣ.

Ομολογῶ, καὶ πάνυ μοι ἀρέσκει, ὁ λέγεις.

1) Alii $i\sigma\chi'\sigma\alpha\iota$ — 2) Alii $\epsilon i\sigma\tilde{\eta}\lambda \Im\epsilon\nu$ — 3) Cod. Flor. $\epsilon\tilde{\iota}$ — 4) Cd. Florent. $\tilde{\epsilon}\pi\acute{\epsilon}\theta\epsilon\iota$ — 5) $E\pi\iota\varsigma$. IQANNOY α' .

In carminibus Paulo diacono tributis de laudibus S. Schorlasticæ apud Mabillon (Act. SS. t. I. p. 41) inter alia hæc græca latinis permixta legimus:

Unguibus a teneris mutans superna caducis, Victoriamque tenens unguibus a teneris, Ampla trophæa refers, ἀρετῆς, σπευδῆς μελετῆς τε, Filia Virgo Sion, ampla trophæa refers.

In illis verbis græce «trophæa virtutis diligentiae et considerationis» novum vel rarum exemplum bilingue habemus.

que factum est, ut totam noctem pervigilem¹ ducerent, atque per sacra² spiritalis vitae conloquia sese vicaria relatione satiarent. Quare³ dixi eum voluisse aliquid, sed minime potuisse; quia si venerabilis viri mentem aspicimus, dubium non est quod eandem serenitatem voluerit, in qua⁴ descenderat, permanere; sed contra⁵ quod voluit, in virtute omnipotentis Dei ex faeminae pectore miraculum invenit. Nec mirum, quod plus illo faemina, quae diu fratrem videre cupiebat, in eodem tempore valuit: quia enim juxta Joannis vocem, Deus charitas est,⁶ justo valde judicio illa plus potuit, quae amplius amavit.

PETRUS.

Fateor, multum placet, quod dicis.

1) Codd. Carnott. Becc. Bigot. pervigiles — 2) In cod. Nan. deest. sacra — 3) Alii Qua de re — 4) Cod. Nan. hic habet in eadem voluerit mansione in qua — 5) Alii addunt hoc — 6) Ep. I. Joann. cap. IV. 16. — 7) Ante quod rasura est.

MIRTZ. in Chronic. Subl. c. VII. - Homilia de S. Scholastica V. Bedae vel Berthario tributa - Carmen Adelmi episcopi-Vita metrica Paulo diacono tributa - Carmen alterum anonymi in Act. SS. O. S. B. pag. 40 - Alterum Frodoardi, nec non Bollandiani PP. die X Februarii de his agunt, - Bertharius in his, ubi fortasse fratrem pro Patrem legendum est:

Sacra soror precibus diffundens caelitus imbrem Invitum secum nocte Patrem retinet.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ ΛΔ.

Περί της ψυχης της αυτης άδελφης αυτου Σχολάστικας, πως αυτην είδεν, ώσει περιςεράν είς ουρανούς σνιπταμένην.

ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ.

- ΛΔ΄. Τῆ οὖν έξῆς ἡμέρα ἡ αὐτὴ σεβάσμιος παρθένος εἰς τὸ ξαυτης κελλίον ἀνεχώρησεν. Ωσαύτως δὲ καὶ ὁ τοῦ Θεοῦ ανθρωπος εν τῷ μοναστηρίω αύτοῦ¹ ὑωές ρεψεν. Καὶ ἰδοὺ μετα τρίτην ήμέραν έν τῷ ξαυτοῦ κελλίω ξστώς, ἐπάρας ἐν τῷ αέρι τους οφθαλμούς, είδεν της όσιας αύτου άδελφης την άγίαν ψυχην έκ του σώματος αυτης έν είδει περιστεράς έξελθοῦσαν, καὶ ἐπὶ τὰ τοῦ οὐρανοῦ μυς ήρια² ἀναληφθεῖσαν. Ος ις τη τοσαύτη δόξη αὐτης συγχαιρόμενος, τῷ παντοδυνάμω θεω έν υμνοις και αίνοις ευχαρις είας απέδωκεν καί την αὐτης τελείωσιν τοῖς ἀδελφοῖς ἐμήνυσεν. Οΰς καὶ ἀπέστειλεν εύθέως, ΐνα τὸ σεμνὸν αὐτῆς καὶ τίμιον σῶμα εἰς τὸ μονας ήριον ἀγαγῶσιν, καὶ ἐν τῷ μνήματι ὁ ἦν ἑαυτῷ³ έτοιμάσας, θάψωσιν. Ων γαρ ό νοῦς ἐν άγίω πνεύματι ἡνωμένος ήν επ' άλλήλοις, και πρός Θεόν διαπαντός άνατεταγμένος ύπηρχεν, τούτων τὰ πανίερα σώματα οὖτε ή ταφή χωρίσαι ήδύνατο.
- 1) In Cod. Flor. αὐτοῦ deest 2) Quidam σκηνώματα 3) Alii αὐτὸς 4) Alii ἀνατεταμένος.
- S. Nilus Ode IX. 1. Χοροῖς συνήφθης ἀγγέλων μετὰ θάνατον μάκαρ, ἐπὶ τῆς γῆς ἀγγελικὴν ἀνύσας βιωτὴν, καὶ ψυχὴν Γερμανοῦ καὶ τῆς συναίμονος κατιδεῖν ἡξιώθης εἰσέτι περιών καὶ πρεσβεύεις σωθῆναι τοὺς σὲ δοξάζοντας. Angelorum choris post mortem coniunctus es, o beate, postquam in terris angelicum vitæ cursum consummasti, et adhuc superstes Germani, Sororisque animam videre dignatus es; precesque effundis, ut qui te glorificant, salvi efficiantur.

CAPUT XXXIV.

De anima sororis ejus visa qualiter e corpore sit egressa.

GREGORIUS.

Cumque die altero eadem venerabilis faemina ad cellam propriam recessisset,¹ vir Dei ad monasterium rediit. Cum ecce post triduum in cella consistens, elevatis in aëra oculis vidit ejusdem sororis suae animam de ejus corpore egressam in columbæ specie² cæli secreta penetrare. Qui tantae ejus gloriae congaudens, omnipotenti Deo in hymnis et laudibus gratias reddidit,³ ejusque obitum fratribus denuntiavit. Quos etiam protinus misit, ut ejus corpus ad monasterium deferrent, atque in sepulchro, quod sibi ipse paraverat, ponerent. Quod⁴ facto contigit, ut quorum mens una semper in Deo fuerat, eorum quoque corpora nec sepultura separaret.

1) Cod. male prius recessessit, sed 2 m. recessisset — 2) Prius speciæ — 3) Prius reddedit — 4) Alii Quo.

Auctor vitae S. Scholasticae apud Bollandianos et alii scriptores benedictini conferendi sunt. De sepulchro autem Benedicti, in quo et corpus Scholasticae prius conditum est, confer praedictos scriptores et praecipue Della Noce: Excursus historicus quod Benedicti exuviae Casini quiescant.

FRODOARDUS in carmine:

Laeta redit, gaudens polo terrestria mutat Coelos celsa petens, quam fixus in aethere frater Siderei cernit dum culminis alta petentem Atque columbino superantem sidera nisu..

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ ΛΕ΄.

Περί τῆς ψυχῆς Γερμανοῦ ἐισισκόπου πόλεως Καπούης.1

ΛΕ΄. Εν αλλώ τοίνυν καιρώ Σερβανδός διάκονος και ήγούμενος τοῦ μονας ηρίου τοῦ διακειμένου ἐν τοῖς μέρεσιν τῆς Καμπανίας, ύπο Λιδερίου τοῦ τηνικαῦτα Πατρικίου κτισθέντος, προς του μακάριου σατέρα Βευέδικτου ἐπισκέψεως χάριν έν τῷ μονας ηρίω παρέβαλεν, ἔθος ἔχων τοῦτο ποιείν. Καὶ αὐτὸς γὰρ ὁ ἀνὴρ διδαχῆς οὐρανίου ἀνάπλεως ὑπῆρχεν. Εαυτούς ούν τοῖς μελιβρύτοις² τῆς αἰωνίου ζωῆς βήμασιν αρδεύσαντες, ήδυπάτης βρώσεως απήλαυσαν, της έπουρανίου πατρίδος ακορές ω πόθω δρεγόμενοι. Καὶ ἐν τούτοις ἀεὶ ἐντρυφῶντας ἑαυτοὺς ἑώρων, κόρον τῆς τοιαύτης πνευματικής τρυφής μη είσδεχόμενοι. δτε δε και αίσθητής τροφής ή του σώματος χρεία απήτει, στενάζοντες ταύτην μετελάμβανον τοῦ δε καιροῦ ήσυχάζειν ἀπαιτούντος, έν το έαυτοῦ πύργω ὁ εὐλαβές ατος πατήρ Βενέδικτος ἀνῆλθεν. ώσαύτως δε και Σερβανδός ό διάκονος έν τοῖς αὐτοῦ κατωγείοις 5 εἰσοικίσθη, εν $\tilde{\phi}$ τό $\varpi \phi$ τα κατώγαια 6 τοῖς $\tilde{\alpha}$ νωγείοις δια τοῦτο κατεσκευάσθησαν, ίνα έν συντόμω ή άνοδος γίνηται. Αντικρύς δε τοῦ πύργου, οἰκημα ἔτερον ὑπῆρχεν, ἐν-

1) Quidam Καπύης sic et inferius — 2) Cod. μελιρύτοις scribit.
3) Quidam præmittunt ήδη τὰ τῆς — 4) Α Καὶ desunt in Cod. Floren. — 5) Alii καταγωγίοις.. ἀνωγέοις — 6) Quidam κατώγεα τοῖς ἀναγέοις — 7) Cod. γίνεται.

De S. Germano Capuano, de eiusque legationibus pontificiis ad imperatorem Anastasium et patriarcham Constantinopolitanum pro ecclesiæ unione rite, feliciter et multo exantlato labore perfunctis confer Baronium an. 519. Alibi et Gregorius de eo verba facit. Lib. IV. Cap. XL vel μβ΄.. Germano Capuano episcopo, cuius superius memoriam feci, medici pro corporis sanitate dictaverunt, ut in Angulanis thermis lavari debuisset.. Qua de re (pro Paschasio) vir Domini Germanus se in precibus constrixit.. Zacharias hæc vertit: Γερμανῷ τῷ τῆς πόλεως Καπςύης ἐπισκόπω, οῦτινος ἀνωτέρω μνείαν ωεπςίημαι, πρὸς ὑγείαν τοῦ σώματος οἱ ἰατροὶ ἐωέταξαν, ἵνα εἰς τὰ Θερμὰ τὰ ἐπονομαζόμενα Αγλαανῶν ἀπελθων λούσηται... ὁ δὲ τοῦ Θεοῦ ἀνθρωωος Γερμανὸς ἑαυτὸν εἰς δέησιν ὑωὲρ αὐτοῦ (Πασχασίου) πρὸς κύριον ἐωέτεινε. Cd. Vat. f. 172.

CAPUT XXXV.

De mundo ante ejus oculos collecto, et anima Germani Capuanæ civitatis episcopi¹

Alio quoque tempore Servandus² diaconus atque abbas ejus monasterii, quod in Campaniæ³ partibus a Liberio⁴ quondam⁵ patricio fuerat constructum, ad eum visitationis gratia ex more convenerat. Ejus quippe monasterium frequentabat; ut quia idem⁶ quoque vir doctrina gratiae caelestis influebat, dulcia sibi invicem vitae verba transfunderent, et suavem cibum caelestis patriae, quia adhuc perfecte gaudendo non poterant, saltem¹ suspirando gustarent. Cum³ vero hora jam quietis exigeret,⁰ in cujus¹o turris superioribus se venerabilis Benedictus, in ejus quoque inferioribus se Servandus diaconus conlocavit: quo videlicet in loco inferiora¹¹ superioribus pervius continuabat ascensus. Ante eandem vero turrem largius erat

¹⁾ Cod. male epo — 2) De Servando Abbate monasterii S. Sebastiani in civitate Alatrina agunt Mabillon et Quirini — 3) S. Benedictus in chronico Sublacensi (Mirtz) merito appellari Apostolus Campaniæ dicitur et titulo Doctoris ornari a Leone papa VII. in suo diplomate. — 4) Notat hic Haeftenus quod in actis Concilii Arausicani est: Petrus Marcellinus Feliæ Liberius Vir Cons. et illustris Praefectus Praetorii Galliarum atque Patricius consentiens subscripsi. Baron. a. 534. — 5) Aliqui quodam — 6) Cod. isdem — 7) Cod. saltim — 8) Alii Cumque omitt. vero — 9) Prius exegeret; Gussanville et Quirini dicunt alios habere: exigeret ut se sopori dare debuissent: turris erat eodem in loco constituta, quae super totius cellae habitaculum imminebat, in cuius turris etc. et quidem melius — 10) Cod. Bess. Cuiusdam — 11) Cd. Bess. ab inferiori.

θα των άμφοτέρων οι μαθηταί ήσύχαζον. Ο δε τοῦ Θεοῦ θεράσων Βενέδικτος, έτι των άδελφων άναπαυομένων, τῆ παννύχω της νυκτερινής προσευχής ώρα απαντας προφθάσας έν τη ξαυτού θυρίδι ές ώς, και τον παντοδύναμον θεόν δυσωπών, αἰφνίδιον ἐν τῆ τῆς νυκτὸς ἀωρία¹ ἀναβλέψας, εἰδεν· καὶ ίδου φωτοχυσία ἐφάνη πολλή ουρανόθεν, ώς ε πᾶσαν την της νυκτός σκοτίαν φυγαδευθήναι. Τοσούτω δε φωτί ή νυξ έκείνη κατελαμπρύνθη, ώς ε και της ήμέρας το φώς ύπερβάλλειν, έκ τοῦ οὐρανόθεν καταλάμψαντος φωτός. Θαύματος δε πληρες μυς ήριον έν τη της όπτασίας έκείνης ώρα έξηκολούθησεν, καθώς δ αύτὸς πατήρ μετέπειτα διηγήσατο. Είδον γάρ, φησίν² έφασκεν, και ίδου όλος ό κόσμος, ώς ύπο μίαν τοῦ ἡλίου ἀκτῖνα3. ἡν συναθροισθείς. 4 Ετι δὲ ταύτη τοῦ φωτός τη λαμπρότητι άτενῶς προσέχων, εἶδεν Γερμανοῦ τοῦ Καπούης ἐωισκόπου τὴν άγίαν ψυχὴν ἐν ωυρίνη σφαίρα ὁπὸ αγγέλων εν τῷ οὐρανῷ ἀναλαμβανομένην. Τότε ὁ τίμιος πατηρ Βενέδικτος της φοβερᾶς ταύτης δράσεως κοινωνόν τε καί μάρτυρα προκαταστήσαι Βέλων Σερβανδόν τον διάκονον, μετὰ κραυγής ἐσχυρᾶς δὶς καὶ τρὶς τοῦτον ἐκάλεσεν. Εκεῖνος

1) Alii ωρα—2) Alii omitt. φησίν — 3) Cod. f. 79. — 4) Male cd. συνθρυσ.. — 5) Cd. σφέρα — 6) Alii ωαραλαμβ.. Sed cod. Flor. αναλ.. — 7) Cd. male τρείς.

S. Gregorius libr. IV. cap. VIII. vel n'. hæć habet fere iterata: In secundo namque huius operis libro iam præfatus sum, quod vir venerabilis Benedictus, sicut a fidelibus eius discipulis agnovi, longe a Capuana urbe positus, Germani eiusdem urbis episcopi animam nocte media in globo igneo ad cælum ferri ab angelis aspexit. Qui eamdem quoque ascendentem animam intuens, mentis laxato sinu quasi sub uno solis radio cunctum mundum vidit. S. ZACHARIAS vertit (ex Codice Cryptensi - Vaticano 1666.). Εν τῷ δευτέρω βιβλίω ταύτης τῆς πραγματέιας εἶωον περί τοῦ τῆ ζωῆ εὐλαβες άτου ἀνδρὸς Βενεδίκτου, καθώς παρὰ τῶν πιςῶν αὐτοῦ μαθητῶν ἔγνων, ὅτι μήκοθεν τῆς πόλεως Καπούης ύπάρχων Γερμανοῦ τοῦ ἐπισκόωου τῆς αὐτῆς πόλεως την ψυχήν μεσονυκτίω εν σφαίρα πυρίνη ύωδ αγγέλων βασταζομένην και ἐν τῷ οὐρανῷ ἀνερχομένην ἐθεάσατο. Ος ις την αὐτην ψυχην άνερχομένην Βεασάμενος τον του νοός κόλπον άπλώσας, ώς ότι ύπο μίαν τοῦ ήλίου ἀκτῖνα, ὅλον τὸν κόσμον συναχθέντα τοῖς νοεροῖς έφθαλμοῖς έθεάσατο.

habitaculum, in quo utriusque discipuli quiescebant.1 Cumque vir Domini Benedictus, adhuc quiescentibus fratribus, instans vigiliis, nocturnae orationis tempora praevenisset, ad fenestram stans, et omnipotentem Dominum deprecans, subito intempesta noctis hora respiciens, vidit fusam lucem desuper cunctas noctis tenebras exfugasse,2 tantoque splendore clarescere,3 ut diem vinceret lux illa, quae inter tenebras radiasset. Mira autem valde res in hac speculatione4 secuta est: quia, sicut post ipse narravit, omnis etiam mundus velut sub uno solis radio collectus, ante oculos ejus adductus est. Qui venerabilis Pater, dum intentam⁵ oculorum aciem in hoc splendore curuscae lucis infigeret,6 vidit Germani Capuani episcopi animam in spera⁷ ignea ab angelis in caelum ferri. Tunc tanti sibi testem volens adhibere miraculi, Servandum diaconum iterato bis terque ejus nomine, cum clamoris magnitudine vocavit. Cumque ille fuisset insolito tanti viri clamore turbatus, ascendit, respexit, partemque jam lucis⁸ exiguam vidit. Cui tantum hoc stupescenti⁹ miraculum, vir Dei per ordinem, quae fuerant gesta narravit, statimque in Casinum¹⁰ castrum religioso viro Theopropo¹¹ mandavit ut ad Capuanam¹² urbem sub eadem nocte transmit-

¹⁾ Cod. Bess. habitabant — 2) Alii effug... — 3) Prius clarisc.. 4) Cod. Comp. eandem speculationem - 5) Prius intantam - 6) Prius infigerit — 7) Alii sphaera - Cod. Sublac. specie — 8) Cod. Bess. partem iam exiguam tanti luminis vidit — 9) Prius stupisc.. alii obstupesc.. — 10) Alii Cassin.. — 11) Alii Theoprobo — 12) Alii Capuam.

δὲ ταραχθεὶς ἐπὶ τῆ ἀσυνήθει τοῦ πατρὸς κραυγῆ, ἐκθαμδος καὶ σπουδαίως¹ ἀνῆλθεν. Εθεάσατο δὲ οὐ τὸ πᾶν τῆς ὁράσεως, μέρος δὲ βραχὺ τοῦ φωτὸς ἐκείνου ἑόρακεν. Αὐτοῦ δὲ ἐκπλαγέντος ἐπὶ τῷ θαύματι, ὁ τοῦ θεοῦ ἀνθρωπος καθεξῆς αὐτῷ ἄπερ ἐθεάσατο διηγήσατο. Παραυτὰ δὲ ἐν τῷ κάστρῳ Κασίνῳ τῷ σπουδαιοτάτῳ ἀνδρὶ Θεοπρέπω² ἀπέστειλεν, ὅπως ἐν Καπούη³ τῆ πόλει πέμψη, καὶ τὰ περὶ Γερμανοῦ τοῦ ἐπισκόπου σαφῶς διαγνῷ⁴ καὶ μηνύση αὐτῷ. Τούτου δὲ γεγονότος ὁ ἀποσταλεὶς λοιπὸν τὸν ἐν ἀγίοις Γερμανὸν τὸν ἐπίσκοπον ἐν κυρίῳ τελειωθέντα εὖρεν. Ερευνήσας δὲ καὶ ἀκριβῶς μαθών, ἔγνω ὅτι ἐν αὐτῆ τῆδ ἑοπῆ ἡ τελείωσις αὐτοῦ γέγονεν, ἐν ἡ ὁ τοῦ Θεοῦ ἄνθρωπος ἐθεάσατο τὴν πρὸς οὐρανὸν αὐτοῦ ἄνοδον.

ΠΕΤΡΟΣ.

Θαυμαστόν πράγμα σφόδρα, καὶ λίαν ἐκπλῆττόν με ἀλλὰ τοῦτο ὅπερ ἐρρέθη ἐρωτῶ, πῶς ἐνώπιον τῶν ὀφθαλμῶν τοῦ δικαίου, ὡσεὶ ὑπὸ μίαν τοῦ ἡλίου ἀκτῖνα, ἄπαντα τὸν κόσμον συναχθῆναι πρὸ τῆς κοινῆς ἀναστάσεως; ἀλλ' οὐδὲ καταλαβέσθαι τοῦτο δύναμαι, ποία τάξει γενέσθαι ὀφείλει, ἔνα πᾶς ὁ κόσμος ὑπὸ ἀνθρώπου ένὸς ὁραθῆ.

ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ.

Ασφαλώς κάτεχε, Πέτρε, ὅπερ λέγω. Ψυχῆ τῆ θεωμένη τὸν κτίστην, πᾶσα ἡ κτίσις στενή αὐτή ἐστιν. Οστις οὖν ὀλίγον τι τοῦ φωτὸς τοῦ κτίστου ἐβεάσατο, μικρὸν αὐτῷ γίνεται πᾶν μέρος τῶν κτισμάτων, ὅτι αὐτή ἡ τοῦ φωτὸς θεωρία ἔνδον ἐν τῷ νοεῖν ἐνπλατύνεται, καὶ τοσοῦτον πρὸς Θεὸν ἐφαπλοῖ τὸν νοῦν, ὥστε λοιπὸν ἀνώτερος παντὸς τοῦ κόσμου κατίσταται, γίνεται δὲ αὖτη ἡ τοῦ θεωροῦντος ψυχὴ καβ ἑαυτήν. Ηνίκα δὲ ἐν τῷ τοῦ Θεοῦ φωτὶ ἄρξηται

¹⁾ Alii σπουδαῖες — 2) Cd. Floren. θεοπρεπίω — 3) Quidam Καπούης — 4) Male Migne διαγνῶς — 5) Alii τῷ ὧρα καὶ — 6) Male
Cd. ἐκπληττοντά. Alii ἐκπληττομε, sed legendum ἐκπλῆττονμε non
vero ἐκπλήττομαι, ut quidam dicunt editores et Cod. Florentin.
7) Quidam ἀκτίστου — 8) Alii νῷ, Cod. Floren. ἔνδοθεν ἐν τῷ νοὶ.

⁹⁾ Alii κατίστασθαι melius.

teret, et quid de Germano episcopo ageretur agnosceret et indicaret. Factumque est, et reverentissimum virum Germanum episcopum is, qui missus fuerat jam defunctum repperit, et requirens subtiliter agnovit eodem momento fuisse illius obitum, quo vir Domini ejus cognovit ascensum.¹

PETRUS.

Mira res valde, et vehementer stupenda. Sed hoc quod dictum est, quia ante oculos² ipsius quasi sub uno solis radio collectus omnis mundus adductus est, sicut numquam expertus sum, ita nec conjicere³ scio quoniam quo⁴ ordine fieri potest, ut mundus omnis ab homine uno videatur.

GREGORIUS.

Fixum tene, Petre, quod loquor: quia animae videnti Creatorem angusta est omnis creatura quaelibet;⁵ etenim parvum⁶ de luce Creatoris aspexerit, breve ei fit omne quod creatum est: quia ipsa luce visionis intimae mentis laxatur sinus,⁷ tantumque expanditur in Deo, ut superior existat mundo; fit vero⁸ ipsa videntis anima etiam super semetipsam. Cumque in Dei lumine rapitur super se, in interioribus ampliatur; et dum⁹ sub se conspicit exaltata, conpraehendit quam breve sit quod conpraehendere humiliata non po-

¹⁾ Codd. Aud. Lyr. Becc. Bigot. adscensum — 2) Prius oculus.
3) Cod. conicere — 4) Alii quonam pro quoniam quo — 5) Alii Quamlibet — 6) Alii parum — 7) Prius senus — 8) Prius viro.
9) Alii add. se - Cod. Prat. et Gemet. dum se sub se mens.. Cod. Nan. dum se super se.

άρωάζεσθαι, ύπεράνω δε¹ έαυτης έν τοῖς ένδοτέροις πλατύνεται. Οταν δε έαυτην πλατυνθεῖσαν θεάσηται, επιγινώσκει όσον $βραχύ^2$ έστιν, όσερ έν τ $\mathring{η}$ ταπεινώσει οὖσα κατασχεῖν ούκ ήδύνατο. Ο τοίνυν άνηρ ούτος ό την του συρός σφαῖραν θεασάμενος, και τους άγγέλους έν τῷ οὐρανῷ ὑποστρέφοντας, προδήλως τοῦτο θεωρήσαι οὐκ ήδύνατο, εί μη έν τῷ φωτί τοῦ Θεοῦ ὑπῆρχεν. Τί οὖν βαυμαστον εἰ καὶ τὸν κόσμον όλον ενώπιον αὐτοῦ συναχθέντα είδεν, ὅστις ύψωθεὶς έν τῷ νοερῷ φωτὶ ἔξω τοῦ κόσμου ὑπῆρχεν; Οτι δὲ συνελθών άσας ο κόσμος ενώπιον των όφθαλμών αὐτοῦ εξρηται, οὐχὶ ό οὐρανὸς καὶ ἡ γῆ παρέστη ἐωὶ τὸ αὐτὸ· ἀλλὰ τοῦ θεωρούντος ή ψυχη ἐπλατύνθη, ήτις πρός Θεον άρπαγεῖσα ἀνευ δυσκολίας Βεωρήσαι ήδυνήθη έκαστον όπερ ένδον τοῦ Θεοῦ 'στίν. Εν αὐτῷ οὖν τῷ φωτὶ τῷ ἐν τοῖς ἔξωθεν ὀφθαλμοῖς έξαστράψαντι φῶς ἐνδότερον ἐν τοῖς τῆς ψυχῆς νοεροῖς ὀφθαλμοίς υπηρχεν. Ο γάρ την ψυχην θεασάμενος έν υψίστοις άρωαγεῖσαν, 3 έδεί χθη αὐτῷ, 4 πόσον αὐτῷ στενώτατά εἰσιν πάντα τὰ κατώτερα μέρη.

ΠΕΤΡΟΣ.

Ορῶ ἐαυτὸν μὴ ἐπιγνόντα ἀκριβῶς ἄπερ εἰρηκας. Διὰ γὰρ τὴν ἐμὴν βραδύτητα, ἡ ἐξήγησίς σου τοσοῦτον ἐπλεόνασεν ἀλλ' ἐπειδὴ ταῦτα ἀρτίως σαφῶς ἐν τῆ ἐμῆ διανοία ἐξέχεας, αἰτῶ ὅπως ἐπὶ τὴν τῆς διηγήσεως τάξιν ἐπανέλθης.

1) Alii omittunt $\delta \hat{\epsilon}$ — 2) Male quidam et Cod. Florent. $\beta \rho \alpha \chi \dot{\nu} \varsigma$.

3) Cod. f. 80. — 4) In aliis deest αὐτῷ — 5) Alii ἐν τῆ τ. δ. τάξει. S. Joseph hymnogr. Ode V. 2. Ως καθαρὸς τὴν ψυχὴν, σὐ ἐν ἐκστάσει γεγονώς ἔβλεψας πᾶσαν τὴν γῆν, ὡς ὑπὸ ἀκτῖνα λαμωριώνην μίαν, Θεοῦ σε τιμῶντος, ωαμμάκαρ Βενέδικτε. Utpote anima purus in extasi elevatus tu vidisti universam terram veluti sub uno radio illuminatam, cum Deus te glorificaret, Benedicte prorsus beate.

terat. Vir ergo¹ qui intueri² globum igneum, angelos quoque ad caelum redeuntes videbat, haec procul dubio cernere nonnisi in Dei lumine poterat. Quid itaque mirum si mundum ante se collectum vidit, qui sublevatus in mentis lumine extra mundum fuit? Quod autem collectus mundus ante ejus oculos dicitur, non caelum et terra contracta est, sed videntis animus³ dilatatus, qui in Deo raptus videre sine difficultate potuit omne quod infra Deum est. In illa ergo luce, quae exterioribus oculis fulsit, lux interior in mente fuit, quae videntis animum, quia⁴ ad superiora rapuit, ei quam angusta essent omnia inferiora monstravit.

PETRUS.

Videor mihi utiliter non intellexisse, quae dixeras, quando ex tarditate mea tantum crevit expositio tua. Sed quia hacc liquide⁵ meis sensibus infudisti, quaeso, ut ad narrationis ordinem redeas.

1) Alii add. Dei — 2) Prius intuiri, Al. intuens - Cod. Nan. intueri globos igneos Angelosque ad caelos redeuntes: Cod. Carn. 2. et quidam editi qui in turri glob. — 3) Alii add. est. — 4) Cd. Bess. illuminavit animum quia ad superiora rapuit. Aliqui cum pro quia — 5) Alii liquido.

Alphanus: Et veluti solis radio sub uno

Omnia cernis.

Scandit ardenti sacer orbe Praesul..

De his, quæ sunt mysticæ Theologiae tam bene a Gregorio illustrata, conferatur S. Thomas ubi iuxta SS. Isidorum et Augustinum loquitur de tertio ordine visionis, nempe de intellectuali (2. 2. q. 174 et 175. - 1. q. 93. 6. - 3. supp. q. 85. et de radio divinæ revelationis, 1. 2. q. 1. ad 2.) S. Bonaventura pr.7. relig. c. 8. et egregium opus Daurelle Delle manifestazioni. p. 133.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ Δς'.

Περί του συγγραφέντος παρ' αὐτοῦ μοναχικοῦ κανόνος.

ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ.

Ας΄. Ηδέως, Πέτρε, ἔτι περὶ τοῦ σεβασμίου τούτου ἀνδρὸς πολλὰ διηγούμην, ἀλλὰ σπουδῆ τὰ μὲν τῶν αὐτοῦ παρατρέχω, διὰ τὸ εἰς τὰ τῶν ἄλλων πεπραγμένα με σωεύδειν τοῦτο δέ σε ἀγνοεῖν οὐ θέλω, ὅτι σὺν τοῖς βαύμασιν, δι' ὧν δ τοῦ Θεοῦ ἄνβρωπος ἐν τῷ κόσμῳ ἐδοξάσθη, καὶ διδασκαλία λόγου οὐ μετρίως διέλαμψεν. Διετυπώσατο γὰρ τοὺς τῶν μοναχῶν κανόνας διακρίσει ἐξαιρέτῳ καὶ λόγῳ φωτοειδεῖ. Οὖτινος ἐάν τις βελήσειεν ἀκριβῶς τὰ τε ἤθη¹ καὶ τὴν πολιτείαν καταμαθεῖν, δύναται ἐν τῆ αὐτῆ συγγραφῆ τοῦ κανόνος πασαν τὴν τῆς διδαχῆς αὐτοῦ διαγωγὴν ἐπιγνῶναι. Ο γὰρ ἄγιος ἐκεῖνος ἀνὴρ οὐδαμῶς ἡδυνήθη ἄλλως πῶς διδάξαι ἢ παιδεῦσαι, εἰ μὴ καθως ἔζησεν.

1) Ut alibi pro ἔθη.

S. Joseph hymn. Sticher. II. Κόσμος γεγονώς τῶν Μοναστῶν, ήθροισας ανείκαστον ωλήθος, ύμνεϊν τον Κύριον, όσιε πατήρ ήμῶν, και πρὸς οὐράνιον πάντας τρίβον ώδήγησας, καλῶς ἐπομένους Βείοις σου διδάγμασι, και μιμουμένους σου βίον τον ενάρετον, μάκαρ ούς και ωάλιν αμα συνήξας έν τη μεταστάσει σου Βενέδικτε. Decus monachorum effectus innumeram multitudinem cooptasti ad Deum hymnis laudandum, omnesque ad cælestem viam duxisti divinis doctrinis tuis, qui recte te secuti sunt, et vitam tuam in virtutibus sunt imitati, quos et rursus coadunasti in obitu tuo, beate Benedicte, sancte pater noster. S. Nilus Œc. II. Mcνας ών δε κανόνας εκθέμενος, άλλος εδείχθης Βασίλειος μεθ' οδ χαίρων χριςῷ νῦν ϖαρίςασαι, ϖρεσβεύων ἀϖαύςως ὑπὲρ πάντων ήμων. Monachorum vero regulas exponens, alter Basilius visus es, cum quo gaudens nunc Christo assistis, incessanter exorans pro nobis omnibus. Od. VIII. Σὐ πάτερ θεῖον νόμον ἡμῖν καταλέλοιωας όδηγίαν πᾶσαν μοναχών, και κλησιν αύτῷ ρέγουλαν ἐπέθηκας ἐν ὧ ζοιχούντες βοώμεν τῷ σωτῆρι λυτρωτὰ ὁ Θεὸς, εὐλογητὸς εἶ. Τυ, ο Pater divinam legem nobis reliquisti, quæ est universa monachorum dux, ipsique Regulæ nomen imposuisti, in qua ambulantes; Salvatori exclamamus, Redemptor Deus benedictus es.

CAPUT XXXVI.

Quod regulam monachorum scripserit.

GREGORIUS.

Libet, Petre, adhuc de hoc venerabili¹ Patre multa narrare; sed quaedam ejus studiose praetereo, quia ad aliorum gesta evolvenda festino. Hoc autem nolo te lateat, quod vir Dei inter² tot miracula, quibus in mundo claruit, doctrinae quoque verbo non mediocriter fulsit. Nam scripsit monachorum regulam, discretione praecipuam, sermone luculentam.³ Cujus si quis velit subtilius mores vitamque cognoscere, potest in eadem institutione regulae omnes magisterii illius actus invenire: quia sanctus vir nullo modo potuit aliter docere quam vixit.

1) Prius venerabile—2) In fine lineæ scriptor omisit ter—3) Cdd. Pratell. et duo Gemetic. et duo Carnot. sermone luculento.

ERASMUS a Rotterdam « Ecclesiast. 1. III. fol. 339 » Benedictum et Franciscum pios quidem, sed in Scripturis indoctos dicit. Verba autem Gregorii et vita et opus Regulae Benedicti contrarium ostendunt. Huius regulae veluti conspectus paucis perstrinxit Abb. Fr. Leopold. Zelli Praeses Congregationis Cassinensium in epistola de Centenaria Festivitate S Benedicti data e Romæ die XV. Januarii anni 1880. De eadem regula praeter Benedictinos scriptores et historici locuti sunt, et eam laudibus celebrarunt: Muratori, Troya, Cantu', Gregorovius etc.

ΚΕΦΑΛΑΙΟΝ ΛΖ.

Περί της έαυτου εξόδου, ην τοῖς ἀδελφοῖς προείρηκεν

ΛΖ΄. Εν τῷ χρόνω ἐν ῷ ἡμελλεν ὁ ἀοίδιμος οὖτος ἀνὴρ. έκ ταύτης της ωροσκαίρου ζωης εκδημείν και πρός βεόν ένδημεϊν² τοῖς συνούσιν αύτῷ μαθηταῖς αύτοῦ, καὶ τοῖς ἐκ μήχους οἰχοῦσιν τῆς άγίας αὐτοῦ τελευτῆς τὴν ἡμέραν ἐμήνυσεν. Καί τοῖς μεν παρούσιν διεμαρτύρετο λέγων, μυστικώς εν έαυτοῖς κατέχειν τὰ εν τοῖς ώσιν αυτών άκουσβέντα τοῖς δὲ ἀπούσιν ἐμήνυσεν ὁποῖον αὐτοῖς σημεῖον γενήσεται, ότε ή ψυχή αὐτοῦ ἐκ τοῦ σώματος μέλλει έξιέναι. Προ οὖν ἔκτης ήμέρας της αὐτοῦ σαντίμου τελευτης, άνεωχθήναι το έαυτου μνημεῖον έκέλευσεν, και εύθέως πυρετώ σφοδροτάτω περιπεσών, τη ύπερβολη της έκκαύσεως λοιπον αί της ψυχης δυνάμεις έλεπτύνοντο. Ορών δε έαυτον καθ' έκάστην ήμέραν, ώς είπεῖν, ύπο3 τοῦ λαβρωτάτου ωυρετοῦ ἐκλιμπάνοντα, τῆ ἔκτη ἡμέρα βασταχθήναι4 ἑαυτὸν ύπο των μαθητών και έν τῷ εὐκτηρίω ἀπενεχθήναι πεποίηκεν. Εκεῖ οὖν τὴν έαυτοῦ ἔξοδον τῆ ὑποδοχῆ τοῦ δεσποτικοῦ σώματός τε καὶ αἵματος ἐστήριξεν, καὶ ἐμμέσω⁵ τῶν μαθητῶν έστως, ταῖς αὐτῶν χερσίν τὰ ἀδύνατα μέλη ύποστηριζόμενος, ύψώσας έν τῷ οὐρανῷ τὰς χεῖρας, ἔστη κατὰ άνατολας, και την ήγιασμένην και καθαρωτάτην αύτοῦ ψυχην σύν τη προσευχη είς ούρανούς άνεσφαίρισεν. Εν αύτη οὖν τἢ ἡμέρα δυσιν ἀδελφοῖς, τῷ μὲν ένι ἐν τῷ έαυτοῦ κελλίω ήσυχάζοντι, τῷ δὲ ἐτέρω μήκοθεν οἰκοῦντι, ἀποκάλυψις μία καὶ ἐφάμιλλος ἐφάνη. Εἶδον τοίνυν ἑκάτεροι, καὶ ίδου όδος ἀπὸ τοῦ κελλίου αὐτοῦ μέχρι τοῦ οὐρανοῦ παρατινομένη, έκ σηρικών ξματίων όλη έστρωμένη, και λαμπάδες ἀμέτρητοι ἐν αὐτῆ κατὰ ἀνατολὰς ἐνορδίνως8 καιόμεναι. Καὶ ἰδού ἀνηρ λευχήμων, καὶ φαιδρός τῷ σχήματι ὑπερά-

¹⁾ Quidam hic addunt ωρὸς τὸν Ξεὸν, Cod. Floren. καὶ ωρὸς θεὸν.
2) Quidam omittunt καὶ πρὸς τὸν θεὸν ἐνδημεῖν—3) Alii ἐκ—4) Alii præmittunt ἐκέλευσε—5) Alii ἐν μέσω scribunt—6) Cdd. Reg. Floren. et alii ἀνέπεμψεν—7) Alii ώρα—8) Sic pro in ordine latinorum—9) Alii εὐσχήμων.

4. Illi au-

-c ait:

Bene-

De prophetia sui exitus

tum Eodem vero anno, qui tes exiturus, quibusdam discipui. tibus, quibusdam longe man... sui obitus denuntiavit diem: pro ut audita per silentium² tegerent; dicans, quod vel quale eis signum :.... ejus anima de corpore exiret. Ante 🛩 sui exitus³ diem aperiri sibi sepultura: Qui mox correptus febribus, acri cœpis fatigari. Cumque per dies singulos langua ... gravesceret, sexto die portari se in oratori. a discipulis fecit, ibique exitum suum dominio Corporis et Sanguinis perceptione munivit, atque inter discipulorum manus imbecillia 10 membra sustentans, erectis in caelum¹¹ manibus stetit, et ultimum spiritum inter verba orationis efflavit. Qua scilicet die duobus de eo fratribus, uni in cella commoranti, alteri autem longius posito, revelatio unius atque indissimilis visionis apparuit. Viderunt namque quia strata palliis atque innumeris12 corusca lampadibus via recto orientis tramite¹³ ab ejus cella in caelum usque tendebatur. Cum¹⁴ venerando habitu vir desuper clarus assistens, cu-

¹⁾ Cod. male quodde — 2) Cod. Prat. pro silentio — 3) Cod. Bess. obitus — 4) Cod. Bess. a discipulis iussit — 5) Cod. Gemet. dolore — 6) Prius ingravisc. — 7) Alii sexta — 8) Prius oraturium, item inferius — 9) Cod. monivit — 10) Cod. inbecilla. 11) Cod. cælis — 12) Prius innomeris — 13) Prius tramitem. 14) Alii Cui.

νωθεν έστως ήρωτα τούτους, λέγων «Τίνος έστίν ή όδος αυτη, ήν κατανοειτε θαυμάζοντες; » αυτών δε άγνοειν όμο-λογησάντων, έφη προς αυτούς «Αυτη έστιν ή όδος, δι ής ό του Θεου άγαπητος Βενέδικτος εν τῷ ουρανῷ ἀνέρχεται. » Τότε οὖν συνήκαν τὴν τοῦ άγίου ἀνδρὸς τελείωσιν εκαθάπερ γὰρ οἱ παρόντες μαθηταὶ ἐθεάσαντο, όμοίως καὶ οἱ άπούντες διέγνωσαν ἐκ τοῦ προλεχθέντος αὐτοῖς σημείου. Επάφη δε τὸ ἡγιασμένον αὐτοῦ σῶμα ἐν τῷ εὐκτηρίῳ τοῦ μακαρίου Ιωάννου τοῦ Βαπτιστοῦ, ἐν ῷπερ τὸν Απόλλωνος βωμὸν κατέστρεψεν, καὶ τὸν εὐκτήριον οἶκον τοῦ Προδρόμου συνεστήσατο.

- 1) Cod. fol. 81 2) Synaxaria græcor. editionis Urbinatis et Venetiarum, nec non Cod. Crypten. hæc fuse narrant. S. Joseph hymnogr. Od IX. Σὲ μοναζόντων ἀγέλαι, ὑπὸ σοῦ κροτηθεῖσαι, ἡ-μέρας εὐφημοῦσι καὶ νυκτὸς, μέσον τὸ σῶμά σου ἔχοντες, ἀναβλύ-ζον ωλουσίως Θαυμάτων ποταμοὺς, Πάτερ σοφὲ, καὶ φωτίζον τὰ τούτων ἀωαύστως διαβήματα. Monachorum greges sub te collectæ te celebrant diu noctuque circa corpus tuum, quod abunde manat fluvios prodigiorum, et eorum gressus semper illuminat, o Pater sapiens.
- S. Nilus, Inni pag. 8. Τὸν ἐν τοῖς πέρασι μέγιστον ὀφθέντα φωστῆρα ὑμνοῦμεν σε, εν ἐχαρίτωσε Χρις ος, οὖ σθένει τὰ ξώανα τὰ τῶν δαιμόνων ἐξαφανῖσαι πάτερ δεδύνησαι πιστεύσας λαλήσαντι δύναμιν πᾶσαν ἐχθροῦ καταπατεῖν ἰδοὺ δίδωμι ἐγὼ ὁ πάντα μετασκευάζων τὴν ἐξουσίαν θεός. Hymnis te celebramus, qui visus es maximum in terris luminare, quique a Christo gratia roboratus es, ut eius virtute simulacra dæmonum evertere valeres credens ei qui dixit: Ecce ego do vobis potestatem conculcandæ omnis potentiæ inimici: Ego, qui omnia rego potestate, Deus.

jus esset via, quam cernerent, inquisivit. Illi autem se nescire professi sunt. Quibus ipse ait: «Hæc est via, qua dilectus Domino caelum Benedictus ascendit. » Tunc itaque sancti viri obitum sicut præsentes discipuli viderunt, ita absentes ex signo, quod eis prædictum fuerat, agnoverunt. Sepultus vero est in oratorio beati Baptistæ Johannis quod destructa¹ ara Apollinis ipse construxit.

1) Cod. distructa. — 2) Auctor vitae S. Scolasticae apud Bollandianos Berthario abbati tributae, Apollinis et Martis idolis destructis ait. - Bartolini L'antico Cassino - Marcus poeta habet:

Purgavit Sanctus hanc Benedictus humum.

Sculptaque confractis deiecit marmora signis.

De obitu S. Benedicti, de eiusque sepulcro canunt Bertharius aliique et Alphanus. ait:

Tu (scandis) via coelum facibus corusca, Quando ter ternis tribus et Kalendis. Instat Aprilis.

Carmen Paulo tributum et illud Frodoardi haec quoque habent. Confer et S. Petrum Damianum et S. Bernardum, Guerricum Igniacensem, Gotfridum Vindocinensem aliosque multos. De exuviis vero praeter benedictinos scriptores confer Muratori Antiq. M. E. IV. 944-Troya Storia d'Italia v. IV. 4. p. 681-Zaccaria Storia di Leno-Bartolini Commentari. etc.

КЕФАЛАІОN АН'.

Περὶ ἰαθείσης γυναικός διὰ προσευχῆς τοῦ ἀγίου.

ΑΗ΄. Εν τῷ σπηλαίῳ τῷ ὑπὸ τὸν λάκκον, ἐν ῷ τὸ πρὶν κατοίκησεν,¹ ἔως τοῦ παρόντος, ἐὰν μετὰ πίστεως οἱ αἰτούμενοι προσέρχονται, μεγίστη βαυμάτων χάρις διαλάμπει.² Οπερ γὰρ διηγοῦμαι πρᾶγμα ἀρτίως αὐτόβι γέγονεν. Γυνή τις τῶν κατὰ φύσιν ἐκστᾶσα φρενῶν, ἐν ὅρεσιν καὶ κυλάσιν,³ ὕλαις τε καὶ ωεδίοις νύκτωρ τε καὶ μεθ'⁴ ἡμέραν⁵ ωλαζομένη ἐπλανᾶτο. Εκεῖ δὲ καὶ μόνον ἀνεκλίνετο, ἔνθα ταύτην ἡ ἀτονία καβεύδειν ἡνάγκαζεν. Εν μιὰ οὖν ἡμέραβ ἡνίκα κατὰ τὴν ἔρημον ἐπλανᾶτο, ἐν τῷ τοῦ μακαρίου πατρὸς Βενεδίκτου σπηλαίῳ ὁδηγηθεῖσα, ἀγνοοῦσα εἰσῆλθεν καὶ ἔμεινεν πρωίας δὲ γενομένης οὕτως ὑγιὴς τῷ φρονήματι ἐξῆλθεν, ὡς ὅτε8 οὐδεμίαν βλάβην φρενῶν ποτε ὑπέμεινεν. Ητις ἐν παντὶ χρόνῳ τῆς ζωῆς αὐτῆς ἐν τῆ δωρηθείση αὐτῆ ὑγεία διέμεινεν.

ΠΕΤΡΟΣ.

Τί τοῦτο εἶναι λέγομεν, ὅσερ ἐν τοῖς τῶν ἀγίων μαρτύρων λειψάνοις θεωροῦμεν γινόμενον; σλεῖον γὰρ, σχεδὸν εἰπεῖν, βαυματουργίαι ἐπιτελοῦνται ἐν τοῖς εὐκτηρίοις, ἐν οἶς λείψανα ἐπ' ὀνόματι αὐτῶν κατατίβενται, ἤσερ ἐν ὧ τὰ τούτων κατάκεινται σώματα. Πληρεστάτως μὲν οὖν κἀκεῖ τὴν τοῦ Θεοῦ χάριν εἶναι πιστεύομεν, ὡς καὶ ἐν τοῖς ἀγίοις αὐτῶν σώμασιν ἐκεῖ δὲ μᾶλλον μεγάλα σημεῖα ἐσιδεικνύουσιν, ἔνβα ὅλω τῷ σώματι οὐ κατάκεινται.

Alii κατώκησ... — 2) Hucusque quidam priora huius capitis verba ad præcedens caput adiungunt — 3) Alii κοιλάσι — 4) Quidam καθ — 5) Codex Florent. omittit νύκτωρ τ. κ. μ. ήμέραν.
 6) Alii τῶν ἡμερῶν — 7) Quidam ἀνδρὸς — 8) Cod. scripsit ὅτι.

CAPUT XXXVIII.

De insana muliere per ejus specum¹ sanata.

Qui² et in eo specu, in quo prius Sublacu habitavit, nunc usque si petentium fides exigat, miraculis coruscat.³ Nuper namque est res gesta quam narro quia quaedam mulier mente capta, dum sensum funditus perdidisset,⁴ per montes et valles, silvas et campos die noctuque vagabatur; ibique tantummodo⁵ quiescebat, ubi hanc quiescere lassitudo coëgisset. Quadam vero die dum vaga nimium erraret, ad beati viri Benedicti Patris⁶ specum devenit, ibique nesciens ingressa mansit. Facto autem mane, ita sanato sensu egressa est, ac si eam numquam insania⁶ capitis ulla tenuisset; quae omni vitae suae tempore eadem, quam acceperat, salute permansit.

PETRUS.

Quidnam esse dicimus, quod plerumque in ipsis quoque patrociniis martyrum sic esse sentimus, ut non tanta per sua corpora, quanta beneficia per reliquias ostendant, atque illic majora signa faciant, ubi minime per semetipsos jacent?

1) Alii in eius specu — 1) Haec priora verba usque ad coruscat in aliis quibusdam codicibus et in editionibus ad caput superius adduntur. De hoc autem prodigio, quod circa annum 592. contigisse ferunt, vide scriptores rerum Sublacensium et precipue in historia sua Iannucelli p. 110. Confer et Haeftenum, Mege, aliosque — 3) Prius curusc. — 4) Prius perdedisset — 5) Prius tantommodo — 6) Alii omitt. Patris — 7) Prius insaniam et ulla — 8) Alii faciunt

ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ.

Ενθα τὰ τῶν ἀγίων μαρτύρων σώματα κεῖνται, δισταγμός, Πέτρε, οὐκ ἔστιν ὅτι πολλὰ σημεῖα δύνανται ἐωιδεῖξαι, ώσπερ γαρ¹ και ποιούσιν. Τοῖς γαρ καθαρῷ τῷ λογισμῷ προσερχομένοις αμέτρητα θαύματα ἐπιδεικνύουσιν. Διὰ δὲ τὸ έν δισταγμῷ ὑπάρχειν τοὺς ἀσθενέστερον τῷ² λογισμῷ διακειμένους, ώς μη παρείναι τους άγίους, ένθα τὰ αὐτῶν όλικῶς οὐ κατάκεινται σώματα, καὶ ὡς ἐκ τούτου τοὺς προσερχομένους μη είσακούεσθαι, έκει μαλλον αύτους άναγκαιόν έστιν μεγάλα σημεῖα ἐπιδεῖξαι, ἐνθα περί της αὐτών παρουσίας ὁ ἀσθενής λογισμός διστάζει. Ων δὲ ὁ νοῦς έδραιώμενος 3 ἐν τῷ Θεῷ ὑπάρχει, οὖτοι ἐν τῷ τῆς πίστεως ἀξιώματι όντες, γινώσκουσιν ότι εί μη κεῖνται αὐτῶν ἐκεῖσε τὰ σώματα, ωλην όμως του ταῖς εὐχαῖς εἰσακούειν μη ἀπολιμπάνεσθαι 5 αὐτούς. Οθεν τοίνυν καὶ αὐτη ή ἀλήθεια ό κύριος ήμῶν Ιησοῦς ὁ Χριστὸς, ἵνα πίστιν τοῖς μαθηταῖς προσθήσει⁷ εἶπεν· «Εἰ μη ἐγω ἀωέλθω, ὁ παράκλητος οὐκ ἔρχεται⁸ πρός ύμᾶς.» Φανερον ούν ύπάρχει, ότι το παράκλητον πνεύμα έκ του πατρός προέρχεται, και έν τῷ υίῷο διαμένει. Τίνος οὖν χάριν έαυτὸν ὁ υίὸς πορευθῆναι λέγει, ἵνα ἐκεῖνος έλθη όστις οὐδέποτε ἀπ' αὐτοῦ ἐχωρίσθη; Οί μαθηταί έν σαρκί τον κύριον δρώντες, τοῖς σωματικοῖς ὀφθαλμοῖς τούτον πάντοτε Βεωρείν ἐπεθύμουν. Ορθῶς οὖν αὐτοῖς ἐββέθη· «Εἰ μη ἐγω ἀπέλθω, ὁ παράκλητος οὐκ ἔρχεται·» τουτέστιν. Ει μή το σώμα αποκρύψω, τί 10 έστιν ο τοῦ πνεύματος πόθος ού δεικνύω, και εί μη έμε καταλείψητε σωματικιζ θεωρείν, οὐδέποτε μανθάνετε πνευματικῶς με11 ἀγαπᾶν.

GREGORIUS.

Ubi in suis corporibus sancti martyres jacent, dubium, Petre, non est quod multa valeant signa monstrare, sicut et faciunt, et pura mente quaerentibus innumera miracula ostendunt. Sed quia ab infirmis potest mentibus dubitari, utrumne ad exaudiendum ibi praesentes sint, ubi constat, quia in suis corporibus non sint; ibi eos necesse est majora signa ostendere, ubi de eorum praesentia potest mens infirma dubitare. Quorum vero mens in Deo fixa est, tanto magis habet fidei meritum, quanto illic eos novit et non jacere corpore, et tamen non deesse ab exauditione. Unde ipsa quoque Veritas, ut fidem² discipulis augeret, dixit: Si non abiero, Paraclitus³ non venit⁴ ad vos. Cum enim constet, quia Paraclitus Spiritus ex⁵ Patre semper procedat⁶ et Filio; cur se Filius recessurum dicit, ut ille veniat, qui a Filio numquam recedit? Sed quia discipuli in carne Dominum cernentes, corporeis hunc semper oculis videre sitiebant, recte eis dicitur: Nisi ego abiero, Paraclitus non veniet; ac si aperte diceretur: Si corpus non subtraho, qui sit amor Spiritus non ostendo; et nisi me desieritis corporaliter cernere, numquam me discetis spiritaliter amare.

¹⁾ Alii demonstrare. — 2) Cod. Carnot. addit fidem — 3) Alii Paracletus semper — 4) Alii veniet — 5) Alii a — 6) Cod. prius, et al. procedit. — 7) Hic cod. veniet — 8) Alii quis forte et sic cod. scribens quisit.

ΠΕΤΡΟΣ.

Αρέσκει, δ λεγεις.

ΓΡΗΓΟΡΙΟΣ.

Ολίγον λοιπον ἐκ τῆς συντυχίας παυσώμεθα, ἵνα ἐὰν είς τὰ τῶν λοιπῶν θαύματα τον λόγον ἐν τῆ διηγήσει παρεκτείνωμεν, δύναμιν τοῦ λέγειν διὰ τῆς σιγήσεως ἀνακαινίσωμεν. 2

1) Cod. prius εi, sed statim videtur σ superpositum — 2) Prius λειπον — 3) Cod. σαρεκτείνομεν — 4) In fine eadem manus Bl-BAION B'. et inferius litteris in modum crucis dispositis hoc pacto græce latina scripsit: Ora pro me τοῦ γράψαντος (scribentis).

П О Р А О М Е

ΤΟΥ ΓΡΑΨΑΝΤΟΣ

Multa hoc in loco docte disputata sunt. Inter alios confer editores operum S. Gregorii in proœmiis, Scipionem Maffel, et Michaëlem Lequien, Dissert. Damascenicæ, Em. Bartolini Di S. Zacharia com. p. 563. sed præ omnibus Em. Hergenröther in adnotationibus ad §§ 84, 85 etc. et Præfatione de Photii Mystagogia de Spiritu Sancto - Hoc unum codex noster monet: ratione temporis heic non potuisse suspicari manum Photii nomen υιω radentem (Joannes diac. in vita Gregorii); nam codex longe ante illum descriptus est. Cf. Prolegomena pag. XV, XXVII.

XXXI,

Placet quod dicis.

173.

GREGORT:

67.

Aliquantum jam a sest, ut si ad aliorum tendimus, loquendi vires reparemus.

1) Male in codice syllaba cu iteratur — 2;
fine litteris maioribus et vario colore pictis, men.
gionis amanuensis Bobiensis, de quo diximus
(pag. XVII. vide et pag. 3.) EXPLT LIB SECULTATION MIRACVLIS VENERABILIS VIRI ABBATIS MONASTERIO QUOD APPELLATUR
PROVINCIAE CAMPANIAE DNO ADIVBANTE
Id est: Explicit liber secundus de vita et miraculis renegativi ri Benedicti abbatis monasterio (sic) quod appellatur de vinciae Campaniae Domino adiuvante.

CATALOGUS SCRIPTORUM

Albertus Magnus seu magister sententiarum. - p. VII.

Alcuinus in libro De Divinis officiis. - p. VI.

Aldhelmus Ep. in Scotia carmen (in Actis SS. O. S. B.) p. VI, 163.

Algerus Cluniacensis monach. De Sacramento Corporis Domini. - p. VII.

Alighieri Dante - Divina Commedia. - p. 65.

Allazio Leo, exscriptor codicis Crypten. - p. XXII, XXIII.

Allodi Leo monachus Sublacensis. - p. 35.

Alphanus Ep. Salernitanus hymnus in S. Benedictum. (Act.

SS. O. S. B. t. I.) - p. VI, 151, 157, 173, 179.

Alulfus monach. Tornacensis - excerpta Gregoriana in codice Monasterii Longipontis - p. VII.

Anastasius abbas Bobiensis. - p. XVI, XVII.

Anastasius bibliothecarius in Zachariae vita. - p. VI, XIV.

Anselmus Episcop. Lucensis Collect. Canon. - p. VII.

Antonius Mon. auctor versionis arabicae Dialogor.-p. XV.

Assemanni « Kalendarium universal. » - p. IX.

Augustinus Episcop. Hipponensis et Doct. - p. VII. 173.

Barptolomaeus iv. Abbas Cryptaeferratæ saec. xi. - p. VII, VIII, IX, XXXI, 12, 20, 64, 70, 76.

Bartolini Card. Dominicus - p. XIV, 65, 101, 145, 179, 184. Balducci presb. Oratorii Romani scriptor vitae S. Nili italice - p. VIII.

Baronius Cardinal. Caesar. Annales Ecclesiast. - p. XXXI, 35, 88, 147, 151, 166, 167.

Basilius Magnus episc. et Doctor. - p. XXXI, 141, 150.

Basilius porphyrogenita imp. constantinop. de vitis sanctorum. - p. VII, XXXII.

Beda presb. venerabilis in historia etc.-p. VI, 163. Bellotti Constantinus monach. Cassinensis-p. XXXI.

Benedictus S. P. N-Regula etc. - p. XXXI, 77, 150, 155. Bernardus abbas Claraevallis Doct. - Serm. in S. Benedictum - p. VII, XXXII, 15, 179.

Berno abbas Augiensis - De Missa. - p. VI.

Bertharius abbas Cassinen. et martyr in carmine. - p. VI, 43, 47, 73, 77, 131, 135, 139, 145, 157, 163, 179.

Bessario Card. Basilianus abbas Com. Cryptaeferratae, Venetae Bibliothecae S. Marci fundator. - p. XIX.

Bini Abbas Cassinensis. - p. 5.

Blasius II. ab. Cryptaefer. in Typico-p. VII, IX, X, 64.

Bollandiani Patres in Actis Sanctorum - p. VIII, XXXI, 163, 165.

Bonaventura Ep. Card. Albanensis et Doct. - p. VII, 173. Bond editor speciminum palaeogr. Londini - p. XVI, 67. Brixianus Jo. Franc. vita S. Benedicti, 1500. - p. XVIII.

Burchardus Ep. Wormatiensis - Decreta. - p. VII.

Caleca Emmanuel in concilio Lugdunensi-p. VII.

Calmet « Commentar. litter. in Bibliam » - p. 21

Cantù «Storia Universale » Torino. t. VIII. - r. V, 85, 175.

Caravita « I Codici e le arti 1869 » - p. 157.

Cardoni Mon. Crypt. saec. xvIII - De Tusculano M. T. Ci-ceronis - p. XXII.

Caryophilus Matth. Episc. editor vitae S. Nili-p. VIII. Casinovi Gregorius mon. Cryptaefer. saec. xix.-p. IX. Ceci Aloysius Can. Tusculanus-p. IX.

Ceillier «Histoire des auteurs ecclesiastiques » - p. XV.

Celsus medicus - p. 131.

Ceriani Ant. «descriptio Codicis Ambros. » p. XVI, XVIII. Codinus de officiis – p. 106.

D' Achery e pp. Maurinis - p. VI, 15, 35.

Daurelle J. B. «Le manifestazioni soprannaturali.. secondo i principi di S. Tommaso » Roma 1878 - p. 173.

Della Noce abb. Angelus animadversion. var. in vitam S. Benedicti - p. 3, 35, 73, 101, 105, 107, 117, 125, 131, 139, 165.

De Rossi Jo. Baptista archaeolog. - p. XXIV. 89.

Du Cange-Glossarium mediae et infimae graecitatis-p. 28. Durand e Maurinis. - p. VIII.

Durandus ab. Troarnensis De Corp. Christi. - p. VII. Durandus Willelm. « Rational divinor. officior. » - p. 155.

Erasmus a Rotterdam - p. 175.

Euthymius Zygabenus - p. VII.

Fabricius cum Harles - Bibliotheca Graeca - p. XV.

Farabulini David. - p. VIII.

Faustus monach. scriptor vitae S. Placidi - p. 47.

Felici Lucas Abbas Cryptaeferratae saec. xvi. - p. XXII. Field « Origenis hexapla 1871 - Oxonii » - p. 21.

Frodoardus in carmine-p. 43, 151, 157, 163, 165, 179.

Gaetani Constantinus ab. Cassin. - p. XXXI, 43.

Gallicioli Joan. B. editor venetus operum S. Gregorii Magni - p. XII, XIX, XXVIII, 150.

Gallonio Ant. De monachatu S. Gregorii - p. XXXI.

Gardthausen « Palæographie Griechische » 1878. - p. XX. Gavantus Barthol. Thesaurus SS. Rituum - p. 155.

Gebhardt Codex Venetus versio græca nova ex hebraico S. Script. textu. 1875 - p. 21. Gennadius patriarcha Constantinopolitanus. - p. VII. Giorgio mon. Bobiensis scriptor cod. Ambrosiani - p. XVII.

Gislebertus auctor vitae S. Romani - p. 15.

Gloria And. «Paleogr. e Diplomatica 1870. Padova» p. XVI. Gotfridus ab. Vindocinensis - p. 179.

Gordianus scriptor vitae S. Mauri - p. 39, 51, 73, 86.

Grabi Steph. ab. Crypt. saec. xvII. apud Kirker-p. XXII. Gradonicus venetus « Vindiciae gregorianae. - p. VI.

Gratianus in Decreto - p. VII, 145.

Gregorovius « Storia della città di Roma » p. 15, 35, 175.

Guerricus abbas Igniaciensis - p. 179.

Guitmundus Ep. Aversanus. – De veritate Euchar. – p. VII. Gussanville Petrus, Dialogorum S. Gregorii vindex et editor – p. VI, 103, 129, 167.

Hadrianus I. papa epistola ad Carolum magnum - p. VI. Haeftenus in vitam S. Benedicti - p. VI, 73, 105, 107, 131, 141, 150, 155, 167, 181.

Hergenröther Jos. Card. in Mystagog. Photii - p. XIV, 184. Hieronymus Doctor maximus. - p. 21.

Hildelphonsus Ep. Toletanus « de scriptoribus ecclesiasticis » - p. VI.

Hincmarus episc. Rhemensis-Operum t. I. p. 100. - VI.

Honorius Augustodunensis episcop. - p. VII.

Iannucelli « Memorie di Subiaco » p. 15, 23, 39, 47, 181.

Ioannes Diaconus in vita S. Gregorii - p. VI, 184.

Ioannes Rossanensis. mon. Crypt. saec. xIII. - p. VII, X. Ioseph hymnographus - p. VII, XII, 4, 18, 34, 42, 100, 100, 110, 120, 124, 129, 140, 144, 154, 179, 174, 178

102, 116, 130, 134, 138, 140, 144, 154, 172, 174, 178.

Ioseph Melendyta monach. Cryptensis. saec. xiv. - p. IX.

Isidorus ep. Hispalensis - p. VI, 173.

Ivo Carnotensis - p. VII.

Iulianus ep. Toletanus in Prognostico - p. VI.

Lanfrancus Cantuariae - De Corpore Domini - p. VII.

Lanni « Memorie di S. Elia » - p. VIII.

Lauret « Animadv. ad Chronic. Cassin. - p. 101.

Lequien Michaël « Dissert. Damascenicae » - p. 184.

Leo papa VII. in diplomat. Sublac. - p. 167.

Leo Ostiensis « Chron. Cassin. » - p. VI, 101, 111.

Lucas abbas VII. Cryptensis - p. VII, IX.

Lutherus hæresiarcha - p. 20.

Mabillon e pp. Maurinis - p. VI, XVIII, 5, 15, 35, 71, 73, 85, 101, 105, 107, 117, 137, 148, 162, 167.

Maffei Scipio « adnotat. in libr. Pontifical. » p. 184.

Mai Cardin. Angelus - p. IX.

Marcus monach. Cassinensis - p. 43, 65, 179.

Martene e pp. Maurinis - p. VIII.

Martinow S.-J. Kalend. Græcum Slavum - p. IX.

Massimo princ. Mem. della chiesa di S. Benedetto- p. 5, 35. Maurini Patres editores operum S. Gregorii - p. VI,

XIV, XIX, XXVIII, XXXI.

Maurus a Valentano mon. Sublacens. - p. 5, 20, 35.

Mazio Epiphanius abbas Cryptensis saec. xix. - p. X.

Mege-vita di S. Benedetto-p. 5, 181.

Menæa et Synaxaria Graec. - p. IX, XII, XXXII, 76, 178.

Menniti Petrus abbas Basilianus saec. xvIII-p. XXXI.

Merati Caiet. addition. ad Gavantum - p. 155.

Migne editor universae patrologiae graecae et latinae.

p. VIII, XIV, XXVIII, 148, 161, 170.

Mirtz Seraphinus Chronic. Sublac. - pag. 5, 35, 39, 43, 47, 89, 163, 167.

Montfaucon e pp. Maurinis Palaeographia græca - p. XX.

Muratori Lud. Ant. - p. VI. 35, 89, 175, 179.

Nilles S. J. « Kalend. orient. et occid. » 1879 - p. IX, XII. Nilus abbas Cryptaefer. fundator - p. VII, VIII, XXI, XXX,

XXXI, 4, 8, 12, 14, 24, 28, 34, 38, 44, 46, 50, 62, 64, 66, 68, 70, 84, 156, 164, 174, 178.

Nilus II. abbas Cryptaeserratae saec. x11.-p. XI.

Nilus Costantinopolitanus, Sinaita - p. 21.

Nina Cardinal. Laurentius - p. XXIX.

Odo abbas Cluniacensis. -sermon. - p. V, VII.

Optatus episc. Milevitanus - p. 139.

Outramus - De sacrific. - p. 21.

Panella - Pellegrinaggio sublacense - p. 43.

Pancratius abbas Cryptensis saeculi xIII-p. VII, IX, X.

Passamonti Maxim. mon. Cryptaefer. saec. xix-p. XXX.

Paschasius Ratbertus Corbeiae De Corpore Christi-p. VI. Paterius excerptor operum S. Gregorii-p. VI.

Paulus Diaconus seu Warnefridus - p. VI, XIII, XVII, 51, 77, 162, 163, 179.

Petrus abbas Cluniacensis - p. VII.

Petrus S. Damianus cardinal. Doctor. - p. 179.

Petrus Lombardus - in IV. dist. 50 - p. VII.

Petrus Diaconus Cassinensis - p. 3.

Phavorinus Lexicon - p. 130.

Photius patriarcha Constantinopol. Myriobiblion et My-

stagogia - p. VII, XIV, XXVII, 184.

Piacentini mon. Crypt. saec. xvIII - p. X, XI, XX, XXXII. Pitra Card. J. B. ep. Tusculanus O. S. B.-p. XI, XXIV, 35. Procopius Caesariensis De bello gothico-p. 84, 86, 88, 110.

Prudentius Trecensis De prædestinatione - p. VI.

Quandel Maurus Caesar mon. Cassinensis - p. XXIII.

Quintus Serenus Saronicus - p. 131.

Quirini ab. Ang. O. S. B. et Cardinalis - p. XIX, XXVIII, 5, 73, 101, 105, 122, 125, 131, 139, 150, 167.

Regino abb. Prumiensis - De disciplinis eccl. - p. VI.

Rocchi Ant. mon. Crypt. saec. xix. - p. VIII, XXIV, 124. Rossetti « Bobbio illustrato » - p. XVII.

Rupertus Tuitiensis - p. VII.

Saldenus « de succession. Pontific. » p. 21.

Sciommari ab. Crypt. saec. xvIII.-p. VIII, X, XXI, 28, 44.

Seghetti doct. Dominicus Tusculanus - p. 35.

Selvaggi « Antiquitates Christianae » - p. 155.

Sigibertus Gemblacensis - p. VII,

Simeon Metaphrastes - p. VII.

Stephanus hymnographus S. Gregorii - p. VII, XI.

Strabo Geographic. - p. 64.

Syrletus Wuillelmus Cardinal. - p. VIII.

Taius ep. Caesaraug. Collectaneum ex opp. S. Greg.-p. VI. Tertullianus Firm. Caecil. - 105.

Thomas Aquinas Doctor in IV. dist. 44, etc. opuscul. xIX, Summ. - p. VII. 63, 173.

Thompson editor speciminum palæog. Londin-p. XVI, 67. Titi Demetrius abbas Cryptensis saec. xvIII-p. XXXII. Toscani Theod. mon. Crypt. saec xIX-p. VII, IX, XXIII, 64. Tossiniani Rodulphus editor opp. S. Gregorii-p. XXII. Tosti Ludov. abbas Cassinensis-p. VIII, XXIII, 5, 101. Troya Carolus-Storia d'Italia nel Medio Evo-p. 85,

89, 151, 175, 179.

Ughelli Ferdinandus abbas « Italia sacra » - p. XXII. Vaccari Aloysius ep. coad. Tropaeae O. S. B. - p. VIII. Vassalli Romanus ab. Cryptaeferratae saec. xvII - p. X. Veludo Praefectus bibliothecae Marcianae - p. XIX.

Vercellone Carolus barnabites - p. 21.

Vitali Philippus mon. Cryptens. saec. xvIII. - p. VIII, X. Warnefridus seu Paulus diaconus

Willelmus episcop. Catalauni - p. VII.

Zaccaria « Storia di Leno » - p. 179.

Zelli abbas S. Pauli de Urbe, praeses Congr. Cass. - p. 175.

CODICES ET MANUSCRIPTI

IN EDITIONE ADHIBITI

Codex Ambrosian. latinus, unde textum Dialogor. S. Gregorii habemus. - p. XVI. etc.

Codex graec. Crypten. Vatic. 1666, unde textus eruitur versionis S. Zachariae - p. XX. etc.

Codex Crypt. Vat. Reg. num. 52 Lucae Felici - p. XXII.

Codex Graec. Vaticanus SS. Bibliorum 1209. saeculo IV. scriptus - p. 26, 28, 92, 94, 144, 182.

Codex graecus Reg. Parisiensis - p. XIV, XXVIII. etc.

Codex graec. Colbertinus Parisien. - p. XIV, XXVIII. etc.

Codex graec. Florentinus apud Quirini - p. XXVIII. etc.

Codex latinus venetus dictus Bessarionis - p. XIX. etc.

Codex latinus venetus Nanianus - p. XIX. etc.

Codex latinus S. M. Gratiosae - p. XIX. etc.

Codices Sublac. et Florent. apud Quirini - p. XIX. etc. Codices Gallici a Maurinis adhibiti - p. XIX. etc. nempe Sargermanenes duo, Carnotenses tres, Rhemenses duo, Compendiensis, Longipontis, Claraevallis, Pratellensis, Lyranus, Rhotomagenses tres, Beccenses duo, Gemeticenses duo, etc.

Codex graec. Vat. a Leone Allazio exscript. 608-p. XXII.

Codex Venetus Nanianus graec. - p. XII, XIX.

Codex Cryptensis $Typicon-\Gamma$. α . I. vid. Blasius.

Codices Crypten. Synaxaria B. y. III, et V, VI, XIII.

Codex Cryptensis A. a. VII. - p. XI.

Codex Cryptensis Δ . β . III. - p. IX, X.

Codex venetus S. Script. ex hebraico versio graeca, -p. 21.

Codex Cassinensis num. clxxv-p. 73, 89, 111, 135, 139, 141, 151, 157.

Codex Cassinensis num. Lxxxv. - p. 73.

Codex Crypt. vitae S. Nili B. β . II. vide Barptolom. ab.

Codex Cryptensis num. A. a. XXII. Men.

Codex Crypt. A. a. XXXIII. Stichera in S. Benedictum.

Codex Cryptensis A. a. XXXI. f. 151. Menologium.

Codices Crypt. A. a. XVII, et XXII. menaea.

Codex Maximi monachi, nunc Cassinens. - p. XXX.

MSS. - Chronicon Sublacense - Cherubini Mirtz cum accessionibus Mauri a Valentano - vide Mirtz et Maurus.

MSS. Dissertatio Dominici Seghetti - La Badia Sublacense e la città di Tuscolo - vide Seghetti.

MSS. Romani Vassalli ab. Cryptaefer. versio latina serm. in S. Barptolom. abbatem - vide Vassalli.

MSS. Theodori Toscani - Excerpta bibliothecae Vaticanaevide *Toscani*.

MSS. Constantini Caietani in bibliotheca Chisiana - vide Caietani.

| | | | | • | |
|---|---|---|---|---|--|
| | | | | | |
| | | | , | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| • | • | • | | • | |
| | | | | | |
| | • | • | | • | |
| | | | | | |
| | , | | | • | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| • | | | | | |
| • | | | | | |
| | • | | | | |
| | · | | | | |
| | • | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| • | | | | | |
| • | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |

| • | | | | |
|---|---|---|---|--|
| | | | | |
| • | | · | | |
| | | | • | |
| | | • | | |
| | | | | |
| | • | | | |
| | | | | |
| • | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| · | | | | |

| | | • | | |
|---|---|---|---|---|
| | | • | • | |
| | | | | |
| · | • | | • | |
| | | | | |
| | • | | | |
| | • | | | |
| | | | • | |
| | • | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | • | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | • |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | • | |
| | | | | • |
| | | | | |
| | • | | | |

| | • | • | • | |
|---|---|-----|---|---|
| | • | | | |
| | • | | | |
| · | | | | |
| • | | • | | |
| | | | | |
| | | · . | | |
| | | • | | |
| | | • | • | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| · | | | | 1 |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | • | |
| · | | | | |
| | | | | |
| | • | | | |
| | | • | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| • | | • | | |
| | | | | |

• •

